M.S. 11

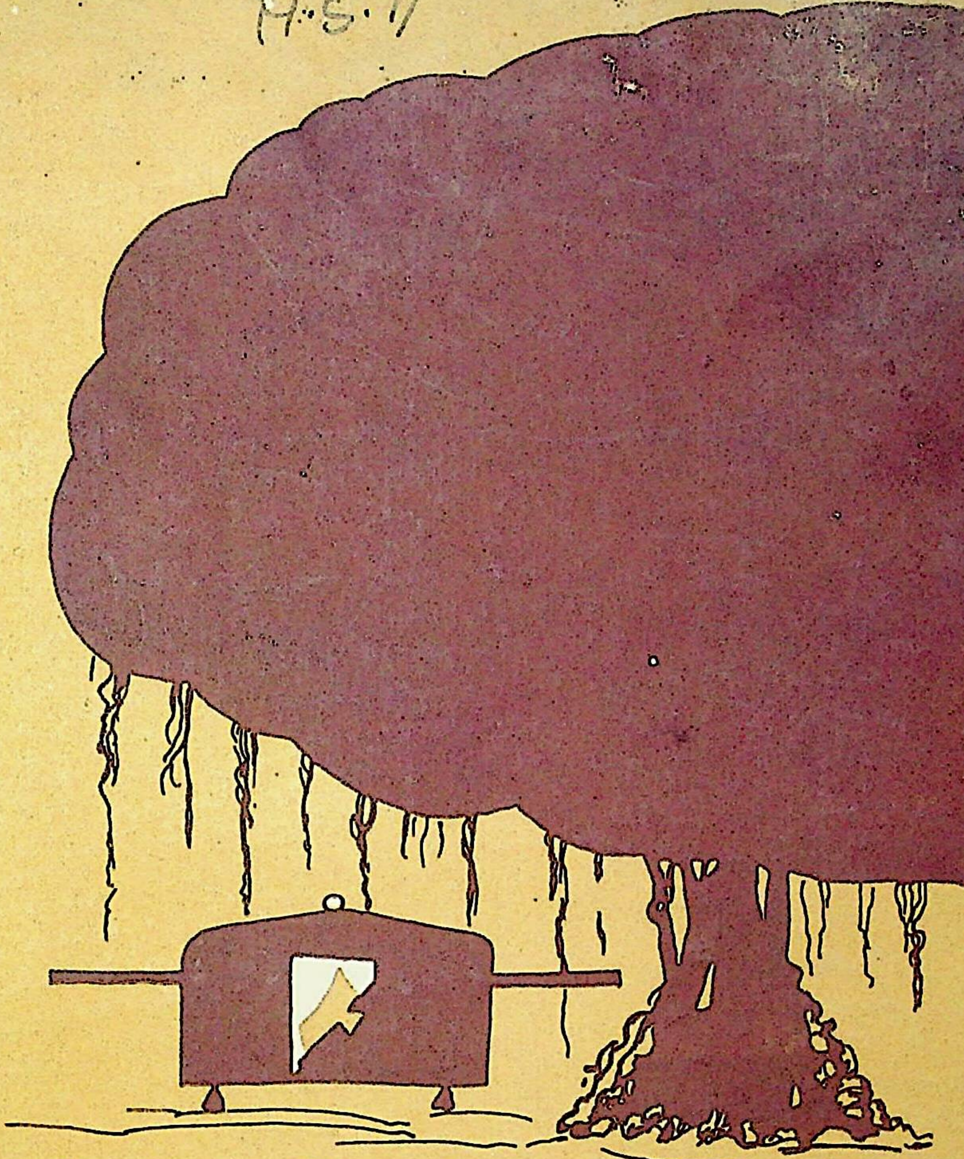

विजयदान देथा

दुविधा और अन्य कहानियाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२६-८६
यदान)
न्यकथा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,3N26.1
L9

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्रमांक ... २६८६
दिनांक ...

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

... पुस्तकालय, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुविधा
और अन्य कहानियाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुविधा

और अन्य कहानियाँ

विजयदान देथा

सम्पादन व राजस्थानी से अनुवाद
कैलाश कबीर

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,3N26,1
L9

❀ मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय ❀

आगत क्रमांक... २६८६ ....

दिनांक.........................

मूल्य : रु० ३०.००

© विजयदान देथा

प्रथम संस्करण : १९७९

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
८ नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-११०००२

मुद्रक : शान प्रिन्टर्स, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

आवरण : स्टूडियो सी-40, नयी दिल्ली

DUVIDHA AUR ANYA KAHANIYAN,
Stories by Vijaydan Detha — Price Rs. 30.00

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीरा को

अथाह सागर में
निःशेष होती हुई नदी का हर बार
यही कल-कल आकुल इकरार
कि
तुम्हारा पानी
तुम्हें ही अर्पित है
हाँ, वह निर्मल था
यह दूषित है !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुक्रम

दबदबा	७
अनेकों हिटलर	१४
राजीनामा	२५
अपनी-अपनी खुशबू	३१
दूजौ कबीर	३५
सावचेती	५३
कोंचुली	५७
आखिरी कसर	८७
रैनादे का रूसना	९२
वेदाग चिकनाहट	९६
न्यारी-न्यारी मर्यादा	१०४
फाटक	१३६
अहेरी	१४१
दोहरी जिन्दगी	१४७
समय-समय की हवा	१७८
रिआयत	१८५
आश्वासन	१८७
खोजी	१९५
लजवन्ती	२१२
कागपन्थ	२२२
दुविधा	२४९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दबदबा

सत्ता के मद की अपनी प्यास। सत्ता के भय की अपनी रास। सब रंगों की काली छाया। राव-रंक की अपनी माया। यह वरसों जूनी बात। जैसे तारों छायी रात। कि किसी वक्त के कगार पर बादशाह का एक खास मरजीदान काजी रहता था। सात औरतों का खाविन्द। पर बाप बनने की ख्वाहिश पूरी नहीं हुई सो नहीं हुई। फिर भी काजी की अक्ल की दुहाई, कि उसने कोख न उघड़ने की खातिर खुद में कोई खोट न निकालकर फकत औरतों में ही कसर निकाली। पर सातवीं शादी के तीसरे बरस भी जब वारिस पैदा होने के कोई आसार नजर नहीं आये तो उसके बड़े भाई के लड़के ने काजी के ओहदे की खातिर बादशाह से अरदास की। पर सब बेकार। काजी पर बादशाह की पूरी मेहर थी। दसों अँगुलियों और दोनों हाथ उसके सर पर थे। भतीजे को साफ कह दिया कि वो अपने चाचा के वफात पाने पर ही काजी बन सकता है, पहले नहीं। बादशाह से आगे किसी का कोई जोर नहीं था। मुंह लटकाये लौट आया। काजी को मालूम होने पर वो भतीजे पर बेहद नाराज हुआ। गुस्से और अदावत का फोड़ा ऐसा पका कि उससे बोलना ही बन्द कर दिया। हवेली में पाँव रखने तक की मनाही कर दी। काजी के विमुख होने पर समूची बस्ती विमुख हो गयी। किसी चिड़िया ने भी उसके घर की ओर रुख नहीं किया।

अंश के बच्चों के अभाव में दिल बहलाने के लिए काजी ने एक कुतिया पाली। और कुतिया भी बेहद समझदार। चन्द ही दिनों में वह काजी से इस तरह घुलमिल गयी कि एक पल भी दूर नहीं होती थी। चमकता काला-भुजंग रंग। मखमल-से मुलायम बाल। घनी, रोयेंदार पूंछ। लटकते कानों पर लम्बे बाल। मीठा और सुहाना भूंकना।

काजी की देखादेख बस्ती के लोग कुतिया को उससे भी ज्याद लाड़ करने लगे। एक-दूसरे की होड़ में समझदार लोगों का प्यार दिनोंदिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ने लगा। काजी के सामने लोग उसे चूमते। सहलाते। नहलाते। घेवर-मालपूए, घी के गुलगुले लाते। बेहद उमंग से अपने हाथों कुतिया के पाक मुँह में कौर देते। लोगों का ऐसा छलकता नेह देखकर काजी फूला न समाता था।

एक बार किसी दाने आदमी को कुतिया का अच्छा-सा नाम रखने की सूझी। काजी कहते ही मान गया। फौरन इजलास लगा। हरेक को नाम बताने की जल्दी थी। काजी के सामने नामों की झड़ी लग गयी—कलसूम, जेबून, कुसीदाँ। खातून, फातून, रसीदाँ, अल्लाराँ, जेतून, जुबेदाँ। फातिमा, मरियम और मजीदाँ।

नाभि तक लम्बी खिचड़ी दाढ़ी हिलाते काजी बोला, 'नहीं, नहीं। ऐसे नाम मत बताओ। हम इन्सान तो मजहब के मुताबिक नाम रखते हैं, पर जानवरों को मजहब और जात-पाँत के दायरे में न बाँधें तो बेहतर है। क्यूं, तुम्हारा क्या खयाल है ?'

लोगों ने कहा, 'आपका खयाल दुरुस्त है। हम आपसे अलग कैसे सोच सकते हैं! पर नाम तो आपको ही रखना पड़ेगा।'

पेशानी में बल डालकर काजी दाढ़ी को सहलाते कहने लगा, 'किसी रँग, वन-पाती या किसी पँखेरू का नाम बताओ।'

कि यकायक खुद काजी की जुबान से एक नाम उछला। जोर से बोला, 'कोयल, कोयल! मुझे तो यह नाम ठीक लगता है।'

तमाम लोगों ने एक साथ हामी भरी कि ऐसा शानदार नाम तो खुदा या ईश्वर भी नहीं सोच सकता। इस लाड़ली कुतिया के रंग और बोली की मिठास के सामने कोयल भी सात दफा पानी भरती है।

कुछ ही दिनों में सभी के मुँह से कोयल की बतलावन सुन-सुनकर कुतिया भी अपना नाम जान गयी। पर बेहद अचरज की बात कि उसके बाद उस बस्ती की बाग-बगीचियों से एक-एक करके तमाम कोयलें खुदा जाने कहाँ गायब हो गयीं, उसका आज दिन तक पता नहीं चला।

काजी की कुतिया को कोयल कहकर पुकारने पर लोगों के मुँह में शहद घुल जाता। शायद राम या खुदा को भी काजी की कुतिया के नसीब से रश्क हुआ होगा।

उन दिनों ठाकुर-ठेठरों की बजाय काजियों का दबदबा बहुत ज्यादा था। मजहब और भगवान तो अपनी-अपनी जगह बड़े थे ही, पर रिआया को काजी से बेहद डर लगता था। और उस डर की बदौलत छोटे-बड़े, बच्चे-बूढ़े सभी इन्सान-बन्दों के हलक और कानों में कोयल का नाम बस गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर निगोड़ी मौत न भक्ति से प्रसन्न होती है, न खुशामद से खुश होती है, न किसी का लिहाज करती है और न ही किसी से डरती है। 'धनकिये' के बहाने वह कोयल से भिड़ गयी। तड़फते-तड़फते आखिर तीसरे दिन मालिक की आँखों में टग-मग देखती वह अल्लाह को प्यारी हो गयी। काजी देखता रहा और उसकी लाड़ली कोयल बेजान होकर ठण्डी पड़ गयी।

काजी की नम आँखों पर नजर पड़ते ही सामने खड़े लोग बुक्का फाड़ कर रोने लगे। फिर तो छाती-माथा कूटने की ऐसी होड़ लगी कि आँखों से देखकर भी भरोसा न हो। हरेक की यही चेष्टा थी कि किसी तरह उसके रोने की आवाज काजी के कानों में अलग से पहुँचे।

होड़-होड़ में सबके गले तो जरूर बैठ गये, पर आँसुओं की झड़ी नहीं रुकी। अपने बदले लोगों को इस कदर रोते देखकर काजी के आँसू आप ही सूख गये। अब बेजान कोयल की माटी कैसे सुधरे—दफनाने से, जलाने से, जलदाग से या पवनदाग से?

लोगों ने पहले दफनाने की राय दी। पर काजी को यह गवारा नहीं हुआ। सर धुनते, भरे गले से बोला, 'नहीं, नहीं। बदरंग मिट्टी में अपनी कोयल को नहीं गाड़ सकता। दीमक लग जायेगी। माटी सड़ जायेगी।'

साथ ही वो न तो कोयल को चन्दन की लकड़ियों में दाग देने के लिए राजी हुआ और न पवनदाग या जलदाग के लिए। उसी तरह भरे गले से बोला कि जलाने से तो उसकी कोयल का नामोनिशान मिट जायेगा। पवनदाग से चण्डाल गिद्ध-कौवे और कुत्ते उसे नोच खायेंगे। जलदाग से वह बुरी तरह फूल जायेगी। वो अपने जीते-जी कोयल की ऐसी फजीहत हरगिज नहीं होने देगा।

तब बेजान कोयल की किरिया कैसे हो? कुछ सोचने पर काजी को एक नयी तरकीब सूझी कि रोगन-मसाला भरकर कोयल को सोने के पिंजरे में बरगद पर लटका दिया जाय, ताकि लोग कोयल के दरसन तो कर सकें। यह जुगत बताकर काजी ने लोगों से पूछा, 'क्यूँ, तुम्हारा क्या खयाल है?'

लोगों ने अदेर जवाब दिया, 'आपका खयाल दुरुस्त है। पर काम तो करने से होगा। कोयल के गुणों मुताबिक उसकी किरिया हो तो अपनी इज्जत है। ऐसे दरसन कहाँ मयस्सर हैं!'

उसके बाद उस बस्ती की नेक रिआया ने चुटकियों में सारा काम निबटा दिया। किसी को कुछ भी कहने-सुनने की जरूरत नहीं पड़ी। लोगों ने अपनी हैसियत से परे गहने ला-लाकर काजी के सामने ढेर लगा दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनार ने सोना गलाकर पिंजरा बनाया, तब तक माहिर कारीगरों ने रोगन-मसाला भरकर कोयल को वापस सी दिया। काजी डबडबायी आँखों से देखता रहा और मिनटों में काम पूरा हो गया। पिंजरे के ऊपर सोने की जंजीर और सोने का ही कड़ा। ऐसी नेक और वफादार रिआया को सात जनम भी नहीं भुलाया जा सकता। काजी की आँखों से झर्र-झर्र आँसू बहने लगे। फिर रिआया क्यूँ पीछे रहती! दो-दो आँखों से बीस-बीस आँखों का पानी बरसने लगा। पिंजरे को कन्धा देते ही रिआया फिर धाड़ मारकर रोने लगी।

आगे चार कन्धा देनेवालों के ऊपर सोने का पिंजरा। पीछे मुँह लटकाये काजी। फिर बाकी रिआया। काजी की नजर पड़ने से पहले-पहले कब कन्धा देनेवाले बदल जाते, कुछ पता नहीं चलता। एक अनहोनी बात भी सुनने में आयी कि उन आँसुओं के रेलों ने मिलकर एक नाले का रूप ले लिया। जितने मुँह, उतनी बातें। कई तो यहाँ तक हाँकते हैं कि उस नाले में पाँच-सात अबूझ बच्चे डूबकर मर गये।

बरगद से पिंजरा लटकाने के बाद जब काजी ने हाथ जोड़कर रिआया से सब्र करने की अर्ज की, तब कहीं बेचारी आँखों को राहत मिली। काजी को उसकी हवेली तक पहुँचाने के बाद लोग बड़ी मुश्किल से अपने-अपने घर जा पाये।

दूसरे दिन सूरज उगने से पहले ही लोग काजी के यहाँ मातमपुरसी के लिए उमड़ पड़े। पीछे रहने पर काजी के मन से दूरी का अन्देशा था। हुकूमत का अथाह और अदीठ दबदबा ऐसा ही होता है!

लोग-बाग कोयल की खूबियों का बखान करने लगे सो करते ही गये। किसी ने कहा कि एक दफा खाना खाते वक्त कोयल उसके साथ खाने लगी, तब भी उसे बिलकुल घिन नहीं हुई। कोई इन्सान-बन्दा उस जैसी सफाई रखकर तो दिखाये!

काजी बेइन्तहा खुश हुआ। पर औरों का जी यह बात सुनते ही कसैला हो गया। कोई किसी से पीछे नहीं रहना चाहता था। एक ने फौरन नयी बात उपजायी। कहने लगा, 'खुशामद तो मैं खुदा की भी नहीं करता।'

काजी उसे टोकते बोला, 'खुशामद से तो मुझे भी बेहद चिढ़ है।'

तब वो आदमी आगे कहने लगा, 'पर सच्ची बात तो कहनी ही पड़ती है। सभी जानते हैं कि मेरे निचले होंठ पर एक फोड़ा था। इलाज करवा-करवा कर थक गया, पर कोई फायदा नहीं हुआ। एक दिन इत्तफाक से कोयल ने अपनी नरम जबान से मेरा होंठ चाटा। तीसरे दिन तो जैसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फोड़ा था ही नहीं।'

यह मार्के की बात सुनकर, शामिल खिलानेवाले का मुँह उतर गया। वो कुछ और सोचे, तब तक दूसरे लोगों में कोयल के बखान करने की ऐसी अफरा-तफरी मची कि क्या कहना! किसी के तालू का नासूर कोयल के चाटने पर फौरन मिट गया। किसी की गंज कोयल की लार से सात ही दिनों में बालों से ढक गयी। किसी की पिंडुली का घोड़ादाद सत्तरह बरसों बाद कोयल की आँखों का गीड़ लगाने से ठीक हो गया। कोयल की पूँछ के परस से किसी का आधीसीसी सरदर्द जड़ से जाता रहा। कोयल के चाटने से किसी की खुजली लोप हो गयी तो किसी का कोढ़। कोयल की लार मिले काजल से किसी का मोतियाविन्द गायब हो गया तो कोयल के मल की पट्टी बाँधने से किसी के हाथ का सतपुड़ा जहाँ का तहाँ बैठ गया। हकीम-लुकमान भी न सोच सके जैसे इलाज पर इलाज लोगों के श्रीमुख से झड़ने लगे।

मालिक होते हुए भी खुद काजी को कोयल की ऐसी खूबियों का इल्म नहीं था। ये नयी खूबियाँ सुनकर कोयल की मौत का गम काफी कम हो गया। दाढ़ी पर हाथ फेरते कहने लगा, 'सर खपा-खपाकर परेशान हो गया, फिर भी एक बात मेरी समझ में नहीं आयी कि कोयल के मरने पर ही जब तुम्हारी यह हालत हो गयी तो मेरे मरने पर न जाने क्या होगा! यह सोचकर तो मेरा मरने को भी जी नहीं करता।'

सच्ची बात सुननेवाले और सच्ची बात कहनेवाले पास ही बैठे थे। फौरन बोले, 'आपका जी न करे तो जाने दीजिए। मरने को तो हमीं बहुत हैं। हमारे रहते इस नाकुछ काम के लिए आपकी बारी कैसे आ सकती है! आपके मरने की बात सुनकर तो अब हमारा जीने को भी मन नहीं करता। ऐसी बुरी बात आप सपने में भी न सोचें, वरना मौत से पहले ही हमारा दम निकल जायेगा। आपके वफात पाने पर तो सूरज भी ठण्डा होकर गिर जायेगा। सूरज के गिरने पर कहाँ बादल और कहाँ बरसात! बरसात के बिना कहाँ अनाज, कहाँ चारा और कहाँ दूध! सारी दुनिया तड़फ-तड़फकर मर जायेगी। नहीं, नहीं। आपके बिना तो एक पल भी नहीं चल सकता। हमारे मालिक होकर आपने यह क्या बेजा बात सोची!'

काजी हार मानते बोला, 'तुम लोगों की यही मरजी है तो मैं कभी भी ऐसी बात नहीं सोचूंगा। मैं तो यूँ ही तुम्हारा मन टटोल रहा था।'

इस तरह की बातों-चीतों के दरमियान कोयल का चालीसा निबटा, तब तक काजी का भतीजा एक बार भी उसके यहाँ नहीं आया। लोगों ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खूब कान भरे। खूब चुगलियाँ कीं। काजी के आग-ग्राग लग गयी। ऐसे नालायक भतीजे का तो वो मुंह भी नहीं देखना चाहता। अगर उसने भूल से भी यहाँ आने की गुस्ताखी की तो वो धक्के मारकर निकलवा देगा। एहसानफरामोशी की भी हद होती है!

मौत के कान होते हैं कि नहीं, इसका जवाब तो खुद विधाता के पास भी नहीं है, पर इत्तफाक की बात ऐसी बनी कि अगले ही बरस, ठीक कोयल की मौत के दिन और ठीक उसी वक्त काजी का दातुन करते-करते ही इन्तकाल हो गया। पर बेहद ताज्जुब की बात कि काजी के रुतबे माफिक बस्ती में कोई स्यापा नहीं बरपा। सूरज और चाँद तो दूर, सूखे पत्तों के अलावा बस्ती के दरख्तों का एक हरा पात तक नहीं गिरा। इसमें अनहोनी कैसी! एक दिन तो यह होना ही था। बिना सोचे ही हरेक के मन में एक-से खयाल उठने लगे। इन्सान, इन्सान होता है, जानवर तो नहीं। उसके सर पर न सींग होते हैं और न पीछे पूंछ। वो एक बेजोड़ समझदार पुतला है। उसके रीति-रिवाज एक-दूसरे से मिलते हैं। उसके छान-टपारे मिलते हैं। उसकी बोली मिलती है। उसकी अक्ल और उसके जज्बात मिलते हैं।

अहमक से अहमक भी यह अच्छी तरह जानता है कि मरने के बाद न राजा जिन्दा हो सकता है, न बादशाह। फिर बेचारे काजी की क्या औकात! मरा हुआ इन्सान न नाराज होता है, न खुश। न किसी को नुक्सान पहुँचाना उसके हाथ में है और न किसी को फायदा पहुंचाना। ये न होने पर जिन्दा इन्सान भी मरे के बराबर है। पत्थर से भी गया-गुजरा। पत्थर तो दीवार में चुना जाता है। फेंकने पर हथियार का काम देता है। औरों के सर फोड़ने में मददगार होता है। तब, मुर्दे और पत्थर का क्या मुकाबला!

यह फकत इन्सान की समझ का उजियारा कि वो उगते सूरज को पूजता है। ताकत का अदब करता है। मौत की बजाय हुकूमत के दबदबे से ज्यादा थर्राता है।

अब तो नया काजी ही समूची बस्ती का सिरमौर है। सुख-दुख का मालिक है। उसकी मरजी ही ताकत की सीमा है। अगर चाचा-भतीजे में अनबन और राड़ न होती तो ऊहापोह की कोई बात नहीं थी। बीती सो गयी। पर आगे का वक्त तो बिताये ही बीतेगा। इसकी फिक्र करना ही समझदार आदमी की निशानी है। गरज की मार के सामने न मजहब टिकता है, न देश।

अगर एक आदमी मरे काजी के जनाजे में न जाये तो क्या फर्क पड़ता है! बाकी बस्ती क्या कम है! बिना किसी उस्ताद या रहनुमा के कहे, सभी ने आप ही पल-भर में सारा हिसाब लगा लिया। कुतिया की पूछ तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काजी के पीछे थी। मालिक के कद्र-कायदे माफिक ही लोग कुत्ते का लिहाज करते हैं। कोयल के सुनहरे पिंजरे ने जब पहले भी लाज रखी तो अब क्यूं नहीं रखेगा! सोने जैसी चमक तो सूरज की भी नहीं होती। वाकई, यह अनमोल पिंजरा हाथ लगने पर नया काजी कितना खुश होगा! सहसा इस समझ की रोशनी होते ही हरेक उस बरगद की ओर भागा। देखते-देखते बरगद के बेशुमार पत्तों से भी ज्यादा बस्ती के बाशिन्दों की भीड़ इकट्ठी हो गयी। झटपट पिंजरा उतारकर कुतिया को बाहर फेंका। उसे रगड़-रगड़कर धोया। चमकाया। उतावली भीड़ के पाँवों से रौंदे जाने पर कुतिया की खाल तो फटनी ही थी। रोगन-मसाला धूल में रल-मिलकर एकमेक हो गया।

बिना किसी के कुछ बताये और अगवानी किये, भीड़ के युग-युगान्तर से आदी पैर आप ही नये काजी के घर की ओर मुड़ गये। सोचने का काम करनेवाले दिमाग को भी सोचने की जरूरत नहीं पड़ी।

किसी उलझन और गहरी सोच में डूबा नया काजी अचानक आदमियों की हलचल और शोर सुनकर बाहर आया। चमकते हुए सुनहरे पिंजरे पर नजर पड़ते ही उसकी आँखें और अक्ल दोनों चौंधियाँ गयीं। पलक झपकने से भी पहले उसका गुस्सा ठण्डा पड़ गया। 'जिन्दाबाद, जिन्दाबाद' की बुलन्द आवाजों से उसके कानों में इमरत घुलने लगा। ऐसी नेक और वफादार रिआया पर नाराज होना उसकी नादानी थी।

नमकहराम मक्खियों के अलावा इन्सान-बन्दे ने तो मरहूम काजी के घर की ओर मुंह ही नहीं किया। रोने-पीटने का दिखावा करतीं उन छिनाल बीवियों की किसी ने खैरियत तक नहीं पूछी। भला, ऐसी खरी रिआया झूठ कैसे बोल सकती है!

मरहूम काजी का नसीब कि उसके दाग का जिक्र शुरू करते ही कलम की स्याही सूख गयी। पर मुझे गुनी पाठकों की समझ पर पूरा भरोसा है। वे आप ही···।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनेकों हिटलर

वे पाँचों ही इन्सान थे। कोई उम्र में छोटा, कोई बड़ा। सब तीस और पचास के बीच में थे। सबसे बड़े के बालों में कहीं-कहीं सफेदी झाँकने लगी थी। बाकी सभी के बाल एकदम काले थे। चेहरे इन्सान जैसे ही थे। आँखों की जगह आँखें। नाक की जगह नाक। दाँतों की जगह दाँत। हाथ-पैरों की जगह हाथ-पैर। तांबई रंग। सबके सफेद पगड़ियाँ। कोई नयी। कोई पुरानी। लट्ठे के सफेद चोले और सफेद ही धोतियाँ। कानों में सोने की साँकलियाँ और मुरकियाँ। तीन के गले में काले डोरे से बँधी सोने की मूरतें। सभी इन्सान की बोली बोलते थे और इन्सान की ही चाल चलते थे।

वे सभी खेतिहर थे। खेतों में मेहनत करते थे और फसलें लेते थे। गेहूँ, जीरा, राई, सौंफ या मेथी वगैरह के जरिये सूखी धरती की कोख सब्ज करते थे। देश की आजादी के बाद बड़े किसानों के पौ-बारह हो गये हैं। आँखें मूंदकर धूल में बीज डालते हैं और दोनों हाथों से कमाई बीनते हैं।

उन पाँचों के हुलिये से ऐसा लगता था, जैसे उन्होंने किसी औरत की कोख से जनम न लेकर धरती की कोख से जनम लिया हो। करील, आक, खेजड़ी और बबूल की तरह धीरे-धीरे बढ़े और फले हों। जैसे कुदरत की वन-पाती ही उनकी बिरादरी हो।

वे पाँचों चचेरे भाई थे। साझे में ट्रेक्टर खरीदने के लिए गाँव से जोधपुर जा रहे थे। चोले के नीचे बंडियों की जेबों में नोट भरे हुए थे। सबके चेहरों पर उनकी गर्मी साफ दिख रही थी। दौलत की जड़ें वैसे तो कलेजे की गहराई में होती हैं, पर उसके अदीठ फलों की आब चेहरों पर झलकती है।

बस से उतरते ही वे जेबों पर हाथ फेरते हुए सीधे ट्रेक्टर की तय-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुदा दुकान की ओर, तेज कदमों से चल पड़े। सड़क पर पाँव पड़ते ही अदेर वापस उठ जाते। उनके वश में होता तो वे काली-कलूटी सड़क पर पाँव रखते ही नहीं।

पहली सीढ़ी चढ़ते ही काँच के पार दुकान के मालिक का सर दिख पड़ा। चमकती चाँद पर नजर पड़ते ही सभी एक साथ चहके, 'किस्मत की बात! खुद ओमजी यहाँ मौजूद हैं।'

दरवाजा उघाड़ते ही बर्फ-सी ठण्डी हवा का झोंका आया। पाँचों ने एक साथ गहरी आहें भरीं। एक बोला, 'स्वर्ग के मजे तो ये ले रहे हैं! हम तो जानवरों की जिन्दगी गुजारते हैं।'

ओमजी मुस्कराते हुए पतले और रस-भीने सुर में बोले, 'तुम्हारी खेती-बाड़ी से मेरी दुकान की अदल-बदल करना चाहो तो मेरी मनाही नहीं है।'

'देखो, पछताओगे।'

'देखी जायेगी।'

बड़ा भाई बोला, 'शुरू में ही क्या पछतावे की बात लेकर बैठ गये! यह तो अपने-अपने करम और अपने-अपने काम हैं और उन्हीं को शोभा देते हैं।'

गद्दीदार कुरसियों पर बैठने पर उन्हें ऐसा लगा, जैसे वे बैठे ही न हों। यकीन करने के लिए गद्दियों को तीन-चार बार हाथों से दबाकर देखा, तब कहीं इत्मीनान हुआ। फिर कुरसियों के हत्थों पर कुहनियाँ टेककर आराम से बैठ गये।

दुआ-सलाम के बाद एक भाई बोला, 'आखिर जैसे-तैसे हमारा भी नम्बर आया। आज ही ट्रेक्टर दे दो। बढ़िया महूरत देखकर घर से चले हैं। दिन ढले वापस गाँव पहुँचना है। हम समझेंगे कि ट्रेक्टर आपने इनायत ही किया।'

'यहाँ तो हर कोई इसी तरह ताकीद करता हुआ आता है। दो बरस बारी का इन्तजार किया तो अब दो दिन भी सब्र नहीं कर सकते?'

छोटा भाई बोला, 'दो बरस तो बहुत, अब तो दो घण्टे भी सब्र नहीं होता। औरतें तो हमारे घर से निकलते ही ट्रेक्टर बधाने के लिए दरवाजे पर खड़ी हो गयी होंगी। सौ-दो-सौ ज्यादा चाहे लग जायें, पर ट्रेक्टर तो आपको आज ही देना पड़ेगा।'

उनकी उतावली देखकर ओमजी मुस्कराये। कहने लगे, 'मैं तुम गाँव वालों की आदत जानता हूँ। ट्रेक्टर कल ही तैयार कर दिया था। जब मरजी हो, ले जाओ।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाँचों की खुशी और आनन्द का ओर-छोर न रहा। जैसे सारी दुनिया का राज्य हाथ लग गया हो। मझला भाई ओमजी की चमकती चाँद की ओर देखकर बोला, 'बड़भागी के हाथ-भर का ललाट है, फिर कैसी ढील! जीते रहो।'

सब भाई ओमजी को पहचानते थे। अपनी बारी की पूछताछ के लिए वे दो-दो, तीन-तीन मर्तबा यहाँ आ चुके थे। धन्धे की जरूरत मुताबिक अच्छी-खासी पहचान थी। सरल स्वभाव। मीठी बोली। हँस-मुख चेहरा। अंगों की बनावट से ऐसा लगता था गोया ट्रेक्टर के पुरजों की नाईं वे भी किसी कारखाने में बनाये गये हों। मशीनों की तरह उनका शरीर तराशा गया हो। चाँद की जगह चाँद। जिसके तीन ओर खिचड़ी बालों की झालर। गले की जगह गला। जरूरत-माफिक मुस्कान।

सामने बैठे पाँचों भाइयों के चेहरे देखते हुए बोले, 'अब तो तसल्ली हुई! बस के धक्के खाते आये हो, कुछ सुस्ता लो। आराम करो। ठण्डा पानी पीओ।'

इस मान-मनुहार के साथ ही उन्होंने घण्टी बजायी। अदेर एक आदमी भीतर आया। लस्सी लाने का आदेश दिया। उसके बाहर निकलने पर ओमजी ने कहा, 'तुम्हारे घर के दूध-दही का मुकाबला तो नहीं कर सकते, पर और मनुहार भी क्या करें! पानी जैसा दूध। मिचलाता दही। यहाँ तो फकत ठण्डी हवा, ठण्डा पानी, नरम गद्दियाँ और बिजली की चकाचौंध है। मिलावट के ठाट-बाट और नकल की धूम है। पैसों के बदले भी न अनाज मिलता है, न मसाले। खाने-पीने की मनुहार करते भी शर्म आती है।'

एक भाई हँसकर बोला, 'अगर सच्चे मन से मनुहार करना चाहें तो बहुत-सी बढ़िया-बढ़िया चीजें हैं। स्वर्ग के देवताओं को डाह हो जैसी। वरना लस्सी से तो कलेजा ठण्डा करना है ही।'

इशारा एकदम साफ था। ओमजी जोर से हँसते बोले, 'यहाँ दुकान पर यह सब नहीं चलता। शाम तक ठहरो तो घर पर खातिर कर सकता हूँ।'

'आपके कहते ही हमारी खातिर तो हो गयी। इतनी मेहर ही काफी है। ट्रेक्टर कहाँ है, जरा देख तो लें!'

'लस्सी आने दो। पीकर चलते हैं।'

'लस्सी भागी थोड़े ही जाती है! ट्रेक्टर देखने के बाद कलेजा ज्यादा ठण्डा होगा। ज्यादा मीठी लगेगी।'

ओमजी खुद साथ चले। वर्कशाप में ट्रेक्टर तैयार खड़ा था। लाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुर्ख 'मैसी फरगुसन' ट्रेक्टर। जैसे बीरबहूटियों का ढेर लगा हो। उस पर नजर पड़ते ही पाँचों का ग्रन्तस रँग गया।

ट्रेक्टर पर हाथ फेर, ग्रच्छी तरह देख-दाखकर सब वापस दफ्तर में ग्राये। लस्सी की गिलासें मेज पर ढकी हुई रखी थीं।

कुरसी पर बैठकर ग्रोमजी ने कहा, 'जमाना कितना बदल गया! पहले तो गाँव में एक ही ठाकुर होता था, पर ग्रब तो तुम जैसे सभी बड़े किसान ठाकुर हो गये। ग्राजादी की सारी मौज तुम्हीं लूट रहे हो। जहाँ पहले, लोग छाछ को भी तरसते थे, वहाँ ग्रब 'बढ़िया-बढ़िया चीजें' पानी की तरह बरती जाती हैं। हल ग्रौर फावड़ा तक खरीदना मुश्किल था, वहाँ ग्रब हजारों रुपयों का ट्रेक्टर लेते वक्त सोचते ही नहीं! यारो, ग्राजादी का मजा जितना लेना हो, ले लेना। मन में मत रखना।'

चौथा भाई बीच में ही बोला, 'क्या खाक मजे हैं! ग्रनाज खाकर बड़ी मुश्किल से पेट भरते हैं। हजारों पीढ़ियों तक मुसीबत ग्रौर तंगी सही है। ग्राज तुम्हें कानी का काजल भी नहीं सुहाता! भला हो गांधी-बाबा का, जो हमें भी इन्सान की जिन्दगी मिली। वरना गाँवों में बिजली की मोटर, ट्रेक्टर ग्रौर रेडियो का क्या काम!'

'पर हमें तो ग्रब कागज के नोट खाकर पेट भरना पड़ेगा। चन्द ही दिनों में हमें ग्रनाज मिलना दूभर हो जायेगा।'

'ग्राप हमें ट्रेक्टर दिये जाग्रो, हम ग्रापको अनाज दिये जायेंगे। चाहो तो सही करा लो।'

बड़ा भाई बोला, 'कोई किसी को कुछ नहीं देता। भैंस अपने पेट के लिए चारा खाती है। तमाम माथापच्चियाँ ग्रपनी-अपनी गरज के लिए हैं। कोई अपने मतलब से ट्रेक्टर बेचता है ग्रौर कोई ग्रपने मतलब से ट्रेक्टर खरीदता है।'

ग्रपने कानों से ग्रपने ही बोल सुनकर बड़े भाई को लगा कि बात कुछ उलटी पड़ गयी। वापस सँवारने की चेष्टा करते कहने लगा, 'फिर भी, आपने बात तो ठीक कही। बापू की मेहरबानी से ग्राजादी के बाद हमें भी थोड़ा सुख मिला। घर-घर ग्रनाज के ढेर, दूध-दही की इफरात···।'

बीच ही में खल्वाट हिलाते ग्रोमजी बोले, 'ना, घर-घर की बात झूठी। हाँ, तुम जैसे इने-गिने बड़े किसानों की जरूर मनचाही हुई है।'

छोटा भाई कुछ पढ़ा-लिखा था। बोला, 'मनचाही तो क्या हुई, पर दुख का फन्दा कुछ ढीला हुग्रा। उससे जरा ग्राराम का साँस ग्राया। सुख तो चाँद की तरह ग्रभी बहुत दूर है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मझला भाई बेकार की बकवास खत्म करते कहने लगा, 'चाँद के लिए तरसने से क्या फायदा ! मतलब की बात करो। जेबों से नोट निकालकर ओमजी को दो और अपनी चीजें देख-भालकर काबिज करो। वक्त तो बातों में भी बीतता है।'

जैसे अचानक कोई भूली बात याद आ गयी हो। अदेर जेबों में हाथ घुसे। मेज पर नोटों का ढेर लग गया। पचास घोड़ों की ताकत के विलायती ट्रेक्टर के साथ ट्रॉली, तवियाँ, हल और हेरा। साठ हजार का सौदा था।

इधर ओमजी ने नोट गिन-गिनाकर दराज के हवाले किये और उधर पाँचों भाई एक साथ उठे और अपनी चीजें काबिज करने के लिए वर्कशॉप की ओर चल पड़े। बड़े भाई के कहने पर छोटा भाई मालाएँ, गुलाल, गुड़ और रम लेने के लिए बाजार की तरफ रवाना हुआ। फिर चारों भाई जुटे सो हमालों के साथ मिलकर फटाफट ट्रॉली भर ली। वे अपने काम से फारिग हुए तब तक छोटा भाई भी आ गया। खुशी-खुशी गुड़ बाँटा। मालाओं से ट्रेक्टर का सिंगार किया। उसके सामने बीचो-बीच स्वस्तिक चितेरा। तीनों छोटे भाई अच्छे ड्राइवर थे।

जल्दी मचाते हुए भी काफी दिन ढल गया था। सूरज पच्छिम की ओट में छुपने की तैयारी करने लगा था। अजमेर-जयपुर सड़क के चुंगी-नाके से आगे सड़क खाली थी। खूब चौड़ी। फरफराती मालाओं से सजा ट्रेक्टर धरर-धरर चल रहा था। उस पर बैठे पाँचों भाइयों को ऐसा लगा, जैसे सड़क की जगह आकाश उनके ट्रेक्टर तले बिछ गया हो। और सामने क्षितिज तक फैली धरती उन्हें नारियल से भी छोटी लगी—एकदम छोटी। डूबता सूरज उनके ट्रेक्टर को देखने के लिए जैसे एक ठौर रुप गया हो। सर्र-सर्र करती हवाएँ मानो उनकी वलैयाँ ले रही हों। सारी दुनिया का आनन्द उनके दिल में हिलोरें भरने लगा। सोने की मूरतों का परस पाकर ढलते सूरज की किरणें निहाल हो गयीं। जब दरख्तों और झाड़ियों में दुबके परिन्दे ट्रेक्टर की धरधराहट सुनकर इधर-उधर उड़ते, तब उन्हें ऐसा लगता गोया उनके अन्तस का आनन्द इन पँखेरुओं के बहाने इधर-उधर उड़ रहा हो।

कि सहसा सूँ-सूँ की तीखी आवाज उनके कानों में पड़ी। चौंककर देखा। फैले डैनों को स्थिर किये एक बाज नीचे उतरा और देखते-देखते झाड़ी की ओट में दुबके एक खरगोश के बच्चे को अपने पंजों में दबोच कर वापस उड़ गया। पाँचों भाइयों ने मुस्कराकर एक-दूसरे की ओर देखा। बड़ा भाई बोला, 'लेख हरगिज नहीं टलते। इसी झाड़ी के पास,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी बाज के पंजों से इसकी मौत लिखी हुई थी।'

बाज के अदीठ होने तक वे उसे देखते रहे। ट्रेक्टर की घरघराहट जारी थी। उस समय ट्रेक्टर एक पुल के बीच से गुजर रहा था। चौथा भाई बोला, 'जल्दी करते-करते भी काफी देर हो गयी। फिर भी शुभ-महूरत का योग अच्छा रहा। गाँव से चलते समय शकुन भी बढ़िया हुए थे।'

सामने कुछ चढ़ाई थी। उसे पार करने पर उन्हें दो-एक खेत दूर एक साइकिल-सवार जाता हुआ नजर आया। और उधर उस साइकिल-सवार को कुछ घरघराहट सुनायी दी तो उसने पीछे देखा---ट्रेक्टर आ रहा है। उसने फौरन वापस मुड़कर तेज पैडल मारे। ट्रेक्टर वालों से भी उसकी वह तेजी छुपी न रही। दूर बढ़ते ही वे इसे ताड़ गये। ट्रेक्टर चलाता भाई बोला, 'पागल कहीं का! पैडल तेज मारने से क्या होगा! ट्रेक्टर से आगे कहाँ जायेगा!'

उसने रफ्तार कुछ तेज कर दी। ट्रेक्टर की घरघराहट भी बढ़ गयी। साइकिल-सवार भी इसे जान गया। उसने और जल्दी-जल्दी पैडल मारे। कुछ दूरी और बढ़ गयी।

दोनों के बीच बढ़ती हुई दूरी ट्रेक्टर चलानेवाले से बर्दाश्त नहीं हुई। उसने रफ्तार थोड़ी और बढ़ा दी। बोला, 'माँ का खसम, आखिर तो थकेगा। थोड़ी देर खुश होता है तो होने दो।'

मझला भाई बोला, 'ये नंगे सिरवाले छोकरे होते ही उलटी खोपड़ी के हैं।'

घरघराता ट्रेक्टर सड़क को समेटते दौड़ रहा था। रंग-बिरंगी मालाएँ और तेजी से फरफराने लगीं। बड़ा भाई बोला, 'आप ही थक जायेगा। बेकार रेस क्यूं खींचता है! ट्रेक्टर के सामने बेचारी साइकिल की क्या औकात!'

चीं-चीं की एक तीखी आवाज उनके कानों में पड़ी। बिल में घुसते हुए एक चूहे को चील ने झपट लिया। वह चींचाहट उस मरते हुए चूहे की थी। थोड़ी ही देर में वह चींचाहट इस दुनिया से लोप हो गयी।

सूरज आधा डूब गया था। अब वो भी रात-भर के लिए ओझल हो जायेगा। डूबते सूरज के चारों ओर गुलाल ही गुलाल फैल गया। गोया वो ट्रेक्टर की सुर्खी का ही अक्स हो।

चारों ने डूबते सूरज से नजर हटाकर सामने देखा---अरे, दूरी तो बढ़ती ही जा रही है! सभी के मन में एक साथ एक बात खटकी---दो सौ रुपल्ली की साइकिल और साठ हजार का ट्रेक्टर! यह भी कोई होड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है ! चूहा हाथी से भिड़ने चला है !

दूसरा भाई बोला, 'फेंफड़े फटने से मर गया तो घरवालों से भी दूरी पड़ जायेगी ।'

चौथा भाई बोला, 'घरवालों से राम जाने कब दूरी पड़ेगी, पर हमारे ट्रैक्टर से तो दूरी बढ़ती ही जा रही है ।'

छोटे भाई ने थोड़ी रफ्तार और बढ़ा दी । ट्रक्टर नया है । पूरी रेस खींचना ठीक नहीं ।

साइकिलवाले ने पीछे मुड़कर देखा । सचमुच वो काफी आगे निकल आया था । जोश में और तेजी से पैडल मारे । पैर फिरकी की तरह घूमने लगे । पहाड़ से उतरती नदी की तरह साइकिल सड़क पर फिसल रही थी । जैसे कोई बवण्डर साइकिल में बदल गया हो या वो व्यक्ति बवण्डर पर सवार हो गया हो ।

ट्रेक्टर पर बैठे सभी भाइयों ने गौर से देखा । वाकई, दूरी काफी बढ़ गयी थी । और रफ्ता-रफ्ता बढ़ती ही जा रही थी । मालाओं से सजा विलायती ट्रेक्टर ! साठ हजार की कीमत का ! और यह दो कौड़ी की साइकिल ! और यह कॉलेज का छोरा ! नंगे सर ! निकर पहने !

हवा का एक तेज थपेड़ा लगा तो एक माला का धागा टूट गया । वह चौतरफ फरफराने लगी । कभी दुहरी हो जाती, कभी सीधी । एक माला और टूट गयी ।

ट्रेक्टर चलाते छोटे भाई को फरफराती मालाएँ ऐसी लगीं गोया उसके कलेजे पर कँटीली बेंतें पड़ रही हों । उसने दाँत पीसकर पूरी रेस खींच दी । तोप से छूटे गोले की तरह ट्रेक्टर दौड़ने लगा । हवा में चारों ओर धरधराहट गूंजने लगी । ट्रेक्टर तले बिछा आकाश ऊपर, और ऊपर उठ गया ।

फासला कुछ कम हुआ । और कम हुआ । हाँ, अब तो काफी कम हो गया ।

नारियल की तरह छोटी दिखती दुनिया अब फकत दो बिन्दुओं में सिमट गयी थी । ट्रेक्टर और साइकिल के अलावा उन्हें दुनिया की किसी चीज का खयाल नहीं था । साठ हजार का ट्रेक्टर और यह दो कौड़ी का चरखा !

इत्तफाक की बात कि एक साथ दो फौजी गाड़ियाँ सामने से आयीं तो ट्रेक्टर की रफ्तार कम करनी पड़ी । साइकिल-सवार मौका देखकर काफी आगे निकल गया ।

मझला भाई बोला, 'ये शहरी छोकरे कितने नालायक होते हैं !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गाड़ियों का फायदा उठाकर फौरन आगे निकल गया।'

वड़ा भाई बोला, 'बेचारा थोड़ी देर गुमान करता है तो करने दो। आखिर कहाँ तक जायेगा! कभी तो दम फूलेगा! पगला, बेकार अपनी जवानी गँवा रहा है। नसें ढीली पड़ गयीं तो औरत के काम का भी नहीं रहेगा। जवानी कहीं साइकिल पर उतारने के लिए होती है!'

सड़क खाली मिलते ही छोटे भाई ने फिर पूरी रेस खींच दी। गोया बारूद को पलीता दिखाया हो। हवा को पकड़ने की चेष्टा में ट्रेक्टर आँधी बन गया था। रफ्ता-रफ्ता फासला घटता गया।

ट्रेक्टर की घरघराहट नजदीक सुनी तो उसने पीछे मुड़कर देखा। गुस्से से झट वापस मुड़ा। फिरकी की तरह उसके पैर तेजी से घूमने लगे। वे गति में बदल गये थे। वहाँ गति थी—सिर्फ गति।

अब उसे कुछ पसीना होने लगा था। वो राजस्थान का सबसे तेज साइकिल चलानेवाला था। हाँ, वो भी एक इन्सान था। बाँहों की जगह बाँहें। पैरों की जगह पैर। साँसों की जगह साँस। सपनों की जगह सपने।

पिछले दो महीनों से वो रोजाना साठ-सत्तर मील साइकिल चलाने का रियाज कर रहा था। अगले महीने अखिल भारतीय साइकिल दौड़ में अगवानी रहा तो शायद पेरिस जाने की बारी आ सकती है। आज इस होड़ में उसके दम-खम का पता चल जायेगा। उसने दांत भींचकर अपनी ताकत से भी ज्यादा पैडल मारे।

साइकिल चलाने की लकब और तर्ज देखकर उसके साथ पढ़ती एक लड़की ने खुद उसके सामने ब्याह का प्रस्ताव रखा, पर उससे जाहिराना तौर पर 'हाँ' या 'ना' कोई जवाब देते नहीं बना था। कुछ दिन मिलते रहने, बातचीत करने और एक-दूसरे के अन्तस को अच्छी तरह पहचानने के बाद आप ही सारी बातें साफ हो गयीं। अखिल भारतीय साइकिल दौड़ से फारिग होने पर ब्याह करने का वादा कर लिया। वो तंगी में पला था। वह भर-पूरे घर में बड़ी हुई थी। पर दोनों एक-दूसरे पर जान देते थे। एक दाँत रोटी टूटती थी। ब्याह की अनमोल रात उनकी सेज पर चाँद उतरेगा!

सहसा प्रियतमा का चेहरा उसकी आँखों के आगे झलका। जैसे वह हवा बनकर आज की यह होड़ देख रही हो। उसकी ताकत दस गुना बढ़ गयी। पाँवों के पंख लग गये। भला; प्रियतमा की अदीठ नजर से ज्यादा इस बेजान ट्रेक्टर की क्या हस्ती! फासला बढ़ने लगा सो बढ़ता ही गया। बढ़ता ही गया। देखते-देखते फासला पहले से भी डेढ़ा हो गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ट्रेक्टर की रेस पूरी खींची हुई थीं। इससे ज्यादा उनका कोई वश नहीं था। उनका मन ऐंठने लगा। चौतरफ सरसराती हवा घरघराहट के चक्कर में फँस गयी। सारी दुनिया का राज्य देखते-देखते छिन गया।

तोप के गोले की नाईं ट्रेक्टर दौड़ रहा था। नंगे सर वाले साइकिल-सवार के पाँवों में जैसे बवण्डर ने शरण ले ली हो। प्रियतमा का चेहरा उसकी आँखों के आगे जगमगा रहा था। फासला बढ़ता गया। न उसके फेंफड़े फटे और न उसका साँस टूटा।

आधी मालाएँ टूट कर नीचे गिर गयीं। पर वे कर ही क्या सकते थे!

पर अदीठ के जोर और जोग का किसी को कोई इल्म नहीं था। बवण्डर की गति वने पाँव अचानक खाली घूमने लगे। साइकिल की चेन उतर गयी थी। फिर भी वो घबराया नहीं। ट्रेक्टर की रफ्तार का कूता उसके पाँवों ने आप ही कर लिया था। प्रियतमा के चेहरे चौतरफ दीप-दीप कर रहे थे। इस ताकत से बढ़कर दुनिया की कोई ताकत नहीं है। वो फौरन साइकिल रोक, लपककर नीचे उतरा। साइकिल, स्टेण्ड पर खड़ी करके इतमीनान से चेन चढ़ाने लगा।

धीरे-धीरे दूरी कम होती गयी। ट्रेक्टर की घरघराहट और पाँचों भाइयों की खुशी हवा में समा नहीं रही थी। भला, जोग के जोर का मुकाबला कौन कर सकता है! साठ हजार रुपयों की लाज जैसे-तैसे बच गयी। इस तरह के झूठे सन्तोष से कोई अपने मन को बहलाये तो भला उसे कोन रोक सकता है!

ट्रेक्टर की घरघराहट एकदम नजदीक आ गयी। चेन चढ़ाने की हड़बड़ाहट में उलटी अधिक देर हो रही थी। देखते-देखते ट्रेक्टर बिलकुल करीब आ गया। पर उसे अपनी ताकत और प्रियतमा के अदीठ चेहरे का पूरा भरोसा था।

घरघराता ट्रेक्टर पास आकर आगे निकल गया। पाँचों ही भाई इन्सान की बोली में एक साथ कुछ चिल्लाये। उस वक्त कौवों का एक झुण्ड काँव-काँव करते सर से गुजर गया। ट्रेक्टर की घरघराहट और कौवों की काँव-काँव के दरमियान इन्सान की बोली ठीक से सुनायी नहीं पड़ी।

वो चेन चढ़ाकर साइकिल पर सवार हुआ तब तक ट्रेक्टर दो-एक खेत आगे निकल गया था। चारों भाइयों ने पीछे मुड़कर देखा। सोचने लगे कि साला चेन चढ़ाने का बहाना कर रहा था! शायद होड़ करने का हौसला अब नहीं रहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर वो साइकिल पर चढ़ते ही फिर बवण्डर बन गया। और फांसला रफ्ता-रफ्ता कम होने लगा, सो होता ही गया।

हलके-हलके अँधेरे में कुदरत दफ्न होने लगी थी। चारों भाई आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। यह तो फिर आगे निकल जायेगा!

रेस पूरी खींची हुई थी। ट्रेक्टर की गति से ज्यादा उनका कोई जोर नहीं था। वे दाँत पीसने लगे।

ट्रेक्टर की सुर्खी में साँवली झाँईं घुलने लगी थी। छोटे भाई ने पूछा, 'वो हरामी कहाँ आ रहा है?'

चारों भाई दाँत पीसते बोले, 'लगता है वो फिर आगे निकल जायेगा।'

'अब तो इसका बाप भी नहीं निकल सकता।' यह बात कहते ही छोटे भाई के कानों में बाज की सूँ-सूँ और चूहे की चीं-चीं बारी-बारी से गूँजने लगी। कुछ देर बाद एक कान में चींचाहट और दूसरे कान में सूँसाहट की आवाज आने लगी सो रुकी ही नहीं। लगता है, समूचा ब्रह्माण्ड इस गूँज से चिर जायेगा। ट्रेक्टर की घरघराहट भी उस गूँज में डूब गयी।

और उधर उस साइकिल-सवार शहरी छोकरे की आँखों के सामने एक दूसरा ही ब्रह्माण्ड जगमगा रहा था। ठौर-ठौर प्रियतमा के चेहरे झिलमिलाने लगे--इने-गिने तारों में, दरख्तों और झाड़ियों में, टीलों में, सामने जा रहे ट्रेक्टर में, ट्रॉली में। आज उसकी परख हो जानी है। अगर ट्रेक्टर से आगे निकल गया तो जल्द ही ब्याह कर लेगा। वह मान जाये तो कल। नहीं तो परसों। तरसों। जब भी वह चाहे।

अब आगे निकलने में देर ही क्या है! तमाम दुनिया उसके हथलेवे की मुट्ठी में समा जायेगी। आँखों के आगे सुनहरे सपनों का ताना-बाना बुना जाने लगा।

और उधर बाज की सूँसाहट और चूहे की चींचाहट में हवा के रेशे-रेशे का दम घुटने लगा था।

चारों भाई दाँत किटकिटाते बोले, 'इस नंगे सरवाले दोगले ने तो आज अपनी पगड़ियों को धूल चटा दी।'

फिर उन्होंने छोटे भाई को एक नयी जुगत बतायी, 'पास आते ही ट्रेक्टर उसकी ओर घुमा देना। वो हरामी भी क्या सोचेगा कि…!'

बाज की सूँसाहट और चूहे की चींचाहट को इन्सान की जबान मिल गयी।

और उधर उसकी प्रियतमा के चेहरों का उजाला भी काफी बढ़ गया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। एक-एक चेहरा स्पष्ट दिखने लगा।

अब तो ट्रॉली के बराबर पहुँच गया। बाज की सूँसाहट और चूहे की चींचाहट ने ड्राइवर के सर में दुबककर खामोशी अख्तियार कर ली।

बवण्डर के वेग से दौड़ती साइकिल सहसा ट्रेक्टर से टकरायी। आँखों के सामने बिजली कौंधी। फिर दीप-दीप करता एक-एक चेहरा बुझने लगा। ट्रेक्टर के पिछले टायर ने नंगे सर का कचूमर निकाल दिया। तमाम चेहरे एक साथ बुझ गये।

हवा में फिर इन्सान की बोली खदबदायी, 'माँ का खसम, ट्रेक्टर से आगे निकलने की जुरअत कर रहा था!'

छोटा भाई पढ़ा-लिखा था। फौरन एक तदबीर सोच ली। कुछ आगे जाकर ट्रेक्टर रोका। थैले से बोतल निकालते बोला, 'बेचारे को थोड़ी रम तो पिलायें!'

फिर इन्सान के कदमों से आगे बढ़ा। साइकिलवाले के पास जाकर बोतल का ढक खोला। उसके मुँह में आधी बोतल दारू उँड़ेली। फिर उसके सर के पास बोतल फोड़कर वह दौड़ता हुआ ट्रेक्टर पर चढ़ गया। घरघराता ट्रेक्टर आगे बढ़ गया। दरवाजे पर खड़ी औरतें बाट जोह रही होंगी। घर पहुँचने पर वे कितनी खुश होंगी!

हवा में इन्सान की हँसी का ठहाका गूँजा।

और उधर सड़क पर एक चित्र किसी ऊँचे पारखी की बाट जोह रहा था। लाल खून के बीच सफेद मगज। बोतल के टुकड़े। एक आदमी की लाश। सफेद निकर। फीरोजी बनियान। ठौर-ठौर खून के धब्बे। सपनों का कचूमर। मोह-प्रीत के रेले। चित्र कोई बुरा नहीं था!

पर...पर दोनों महायुद्धों के चित्र, हिरोशिमा-नागासाकी के चित्र, वियतनाम के चित्र, बँगला-देश के चित्र...इस नाकुछ चित्र से बहुत-बहुत बड़े थे। बहुत-बहुत मोहक। दिलकश। यह चित्र उनका मुकाबला तो नहीं कर सकता, पर गँवार हाथों से बना यह चित्र भी कोई खास बुरा नहीं था!

हाँ, वे पाँचों ही इन्सान थे। इन्सान की बोली बोलते थे और इन्सान की ही चाल चलते थे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजीनामा

बढ़ती उम्र के साथ-साथ जिन्दगी की घटनाएँ समय की राख तले दबती जाती हैं, पर कभी-कभी ठेठ बचपन की कोई बात सारी उम्र नहीं बुझती, राख के नीचे ज्यों-की-त्यों जगमग करती मिल जाती है। आज तो मैं एक लेखक की मर्यादा निभा रहा हूँ, पर उन दिनों कोरा-मोरा एक पाठक ही था। पढ़ने लायक कोई किताब हाथ लगी नहीं कि गटागट आँखों से पी जाता। शायद, नौवीं कक्षा में पढ़ता होऊँगा, तब की बात है। मैं खुद तो घर पर ही रहता था, पर संगी-साथियों से मिलने की उमंग में दूसरे-तीसरे दिन चारण होस्टल का चक्कर काट आता। स्वभाव तो सभी लड़कों का अलग-अलग होता है, पर खिनावड़ी गाँव का सेंसकरण एक बेढब स्वभाव तथा निराली सूरत का लड़का था। मतीरे की तरह गोल सफाचट खोपड़ी। लम्बी चोटी। थुल-थुल शरीर। कील-मुँहासों से भरा गोल चेहरा। मिची-मिची आँखें, मानो उस्तरे से चीरा देकर अन्दर बिठायी गयी हों। किसी से भी अधिक मेल-मुलाकात नहीं—एकलखोरा। बतलाने पर भी मुश्किल से बोलता। अपने ही दन्द-फन्द में उलझा हुआ। मन करता तभी एक चमचमाता काँच लेकर मुँह के सामने रख लेता और हाथों से इशारे करते हुए अपने प्रतिबिम्ब से देर तक बातें करता रहता। संगी-साथी जब-तब चिढ़ाते, पर वो किसी की कोई परवाह ही नहीं करता, मानो पत्थर से कहा गया हो। मन-ही-मन मन्द-मन्द मुस्कराता रहता।

सभी कमरों में अक्सर उसकी चर्चा चलती रहती थी। सुनते-सुनते मेरे पास काफी मजेदार मसाला इकट्ठा होता गया। वो काँच में टुकुर-टुकुर इस प्रकार अपनी सूरत देखता मानो वो कोई दूसरा ही लड़का हो और इस तरह निशंक बातें करता गोया किसी मित्र से बातें कर रहा हो।

एक दफा फटी हुई चुनरी के चिथड़े से रंजी झाड़कर टेबल पर काँच रखा। सामने कुर्सी पर बैठकर कुछ देर अपना प्रतिबिम्ब निहारता रहा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर होंठ मुलमुलाते पूछा, 'बता, इस बार तिमाही में फेल कैसे हुआ ?'

मुँह उतारकर धीरे-से जवाब दिया, 'मैं अकेला ही तो फेल नहीं हुआ। कक्षा में आधे से ज्यादा लड़के फेल हुए हैं।' उसने आँखें तरेरकर तीखे स्वर में फटकार बतायी, 'दूसरे गये भाड़ में, तुझे उनसे क्या लेना-देना ! अपनी हैसियत के अनुसार चलना चाहिए। तुझे मालूम नहीं, घर में कितनी तंगी है। भर-पेट खाना न खाकर घरवाले तुझे पढ़ाते हैं। और जनाब को कोई परवाह ही नहीं।'

'परचे बहुत कठिन आये।'

'क्या तेरे अकेले के लिए ही कठिन आये ? बाकी लड़के कैसे पास हुए ?'

'मेहनत तो काफी करता हूँ। इम्तहान के नाम से ही जूड़ी चढ़ती है। जो आता है, वही भूल जाता हूँ।'

'शहर में आकर बातें बनाना तो खूब सीख गया। ढंग से मन लगाकर पढ़ाई करेगा तो तू ही सुख पायेगा। कान खोलकर साफ सुन ले, आगे कोई गलती की तो तू तेरी जाने।'

एक बार वो दो-तीन घड़ी दिन-चढ़े देर से उठा तो उसे बहुत बुरा लगा। जल्दी-जल्दी बिना साफ किये ही काँच सामने रखा और दाँत पीसते पूछा, 'रात को इतनी देर से क्यूं आया ? जरूर सिनेमा देखने गया होगा !'

'जरा देर-से आया नहीं कि आपको झट सिनेमा का शक होता है।'

'तो सच बता, तू कहाँ गया था ?'

माथे में बल डाले कुछ देर सोचता रहा। फिर बोला, 'घोड़ों के चौक मौसीजी से साँझ को मिलने गया था। मैं तो खूब इन्कार करता रहा, पर उन्होंने बिना ब्यालू किये आने ही नहीं दिया। फिर मुझे थोड़ी ऊँघ आ गयी। जगते ही सीधा होस्टल की तरफ भागा। विश्वास न हो तो···!'

'तुझ पर और विश्वास ! मैंने सब पता कर लिया है। करणीदान और रामबख्श के साथ हजरत चारभुजा टाकीज में पधारे थे। तुझे कितनी बार समझाया, इन लफंगों का साथ मत किया कर ! मेरे सामने झूठ सँवारना चाहता है ? तू कहे तो उन्हें रूबरू बुलाकर पूछूं !'

यह बात सुनते ही काँचवाली छाया का मुँह उतर गया। आँखें नीची करके इधर-उधर झाँकने लगा। फिर दोनों हाथों से कान पकड़कर कहने लगा, 'कल भारी भूल हो गयी। अब कभी गलती नहीं होगी। आज माफ कर दो !'

'माफ करने पर तो उलटा और ज्यादा बिगड़ेगा। एक बार ठीक से मरम्मत हो जाये तो फिर कई दिनों तक निश्चिन्त। निर्लज्ज को लाज-शर्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से वास्ता ही नहीं। गाँव के सगे-सम्बन्धी दुश्मनों से भी बदतर हैं। उनका बस चले तो गाँव ही छुड़ा दें। घरवालों की सब आस तुझ पर टिकी है। ज्यों-त्यों वकालत पास कर ले तो घरवालों की तकलीफें सार्थक हों। वरना सब की आस पर पाला पड़ेगा सो तो पड़ेगा ही, पर तेरी गत भी कम नहीं बिगड़ेगी। वो ही हँसिया, वही घास। वही कुल्हाड़ी, वही लकड़ी। वो ही हल, वही धूप। वो ही पसीना, वही लू और वही झोंपड़ी। ठीक मन लगाकर नहीं पढ़ा तो तेरे काँटे तेरे ही चुभेंगे।'

फिर मिची आँखें फाड़कर काँच के सामने देखता, 'भला, इसमें मुँह फुलाने की क्या बात है? भलाई की बात भी कड़वी लगती है। ये दिन तो कुलाँचें भरते निकल जायेंगे। फिर बेहद मुसीबतें उठानी पड़ेंगी।'

अरे! काँच में यह गधे का चेहरा कहाँ से उभर आया? कहीं पीछे कोई गधा तो नहीं खड़ा है? उसने झिझककर पीछे देखा—कुछ भी तो नहीं। फिर सामने मुँह करने पर अपना ही चेहरा साफ दिखता। जगह-जगह कीलें-ही-कीलें। ओह! कुत्ते की तरह ये कान इतने लम्बे कैसे हो गये? आँखें बन्द करके वापस खोलता तो कान फिर वैसे ही हो जाते। कान की लौ पकड़कर बार-बार जोर से खींचता। चिट्टी अँगुली से कान का मैल निकालता।

एक बार देशी ठर्रा पीने से मिचरी आँखों में भी रंग आ गया। काँच में देखा तो शक्ल अनजानी-सी लगी। नजर गड़ाकर पूछा, 'तू कौन है भाई?'

'तू है, वो ही मैं हूँ।'

'मैं हूँ, वो ही तू है?'

'हाँ।'

'फिर मैंने पहचाना क्यूँ नहीं?'

'वो तो तू जाने। शायद दारू पीने से आँखों की रंगत बदल गयी हो!'

'क्या तूने फिर दारू पी?'

'मैंने नहीं पी, तूने पी!'

उसके बाद दोनों हाथों से सर पकड़े वो थोड़ी देर बैठा रहा। फिर मुश्किल से हिम्मत कर के उसने काँच की तरफ देखा। सर पर ये दो सींग कैसे उग आये? आगे देखने की हिम्मत नहीं हुई। कुर्सी पर से झट उठ खड़ा हुआ। अपने हाथ से छुपायी हुई बीड़ी-माचिस लाकर वापस कुर्सी पर बैठ गया। उलटी बीड़ी सुलगाकर लगते ही दो-तीन कश खींचे। धुएँ के छल्लों से काँच की चमक धुंधली पड़ गयी। इस बार काँच में बकरे का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेहरा नजर आया। लटकते हुए कान। सर पर दो नुकीले सींग। कहीं इस काँच की रंगत तो नहीं बदल गयी! वो झुँझलाकर खाट पर लेट गया। फिर उसने काफी दिनों तक काँच नहीं देखा।

एक बार गुस्से में तमतमाकर उसने कमरे का ताला खोला। ठोकर से दरवाजा उघाड़, बस्ते को खाट पर पटक दिया। काँच सीधा कर के सामने कुर्सी पर बैठ गया। काँच पर गर्द-ही-गर्द जमी थी। अकस्मात उस गर्द के भीतर से एक चेहरा प्रकट हुआ। उस पर नजर पड़ते ही वो कहने लगा, 'आजकल साहबजादे छोकरियों के पीछे भटकने लगे हैं। अब तो पूरी बात ही बिगड़ गयी। जो भी बात हो मुझे साफ-साफ बता दे, वरना आज तेरी शामत है।'

'सरकारी सड़क मेरे अकेले के पट्टे नहीं है। बहुत-से आदमी इधर-उधर चलते रहते हैं। मैं किस-किस का ध्यान रखूं!'

'तूने खास ध्यान रखकर पीछा किया, तभी मुझे इतना गुस्सा आया। पहले तो कभी मैंने ऐसा उलाहना नहीं दिया। बेशर्म, तूने यह नयी विद्या कब सीखी? घरवालों ने कुछ भरोसा कर के यहाँ भेजा और तूने ये गुल खिलाये! हरामखोर, अब भी तू मुझे मुँह दिखाता है?'

'ऐसी बात है तो आप मुँह देखते ही क्यूं हैं? मैं तो डर के मारे सामने ही नहीं आना चाहता, पर आप न मानें तो मैं क्या कर सकता हूँ?'

'मुँहजोर कहीं का! मेरे सामने जबान चलाता है! खबरदार, ज्यादा बकवास की तो जबान खींच लूंगा!'

यह बात कहकर वो गुस्से से होंठ चबाने लगा। फिर दो-तीन मर्तबा गमछा झटककर काँच की धूल झाड़ी। चेहरा मानो उलटा उसे ही आँखें दिखाने लगा हो। चोरी और सीनाजोरी!

'थोड़ी-बहुत भी शर्म-हया हो तो चुल्लू-भर पानी में डूब मर। घर-वाले तो छाछ-दलिया खाकर जैसे-तैसे जून पूरी करते हैं। जनाब के लिए घी भेजते हैं! गोंद के लड्डू भेजते हैं! उनके सपनों के साथ दगा कर के तू छोकरियों के पीछे डोलता फिरता है?'

'मेरे भी तो कुछ सपने होंगे?'

'तेरे फिर कैसे क्या सपने हैं?'

'सपनों जैसे सपने। मेरी उम्र के मुताबिक सपने।'

'फिर घरवालों के सपनों का क्या होगा?'

'घरवाले जानें।'

'तू कुछ नहीं जानता?'

'नहीं, मैं तो अपने सपनों के अलावा दूसरी कोई बात नहीं जानता।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'चण्डाल, तू इतनी वातें कब सीख गया ?'

'ये वातें आप ही आती हैं, कहीं सीखने की जरूरत नहीं।'

'बकवास बन्द करता है कि लगाऊँ दो-चार झापड़ !'

यह बात कहते ही उसे गुस्सा आ गया। तड़ातड़ पाँच-सातेक लाफे रसीद कर दिये। गाल लाल हो गये। आँखें छलछला आयीं। आगे शक्ल देखने का साहस नहीं हुआ। थोड़ी देर सर झुकाकर बैठा रहा। फिर गर्दन उठाकर मिची-मिची आँखों से काँच की ओर देखा। अभी तक गाल लाल थे। तीन-चारेक कीलें फूट गयी थीं। आखिर हिम्मत हारते हुए अन्तिम धमकी दी—'अब कभी छोकरियों के पीछे डोलते देखा तो गर्दन मरोड़ दूंगा।'

कुछ उत्तर नहीं मिला।

आँखों में आँखें डालकर वो अपना प्रतिविम्ब तब तक देखता रहा जब तक कि शीशेवाला चेहरा धीरे-धीरे लुप्त नहीं हो गया।

कि अचानक वो झिझककर खड़ा हो गया। बड़बड़ाते कहने लगा, 'यह कैसी अनहोनी बात हुई ? काँच में अपना चेहरा ही नहीं दिखायी देता !'

फिर वो बावले की तरह दौड़ता हुआ होस्टल के बाहर गया। हल-वाई की दुकान से एक दही-थड़ी और एक लड्डू लाया।

वापस कुर्सी पर बैठ काँच में देखा तो चेहरा साफ दिखायी दिया। गालों की ललाई काफी कम हो गयी थी।

'अब रिसाना छोड़। ले यह मिठाई खा ले।'

'मैं कुछ नहीं खाऊँगा, मुझे मारा क्यूं ?'

'अभी कहाँ मारा है, बदमाशी करेगा तो और मारूँगा।'

'फिर यह झूठा दुलार क्यूं ? हाथ न थके तब तक मारे जाओ।'

'ले खा ले, ज्यादा जिद मत कर, नहीं तो और मार पड़ेगी।'

काँचवाला प्रतिबिम्ब मुँह फुलाकर बोला, 'हरगिज नहीं खाऊँगा। जो करना हो सो कर लो।'

'अरे, मूरखों के बादशाह, मैं तेरे भले की खातिर ही इतनी मगजमारी कर रहा हूँ।'

'तेरा-मेरा भला कौन-सा अलग है ?'

'क्या, तू मुझसे अलग नहीं है ?'

'नहीं, अपन दोनों एक ही हैं। फकत यह शीशा ही मुसीबत की जड़ है। मेरा कहा मान, मैं तुझे खुश करने के लिए ही यह मिठाई लाया हूँ। ले खा ले।'

'पहले इस काँच के टुकड़े-टुकड़े कर के बाहर फेंक दीजिए फिर मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रापका कहा कभी नहीं टालूँगा।'

'वचन देता है ?'

'हाँ, वचन देता हूँ।'

फिर राम जाने उसके सर पर क्या खब्त सवार हुई कि कपड़े धोने की मोगरी से उस काँच के टुकड़े-टुकड़े कर दिये ग्रौर गली में फेंककर खुशी-खुशी वह मिठाई खा ली। उसके वाद जब कभी मिठाई खाने का मौका ग्राया, उसने कभी हील-हुज्जत नहीं की। उसी दिन से दोनों के वीच एक ऐसा ही पुख्ता राजीनामा हो गया था।

ग्रौर ग्राज उसी राजीनामे का यह करिश्मा है कि एक अकिंचन थानेदार होते हुए भी लोग-वाग उसके पास पाँच लाख रुपये की पूँजी कूतते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी-अपनी खुशबू

पानी के सहारे मछलियाँ जीती हैं और मछलियों के सहारे मछुए। मीठे पानी की झील के किनारे एक मछुए की झोंपड़ी थी। झोंपड़ी के सामने लिपे हुए आँगन में तरह-तरह की मछलियाँ सूखती रहती थीं। झोंपड़ी के ऊपर भी मछलियाँ और कोने-चबूतरे पर भी मछलियाँ। चौतरफ हवा में मिचली-मिचली दुर्गन्ध होते हुए भी उस घरवाले उस बदबू के आदी हो चुके थे। मछलियों की मिचलाहट के लिए उनकी नाक की ग्रन्थियाँ मर चुकी थीं।

टोकरी में ताजी मछलियाँ लेकर मछुवन पास के नगर में बेचने के लिए जाती थी। एक दफा चौमासे में मछलियों की टोकरी सर पर उठाकर जब मछुवन चलने लगी तब मछुए ने उसे सतर्क करते कहा, 'आज बरखा की रंगत बड़ी बेढब लग रही है। वापस जल्दी आना। मुझे नदी आने का अन्देशा है।'

फिर मुस्कराते हुए मछुआ आगे कहने लगा, 'बहती नदी में हरगिज पाँव मत रखना। मेरी जिन्दगी बिगड़ जायेगी। तीसरा घर बड़ी मुश्किल से बसेगा।'

मछुवन पीछे मुड़कर बोली, 'मुझे भी अपनी जान प्यारी है।'

दूध से जला छाछ को भी फूंक-फूंककर पीता है—कुछ ऐसी ही अतिरिक्त सावचेती मछुए की हिदायत में थी। पिछले साल पहली घरवाली इसी नदी में डूबकर मर गयी थी। घुटनों तक पानी के भरोसे अन्दर उतर गयी सो मंझधार में तीव्र वेग के थपेड़ों से पैरों की जमीन छूट गयी। खूब हाथ-पाँव मारे पर कोई बस नहीं चला।

मछुओं को हवा, उमस और बरखा की जबरदस्त पहचान होती है। नदी पार कर नगर में घुसते ही पानी बरसने लगा। मछुवन के मन में बेहद हड़बड़ी मची। भीगते-भीगते सारी मछलियाँ जैसे-तैसे बेच डालीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वापस बेतहाशा भागती हुई नदी के किनारे आयी, पर नदी विकट रूप से बह रही थी। देखने मात्र से ही डर लगे, ऐसा उत्कट वेग! पहाड़ की ढलान से पछाड़ खाता पानी नदी के बीच आते ही मचलने लगता था।

पति की बात का खयाल आते ही मछुवन फौरन वापस मुड़ गयी। अब जाये तो कहाँ जाये! अनजानी बस्ती! कहाँ रात गुजारे! संयोग की बात कि थोड़ी दूर जाने पर सामने से एक मालन आती दिखायी दी। पास में राजा का सुन्दर बगीचा था। घर का काम-काज निवटाकर वह बगीचे की निगरानी के लिए जा रही थी। कई मर्तबा दोनों का राह में आमना-सामना होता था, पर फकत दुआ-सलाम करके आगे बढ़ जातीं। काम की जल्दी। धन्धे की हड़बड़ी।

मछुवन के रंग-ढंग देखते ही मालन बिना कहे उसकी परेशानी का कारण समझ गयी। बोली, 'नदी आ गयी तो क्या हुआ! चल मेरे साथ। बहुत जगह है।'

मछुवन उसका एहसान मानते हुए तुरन्त उसके साथ चल पड़ी।

बरखा काफी धीमी हो गयी थी। थोड़ी दूर चलने के उपरान्त मालन ने मछुवन को बुरी तरह भीगे हुए देखा तो कहने लगी, 'ठण्ड लग रही हो तो मेरी बरसाती ले ले।'

मछुवन मुस्कराते बोली, 'हमें भी मछलियों की तरह पानी से ठण्ड नहीं लगती। हम तो बरखा और पानी के आदी हैं।'

घरेलू बातें करती हुई दोनों बगीचे के नजदीक पहुँचीं। अचानक तीन-चार दफा जोर से साँस खींचकर मछुवन ने पूछा, 'यह कैसी गन्ध आ रही है?'

मालन ने सरल भाव से जवाब दिया, 'बगीचे की।'

'बगीचे की?'

मालन मोद भरे सुर में राजा के बगीचे की प्रशंसा करते कहने लगी, 'इसमें अचरज की क्या बात है? ऐसा शानदार बगीचा तो सौ-सौ कोस में भी नहीं मिलेगा। आस-पास के सभी रजवाड़े आये दिन मेरे बगीचे की कलमें और दाबें मँगाते हैं। चमेली की, मोगरे की, केवड़े की, चम्पा की, गुलाब की……!'

मछुवन ने नाक भींचकर बीच ही में पूछा, 'तू रात को यहीं सोती है?'

भाँति-भाँति के फूलों की खुशबू के गुमान में खोयी मालन ने तुरन्त जवाब दिया, 'और कहाँ सोऊँगी? इस बगीचे के अलावा मुझे दूसरी जगह नींद ही नहीं आती। यहाँ की तो मिट्टी में भी खुशबू घुली हुई है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेरी इच्छा हो तो तू भी पाँच-पचीस पौधे ले जाना। फूल देखने पर मेरी याद तो आयेगी।'

साँस रोकते हुए मछुवन ने बड़ी कठिनाई से मुँह खोला, 'फूलों के विना क्या याद नहीं आयेगी ?'

बरखा बिल्कुल थम गयी थी। बरसाती उतारते हुए मालन उदारता से बोली, 'तुझ से फूल दूर थोड़े ही हैं ! इतना दुराव-संकोच भी किस काम का !'

बगीचे के फाटक को खोलते मालन आगे कहने लगी, 'मुझे राजाजी की पूरी छूट है। तुझे फूलों की टोकरी भरकर दूँ तब भी मुझे उलाहना नहीं देंगे।'

बगीचे के भीतर पैर रखते ही मछुवन का सर फटने लगा। नाक और मुँह पर ओढ़नी का पल्लू रखते हुए धीरे-से बोली, 'पर अपन उलाहने जैसा काम ही क्यूँ करें ? मैं फूलों का क्या करूँगी ?'

मालन आश्चर्य प्रकट करते कहने लगी, 'क्या करेगी ? तुझे अभी मेरे फूलों का अन्दाज नहीं है। बड़े-बड़े राव-उमराव इस बगीचे के एक फूल की खातिर तरसते हैं ! एक दफा हाथ में लेने से तीन दिन तक खुशबू नहीं छूटती।'

मछुवन का जी बुरी तरह मिचलाने लगा। इस बदबू में मालन कैसे साँस लेती है ? मछुवन को तो यहाँ नींद आनी ही मुश्किल है। उसके नथुने तो मानो झुलस गये हों। ऐसा बदबूदार बगीचा राजाजी के किस काम का ? मछुवन के मन में इस तरह के कई बुलबुले उठे, पर प्रफुल्लित मालन से कुछ भी पूछने की हिम्मत नहीं हुई।

कोठरी का दरवाजा खोलकर मालन ने मछुवन के भीगे कपड़ों पर हाथ फेरा और बोली, 'तू अन्दर बैठ। मैं अभी पास की कोठरी से तेरे लिए दूसरे कपड़े लेकर आती हूँ।'

मछुवन के बार-बार मना करने के बावजूद वह नहीं मानी। कोठरी में घुसने पर थोड़ी-बहुत मिचलाहट कम हुई। गर्व से फूली हुई मालन कपड़ों के साथ फूल भी ले आयी। मछुवन के सामने फूल करते ही उसका जी बुरी तरह मितलाने लगा। कै होते-होते बची।

अचानक मालन ने दो-तीन मर्तबा जोर-जोर से साँस लेते हुए पूछा, 'यह क्या गन्धा रहा है ? इस कोठरी में ऐसी मिचलाहट तो कभी नहीं आयी ?'

इधर-उधर टोह लेती हुई मालन की नजर कोने में रखी टोकरी पर अटकी। वो तुरन्त मिचलाहट का कारण समझ गयी। झुँझलाहट दरसाते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोली, 'यह खाली टोकरी भीतर क्यूँ ले आयी ? मछलियों की दुर्गन्ध से मेरा तो सर फटा जा रहा है !'

मछुवन क्या जवाब देती ? उसकी दुविधा ताड़कर मालन ने खुद अपने हाथों टोकरी उठाकर बाहर रख दी। हाथ को सूँघा तो वैसी ही मिचलाहट ! रेत से रगड़-रगड़कर उसने दो-तीन दफा हाथ धोये।

ब्यालू करने के लिए मछुवन बड़ी मुश्किल से मानी। अगर कै हो गयी तो कितना भद्दा लगेगा।

ब्यालू से निवृत्त होकर मालन जब पास की कोठरी में सोने गयी तब कहीं मछुवन की जान-में-जान आयी। नहीं तो सारी रात जगना पड़ता।

उधर मछुवन से दूर होने पर मालन ने खैर मनायी। मछुवन के शरीर से कितनी बुरी मिचलाहट आ रही थी ! पर लिहाज के कारण कुछ कहा नहीं।

और उधर मछुवन ने भी मालन का कम लिहाज नहीं रखा था। घड़ी-डेढ़-घड़ी तक तो जैसे-तैसे कोठरी में करवटें बदलती रही। पर आखिर धीरे-धीरे पंजों के बल बाहर निकली। अपनी टोकरी लेकर वापस आयी। मुँह पर मछलियों की खाली टोकरी रखते ही उसका जी हल्का हो गया। अब तो वह मरकर भी किसी बगीचे में रातवासे के लिए तैयार नहीं होगी। आज फँसी, वही बहुत है। थोड़ी देर बाद टोकरी की भीनी खुशबू के फलस्वरूप वो खर्राटे भरने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूजौ कबीर

ये भारी-भरकम पोथे, कबिरा जाने जितने थोथे। ये धरम-करम के पथ सारे, मल-कीचड़ के ही गलियारे। ये तीरथ-वरत के धाम, जिनसे अल्लाह बचाये राम। यह भाग-भरम की शोभा, तोवा रे वापू तोवा। ये ऊँच-नीच की बातें, अनन्त कजियारी रातें। ये राव-रंक के जाले, सरासर झूठे और काले। सूरज उगने पर ही मिटती रात, दिशा-दिशा में स्वर्णिम प्रभात। तो वक्त के मुताविक यह वात बरसों पुरानी है कि हरियाली के बीच और हवा के झूले पर एक गाँव बसा हुआ था। जहाँ धरम-करम के साँचे में ढले नितनेमी इन्सानों की बस्ती, पर एक झोंपड़ी टली हुई। उस झोंपड़ी में बसनेवाले व्यक्ति का नाम तो कुछ और ही था, पर गाँव व इलाके के लोग उसे व्यंग व ताने के बहाने कबीर के नाम से ही बतलाते थे। अलाव के चारों ओर बैठकर कभी-कभी उस बस्ती के लोग पुरजोर शब्दों में कहते थे कि किसी औरत की कोख से जन्म न लेकर यह कबीर कुकुरमुत्ते या नाग-छतरी की तरह आप-ही-आप जमीन से उगा होगा। इन्सान की औलाद होता तो इन्सान-माफिक बातें करता। सूने आकाश में कोई बदली का टुकड़ा सहसा प्रकट हो जाता है, वैसे ही एक दिन वो कबीर अचीता उस बस्ती में प्रकट हुआ। तभी से जुलाहे का काम तो बहुत उम्दा करता, पर बातें एकदम उलटी, सिरफिरी व वेहूदी करता था। कद-काठी और चेहरा तो फबता और सुन्दर, पर बातें ऊटपटाँग। कैसे और कहाँ से अनमापे की सूझती, सो वो ही जाने। हाथ का पूरा उस्ताद। पर उलटी खोपड़ी का। जैसे घुंघराले व काले बाल, वैसी ही टेढ़ी-मेढ़ी व काली स्याह बातें।

कालीन, शाल और कम्वलों में वेल-बूंटे, झाड़-झंखाड़ व फूल-पत्ते ऐसे बुनता था गोया सचमुच के हों। उसके हाथों बुने कालीन के फूलों पर भँवरे भ्रम से मँडराते थे और कभी पके फूलों के भुलावे में तोते चोंच मारते थे। अगर हाथों की कारीगरी के समान उसमें अक्ल भी होती तो फिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहना ही क्या ! न कबीर की सनक व बेवकूफी की सीमा थी और न बस्ती के लोगों की चिकचिक का कोई छोर था।

कबीर के हुनर की बातें हवा में घुली हुई थीं। समूची रियासत में उसकी शोहरत थी। एक दफा ऐसा इत्तफाक हुआ कि देश के मालिक राजा ने राजकुमारी के साथ गाँव के तालाव-किनारे पड़ाव डाला। एक सौ एक घोड़ों का लशकर। घने बरगद की छाँव तले पसीने से सराबोर घोड़ों को वहुत देर बाद विश्राम मिला। सुरंगी जाजम बिछी। भनक पड़ते ही समूचा गाँव राजा और राजकुमारी के दर्शन की खातिर हाजिर हुआ। राजा ने खुशी-खुशी जनता को दर्शन दिये। सहसा राजकुमारी के कानों में कबीर के नाम की फुसफुसाहट सुनायी पड़ी। राजकुमारी ने छलकते उत्साह से पूछा, 'क्या कबीर का गाँव यही है?'

लोगों ने जवाब दिया कि गाँव तो मालिकों का है, पर कबीर यहीं रहता है।

राजकुमारी का उत्साह गले में समाया नहीं। वेहद ललक से फिर पूछा, 'वाकई?'

बस्ती के लोगों ने गर्दन हिलाकर 'हाँ' की। और 'हाँ' के साथ ही राजकुमारी फौरन दौड़कर राजा के पास पहुँची। खुशी के फूल बरसाती बोली, 'इत्तफाक की बात कि अपन ने कबीर के गाँव में अचीता पड़ाव डाला। आपकी इजाजत हो तो मैं उसकी कारीगरी देखने के लिए जाऊँ।'

राजकुमारी के मुँह से यह नादानी की बात सुनकर राजा कुछ देर तक टग-मग उसके चेहरे की ओर देखता रहा। अपनी इकलौती बेटी का राजा बहुत मन रखता था। और बेटी भी मन रखने लायक थी। बरसात के पानी की माफिक पवित्र और अनछुआ उसका अन्तस। जैसा अकथनीय रूप, वैसा ही अकथनीय स्वभाव। अथाह सागर-सी अक्ल। निर्मल नजर और ताजे दूध-सी मुस्कराहट। राजा के मौन को कुरेदकर फिर पूछा, 'जाऊँ?'

राजा मुस्कराते बोला, 'तू बेकार क्यूँ तकलीफ उठाती है, मैं उसे यहीं बुला लेता हूँ।'

इस आश्वासन के उपरान्त राजा ने, हाथ जोड़े ठाकुर की ओर मुखातब होकर पूछा, 'लगता है, कबीर को मेरे आने की खबर नहीं हुई है। वरना अपनी कारीगरी दिखाने की खातिर वो सबसे पहले आता।'

ठाकुर के मन में पुराना कसैलापन भरा था। अच्छा मौका हाथ लगा। बेझिझक जवाब देते कहने लगा, 'आपसे क्या अर्ज करूँ अन्नदाता,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस कबीर का दिमाग आसमान में चढ़ा है। आपके बुलाने पर भी आ जाये तो गनीमत है।'

राजा तो राजा ही होता है। जन-जन का मालिक। सर का मुकुट। किसकी मजाल जो राजा के आदेश को टाल सके! मौत अगर बख्शे तो मौत की मरजी, पर राजा की तो सपने में भी ऐसी मरजी नहीं होती। राजा के गुमान में गोया तकुआ घोंप दिया गया हो। पुतलियों की रंगत बदल गयी। गरजते हुए ठाकुर पर ही बरस पड़ा, 'ठाकुर, तुम्हारी अक्ल और जबान तो ठिकाने है? किसके सामने क्या बकते हो, कुछ होश भी है? सरकार के आदेश से बेपरवाह नालायक तुम्हारे यहाँ फल-फूल रहे हैं और तुम ठाकुर कहलाते हो?'

ठाकुर के रोम-रोम में कँपकँपी घुस गयी। घोड़े पर सवार होकर मौत आयी, उसमें कसर नहीं। अटकते हुए बमुश्किल बोला गया, 'अन्नदाता, मेरी तो औकात ही क्या, यह पागल कबीर तो भगवान की भी नहीं सुनता!'

राजकुमारी की खुशी पर पाला पड़ गया। बात सीमा से बाहर निकलती दिखती है। वापस कैसे समेटी जायेगी! राजकुमारी को भी पहली मर्तबा अपनी अक्ल का पेंदा उघड़ता नजर आया। तब भी उसके मन में अक्ल से परे अटूट धीरज था। अब एक पल की भी देरी होने से राजा के गुमान का साँप हरगिज वापस बाँबी में नहीं घुसेगा। बीन के बोल सुनकर शायद रीझ जाये। राजा के करीब आकर बोली, 'आपसे बड़ा कला का पारखी दूसरा कौन है? आपके मुँह से ही तो मैंने सीख की यह बात सुनी कि कलाकारों की आदतें कुछ सनकी होती हैं। उनकी कद्र तो जाननेवाला ही जानता है। आप ही तो फरमा रहे थे कि कलाकार विधाता के साक्षात अवतार होते हैं! लाखों-करोड़ों दिखती आँखों में उनको पहचाननेवाली एक दीठ बड़ी मुश्किल से मिलती है। ये बेअक्ल ठाकुर बेचारे दारू व ऐश के अलावा कुछ जानते भी तो नहीं!'

उफनते दूध पर मानो ठण्डे पानी का छींटा लगा हो! राजा मुस्कराने की कोशिश करते कहने लगा, 'मेरी लाड़ली बेटी, तेरी समझ के आगे हार माननी पड़ती है······!'

राजकुमारी बीच में ही जल्दी से बोली, 'यह जैसी-तैसी समझ आपकी ही बख्शी हुई है। मेरी तो बिसात ही क्या?'

राजकुमारी के गालों पर हाथ फिराते राजा कहने लगा, 'तेरी बिसात का वजन मैं जानता हूँ। तेरा स्वभाव व अन्तस तो ऐसा है कि बेटा-बेटी दोनों की कमी पूरी होती है। अगर तू वक्त पर बात नहीं सँभालती तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे हाथों कबीर की मौत थी। यह किस तरह का अबूझ है कि राजा के इज्जत-कायदे भी नहीं समझता ! चल, तेरे साथ मैं भी चलता हूँ। तारीफ सुन-सुनकर कान पक गये। बेचारे कारीगर का वक्त जाया करना ठीक नहीं। जनता तो राजा की औलाद के समान होती है। जब वहाँ चलना ही है तो देरी करने से क्या फायदा !'

यह बात कहकर राजा आप ही जिस ओर मुँह था, उधर ही चल पड़ा। ठाकुर हाथ जोड़कर लपकते हुए सामने आया और बोला, 'गरीब-नवाज, इधर पधारिए। कबीर की झोंपड़ी का यह रास्ता है।'

राजा ने मुड़कर ताज्जुब से पूछा, 'झोंपड़ी ! ऐसे मशहूर कलाकार के झोंपड़ी ! अपने भले-बुरे का तुम्हें होश भी है ! इन लच्छनों से यह ठिकाना ज्यादा नहीं टिकने का !'

जूड़ी के बुखार के मरीज की तरह ठाकुर थर-थर काँपने लगा। टूटते सुर में बोला, 'अन्नदाता, आँखों से देखे बगैर इस सिड़ी की करतूतों पर यकीन ही नहीं हो सकता।'

राजकुमारी बात को खत्म करती-सी बोलीं, 'पर अब देर ही क्या है ? जिसकी जैसी करतूत होगी, सामने आ जायेगी।'

बेटी की अक्ल पर अभिमान करता राजा बोला, 'हाँ, अब देर ही क्या है !'

पचासेक आदमियों का जत्था राजा के पीछे-पीछे कबीर की झोंपड़ी पर पहुँचा। नये 'खारिये' से छायी कच्ची झोंपड़ी। मुरड़-गोबर से लिपी। माँडनों से चित्रित आँगन। देवता खेलें जैसा साफ-सुथरा। बैठकी पर बैठा कबीर करघा चला रहा था। गुलाबी ऊन का ताना तना हुआ था। सुरंगे तानों के बीच सटासट नली चल रही थी। दरवाजे पर लोगों की हलचल सुनी तो उसने पीछे मुड़कर देखा। गाँव-मालिक के साथ एक अजनबी प्रौढ़ आदमी। रेशमी अचकन। सोने का मुकुट। बाँकी मूँछें। कमर से लटकी सोने के म्यान की तलवार। नजदीक ही एक खूबसूरत लड़की खड़ी थी। न जवानी अंगों में समा रही थी और न रूप। उस रूप के परस से सुरंगी पोशाक की रौनक दिप-दिप कर रही थी। मृगनैनी की बड़ी-बड़ी आँखों से समझदारी की आब साफ झलक रही थी।

अपने होंठों पर पवित्र मुस्कराहट छितराते कबीर झटपट उठ खड़ा हुआ। हैरत भरी निगाहों से लोगों के चेहरे बारी-बारी से देख रहा था कि ठाकुर झुँझलाहट दरसाते कहने लगा, 'बावले की तरह टग-मग क्या देख रहा है ? तेरे अहोभाग्य कि देश के मालिक, तीन लोक के नाथ खुद तेरे घर पधारे हैं, तेरी कारीगरी देखने की खातिर। अब उल्लू की तरह आँखें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या फाड़ रहा है ? कालीन या शाल हो तो नजर कर !'

राजकुमारी ने कारीगरी से पहले नजर भरकर कारीगर को देखा। ताँबई रंग। काले भुजंग वाल और काली भुजंग दाढ़ी। सफेद अँगरखी। सफेद ही धोती, घुटनों तक। घुँघराली, घजी रोमावली ! बर्फजात धवल बत्तीसी। शीतल मुस्कराहट। अंगों से परे मोहक रूप। राजकुमारी को इन्सान के रूप में पहली दफा असली इन्सान नजर आया।

कबीर एक अबूझ बालक की मानिन्द कहने लगा, 'आपने तो यहाँ तक आने की तकलीफ की, पर मैं तो जैसा-तैसा फकत जुलाहे का काम ही जानता हूँ। आप कारीगरी मानें तो आपकी मरजी। पर मैं तो इस काम के सिवाय किसी दूसरे काम के लायक नहीं हूँ।'

कि सहसा राजकुमारी को भँवरों की भनभनाहट सुनायी दी। एक गुलाब के पौधे पर फूलों के ऊपर भँवरे मँडरा रहे थे। पर यह पौधा तो धरती से अधर होते हुए भी हरा-भरा था। इस माजरे पर यकीन करने के लिए वह दौड़कर पौधे के करीब पहुँची। ऊपर हाथ फेरने पर मालूम हुआ कि यह तो बुनाई का पौधा है ! आगे अलगनी पर चार-पाँचेक कम्बल व शाल लटक रहे थे। राजा और राजकुमारी ने अपनी सुधबुध बिसराकर खुद उन्हें खोला। तहें खुलते ही एक-एक चित्र की बनावट में उनकी नजर उलझ गयी—काली घटा में, गोया वाकई बिजली चमचमा रही हो। कहीं आँधी का अन्धड़ तो कहीं बवण्डर की घूमर। कहीं इन्द्रधनुष तो कहीं रेगिस्तान की वल खाती लहरें। कहीं हरे करील पर लटके लाल ढालू ही ढालू !

शिकारी राजा को विलों की पहचान थी। एक कालीन की तह खुलते ही हैरानी से पूछा, 'अरे, यह लोमड़ी के बिल की तरह क्या है ? भीतर लोमड़ी तो छुपी हुई नहीं है ?'

कबीर मुस्कराते बोला, 'आपने पहचान तो खूब की, वास्तव में यह लोमड़ी का विल ही है।'

राजकुमारी शहद-घुले सुर में बोली, 'पर लोमड़ी के बिल में तुम्हें ऐसी क्या खूबसूरती नजर आयी ?'

कबीर के मन-लायक सवाल था। उत्साह से जवाब दिया, 'कुदरत की हर वस्तु एक दूसरी से बढ़कर है। न कोई उन्नीस और न कोई बीस।'

राजकुमारी के रूप को यह बात काफी बुरी लगी। भद्दा सो भद्दा, सुन्दर सो सुन्दर। दोनों सरीखे कैसे हो सकते हैं ? बोली, 'फिर खूबसूरत व बदसूरत का मतलब क्या ? खूबसूरत को कौन पूछेगा ?'

कबीर धीरज से कहने लगा, 'खूबसूरत और बदसूरत का फर्क तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फकत इन्सान की समझ और नजर का विकार है। आप को शायद विश्वास नहीं होगा कि एक दफा जंगल से गुजरते समय मेरी नजर लोमड़ी के बिल पर पड़ी। उस वक्त मुझे वो चाँद से भी ज्यादा खूबसूरत लगा। अगले दिन करघे पर बैठा तो आप ही लोमड़ी का बिल बन गया। हू-ब-हू उस बिल के उनमान।'

राजा होंठ चबाने के उपरान्त बोला, 'जंगलवाला बिल तो राम जाने मेरे मन भाता या नहीं, पर तेरी यह कारीगरी तो जैसे मुँह बोलती हो। कहीं विधाता का अंश तो तेरे हाथ नहीं लग गया? आँखों देखी वस्तु बड़ी मुश्किल से हाथों की पकड़ में आती है। देखने में तो कोई नहीं चूकता, पर हाथ सभी के चूकते हैं।'

कबीर गर्दन हिलाते कहने लगा, 'ऊँ-हूँ, देखने में चूक होती है, तभी तो हाथ चूकते हैं। किसी वस्तु को देखते समय मेरी आँखें हाथ बन जाती हैं और करघे पर बैठते ही मेरे हाथ आँखें बन जाते हैं।'

राजकुमारी ने पहली मर्तबा इन्सान की जबान से इन्सान के बोल सुने। यह तो बराबरी के भाव से बेहिचक बात कर रहा है। इसकी नजर में तो कोई छोटा-बड़ा नहीं। राज-दरबार का तो माहौल ही अलग। इन्सानों के मुखौटों में वहाँ सियार, कौवे, पिल्ले, गधे और मेमने इधर-उधर चक्कर लगाते हैं। इन्सान की योनि में आकर भी कोई इन्सान की मर्यादा नहीं जानता। राजकुमारी होश सँभालने के बाद जिस मर्यादा को देखने की खातिर तरस रही थी, वह पहली मर्तबा कबीर के चेहरे पर साफ नजर आयी। उसका हृदय खुशी से हिलोरें लेने लगा।

कबीर के उनमान कलाकार रियाया का किस राजा को गर्व नहीं होगा! उसकी पीठ थपथपाते राजा बोला, 'धन्य हैं तेरी आँखें, और धन्य हैं तेरी अँगुलियाँ! लोग-बाग तो डाह से चुगली करते हैं, पर मैं उन चुगलियों पर कान धरूँ तो! आज से ही तेरी खातिर राज्य का खजाना आठों पहर खुला है। तेरी कारीगरी की मुँहमाँगी कीमत दी जायेगी, मन में किसी तरह का संकोच मत लाना।'

कबीर मुस्कराते कहने लगा, 'इसमें संकोच किस बात का! आपको शायद मालूम नहीं है कि मैं बेचने की खातिर बुनाई का काम नहीं करता। इलाके के सेठ-महाजन लालच दे-देकर हार गये, पर मैंने अपनी कारीगरी को पैसों के बदले नहीं बेचा। जो बात सपने में भी मेरे मन को नहीं जँचती, उसे मानने से क्या फायदा, आप ही फरमायें!'

राजकुमारी तो सुनते ही इस बात का मर्म समझ गयी, पर राजा एक-एक अक्षर अच्छी तरह सुनकर भी न बात का भाव समझा और न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायका। मुकुट और सिंहासन का गुमान ऐसी समझ को अपने पास ही नहीं फटकने देता। नासमझी से गर्दन हिलाता बोला, 'हाँ, हाँ, इसमें क्या बुराई है! मेरी मेहर और राज्य के खजाने के होते किसी दूसरे को तेरा माल बेचने की जरूरत ही क्या है! अब तो कोई तीसमारखाँ भी तेरा माल खरीदने की हेकड़ी दिखाये तो मुझे खबर कर देना, मैं उसे जिन्दा जमीन में गाड़ दूंगा। समझ गया न?'

ठाकुर ने हाँ में हाँ मिलाते ताना मारा, 'यह तो जन्म से ही सारी बातें समझा हुआ है, अन्नदाता, फिर क्यूँ किसी की बात माने।'

राजा हामी भरते कहने लगा, 'ऐसे बड़े कारीगर को किसी की बात माननी भी नहीं चाहिए। अगर तुमने भी जबरदस्ती खरीदने की जुरअत की, तो मुझ-सा बुरा न होगा।'

फिर कबीर की ओर मुखातब होकर राजा ने बात जारी रखी, 'बोल, इस ठाकुर ने तुझे कभी परेशान तो नहीं किया?'

इस सवाल के साथ ही ठाकुर का तो जाने समूचा खून ही निचुड़ गया हो। अचीती मुसीबत आयी ही समझो। कबीर सरल भाव से बोला, 'किसी के करने से मैं परेशान नहीं होता। अपने मन से परे मैं किसी की बात मानूँ तब न? आप बेफिक्र रहें, मुझे कोई परेशान नहीं कर सकता।'

कबीर की बात सुनकर राजा और ठाकुर दोनों निश्चिन्त हुए। ठाकुर के दिल की फड़फड़ाहट बन्द हुई, पर राजकुमारी को आगे का अंजाम साफ नजर आ रहा था। कैसी बुरी सूझी जो यहाँ आने का हठ किया। पर अब पछताने से क्या हो सकता है? नादान दोस्त भी दुश्मन की गरज पूरी करता है। राजकुमारी की वजह से ही कबीर का बहुत अहित होगा और शायद लाख कोशिश करने पर भी यह टल नहीं सकता। राजकुमारी का अन्तस भीतर-ही-भीतर ऐंठने लगा। आखिर यह बातचीत किस मुहाने पर पहुँचेगी, उसे पहले ही सब मालूम हो गया और उपाय की कोई गली या गलियारा नजर नहीं आयी।

राजा ने आज के दिन तक इतनी बातें किसी से नहीं की थीं। इसका खयाल आते ही उसने फौरन सवारों को आदेश दिया कि वे दिखती हुई तमाम कारीगरी अपने कब्जे में करें और आगे के माल के लिए पेशगी दें। और कबीर के घर आकर जल्द-से-जल्द मुँहमाँगी कीमत अदा करें। लेन-देन की खातिर कबीर का वक्त जाया किया तो फिर उनका मालिक भगवान ही है।

और इस आदेश के साथ ही राजकुमारी के कलेजे में मानो सुरंग फटी हो। उसका साँस जहाँ-का-तहाँ थम गया। पर कबीर के चेहरे की रंगत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रंचमात्र भी नहीं बदली। सवार अलगनी पर लटकते कालीन व. कम्बलों को लेने की खातिर आगे बढ़े ही थे कि वो उसी तरह मुस्कराते हुए, विना हाथ जोड़े और विना अन्नदाता का लफ्ज़ जबान पर लाये कहने लगा, 'मैंने तो पहले ही साफ कह दिया था कि मैं मुनाफे की खातिर जुलाहे का काम नहीं करता। आपका आना वेकार गया, इस खातिर माफी चाहता हूँ।'

अब राजा को कबीर की बात का मर्म ठीक से समझ में आया। दिमाग में बवण्डर उठा। नसों का खून उबलने लगा। इस चण्डाल की इतनी हिम्मत! भन्नाते हुए गरजकर पूछा, 'क्या दूसरों की तरह मेरे लिए भी बेचने की मनाही है?'

राजकुमारी के नसीब में यह दिन देखना भी बदा था! कैसी बुरी गाँठ उलझी! पाषाण-मूर्ति के उनमान कबीर के होंठों पर नजर गड़ाकर इन्तजार करने लगी कि उसके मुँह से अब क्या बोल निकलते हैं? होंठों तक आयी मुस्कराहट को रोकता हुआ कबीर कहने लगा, 'मैंने तो अपने मन की सच्ची बात दरसा दी, आप जो चाहें मतलब निकालें!'

राजा के गुस्से को मानो पलीता लगा हो। पैर पटकते बोला, 'मेरे पास मतलब निकालने का समय ही कहाँ है? नालायक, तेरी मौत तो नहीं आयी?'

'मौत तो एक दिन आनी ही है! यह तो किसी का भी खयाल नहीं करती। न रंक का, न राजा का। मरने की बात जानता हूँ तभी तो अपनी मेहनत की कीमत नहीं आँकता।'

इस दफा ठाकुर ने एक बढ़िया तदबीर सुझाई। अँगुलियाँ चटकाते कहने लगा, 'कीमत नहीं आँकना चाहता तो अन्नदाता के चरणों में खुशी-खुशी ये तमाम वस्तुएँ भेंट कर दे।'

ठाकुर के इस सुझाव से कबीर के होंठों पर आप ही मुस्कराहट छा गयी। कहने लगा, 'भेंट देना न देना तो मेरी मर्जी पर मुनस्सर है। फिर राजा को किस बात की कमी, जो उसे भेंट दी जाय।'

राजकुमारी ने कबीर के नाम से ऐसी कई अफवाहें सुन रखी थीं और उसे अनजाने ही उन पर काफी कुछ विश्वास हो गया था। उन बातों को रू-ब-रू आजमाने के बहाने ही खुद उसने आगे होकर कबीर के मुकाम तक आने का इरादा किया था। पर अब प्रत्यक्ष अपने कानों से ये बोल सुनकर भी, उसे यह यकीन नहीं हुआ कि कोई इन्सान की औलाद राजा के मुँह पर इस तरह बेझिझक अपने अन्तस का साँच प्रकट कर सकता है! अबूझ बालक के सिवाय किसका ऐसा निर्मल हृदय हो सकता है? बढ़ती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उम्र और समझ के साथ सौ में से एक सौ पाँच इन्सानों को कीचड़ से सनना पड़ता है। तब यह अकेली बानगी कैसे बची रह गयी? राजकुमारी के रोम-रोम में घुसा डर किसी अदीठ जादू के जोर से अदेर, अनन्त फख्र और हर्ष में बदल गया। इन्सानों के जमघट में फकत इन्सान नाम की ही कमी है। इस पुतले से मिलकर तो खुद मौत भी अपना भाग्य सराहेगी। ऐसी मौत पर तो लाखों जीवन निछावर। मारने से ज्यादा तो राजा का भी वश नहीं है। फिर मरने का डर न होने पर कैसी जोखिम? कैसी हिचकिचाहट? मरना निश्चित है तब भी तमाम लोग मरने से डरते हैं। और एक यह औघड़ अवधूत जिसे अपनी सच्चाई के सिवाय दूसरा किसी तरह का बोध ही नहीं। सलावे भरती बिजली की चमक की नाईं ऐसा ही कुछ मर्म राजकुमारी के नैनों में कौंधकर ओझल हो गया।

पर बाकी सुननेवालों पर मानो वज्रपात हुआ हो। राजमद का असीम अहम् कबीर के उस सरल जवाब को झेल नहीं पाया। इसकी निस्बत तो तलवार का वार सहना आसान है। एक दफा तो राजा अपनी सुध-बुध ही भूल गया। पर दूसरे ही क्षण उसकी नस-नस में साँप, राक्षस और शेर की विरासत भँवाने लगी। फुफकारते बोला, 'तू किसी को अपनी कारीगरी बेचता नहीं, किसी को भेंट करता नहीं, फिर यह है किसलिए?'

किसी और के छेड़ने या उकसाने से गुस्सा तो कबीर को आता ही नहीं था। वो तो समूचा ही अपने वश में था। उसी धीमे सुर में बोला, 'जरूरत होते हुए भी जिनमें इन वस्तुओं को खरीदने की क्षमता नहीं है, मेरी कारीगरी उन लोगों के लिए है!'

ठाकुर ने आग में घी डालते हुए गरजकर कहा, 'चण्डाल, तेरी यह मजाल! गुस्सा तो ऐसा आता है कि अन्नदाता के आदेश के बिना ही तेरी खोपड़ी उड़ा दूं। तेरे इन नाचीज चिथड़ों की खातिर तीन लोक के नाथ को दर-दर का भिखारी बनाना चाहता है?'

ठाकुर के गुस्से का अदेर कुछ मतलब समझ में नहीं आया तो कबीर कुछ पल असमंजस में खड़ा रहा। राजकुमारी ठाकुर की ओर मुखातब होकर तेज सुर में बोली, 'अपने हलक की बात नाहक इसके मुँह में क्यूं ठूंसते हो? इसने ऐसा तो नहीं कहा।'

राजकुमारी के रुख से वाकिफ होते ही राजा ठाकुर को झिड़कते कहने लगा, 'तुम्हें बीच में बकबक करने को किसने कहा? क्या इससे निबटने लायक भी मेरी हैसियत नहीं है?'

ठाकुर कोहनी तक हाथ जोड़ते, अटकते सुर में बोला, 'आपकी हैसियत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की क्या सीमा अन्नदाता ! ऐसे लाखों-करोड़ों भुक्खड़ मिलकर भी आपका बाल-बाँका नहीं कर सकते !'

राजा कहना तो कुछ और ही चाहता था, पर उसकी बेखयाली में आप ही यह बोल फिसल पड़ा, 'फिर !'

ठाकुर ने राजा के चरणों को छूकर कहा, 'भयंकर गलती हो गयी अन्नदाता, माफी बख्शाएँ।'

राजा को उस वक्त ऐसा लगा गोया ठाकुर के रूप में खुद कबीर उसके चरणों में झुक रहा हो। राजा तो राजा ही होता है। वास्तव में इस भ्रम के बहाने राजा की खीज काफी निथर गयी। ठण्डे सुर में भोले कबीर को लाड़ से समझाते कहने लगा, 'इस जिद के पीछे धूल फेंक। छोड़ यह पागलपन। मेरे दर्शनों से पहले तकलीफ देखी सो तो देखी, पर अब ऐश कर। मेरे खजाने से तुझे मुँहमाँगी कीमत से भी सवाई कीमत मिलेगी। मुझ जैसा दयावान उमराव तुझे चिराग लेकर ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगा। बावला कहीं का ! राजा तो पिता की ठौर होता है, फिर मुझसे कैसा संकोच ?'

राजा ने तो इतनी देर में ही उस शीरे के तारों की पहचान कर ली थी। यह तो बानगी ही दूसरी है। हुकूमत के आतंक से वश में आनेवाला यह बन्दा नहीं। फिर मुसाहिबों के सामने सिंहासन की पोल खोलने में क्या सार ? लाड़ से पुचकारते कहा, 'बोल, अब तो तेरा मन बदला ! तू क्या सच मानेगा कि इतनी खुशामद तो मैंने पुराने राजा की भी नहीं की। तू खुशी-खुशी हाँ करे तो सवारों को तेरी वस्तुओं के हाथ लगाने दूं। तुझ जैसे खरे आदमी पर मुझे भी नाज है। जो इच्छा हो कीमत माँग ! तुझे पूरी छूट है।'

किसी के हाथों बख्शी हुई छूट लेने की रात तो कबीर का जन्म ही नहीं हुआ था, भले ही वो देश का मालिक ही क्यूँ न हो। अपने मन पर कबीर किसी का अंकुश नहीं मानता था। राजा खीज करे तो वही बात और रीझ करे तो वही बात। समूची बात को सुथराई से सँभालने की कोशिश करते बोला, 'मेरी जरूरतें इतनी कम हैं कि आपकी दी हुई छूट मेरे किसी काम नहीं आ सकती। आपका आना बेकार गया, इस खातिर एक दफा फिर माफी चाहता हूँ।'

खुद राजा के मुँह से पुचकारकर दुलारने के उपरान्त भी कबीर का वो ही नाशुक्रा हठ सुनकर राजा के एड़ी से चोटी तक आग लग गयी। तब भी राजा को अपने कानों पर विश्वास करने का मन नहीं हुआ। शुबहा मिटाने की खातिर एक मर्तबा फिर पूछा, 'तो क्या मुँहमाँगी कीमत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर भी मुझे अपना माल नहीं देगा ?'

कबीर राजकुमारी के चेहरे की ओर देखते कहने लगा, 'लोभ-लालच के कारण बात बदलना तो मैं जानता ही नहीं। एक दफा पूछो तो वही बात और सौ दफा पूछो तो वही बात।'

इन बोलों के साथ राजकुमारी को ऐसा लगा, गोया गगन में एक सूरज का उजासा और जुड़ गया हो। पर राजा की हालत बुरी हो गयी। वास्तव में वो देश का मालिक है कि नहीं ? सिंहासन और मुकुट की आन यों ही नहीं रखी जाती। दूसरे ही क्षण राजमद के उफनते गुमान में उसने आदेश दिया कि अलगनी पर लटकते तमाम वस्त्रों के चिथड़े-चिथड़े कर दिये जायें।

राजकुमारी तो अपना आपा ही बिसर गयी। क्या करे और क्या न करे ? ऐसा फन्दा तो कभी नहीं फँसा। पर बेहद ताज्जुब की बात कि कबीर ने किसी तरह की कोई रोक-टोक नहीं की। देखते-ही-देखते उसके हाथों उरेही बिजलियों के टुकड़े-टुकड़े हो गये। फूलों की पंखुड़ियाँ झड़ गयीं। पहाड़ के परखचे उड़ गये। टीले बिखर गये। अपना वश न चलने पर कबीर कर ही क्या सकता था ! उसका वश चला तब तक तो उसने अपने हाथों कुछ-न-कुछ सिरजा ही। उसने अपना काम किया। राजा अपना काम कर रहा है। मन्द-मन्द मुस्कराते वो सवारों के हाथों हुए अपने कलेजे के चिथड़ों का ढेर देखता रहा।

कबीर के होंठों की मुस्कराहट मानो राजा का मुँह चिढ़ा रही हो। उफनने के बाद राजमद की क्या हद ! कड़कते सुर में आदेश दिया, 'देख क्या रहे हो, इन चिथड़ों की तरह इस बेशर्म की भी चिन्दी-चिन्दी कर डालो !'

राजा के आदेश के साथ ही चार-पाँच सवार नंगी तलवारें चमकाते कबीर की ओर लपके ही थे कि राजकुमारी उनके सामने आकर बोली, 'खबरदार, कबीर को खरोंच भी आयी तो मैं जिन्दा जल मरूँगी !'

सवारों के हाथ जहाँ-के-तहाँ रुक गये। न राजा के आदेश को टालना उनके वश में था और न राजकुमारी के आदेश को। कठपुतली तो धागों के बल फुदकती और थमती है। सवार नये आदेश की प्रतीक्षा में राजा के सामने देखने लगे। पर राजा के हलक में जैसे कुछ फँस गया हो। कि अचानक उसके कानों में राजकुमारी के तीखे सुर की भनक पड़ी, 'आप तो कला के ऊँचे पारखी हैं, अच्छी कीमत अदा की !'

राजा के कलेजे को मानो अंगारा छू गया हो। कबीर कुछ दाद-फरियाद करता या गिड़गिड़ाता तो शायद राजमद की ऐंठन कुछ ढीली पड़ती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन उस पर तो कोई बात असर ही नहीं करती। तिस पर राजकुमारी की शिकायत। राजा बमुश्किल अटकते कहने लगा, 'यह अपनी कारीगरी बेचता नहीं, भेंट करता नहीं, फिर और क्या करता, तू ही वता ?'

अक्षरों के बहाने राजकुमारी के मुँह से मानो खून टपक रहा हो, इस तरह बोली, 'मुझसे पूछते तो बताती। पर अब तो पूछने की राह ही नहीं बची। इससे तो मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डालते तो बेहतर था। आज से ही मेरी अक्ल ठिकाने आ गयी। आयन्दा कभी किसी काम के लिए टोकूँ तो मेरी जबान दाग देना।'

राजा लाड़ से दुलारते कहने लगा, 'मेरी बावली वेटी, तूने इस बात की खूब फिक्र की ! मैं मन का मैला थोड़े ही हूँ। मेरी दातारी फकत इस कबीर के सिवाय कौन नहीं जानता ! तेरी ऐसी ही मरजी है तो कबीर को मैं अपने गले का नवलखा हार दे दूं ! हार तुझसे वढ़कर थोड़े ही है !'

और वाकई इतना कहते ही अपने गले का नवलखा हार उतार कर कबीर के सामने करते हुए राजा बोला, 'इसे अपनी कारीगरी का मोल नहीं, हर्जाना ही मान ले। पीढ़ियों का दिवाला मिट जायेगा। बस, अव तो खुश !'

कबीर ने उस नवलखे हार की ओर देखा तक नहीं। गले की ठौर अब वो हार राजा के हाथ में चमक रहा था। कबीर राजकुमारी की आँखों में नजर गड़ाकर कहने लगा, 'मैं तो पहले ही खुश था। दूसरे की गलतियों का मैं पछतावा क्यूँ करूँ ? और न ही इस हार से मेरा खमियाजा पूरा होगा।'

राजा जल्दी से बोला, 'एक की ठौर दो हार ले ले, तीन हार ले ले।'

कबीर मुस्कराते कहने लगा, 'किसी कम्बल या शाल का महत्त्व हीरों के बदले विकने में नहीं, जाड़े से ठिठुरते इन्सान की ठण्ड दूर करने में है। आप राजा हैं, मेहनत के पसीने का मोल आप नहीं जानते। आपको क्या मालूम कि मेरी इस कारीगरी में कितनों की मेहनत और कितनों का पसीना मिला हुआ है। जब इन चिन्दी-चिन्दी हुए चिथड़ों को रफू कर वापस उनसे कम्बल बनाऊँ और वह कम्बल किसी ठिठुरते इन्सान को गर्मी पहुँचाये, तब कहीं इनका असली मोल चुकेगा और मेरी कारीगरी सार्थक होगी।'

राजा खिल-खिल हँसते बोला, 'तू तो अकेला ही हजार बावलों की गरज पूरी करता है। तू इस हार के मोतियों के बारे में कुछ जानता भी है ? अगर दान के जरिये तू अपनी शोहरत फैलाना चाहता है तो बावलों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के सरदार, इस हार के एक-एक मोती से तू हजारों कम्बल खरीद सकता है। फिर गद्दी पर बैठे-बैठे बेहिसाब कम्बल बाँटना !'

कबीर सिर हिलाते बोला, 'दान करने के गुमान से मेरा मन तुष्ट नहीं होगा। धन जुड़ने से धन तो बढ़ता है, पर बाकी सब गुण घटते हैं। इन्सान में इन्सानियत न रहने पर पीछे फकत मल-मूत, खून, हड्डियाँ और खाल बचती है। तलवार की ताकत के बिना न दौलत बढ़ती है, न सत्ता। तलवार और सिंहासन के आतंक से मौत डरती हो तो बात दूसरी है !'

राजमद की धुन्ध के कारण राजा को कुछ सूझता ही नहीं था। कबीर की जबान से मौत का नाम सुनकर राजा को पहली मर्तबा ध्यान आया कि देर-सवेर मौत तो सबको आनी ही है। पर उसकी बात अलग है। वो देश का मालिक है। आवाज को दबाकर कहने लगा, 'कबीर, एक बात तो बता। देख सही-सही कहना। मुझे तुझ पर भरोसा है। यह नौकूँटी राज्य का सिंहासन, यह अखूट खजाना, यह विशाल फौज, ये चमचमाती तलवारें और ये हाथी-घोड़े तक क्या इस मरी मौत से मेरी रक्षा नहीं कर सकते ? क्या, नाचीज रिआया की तरह मुझे भी एक दिन मरना होगा ?'

मुस्कराहट के उजले सुर में कबीर बोला, 'यह भी कोई पूछने की बात है ?'

एक गहरी आह भरकर राजा बोला, 'पूछने की बात है, तभी तो पूछ रहा हूँ। तेरे सिवाय कोई दूसरा पण्डित-ज्ञानी इसका सही जवाब नहीं दे सकता। तेरी बातें सुनकर मेरे सर के भीतर चींटियाँ कुलबुलाने लगी हैं। बता, यह क्या माजरा हुआ ?'

कबीर से किसी ने कोई सवाल पूछा तो उसे अपने वश चलते उसका जवाब देना ही था। कहने लगा, 'मेरे लाख समझाने पर भी यह आपकी समझ में नहीं आयेगा, क्यूँकि यह सिंहासन, यह मुकुट, यह खजाना, यह फौज और ये चाकर कदम-कदम पर आपकी राह रोकते हैं। आपकी आँखों पर राजमद का जाला छाया हुआ है। इस खातिर न तो आप सत्य का परस कर सकते हैं और न दर्शन। लगता है कि आज जिन्दगी में पहली दफा सत्य के जगमगाते सूरज की झलक देखने के लिए आपके कलेजे में हूक उठी है। यह चींटियों की हलचल शायद उसी की है।'

एक अबूझ बालक के उनमान हामी भरते राजा अधीरता से बोला, 'हाँ, उसी की है। बिल्कुल उसी की है। पर मेरे मन की तूने कैसे जानी ?'

राजा की आँखों में नजर गड़ाकर कबीर बोला, 'अभी आपका मन गँदला नहीं हुआ है। मुझे उसके आरपार दिख रहा है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'तू कहता है तो दिखता ही होगा, पर मैं तो आज अजीब उलझन में फँस गया हूँ। क्या तेरा यह साँच हुकूमत के दबदवे से भी वड़ा है ?'

आज से पहले किसी ने भी कबीर से ऐसे गूढ़ सवाल नहीं पूछे थे, तब भी उनका जवाब देने में उसे कोई अड़चन नहीं हुई। अदेर बोला, 'कहाँ बेचारी हुकूमत की चिंगारी और कहाँ साँच का तपता सूरज ! पर राज्य की तरह इस साँच का कोई राजा नहीं होता ! उसमें सभी की एक-सी मिल्कियत है, पर इस मिल्कियत पर हक जतलाने की हिम्मत चाहिए।'

राम जाने क्यूँ राजा के मन में उस वक्त किसी तरह का कोई दुराव नहीं था। सभी के सामने कबूल करते कहने लगा, 'अपनी हिम्मत का असली कूता तो मुझे आज ही हुआ। तू क्या सच मानेगा कि इतनी वड़ी रियासत का राजा होकर भी मैं मन-ही-मन तुझ से डर गया।'

कबीर टिटकारी देते बोला, 'यह तो वहुत बुरी बात हो गयी। मैं न तो किसी से डरता हूँ और न किसी को डराना चाहता हूँ। भला, मुझ से डरने की क्या बात है ?'

राजा दो-तीन दफा गर्दन को हिलाते बोला, 'वह तो मैं जानता हूँ या मेरा जी जानता है।'

आस-पास खड़े दरबारियों और ठाकुर के आश्चर्य की सीमा न रही कि देश के मालिक होकर, राजा आज यों आँय-बाँय क्या वक रहे हैं ! कहीं दिमाग तो नहीं फिर गया ! राजा के डरने से कहीं राज्य चलता है भला ! यह छली कबीर जरूर कोई जादू-टोना जानता है। इससे तो किनारा करना ही बेहतर है। ठाकुर ने दोहरे होकर अर्ज की, 'अन्नदाता, थाल अरोगने के लिए देर हो रही हैं। आपके अरोगने के वाद ही वस्ती के लोग वासी मुँह कुल्ला करेंगे।'

ठाकुर की आवाज सुनते ही राजा को वापस चेत हुआ। अपने असली खोल में आते ही उसका सुर बदल गया। गगन की ओर ऊपर देखते बोला, 'सूरज तो सिर पर चढ़ आया और अभी तक तुम्हारी बस्ती का मुँह बासी ही है ?'

ठाकुर ने 'महाराजा की जय हो' कहने के उपरान्त गर्व से कहा, 'आपके अरोगने से पहले तो मेरी स्वामीभक्त रिआया गले से थूक तक नीचे नहीं उतारती, रोटी खाना तो बड़ी बात है।'

राजकुमारी ने खुद चलने की जल्दी दरसायी तो राजा झट अपने डेरे की तरफ चल पड़ा। राजा के पीछे सभी चुपचाप रवाना हो गये।

पीछे रहा फकत अकेला कबीर और फटे हुए चिथड़े। काम तो आखिर करने से ही निबटेगा। नाहक सोच-विचार में क्या सार ! हुकूमत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की रंगत ऐसी ही हुआ करती है, कैसे ही अकेले अपरबली की, हुकूमत की ताकत के आगे कोई थाह नहीं लगती। वो चुपचाप गुमसुम सूई-डोरा लेकर अपने काम में जुट गया। उसके पोरों का परस पाने से तो ये चिथड़े भी मुँह बोलने लग जायेंगे।

तत्पश्चात कबीर को न वक्त का ध्यान रहा, न हवा का और न उजास का। कब दिन ढला और कब साँझ हुई, उसे इसका कोई एहसास ही नहीं था। सूई की नोक में ही उसकी तमाम दुनिया बसी हुई थी। कब सूरज की रोशनी अँधेरे तले दब गयी और कौन दीपक जलाकर उसकी बायीं बाजू सारी रात अविचल बैठी रही। गोया रैनादे अपनी गरज से हथेली में दीपक लिये बैठी हो। और मानो कई युगों ने वापस लौटकर उस रात के झिलमिलाते तारों में शरण ली हो। तड़के सूर्योदय के वक्त दीपक का उजाला अपने-आप में सिमटकर सिर हिलाने लगा तब कबीर को चेत हुआ। और दीया बुझाने के साथ ही उसकी आँखों ने जो नजारा देखा तो उसे लगा कि वो कहीं नींद में सपना तो नहीं देख रहा है! आँखें मसलकर फिर देखा, 'यह तो वास्तव में राजकुमारी हथेली में दीपक लिये सामने बैठी है। समूची दुनिया का सारा आश्चर्य मानो उसके गले से फूट पड़ा, 'आप!'

राजकुमारी ने कोई जवाब नहीं दिया। कबीर के हाथों से रफू किये पहाड़ के आर-पार नजर गड़ाकर एकटक देखती रही। कबीर पछतावे के सुर में माफी माँगता-सा कहने लगा, 'मुझे न तो आपके आने का कुछ खयाल था और न दीपक के उजाले का।'

इस दफा राजकुमारी के गुलाबी होंठों से आप-ही अमृत-वाणी झनकी, 'मुझे भी कहाँ ध्यान था कि डेरे कब पहुँची और वापस कब रवाना हुई। आँगन में पाँव धरते ही मैं जान गयी कि तुम्हें सूई और डोरे के सिवाय दूसरा कुछ होश नहीं है। आयी तो बहुत सारी बातें करने के लिए थी, पर अब कुछ भी पूछने की जरूरत नहीं है। मौन से बढ़कर दूसरी कोई वाणी नहीं है। बेकार बकवास से क्या फायदा, एक सूई और हो तो मुझे भी दो!'

'यह काम इतना आसान नहीं है!'

'यह तो काम करने पर ही पता चलेगा।'

सूई देते हुए कबीर को रत्ती-भर भी यकीन नहीं था कि राजकुमारी उससे भी पटु है। फकत लिहाज की वजह से सूई दी, पर पहले टाँके की लकब से वो अच्छी तरह जान गया कि ये हाथ तो जो चाहे कर सकते हैं! कबीर ने हैरानी से पूछा, 'आपने यह काम कब सीखा?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'सीखा फिर कब, आज ही तो सीखूंगी । इतने बरस सूई का नाम तो जरूर सुना था, पर हाथ में अभी ली है।'

कबीर की खुशी का ओर-छोर नहीं रहा। कहने लगा, 'बात तो यकीन करने लायक नहीं है, पर आपकी बात को झूठ भी कैसे मानूं !'

राजकुमारी सूई चलाते-चलाते बोली, 'आप जैसे गुरु मिलने पर कौन क्या नहीं सीख सकता ? सारी रात आपकी देखादेखी, आँखों को पोर और पोरों को आँखें बनाने का काम सीखती रही। समूची बात बताने पर सत्य की मर्यादा कलंकित होती है।'

राजकुमारी आगे भी कुछ कहना चाहती थी कि सहसा राजा आँगन में खड़ा नजर आया। साथ में ठाकुर और आठ-दस सवार। राजकुमारी से आँखें चार होते ही राजा कहने लगा, 'मैं जानता था कि तू यहीं मिलेगी !'

राजकुमारी के चेहरे पर लज्जा की झाँई घुल गयी। राजा को इतना धीरज कहाँ ? कबीर के सामने देखते बोला, 'तू तो मुझे नाचीज कम्बल तक भेंट करने को राजी नहीं हुआ तो तेरी मरजी, पर मैं तुझे ऐसी चीज भेंट करने के लिए आया हूँ, जिसका सपना भी तेरे लिए नामुमकिन है। बोल, तू ही बता, ऐसी कौन-सी भेंट हो सकती है ?'

संकेत बिलकुल स्पष्ट था, फिर भला कबीर क्यूं न समझता ! गम्भीर सुर में बोला, 'मैं न तो किसी की भेंट कबूलता हूँ और न किसी को कोई भेंट करता हूँ।'

राजा ताली बजाकर खिल-खिल हँसते बोला, 'यह भेंट वैसी नहीं है। इन्द्र भगवान का भी मन डोल जाये जैसी भेंट। बताऊँ, राजकुमारी के हथलेवे में समूचे राज्य का दहेज !'

राजा की यह फूहड़ बात सुनकर कबीर को बेसाख्ता हँसी आ गयी। हँसी थमने पर कहने लगा, 'ऐसी भेंट का तो सपना ही बुरा। मैं तो शादी-ब्याह के लफड़े में ही नहीं पड़ना चाहता। और इस लफड़े के साथ राज्य का दहेज ! क्या मुझे आप इतना अबूझ समझते हैं कि आपके वमन को मैं प्रसाद की तरह ग्रहण करूँगा ? अगर सत्ता का सुख ही सबसे बड़ा सुख है तो आप उसे छोड़ते ही क्यूं ? आप खीज करें तो आपकी मरजी, इस भेंट के लिए भी मैं माफी चाहता हूँ।'

राजा के रोम-रोम में झुरझुरी दौड़ गयी। राजकुमारी पर हजार घड़े पानी गिर गया। सपने की सुनहरी लंका उसकी आँखों के सामने धू-धू कर जलने लगी। राजा की बेटी होकर कितनी छोटी आशा की खातिर मन डोलाया और उस पर भी पाला पड़ गया !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तो सौ दफा जिला-जिलाकर इस मक्कार को वापस न मारे तब तक राजा की जलन शान्त नहीं होगी। सवारों पर कड़कते बोला, 'यों नाजिरों की तरह नाखूनों से जमीन क्या कुरेद रहे हो, अब तक तो इस हरामजादे की चटनी कर डालते।'

ऐसे आदेश के बाद सवारों को कैसी देर! एक साथ हवा में नौ तलवारें ऊपर उठीं। शायद फिर राजकुमारी आड़े आ गयीं तो! पर राजकुमारी तो इस मर्तबा टस-से-मस भी नहीं हुई। उसकी आँखें गोया पथरा गयी हों। कि अचानक राजकुमारी की जगह राजा सामने आकर जोर से बोला, 'खबरदार, मैंने आदेश दिया तो क्या हुआ, तुम्हें तो सोचना था? कबीर के चीरा लगने से ही मेरी लाड़ली बेटी कितनी तड़फेगी! अपना काला मुँह करो यहाँ से। आयन्दा भी ऐसा अंट-संट आदेश करूँ तो कान मत देना। मेरा दिमाग ठिकाने हो तब न! खोपड़ी में तो मानो साही घुसी हुई हो।'

कहाँ की बिजली और कहाँ आकर गिरी! कबीर क्या करे और क्या न करे! थोड़ी देर तो कुछ समझ में नहीं आया। वो भी असमंजस में पड़ गया। फिर राजकुमारी के पास जाकर उसके एकदम करीब खड़ा हो गया। अपने हाथों में उसके हाथ लेकर पिघले हुए सुर में कहने लगा, 'फकत एक रात साथ रहने से एक-दूसरे को ठीक से नहीं जाना जा सकता। शादी, बाल-बच्चे, कुटुम्ब-परिवार, जमीन-जायदाद में मुझे रंचमात्र भी आस्था नहीं है। दूसरे प्राणियों से अलग और ऊँचा समझने की गलतफहमी में इन्सान की बेहद बर्बादी हुई है और होती ही जा रही है। मेरी न कोई जात है, न मेरा कोई धर्म है और न मेरा कोई देश। इन्सान के लिए यह कितनी शर्म की बात है कि धर्म और पंथों के बहाने मरे हुए अवतार अभी तक जिन्दा इन्सानों पर शासन कर रहे हैं!'

राजा से सब्र नहीं किया गया तो उसने बीच में ही पूछा, 'सुना है कि तू देवी-देवताओं और ईश्वर को भी नहीं मानता?'

इस दफा कबीर व्यंग से मुस्कराते बोला, 'मानता हूँ, जरूर मानता हूँ। आत्मा, परमात्मा, भाग्य और धर्म से बड़ा जाल इन्सान के हाथों न तो रचा गया और न रचा जायेगा। अक्ल की खोपड़ी नबाकर, जिन्दा इन्सान पत्थर की मूर्तियों को पूजता है, इससे घिनौनी बात और क्या होगी? इतनी बात बढ़ गयी, इसलिए मुझे पहली दफा, अपने मन की बात समझाने की जरूरत पड़ी।'

अब राजकुमारी के होंठ खुले। धीमे व मीठे सुर में बोली, 'इतनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातें जानते हुए भी जब तुम्हारी आँखों के सामने तुम्हारी कारीगरी की धज्जियाँ उड़ीं, दो मर्तबा नंगी तलवारें ऊपर उठीं और राजा व ठाकुर की अंट-संट दुत्कार सुनी तब तुम्हारे कलेजे में गुस्से की आग क्यूँ नहीं भभकी ? तुम मरने-मारने पर उतारू क्यूँ नहीं हुए ? इतने लम्बे-चौड़े ज्ञान के बावजूद भी तुम्हारे अन्तस में जीने का मोह है ! मौत का डर है ! फिर तुम्हारा क्रोध किस दिन के लिए है ?'

कबीर इतमीनान से समझाने लगा, 'राजकुमारी, एक आदमी के क्रोध से कुछ नहीं हो सकता । वो तो खुदकुशी के समान है । जिस दिन मेरे क्रोध की छूत जन-जन के हृदय में खुदबुदायेगी, उस दिन इन्सानों की दुनिया में न तो कोई राजा होगा और न कोई रंक । न कोई ऊँच होगी और न कोई नीच, न साँच होगा और न झूठ । न पाप होगा, न पुण्य । न धर्म होगा, न अधर्म । न कोई अमीर होगा और न कोई गरीब । न कहीं मन्दिर होगा और न कहीं मस्जिद । उस दिन न मजहब बचेगा और न जात । न फौज होगी और न हथियार । किसी इन्सान को यह हक नहीं होगा कि अपनी सत्ता के बल पर, तलवार की ताकत के जोर से, अपने आदेश के जरिये किसी की कारीगरी के टुकड़े-टुकड़े करवा डाले ।'

राजा कबीर का हाथ थामकर गिड़गिड़ाते बोला, 'इसी प्रायश्चित की खातिर तो मैं राज्य छोड़ने को तैयार हो गया, तू और क्या चाहता है ?'

कबीर मुस्कराता-सा बोला, 'मेरे चाहने और न चाहने से क्या फर्क पड़ता है !'

राजा सिर हिलाते बोला, 'यही तो तेरी भूल है । तू एक दफा अपने मन की चाह जाहिर करके तो देख ! मेरी बेटी तेरे सिवाय किसी का हाथ थामना ही नहीं चाहती, और तू ऐसा ठूँठ कि उसकी कोई परवाह ही नहीं करता !'

'परवाह क्यूँ नहीं करता, हजार दफा परवाह करता हूँ। अगर नर-मादा की हैसियत से, जहाँ तक एक-दूसरे का मन चाहे, राजकुमारी मेरा साथ करने को तैयार हो तो मेरी मनाही नहीं है ।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सावचेती

एक जंगल में सियार-सियारनी का जोड़ा वसता था। लिपी हुई साफ-सुथरी खोह। चारेक खेत की दूरी पर निर्मल पानी का पोखर। जंगल में वेर के अनगिनत झाड़-झंखाड़। चुन-चुनकर मीठे वेर खाते। सुख और आनन्द की कोई सीमा नहीं। परस्पर वेहद प्रेम। एक-दूसरे की छाया पर जान देते। सियारनी सीता से भी सवाई सतवन्ती। मच्छर-मक्खी तक को शरीर का परस नहीं करने देती। नखरे व नजाकत के मारे सियार को चैन नहीं लेने देती। सियारनी की आत्म-प्रशंसा सुन-सुनकर सियार भी हाँकने लगा कि एक वार उसने शेर को पूँछ से फटकार लगायी तो उसने सात कुलाँचें खायीं। आखिर मुँह में तिनका लेने पर ही उसे माफ किया। वाघ तो तनी हुई भौंहें देखते ही भाग छूटते हैं। अव इस जंगल का राजा मानो तो वो और वादशाह मानो तो वो। सियार न चाहे तो जंगल का एक पत्ता तक न हिले। एक वार तैश में आकर उसने एक टीले को लात मारी तो वो घरौंदे की तरह बिखर गया। उसकी दहाड़ सुनकर वादल फटने लगते हैं। सियारनी को अपने पति पर वेहद गुमान था।

एक वार आधी रात ढले सियारनी को प्यास लगी तो उसने अपने पति को जगाकर साथ चलने के लिए कहा। सियार झपकी लेते बोला, 'ऊँघ के मारे तो मेरी आँख ही नहीं खुलती। तू अकेली ही जाकर···।'

सियारनी वीच में ही मुँह बनाकर कहने लगी, 'मैं औरत-जात अकेली कहाँ जाऊँ?'

'पर यहाँ तुझे छेड़नेवाला कौन है?'

सियारनी गुमान-भरी अदा से बोली, 'औरत की मर्यादा का तुम मर्दों को क्या पता! मुझे तो हवा और धूप का परस भी नहीं सुहाता। पर वस नहीं चलता।'

सियार नींद में टिप्पे मारते कहने लगा, 'क्यूँ, इसमें वस की क्या बात!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा बस तो चलता है। तू कहे तो हवा और धूप को झाड़ियों के काँटों में ऐसा उलझाऊँ कि कयामत तक न सुलझ सकें!'

'पर पहले मेरे साथ तो चलो। प्यास के मारे ठीक से बोला भी नहीं जाता।'

सियारनी ने अधिक तंग किया तो आखिर सियार को साथ चलना ही पड़ा। आकाश में पूनम का चाँद दमक रहा था। झाड़ी-झाड़ी पर सुर्ख बेर चमक रहे थे। चाँदनी की गोद में जंगल का कण-कण निश्चिन्त सोया था। सियारनी ने एक बार चाँद की तरफ देखा। कितना सुन्दर! कितना सुहाना! लाख सियार भी मिलकर इसके सामने नहीं टिक सकते।

सियार किनारे पर खड़ा रहा। सियारनी थोड़ी आगे बढ़कर आराम से पानी पीने लगी। पानी पीकर मुँह ऊपर उठाने का विचार किया ही था कि उसे चाँद की कुटिलता का भान हुआ। पानी में छिपा हुआ इतनी देर तक उसके होंठों का चुम्बन लेता रहा! यह मर्दों की जात ही कमीनी होती है। कड़ाके की सर्दी का खतरा मोल लेकर भी उसकी खातिर पानी में डुबकी लगायी। इन कलमुँहे मर्दों के मारे कोई सतवन्ती अपना सत रखे तो कैसे रखे?

गुस्से में मुँह घुमाकर पति की ओर देखते कहने लगी, 'यूँ पास खड़े टुकुर-टुकुर क्या देख रहे हो? यह लफंगा चाँद मेरा चुम्बन लेने की हिमाकत कर रहा है। तुम साथ नहीं होते तो यह मेरे साथ जबरदस्ती कर बैठता।'

घरवाली की यह बात सुनकर सियार का मुँह गुस्से से तमतमा उठा। दाँत पीसते हुए बोला, 'कौन, यह छछून्दर-सा मरियल चाँद! इसकी यह मजाल! तू कहे तो इसके परखचे उड़ा दूँ।'

इतना कहकर वो शेर की तरह पंजा पटकने लगा। मानो चाँद का इसी पल सफाया कर डालेगा। सियारनी ने एक बार फिर मुँह ऊँचा करके चाँद की तरफ देखा। चाँद भी उसका चेहरा देखने के लिए तड़फ रहा था। कितना आकर्षक! कितना कान्तिमय! पति को टोकते बोली, 'जाने दो। इस बदनजर चण्डाल के पीछे सारी दुनिया तकलीफ उठायेगी। बेचारे बाल-गोपाल अँधेरे में ज्यादा डरेंगे।'

क्रोध में उफनते सियार ने और जोर से पंजा पटका। कहने लगा, 'नहीं, नहीं! तू कहे तो अभी इस चाँद की लुगदी बना दूँ।'

घरवाली पति का हाथ पकड़कर बोली, 'जाने दो, जाने दो। तुम अपने सर नाहक बदनामी क्यूँ लेते हो?'

घरवाली ने बार-बार रोका तो सियार मान गया। नहीं तो दुनिया की बहुत बुरी गत बनती। लौटते समय सियारनी सियार को समझाने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगी कि अपना सत और अपनी सावचेती अपने पास। यह मर्दुआ चाँद तरसता है तो तरसने दो। वह तो रात को अपनी खोह के बाहर मुँह भी नहीं निकालेगी।

सियार निर्लज्ज चाँद पर दाँत पीसते खोह में घुस गया। अपने रूप के गुमान में फूली सियारनी को काफी देर से नींद आयी। सुबह दो घड़ी दिन चढ़े मुश्किल से जगी। आँखें मलते-मलते खोह से बाहर आयी। सूरज उसका रूप निहारने के लिए बेसब्री से तड़फ रहा था। यह मर्दों की जात ही भाड़ में झोंकने लायक है। सब एक जैसे। पर पट्ठा है तो बहुत तेजवान। तपधारी। सारी दुनिया को उजास से भरनेवाला। देखें चाँद की तरह यह भी बेशर्म है कि नहीं? प्यास न होते हुए भी वह पति से साथ चलने का आग्रह करने लगी। वह झुँझलाते बोला, 'बावली, दिन को क्या डर? तू निशंक अकेली जा।'

सियारनी हठ करते समझाने लगी कि 'जब चाँद जैसे बड़े-बड़े देवता भी नीयत बिगाड़ लेते हैं, तब किस पर भरोसा किया जाय? औरतों का मन विश्वास करे तो कैसे! अब तो अकेले मरने को भी जी नहीं करता।'

जब सियारनी ने पीछा नहीं छोड़ा तो सियार को बेमन ही साथ जाना पड़ा। सियारनी ने जितनी बार तिरछी नजर से देखा, उतनी ही बार उसने सूरज को उसका रूप निहारने की खातिर तरसते पाया।

किनारे पर पहुँचते ही चाँद की तरह कुटिल सूरज भी पानी में डुबकी लगाये साफ नजर आया। परायी स्त्री का शील भ्रष्ट करने में इन मर्दों को जाने क्या हाथ लगता है? सियारनी ने पानी पीने की खातिर मुँह नीचा किया ही था कि झिझककर मुँह घुमाया। पति की तरफ देखते हुए कहने लगी, 'जो सोचा था वही हुआ। यह कमीना सूरज तो चाँद से भी अव्वल निकला। दिन के उजाले में भी खुल्लम-खुल्ला अन्दर छुपा हुआ है।'

सियार लपककर पास आया। बेहद गुस्से से पूछा, 'कहाँ, कहाँ?'

सियारनी डुबकी लगाये हुए सूरज की तरफ इशारा करते बोली, 'वो रहा। लम्पट कहीं का!'

अब सियार के गुस्से पर क्या अंकुश? बब्बर शेर की तरह पंजा पटकते बोला, 'तू कहे तो अभी इस मरदूद सूरज को जमीन में गाड़ दूँ।'

सियारनी ने फिर गम खाया। पति को मना करते बोली, 'जाने दो। अपने स्वार्थ की खातिर सारी दुनिया तकलीफ उठायेगी। वह किस तरह अँधेरे में अपना गुजर-बसर करेगी?'

सियार के कलेजे में आग-सी भड़क उठी। दुगुने जोश से फिर पंजा पटका। दाँत पीसते बोला, 'नहीं, नहीं, तू कहे तो अभी इस मर्दुए सूरज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को बेर की तरह निगल जाऊँ। मतीरे की खुपरी की तरह खुरच डालूं।'

सियारनी पति के पैर पकड़कर कहने लगी, 'जाने दो। थोड़ी दया विचारो। दुनिया बद्दुआ देगी। अपने सर बेकार क्यूं बदनामी लेते हो ?'

सियार गुस्से में जोर से बोला, 'बेकार कैसे ? ऐसे आवारा को छोड़ने से पाप लगता है। तू देखती जा...।'

'मुझे अब कुछ नहीं देखना। मेरे देखने से दुनिया का देखना मिट जायेगा। गम खाओ। अपना सत और अपनी सावचेती अपने पास। तुम ऊपर मुँह करके इस निगोड़े सूरज का ध्यान रखो। तब तक मैं पेट भर-कर पानी पी लूं।'

आखिर सियारनी के मना करने पर सियार ने जैसे-तैसे जब्त किया। वो बिना पलक झपकाये, सूरज की तरफ एकटक देखता रहा। उसकी ओज का सूरज के मन पर ऐसा डर बैठा कि वो फिर अपनी जगह से हिला तक नहीं !

सियारनी काफी देर तक मजे से पानी पीती रही और पानी में छिपा सूरज उसके होंठों का चम्बन लेता रहा। ऐसी प्यास पहले कभी नहीं बुझी।

प्यास लगना और न लगना किसी के बस की बात नहीं है। वह रात को भी कई बार पति को खदेड़कर साथ ले जाती। और सियार मुँह ऊँचा करके चाँद का पूरा-पूरा ध्यान रखता। तत्पश्चात् बारी-बारी चाँद और सूरज के चुम्बनों के लिए अधीर सियारनी मजे से अपनी प्यास बुझाने लगी, सो बुझाती ही गयी। अपना-अपना सत और अपनी-अपनी सावचेती !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केंचुली

सड़ता पानी पड़तल। नीर वहे सो निर्मल। अपनी-अपनी नजर और अपना-अपना नजरिया कि दया का दरिया, देव-पुरुष दोस्त-दुश्मन को समान सुमति वख्शे कि किसी एक ठिकाने में गूजरों की एक खाती-पीती गवाड़ी थी। रेंडी नस्ल की गायें, भँवातड़े की भैंसें। पानी से भी ज्यादा दूध-दही की इफरात। घी के घड़े भरे हुए। बस्तीवालों को मनचाही छाछ की छूट। भरपूर नौजवान गूजर। ईसर की तरह तराशी हुई गोरी व मजवूत कद-काठी। टूल का वड़े छोगेवाला साफा। लाल किनारीवाली रेजी की धोती। मगजीदार अँगरखी, दुहरे पुट्ठे। गले में कण्ठी, ताँती और देवजी का फूल। खालिस सोने की साँकलियाँ। हाथों में चाँदी के नाहरमुखी कड़े, पैरों में कसीदे की सुरंगी जूतियाँ। साफे तक लम्बी लाठी, तांवे के तारों से गुंथी हुई। दोनों ओर चाँदी के बन्ध।

उपयुक्त समय पर गूजर का गौना हुआ। और गौने के साथ ही समूचे ठिकाने में यह बात हवा के साथ फैल गयी कि ऐसी खूबसूरत गूजरी न तो देखी न ही सुनी। साक्षात ईसर-गणगौर की जोड़ी। मानो विधाता ने एक-दूसरे की खातिर ही इतनी कारीगरी की हो। दूध-दही और मक्खन के साँचे में ढली पुष्ट देह। भागों चढ़ा यौवन। अंग-अंग से मानो मजीठ चू रही हो। जिसने भी चेहरा देखा, एक बार तो स्तब्ध रह गया कि साढ़े तीन हाथ की देह में ऐसा रूप समाया तो समाया ही कैसे ! मानो तमाम कुदरत की बेजोड़ सुन्दरता ने लाछी गूजरी की देह में शरण ली हो। जैसा बेजोड़ रूप, वैसा ही नाम—लाछी। नाम लेते ही मुँह भर जाता। हृदय में प्रतिध्वनि गूँजती। अमृत घुल जाता।

वाड़े-वाड़े, खेत-खलिहान और गली-गली गूंजती लाछी गूजरी के रूप की चर्चा ठाकुर के कानों तक पहुँची। सुनते ही रोम-रोम में फूल खिल उठे। भोजा 'कनवारिया' ठाकुर का मरजीदान कारिन्दा था। मूंछ का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाल। उसे बुलवाकर ठाकुर ने पूछा, 'भोजा, तूने भी कुछ नयी बात सुनी रे ?'

भोजा कनवारिया बहुत चतुर था। आकाश के तारे तोड़ लाये, जैसा। सुनने से पहले ही सारी बात समझ लेता था। सुरमई झाँईं देता साँवला रंग। सफेद-झक बत्तीसी। इन्सान जैसा इन्सान। न ज्यादा सुन्दर और न एकदम बदसूरत। पर अक्ल का सिरमौर। आगे पूछताछ किये बगैर ही बोला, 'फकत कानों से सुनने से कुछ पता नहीं चलता, अन्नदाता, मैंने तो अपनी नजरों से देखा है।'

ठाकुर काफी आश्वस्त हुआ। भोजा की नजर से कभी गलती नहीं हो सकती। ठाकुर ने आतुरता से पूछा, 'फिर जो बात सुनी, वह बिलकुल सही है?'

'नहीं अन्नदाता, सरासर झूठ !'

'झूठ ?'

'हाँ अन्नदाता, झूठ ! चाहे कितनी ही बकवास क्यूँ न करें, ऐसे रूप का यह बेचारी जबान बखान कर ही नहीं सकती। मुँह की जीभ हिल जाये तो वो रूप ही क्या। लाछी तो लाछी ही है, अन्नदाता। यह तो फकत उसके जिस्म का करिश्मा है जो ऐसे रूप को झेल रहा है। दहकते अंगारे गमछे में बँधे रह सकें तो ऐसा रूप किसी के शरीर में टिक सके।'

ठाकुर हक्का-बक्का होकर चुपचाप सुनता रहा। भोजा आगे कहने लगा, 'लाछी सर पर घड़ा रखे सहेलियों के साथ रिम-झिम करती तालाब से आ रही थी। गोया कण्डों के बीच चाँद दमक रहा हो। एक बार तो आँखों पर यकीन ही नहीं हुआ। पर आखिर असलियत पर तो विश्वास करना ही पड़ता है, अन्नदाता ! लाछी की मोहनी सूरत देखने पर होश हुआ कि आप इतने बरस औरतों के भुलावे में बेकार हाथ-पैर मारते रहे और मेरी चाकरी भी फिजूल गयी।'

ठाकुर धीरे से बोला, 'तो अब...।'

भोजा बीच में ही उतावला होकर कहने लगा, 'मुझे कहने की कतई जरूरत नहीं है। लेकिन मैं तो देखते ही ताड़ गया कि यह बानगी दूसरी है। यह शेरनी आसानी से काबू में नहीं आयेगी। लेकिन यमराज से बड़ा योद्धा कौन ? जिस दिन लाछी गूजरी हुजूर की सेज पर चढ़े, उस दिन मेरी कनवार सार्थक होगी।'

कहने को तो भोजा यह बात कह गया, पर कहते ही पहली दफा उसके कलेजे में यह बात रड़की। उस अनजानी रड़क की उसे कुछ खबर नहीं थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठाकुर ने उसे रोकते हुए कहा, 'अब बस कर। तूने तो ऐसी आग भड़कायी है कि अब किसी दूसरे काम में मेरा मन ही नहीं लगता, अब तेरी आँखों उजियारा है।'

ठाकुर को उस पर अडिग विश्वास था। ऐसे भरोसे के काम में वो बेहद निपुण था। और उधर गूजरी की क्या औकात कि वह ठाकुर की खातिर इन्कार करे। इन्कार करने में सार ही क्या है! गूजर तो केवल घर का मालिक है, पर ठाकुर समूचे गाँव का मालिक है। कैसी ही खूबसूरत क्यूँ न हो, है तो जात की गूजरी। ठिकाने की रिआया। हुजूर की सेज तक पहुँचना तो फख्र की बात है!

भोजा कनवारिया एकलछड़ा और कुँआरा था। सर पर ठाकुर के लम्बे हाथ थे। सेजों की चाकरी करने में खुरचन या जूठन जो भी हाथ लगती, उसी से सन्तोष कर लेता था। ठिकाने में उसके डाले ही नमक पड़ता था। इस खातिर हरेक उसे खुश रखने की कोशिश करता था। समझदार लोग तो अलग से ही उसकी हाजरी बजा देते थे। मतलब से बड़ी दूसरी कोई मर्यादा नहीं होती।

गौने के उपरान्त गूजर के घर भोजा का आना-जाना दिन-ब-दिन बढ़ने लगा। और यों गूजर से पहले ही काफी मेल-मुलाकात थी। शुरू-शुरू में तो वो लाछी की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखता था। ऐसा रूप तो बिन देखे ही साफ दिखता है।

पनिहारियों की टोली में भोजा की पाँच-सातेक चहेतियाँ थीं। भोजा उन्हें पट्टी पढ़ाकर लाछी के मन की टोह लेना चाहता था। पर काफी दिनों तक उसके मन की परतें उससे अनजानी ही रहीं। कोई कहती कि वह तो नितान्त भोली है। कोई कहती कि बेहद होशियार है। कोई कहती कि रूप की माफिक उसमें अक्ल नहीं है। न तो किसी बात में समझती है और न इशारे में। अपने पति के सिवाय उसे कोई दूसरा मर्द नजर ही नहीं आता। अपने घड़े के पानी के सिवाय वह तो दूसरी ठौर के पानी से कुल्ला ही नहीं करना चाहती। ऐसी उल्टी खोपड़ी की औरतों से कौन मगजमारी करे!

तब भोजा कहता कि उन्हें मगजमारी तो करनी ही पड़ेगी।

कोई मुँहलगी चहेती मुस्कराकर कहती, 'पहले तुम्हारा मतलब निकलता हो तो कुछ माथापच्ची भी करें।'

भोजा भी लम्बी-चौड़ी उधार नहीं रखता था। मुस्कराते बोला, 'भैरूजी के भोग चढ़े बिना प्रसाद कहाँ?'

फिर तो दोनों के होंठों पर फकत मुस्कराहट-ही-मुस्कराहट। मुस्कराहट से बड़ा कोई सवाल नहीं। मुस्कराहट से बड़ा कोई जवाब नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्पश्चात भोजा की चहेतियों ने लाछी को बरगलाने की काफी अटकलें कीं, लेकिन अबूझ गूजरी तो कोई दूसरी बात समझना ही नहीं चाहती थी। वह तो दूध में पली और झागों के बीच बड़ी हुई थी सो उसे सफेद-सफेद सब दूध ही नजर आता था। भैंसों का दूध भी जब काला नहीं होता तो इन्सान की हँसी और उसका मन काला क्यूँकर हो सकता है ?

ठाकुर को उकसाने के अलावा भोजा का भी कोई वश नहीं चला। चहेतियाँ भी कोशिश कर-करके थक गयीं, लेकिन लाछी किसी की बातों में नहीं आयी। हँडिया का दही हँडिया में और बिलोवने की छाछ बिलोवने में।

गायें-भैंसें देखने के बहाने ठाकुर कई बार गूजर के घर आया। दिल-ही-दिल में सारी बातें समझते हुए भी लाछी बिलकुल चुप ही रहती। ठाकुर के मंसूबे कितने दिन तक छुपे रहते ! वह अन्दर-ही-अन्दर खीजने लगी। जले हुए दूध की गन्ध घी बनने पर भी नहीं छूटती, तब ठाकुर के मैले मन की बास उसे कैसे नहीं आती।

एक बार गायों की तारीफ करते-करते ठाकुर ने लाछी के पास आकर पूछा, 'यह गाय कितनी मर्तबा ब्यायी हुई है ?'

लाछी के एक हाथ में चरी और दूसरे हाथ में रस्सी थी। धीरे से बोली, 'मुझे पूरा ध्यान नहीं है।'

भोजा पास ही खड़ा था। मौका देखकर तुरन्त बात को समेटते हुए बोला, 'मुझे लगता है कि तुझे तो अच्छी तरह अपना भी ध्यान नहीं है। अपना ही क्या, किसी का भी कुछ ध्यान नहीं है।'

एक दफा पलकें उठाकर लाछी ने भोजा की तरफ देखा। फिर बैठकर दूध दुहने लगी।

वे दोनों शर्मिन्दा होकर परस्पर बातचीत के बहाने वहाँ से रवाना हो गये। यह कोई औरत है या आफत। गाँव के मालिक की मान-मर्यादा में भी नहीं समझती। सब कुछ जानते हुए भी अनजान बन रही है।

लाछी ने फिर भी खास परवाह नहीं की। अपने-अपने लच्छन व अपना-अपना स्वभाव ! पाँचों अँगुलियाँ भी बराबर नहीं होतीं। पति को बात कहते-कहते रह गयी। जो कोयले खायेगा, उसी का काला मुँह होगा।

लेकिन पीछा करनेवाले हजरत आसानी से पीछा नहीं छोड़ते। एक बार लाछी 'गौर' में खड़ी थी। एक गाय ऋतु में आयी तो वह निशंक सरल भाव से त्वई-त्वई करके साँड को पुकारने लगी। पुकार सुनते ही साँड ने सजग होकर गर्दन घुमायी। उन्मत्त गाय की तरफ जोश में आकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भागा। ठाकुर और कनवारिया शायद ऐसे ही मौके की तलाश में थे। लाछी तो अपने हाल में मगन, त्वई-त्वई कर रही थी।

साँड को निरन्तर उकसाते उसने पीछे मुड़कर देखा। ठाकुर और कनवारिया दोनों पास खड़े बेशर्मी से मुस्करा रहे थे। पहले तो लाछी कुछ चौंकी, लेकिन दूसरे ही पल होश सँभाल वापस उसी तरह पीठ घुमाकर साँड को उकसाने में मशगूल हो गयी। कुदरत की इस पवित्र लीला से कैसी शर्म! कैसी लज्जा! तब वेशर्म आदमियों के सामने वह क्यूं लजाये?

संयोग का ऐसा बढ़िया मौका बार-बार नहीं मिलता। इस बार चूक गये तो चूक गये। ठाकुर के मुँहलगे कनवारिये के कैसी लगाम! निशंक बोला, 'लाछी, तुझे इस साँड की तो इतनी फिक्र है, लेकिन ठाकुर साहब की तो तू कुछ परवाह ही नहीं करती। कितने दिन हो गये हैं, तड़फते हुए?'

लाछी ने एक-एक अक्षर साफ सुना। पिछली सारी बातें एक ज्वाला की भाँति उसकी आँखों के सामने झलकीं। क्रोध में खौलते हुए पीछे देखा। एक वेशर्म, घिनौनी हँसी ठाकुर के होंठों पर चिपकी हुई थी। उस हँसी का मर्म उसे भोजा के बोलों से भी अधिक गलीज लगा। इन्सान के होंठों पर ऐसी मैली हँसी का परस! उसे रोम-रोम में अंगारों-सी जलन महसूस हुई। रिआया और मालिक का खयाल भूलकर वह तेजी से ठाकुर की तरफ झपटी। हाथ उठाकर कोहनी का वो भरपूर वार किया कि गाँव के मालिक को मूर्च्छा आ गयी। वो जहाँ खड़ा था वहीं चक्कर खाकर नीचे गिर पड़ा। अक्ल के उजागर कनवारिये की अक्ल ने भी वक्त पर साथ नहीं दिया तो वो नीचे बैठकर अन्नदाता की छाती मसलने लगा। और लाछी बड़ी मुश्किल से छलकती हँसी दबाकर त्वई-त्वई करती साँड की तरफ चल पड़ी।

आखिर मसलने-दबाने से ठाकुर की मूर्च्छा दूर हुई, आँखें झपकाते हुए पूछा, 'भोजा, यह क्या हुआ रे?'

भोजा पसलियों को सहलाते बोला, 'अन्नदाता, बदजात औरतों से साबका पड़ने पर ऐसा ही होता है। आप समझना कि कोई बुरा सपना देखा। आप कुछ दिन तक धीरज रखें तो यह राह पर आ जायेगी। मैं औरतों की नब्ज अच्छी तरह पहचानता हूँ।'

ठाकुर धीरे से बोला, 'पर यहाँ तू भूल कर गया।'

'अन्नदाता, भूल मैंने नहीं की, लाछी भूल कर गयी। वह ठिकाने के तौर-तरीकों से वाकिफ नहीं है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठाकुर को साँस लेने में कुछ कठिनाई हुई तो अटकते हुए कहने लगा, 'तू कहे तो राँड के नाक-कान कटवाकर बत्तीसी तुड़वा दूँ।'

भोजा हाथ जोड़कर बोला, 'जैसी हुजूर की इच्छा। पर अन्नदाता, इस तरह से बूची करने पर तो उसका हुलिया ही बिगड़ जायेगा।'

'लेकिन आज इसके हाथों मेरी इज्जत धूल में मिल गयी, सो कुछ नहीं ?'

'किसने देखा अन्नदाता !' ठाकुर के कलेजे को दबाते भोजा आगे कहने लगा, 'आप जानते हैं, मैं जानता हूँ या यह लाछी जानती है। ये ढोर-डाँगर तो इन्सान की इज्जत-आबरू में कुछ समझते ही नहीं। आप फरमाएँ तो मैं लाछी को मना कर दूँ कि वह किसी के सामने इस बात का जिक्र न करे। अगर भूल से भी जिक्र किया तो उसकी बुरी गत बनेगी।'

'लेकिन वह माने तब न !'

'वह तो क्या, उसकी छाया को भी मानना पड़ेगा।'

उसके बाद ठाकुर कपड़ों की धूल झाड़ता उठ खड़ा हुआ। उस वक्त वो भोजा को धूल झाड़ने का हुक्म भी नहीं दे सका। भोजा धीरे-धीरे लाछी के पास जाकर कहने लगा, 'गलती तो तूने आज बहुत बड़ी की है, पर फिर भी अन्नदाता का बड़प्पन कि तुझे माफी बख्श दी। हम भी किसी से चर्चा नहीं करेंगे, तू भी मत करना।'

इस बार लाछी उफनती हँसी को रोक नहीं सकी। ठहाका लगाकर जोर से हँसने लगी सो काफी देर तक हँसती रही। भोजा की अक्ल यहाँ फिर चक्कर खा गयी। वो अपना-सा मुँह लेकर वहाँ से चलता बना। ठाकुर ने भी आगे पूछताछ नहीं की। रुकने के बाद भी लाछी की हँसी काफी देर तक उनके कानों में गूँजती रही।

गाय के शान्त होने के बाद गूजर वहाँ आया। लाछी उत्साह से उसकी तरफ भागी। चूड़े-बँगड़ियों की खनखनाहट, लिपटती लूम्बों की सरसराहट, घूमर लेते घाघरे की फरफ़राहट और गूजरी के होंठों पर अचरज, उत्साह व जोश घुली मुस्कराहट। पति की लाठी हाथ में लेकर उस पर हाथ फेरते बोली, 'गुड़-खोपरे खिलाओ तो एक बधाई की बात सुनाऊँ।'

गौना हुए कल महीना पूरा होगा। आशा ठहरने की बात तो उसने पहले ही बता दी थी। फिर ऐसी क्या बधाई हो सकती है ! लेकिन उस वक्त भी वह इतनी खुश तो नहीं थी, नयी बहू थोड़ी-बहुत शर्म तो करती ही है। शायद इसी खातिर दूसरी बार फिर वही बधाई सुनाना चाहती हो। औरतों के लिए इससे बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती है ! उसके गालों पर हाथ फेरते बोला, 'उत्साह की लहर में तू भूल गयी कि यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बधाई तो तू पहले ही सुना चुकी है।'

लम्बी गर्दन को हिलाते बोली, 'ऊँ-हूँ, यह बात दूसरी है। तुम गुड़-खोपरे की हाँ तो भरो।'

गूजर भी असमंजस में पड़ गया। फिर भी मुस्कराते बोला, 'गुड़-खोपरे का क्या है, पसन्द हो तो रोजाना खाया कर।'

'बात पसन्द की नहीं, बधाई की है।'

फिर उसने शुरू से लेकर ठाकुर के बेहोश होने तक की सारी घटना विस्तार से कह सुनायी और पति हतप्रभ-सा चुपचाप सारी बात सुनता रहा। लेकिन कोहनी की मार और माफी बख्शाने के बाद जोर से हँसने की बात उसके गले नहीं उतरी। चेहरे का रंग उड़ गया। सकते में आकर दबी जबान से कहने लगा, 'यह तो बहुत बुरा हुआ! मालिक की मान-मर्यादा का कुछ तो ख्याल रखना था!'

पति के मुँह से ये अचीते बोल सुन कर आनन्द और उत्साह घुली मुस्कराहट लुप्त हो गयी, गोया कोई अदीठ बाज एक ही झपट्टे में उसकी हँसी छीनकर उड़ गया हो। सहसा उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। संज्ञाहीन-सी बोली, 'मान-मर्यादा! इसमें मान-मर्यादा की क्या बात है? उस वक्त गुस्सा तो ऐसा आया था कि हरामी की गर्दन मरोड़ दूँ।'

पत्नी की यह बात सुनकर पति को भी कम गुस्सा नहीं आया! उसके होंठों पर हथेली रखते हुए बोला, 'बकवास बन्द कर, ऐसे बोल निकालते हुए तुझे शर्म नहीं आती! अन्नदाता का तो स्वभाव ही ऐसा है, चलते ही छोटी-मोटी चुहल कर लेते हैं।'

लाछी ने झटककर हाथ छुड़ाया। बोली, 'तुम्हें यह छोटी-मोटी चुहल नजर आती है?'

इसके साथ ही उसकी आँखें छलछला आयीं। आगे एक शब्द भी नहीं बोला गया।

इसके बाद पति उसे संजीदगी से समझाने लगा कि यों पागलपन करने से काम नहीं चलता। अन्नदाता तो जैसे हैं, वैसे ही रहेंगे। उनके ऊपर रिआया का जोर नहीं चलता। समुद्र में रहकर मगर से बैर निभ सकता हो तो गाँव की रिआया का ठाकुर से बैर निभ सकता है। अक्ल और समझ के बल पर दिन तोड़ें सो अपने हैं। यों इस घर पर मालिक की काफी मेहर है। भोजा से उसकी अच्छी मेल-मुलाकात है। कोरे-मोरे रूप से क्या होता है। गुण, रसकात और अक्ल बड़ी बात है।

पति समझाता रहा और लाछी हुचक-हुचक रोती रही। वह इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जँवामर्द खाविन्द से क्या उम्मीद रखती थी और क्या सामने आया ? फिर यह हाथवाली लाठी किस दिन के लिए है ? बेचारे जानवरों को मारकर अपने हाथों की ऐंठन भले ही निकालो। वे तो बोलकर कभी अपनी पीड़ा नहीं दरसायेंगे। अपने से निर्बल के लिए लाठी की जरूरत ही क्या है ? बराबरीवाले अथवा अपरबली से भिड़ने में ही हथियार का महत्त्व है। पशु-पक्षियों का स्वभाव तो बिलकुल सीधा और सरल। जैसे दिखते हैं, वैसे ही चलते हैं। पर इन्सान के चाल-चलन में बहुत उलझाव है। सोचते कुछ हैं, कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। जैसा दिखता है, उससे निपट उलटा और टेढ़ा। घर-परिवार, जात-पाँत और संस्कारों के बन्धन, उसका कुछ भी वश नहीं चलने देते।

लाछी ने वापस कुछ जवाब नहीं दिया। पति ने सोचा कि रोने के बहाने पछतावा कर रही है। अभी बचपना है। ठोकरें खाने पर आप ही समझ आ जायेगी। गृहस्थी चलाना बेहद टेढ़ा और कठिन काम है। फिर लाछी को पुचकारते बोला, 'इतनी बकवास करने पर कुछ तो अक्ल आयी होगी।'

गुमसुम लाछी ने थोड़ा सिर उठाकर पति की तरफ देखा। लाछी को ऐसी नजर की तो सपने में भी उम्मीद नहीं थी। आँखें पोंछकर जबरदस्ती मुस्कराने की चेष्टा की। पति ने वो ही सवाल वापस पूछा, 'कुछ अक्ल आयी कि नहीं ?'

अब तो गवाड़ी के भाग्य के साथ ही लाछी का भाग्य है। उससे अलग वह कहाँ जाये ? बोली, 'अक्ल तो देर-सवेर आनी ही थी।'

गूजर को अपनी समझ पर काफी गरूर हुआ। पत्नी की ठुड्डी उठाकर थोड़ी देर तक उसकी सूरत निहारता रहा। फिर गर्व से कहने लगा, 'यह रूप देखकर तो पत्थर का दिल भी मचल जाये। फिर हुजूर कैसे अंकुश रखते! अगर तू इतनी खूबसूरत नहीं होती तो कुछ झंझट नहीं था।'

'खूबसूरत होना और न होना तो किसी के वश में नहीं है।'

'लेकिन गम खाकर सब्र करना तो वश में है।'

इन बोलों के साथ ही मानो किसी ने लाछी के कलेजे में हाथ डाला हो। पति को चिढ़ाने की खातिर कहा, 'तुम्हारी हिम्मत न हो तो अपना चेहरा जला डालूं!'

आगे कुछ और भी कहनेवाली थी कि पति को तैश आ गया। बोला, 'खूबसूरती का अधिक गरूर अच्छा नहीं होता। सोने का खंजर खुद के थोड़े ही घोंपा जाता है! चूल्हा फूंकने और गोबर थापने की खातिर इस गवाड़ी में तुझ जैसी सत्रह-बीसी औरतें ला सकता हूँ, लेकिन अन्नदाता का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आसरा छोड़कर कहाँ जाऊँ ?'

लाछी ने सोचा कि अब बहस की हद आ गयी है। कहने-सुनने में कुछ सार नहीं। मसखरी करते हुए बोली, 'हाँ, यह बात तो तुम्हारी बिलकुल सही है। लेकिन मुझ जैसा रूप भी दूसरा नहीं मिलेगा।'

पति झुँझलाकर कहने लगा, 'उससे क्या होता है ? कोरे-मोरे रूप से गवाड़ी की गाड़ी नहीं चल सकती। पूरी होशियारी से अपना काम सारना है।'

भला, अब लाछी क्यूँ चूकती। ताना देते बोली, 'तुम्हारी इजाजत हो तो दिन-दहाड़े ठाकुर के साथ सो जाऊँ ?'

मानो आग में घास का गट्ठर डाल दिया हो। गुस्से में दाँत पीसते बोला, 'चण्डाल, मैंने साथ सोने को कब कहा ? जब तेरी इच्छा होगी, तो किसी के रोके भी नहीं रुकेगी। काफी देर से जबान चला रही है। खोपड़ी खुजा रही हो तो बोल अभी ठीक कर दूँ।'

बात से बात बढ़ती है और बात से बात दबती है। फिर लाछी क्यूँ कसर रखती। बोली, 'मेरी खाज ठीक करने में तो कोई मर्दानगी नहीं है, लेकिन मुझे कुछ दूसरा ही गुमान था। जल्दी ही वहम मिट गया। अब तुमसे कभी किसी की शिकायत नहीं करूँगी। एक ही घड़ी में हजार बरसों की समझ एक साथ आ गयी।'

पति किसी भूली हुई बात को याद करते हुए बोला, 'तुझे किस काम से भेजा और तू किस लफड़े में उलझ गयी। बातों-बातों में पूछना ही भूल गया कि 'काबरी' गाय हरी हुई कि नहीं ?'

यही गवाड़ी का सर्वोपरि धर्म! और यही बाड़े का झीना मर्म! पास ही झाड़ू पड़ा था। हाथ में लेकर बुहारते बोली, 'हाँ, हो गयी।'

पीहर के पेड़-पौधे, घरवालों का दुलार और सहेलियों का साथ छोड़कर इस परायी जगह आयी। दिल में कितना उत्साह और हर्ष था! लेकिन एक ही झोंके में राम जाने कैसा झटका लगा कि अन्तस के तमाम फूल मुरझा गये। नयी कोंपलें अन्दर-ही-अन्दर जल गयीं।

लेकिन सुन्दर देह तो वैसी ही तन्दुरुस्त थी। उसे तो कोई लकवा नहीं हुआ था। फिर तो वो ही गौर, वो ही गवाड़ी और वो ही माथापच्ची। दुहना, पनघट, चूल्हा, झाड़-बुहार, चारा और गोबर। वो ही दूध और वो ही जावन। वे ही बासन और वो ही दही। वे ही बिलोवने, वो ही माखन। वही सेज और वे ही रलियाँ। वे ही गलियारे और वे ही गलियाँ। लेकिन दिल बिलकुल बुझ गया था। अँगरलियों का आनन्द कसैला हो गया था। ऐसा लगता था मानो कोई काठ का बिजूका उसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोथ को खूंद रहा हो। यदि लोथ ही खुंदवानी थी तो ब्याह, वेदी और हथलेवे का आडम्बर क्यूं रचाया गया ? इस गवाड़ी में बधाकर अन्दर लेने का तमाशा क्यूं किया ? यदि ऐसे वक्त में भी पति हिफाजत नहीं कर सकता तो उसका हाथ थामकर पीछे क्यूं आयी ? फिर लड़ाई, क्रोध, बदला और यह सँवारी हुई मजबूत लाठी किस दिन के लिए है ? ठाकुर है तो अपनी जगह है। राम जाने सेजों का महसूल लोग कैसे बर्दाश्त कर लेते हैं ? ऐसे बुजदिल भरतार किस काम के ? फकत रोटी और कपड़ों के बदले तो यह गुलामी मंजूर नहीं की थी। ऐसी घिनौनी गुजर-बसर की खातिर तो हजार दूसरे रास्ते हैं। फिर गाजों-बाजों के साथ इसका इतना उत्सव क्यूं ? दही विलोहती लाछी के दिमाग में भी इसी तरह कोई अदीठ मथानी घमक रही थी—झरड़-मरड़, झरड़-मरड़ ! मक्खन की तरह राम जाने कैसा लौंदा बनेगा ? लाछी का दिल पूरी तरह खट्टा हो गया था। उसे कहीं भी कुछ अच्छा नहीं लगता था। उसकी खातिर अब न तो चाँद में उजास रहा, न सूरज में, और न तारों में। सूरज उगे तो उसकी मरजी और न उगे तो उसकी मरजी। लाछी को उससे कोई मतलब नहीं था। गौने के एक महीने बाद ही लाछी के लिए कुदरत का सारा नजारा बदल गया।

लोक-दिखावे के लिए उसे मुस्कराना भी पड़ता था, हँसना भी पड़ता था, लेकिन पहलेवाली दूधिया आब वापस उसके होंठों पर नहीं थिरकी। सहवास के लिए अब इन्कार करने में भी उसे शर्म आती थी। लेकिन पति से उसका मन फिर कभी एक नहीं हो सका।

और उधर कोहनी की मार के बाद ठाकुर को भी चैन नहीं था। अक्सर झुंझलाकर मरजीदान कनवारिये से कहता, 'भोजा, तेरी अक्ल भी जंग खा गयी क्या ? अभी तक कोई तदवीर नहीं जमी ?'

भोजा आजिजी से हाथ जोड़कर बोला, 'अन्नदाता, मैंने तो पहले ही अरज की थी कि यह बानगी न्यारी है। दूसरी औरतों की तरह इसकी सीधी समझ नहीं है। अगर बेर व निबोलियों की तरह गगन के तारे सुलभ होते तो उन्हें कौन छोड़ता ! ऐसी वस्तुएँ तो बड़ी मुश्किल से हाथ लगती हैं, अन्नदाता ! लेकिन हाथ लगने के बाद उस आनन्द की न तो सीमा है और न कोई अन्त। उस सुख के बदले स्वर्ग का राज्य भी निछावर हो तो कम है। आप थोड़ा धैर्य रखें, अपने वश रहते मैं कुछ भी कसर नहीं रखूंगा।'

ठाकुर एक गहरी आंह भरकर बोला, 'यह तो मुझे पूरा भरोसा है रे !'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन गौरवाली उस मूर्च्छा के बाद भोजा उतना भरोसे-लायक कनवारिया नहीं रहा। धीरे-धीरे खुद-ब-खुद ही उसका दिल फिरने लगा। क्या गाँव के स्वामी की इतनी ही बिसात कि कोहनी के वार से ही मूर्च्छा आ गयी और मूर्च्छा टूटने के बाद भी किसी का बाल-बाँका नहीं हुआ। जो डरता है, उसे ठाकुर और देवता अधिक डराते हैं। डरानेवालों से उलटे डरते हैं। इस नयी बात की रोशनी से भोजा के मन की रंगत बदल गयी और हौले-हौले सेजों की इस आढ़त से उसे नफरत होने लगी। कोई सौ हाथियों का पेट तो उसे भरना है नहीं। एकलछड़े व्यक्ति को ऐसा घिनौना काम शोभा नहीं देता। और लाछी के समान अप्सरा-सी सुन्दर गूजरी के लिए तो यह आढ़त बिलकुल ही रास नहीं आती। यदि यह कमनीय देह उसके हाथ लग जाये तो ऐसे सौ ठिकाने उसकी मुँहदिखायी में जाते हैं। और यदि यह मखनिया सिंगार उसके गले में बाँहें डालकर झूमे तो बादशाहत भी उस सुख के आगे सात बार पानी भरे। फिर ऐसे रूप की दलाली तो उसे मरने के बाद भी जलील करेगी।

संयोग की बात कि भोजा को एक बार ऐसा ही अचीता अवसर हाथ लगा। भोजा 'धनकिये' के डाम का उस्ताद था। गूजर की एक भैंस धनकिये की बीमारी से ऐंठने लगी तो घबराया हुआ गूजर उसे हाथों-हाथ बुला लाया। गूजर को तो बिरादरी की पंचायत में जाने की उतावली थी। इसलिए लाछी को अच्छी तरह समझाकर वो फौरन सफर के लिए चल पड़ा।

बाड़े में खड़ा भोजा छटपटाती व ऐंठती भैंस को सहला रहा था कि लाछी एक ठींगले में जगमगाते उपले लेकर आयी। उपलों के बीच तपा हुआ हँसिया लाल-सुर्ख हो रहा था। भोजा ने झट हँसिये की मूठ पकड़कर भैंसे के पुट्ठे पर डाम जड़ दिया। चमड़ी से हल्का-सा धुआँ उठा। भैंस ने तड़फकर जल्दी-जल्दी लातें फेंकीं। फिर थोड़ी देर में आप ही उठ खड़ी हुई। मानो कोई अचूक जादू हुआ हो। पैर के अँगूठे से धूल कुरेदती लाछी बोली, 'समय पर डाम लग गया तो भैंस की जान बच गयी, वरना तड़फ-तड़फकर मरती।'

इतनी बात सुनने पर भोजा कब चूकनेवाला था। तुरन्त जवाब दिया, 'इस भैंस की तरह मेरी जान भी तेरे हाथ में है। इच्छा हो तो मार, इच्छा हो तो तार।'

लाछी के कानों को एकबारगी यकीन ही नहीं हुआ कि गौरवाले उस हादसे के बावजूद किसी के मुँह से ऐसे बोल निकल सकते हैं। जब उसने गाँव के स्वामी को भी नहीं बख्शा, तब एक नाचीज कनवारिये की क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिसात ! ठाकुर को तो फकत मूर्च्छा ही आयी थी, उससे आधा झटका लगने पर ही इसका तो कचूमर निकल जायेगा। यह बात अच्छी तरह जानते हुए भी इसके हौसले ने किसी प्रकार का अंकुश नहीं माना। लाछी ने आक-वाक होकर भोजा की तरफ देखा। मुस्कराहट को दबाते बोली, 'उस दिन की बात भूल गये ?'

'भूला नहीं हूँ, तभी तो मेरी हिम्मत हुई। तुम्हारे हाथों मर जाऊँ तो नजात पाऊँ। सूरज के उजास मे अभागों का भी हिस्सा होता है, तब तुम्हारे रूप में क्या मेरी इतनी भी शिरकत नहीं है।'

लाछी नीची नजर किये वापस धूल कुरेदने लगी। अगर पति की ताकत का पेंदा नहीं उघड़ता तो आज ये बोल सुनने पर वह भोजा की आँतें निकाल लेती। लेकिन पति की सीख सुनने के बाद लाछी का वो स्वरूप ही बदल गया था। इन्सान के अन्दर कई गिरगिट छुपे रहते हैं। कब क्या रंग बदले, उसे खुद भी पता नहीं चलता। उसके अंतस में कई बातों के बवण्डर उठने लगे। हो सकता है, ठाकुर वाली बात सुनकर पति को ताव न आया हो, पर शायद आँखों से रूबरू देखकर उसका जमीर करवट बदले। पति की अन्तिम परख या असली पहचान के बहाने उसकी अच्छी तरह आजमाइश तो कर ले। गूजर परसों वापस आयेगा। लाछी पीठ घुमाकर बोली, 'तरसों दिन ढलने पर बाड़े में आ जाना।'

भोजे को इतना सब्र कहाँ ? आज तो उसकी हथेली में चाँद उगा था। आतुरता से बोला, 'साँप के काटे को इतवार कब आये ? आज क्यूँ नहीं ? ऐसा मुहूर्त तो पंचांग देखने पर भी नहीं मिलेगा।'

'लेकिन मेरे पंचांग में तीन दिन तक मुहूर्त नहीं है।' यह बात कह-कर लाछी तुरन्त वहाँ से चल पड़ी। भोजा भी पीछे-का-पीछे लपका। कहने लगा, 'लाछी, मेरे धनकिये का डाम तेरे हाथ है। अगर आज वक्त पर डाम नहीं लगा तो मेरे प्राण हरगिज नहीं बचेंगे।'

लाछी पीठ घुमाकर बोली, 'आज नहीं, तरसों शाम को, बाड़े में !'

भोजा कुछ आगे कहनेवाला था कि लाछी की सास आती दिखायी दी। मजबूरन सब्र करना पड़ा। सास के करीब आते ही बोला, 'माँजी, डाम देते ही भैंस तो एकदम ठीक हो गयी।'

माँजी के दिल को तसल्ली हुई। मुस्कराकर बोली, 'तुम्हारे हाथ का तो मुझे पूरा भरोसा था। मुँह तो मीठा करके जाओ।'

गढ़ की राह तेज कदमों से चलते हुए भोजा ने कहा, 'अब मीठा मुंह तो भाई के आने पर ही करूंगा।'

सास मुस्कराती हुई लाछी के पास आकर कहने लगी, 'कितना भला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रौर सीधा कनवारिया है। अपने घर पर तो इसकी शुरू से ही शुभदृष्टि है। ठाकुरों की ग्राँखें ग्रौर उनके कान तो कनवारिये ही होते हैं। वे उनके चलाये ही चलते हैं। घर आने पर ठीक से आवभगत किया कर। दूध-दही की मनुहार किया कर।'

लाछी बात सँवारते बोली, 'आपके होते मुझे चिन्ता करने की क्या जरूरत है। ये काम तो बुजुर्गों के हैं।'

'फिर भी समय पर गृहस्थी के गुर सीखने से फायदा ही है।'

शाम को लाछी दुहने बैठी तो उसको ऐसा लगा गोया उसके आनन्द का क्षीरसागर एकदम सूख गया हो। मन बहलाने की बहुत कोशिश की, पर जली हुई जड़ें वापस हरी नहीं हुईं। उसके सोचने की दिशा ही बदल गयी। आज कड़बन्धवाली गाय को दुहने बैठी तो उसका मन खट्टा हो गया। वह गाय गर्दन घुमाकर खुद ही अपना दूध पी लेती थी, इस खातिर गले में कड़बन्ध फँसा रखा था। गृहस्थी के गुर इस तरह फायदेमन्द होते हैं। बछड़े को भी भर पेट दूध नहीं पिलाया जाता। और ये बेचारे जानवर घास खाकर अमृत के समान दूध सौंपते हैं। राम जाने, उस समय लाछी को क्या उलटी सूझी कि उसने तगारी में आधी चरी दूध डालकर गाय के सामने रख दिया। पहले तो गाय को यकीन नहीं ही हुआ। नजर उठाकर लाछी की ओर देखा। फिर आप ही चसड़-चसड़ दूध पीने लगी।

क्या इस गाय की तरह उसने भोजा पर भी ऐसी ही दया की है? नहीं-नहीं, यह बात तो मरकर भी मुमकिन नहीं हो सकती। गृहस्थी की मर्यादा निभाना बहुत दूभर है। तब ठाकुर की छाती पर कोहनी का वार करनेवाली लाछी ने खुद अपने मुँह से भोजा को बाड़े में आने का न्यौता कैसे दिया? न्यौते के बहाने क्या वह पति की सही पहचान करना चाहती है या पति की पहचान के भुलावे में वह सचमुच भोजा से सहवास करना चाहती है? गौरवाले गुस्से तले यह दया जाने कहाँ इतनी गहरी दबी हुई थी? प्रत्यक्ष साक्षात्कार होने पर भी यकायक विश्वास नहीं होता। क्या अपना मन अपनी ही आँखों के सामने इस तरह आँख-मिचौनी खेलता है? मन की तहों के भीतर कैसे-कैसे गोरख-धन्धे उलझे रहते हैं। दूध में पली और दूध के बीच बड़ी हुई गूजरी के मन की ऐसी लीला तो नहीं जानी थी। भोजा से हुई बातचीत को वापस याद करते ही उसका अंग-अंग शर्म से सिमटने लगा। फिर बार-बार अपने मन को समझाने लगी कि पति के असली चेहरे की पहचान की चाह अगर उसके दिल में नहीं होती तो सपने में भी वह पराये मर्द के सामने ऐसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोल नहीं निकालती। अपने मन को अपने आपसे छुपाना ही इन्सान का सबसे बड़ा गुण है।

लाछी और भोजा के लिए उन दो दिनों का समय तो एक जैसा ही था, पर उन दोनों के खयाल एकदम जुदा थे। उन अलग-अलग भावनाओं का भ्रम न उघड़े तभी बेहतर है।

ज्यों-त्यों करके मनचाही घड़ी की साँझ अवतरित हुई। लाछी ने पति से साथ चलने के लिए कहा तो उसने हैरत से पूछा, 'आज यह नयी बात कैसे? पहले तो कभी साथ चलने को नहीं कहा।'

लाछी कुछ नाराजगी से बोली, 'पहले मुझे तुम्हारे गाँव के रंग-ढंग मालूम नहीं थे। अब अकेली जाते डर लगता है।'

गूजर उसे ढाढ़स देते बोला, 'कुछ दिनों में धीरे-धीरे आप ही डर मिट जायेगा। अपना मन वश में हो तो फिर कहीं कोई डर नहीं है। पर तेरी मरजी है तो चल, मेरी ना नहीं है।'

और उधर बाड़े में इन्तजार कर रहे भोजे की अधीरता पल-पल बढ़ती जा रही थी। दीवार के ऊपर से झाँका तो लाछी के साथ गूजर भी आते दिखायी दिया। यह तो बहुत बुरा हुआ। पर भोजा की अक्ल बहुत पैनी थी। तुरन्त युक्ति सोच ली। 'ठाण' के पास जाकर चुपचाप चारा उलट-पुलट करने लगा।

पीठ देखकर गूजर ने ठीक से नहीं पहचाना तो जोर से गरजा, 'कौन है?'

भोजा ने पलटकर वापस उतने ही जोर से जवाब दिया, 'यह तो मैं भोजा!'

गूजर की आँखें अभी भी हैरत से चढ़ी थीं। पूछा, 'इस वक्त यहाँ बाड़े में कैसे? भोजा, एक घर तो डायन भी छोड़ती है रे!'

भोजा मुस्कराकर कहने लगा, 'डायन की बात तो डायन जाने। पर पहले गढ़ की चाकरी, फिर भाईचारा। किसी ने ठाकुर साहब के कान भरे कि जानवरों को तू रोजाना दानों सहित ज्वार का चारा खिलाता है। ठाण तलाशने पर पता चला कि बात तो बिलकुल सही है। तुझे कुछ तो खयाल रखना था। अब तुम्हारे साथ मेरी भी खैर नहीं है।'

गूजर का दिल बैठने लगा। लेकिन तब भी भोजा पर उसे पूरा विश्वास था कि वो जैसे-तैसे बात सँभाल लेगा। नजदीक आकर उसके सर की तरफ हाथ करते कहने लगा, 'भोजा, तेरे सर की कसम, फकत कल ही राम निकला। मोतियों की मानिन्द दाने पड़े सिट्टे देखे तो मेरी नीयत बिगड़ गयी। मेरी इज्जत अब तेरे हाथ में है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोजा लाछी को सुनाने की खातिर व्यंग से बोला, 'इज्जत तो तेरी-मेरी साथ ही है, पर हुजूर को क्या जवाब दूंगा ? आजकल उनकी तुझ पर कड़ी नजर है। राम जाने क्या बात है ?'

भोजा की तरफ देखते लाछी बोली, 'राम जाने या न जाने, तुम खुद तो जानते ही हो।'

गूजर को गुस्सा आ गया। डाँटते बोला, 'तू बीच में बकबक मत कर। यह अच्छा हुआ कि मैं साथ आ गया, वरना तू तो फिर झगड़ा कर बैठती। हमारी बातें, हम आप ही निबट लेंगे। तू दुहारी कर। औरतों को मर्दों के काम में बोलने की क्या जरूरत है ?'

लाछी को तो अपनी जरूरत का पूरा ध्यान था। फिर इस बेसिर-पैर की बहस का क्या अन्त ! लेकिन तब भी भोजे ने मौके पर अक्ल तो खूब ही लड़ायी। रत्ती-भर शक नहीं होने दिया। उसके मन की उथल-पुथल तो अब वो ही जाने।

लाछी ने दुहारी की तब तक दोनों बातचीत करते रहे। भोजा के विश्वास दिलाने पर गूजर निश्चिन्त हो गया कि बात आगे नहीं बढ़ेगी।

अगले दिन लाछी मुँहअँधेरे अकेले ही तालाब की ओर रवाना हुई तो राह में भोजा मिल गया। भोजा की तो जान पर बनी थी। इधर-उधर देखकर बोला, 'लाछी, यह किस जन्म का बदला लिया ? गूजर को साथ लेकर क्यूँ आयी ?'

'तुम्हारे भाई नहीं माने, तो मैं क्या करती ? मैं कन्धे पर तो बिठाकर लायी नहीं थी। आजकल बात-बात पर वहम करते हैं। तुमने होशियारी से काम नहीं लिया तो दोनों का मुँह काला होगा।'

आप ही अपनी तारीफ करते भोजा बोला, 'मेरी बात तो तू छोड़ ! मौके पर ऐसी तरकीब लड़ाता हूँ कि मुझ पर तो कोई शक-शुबहा कर ही नहीं सकता। पर अब तो कोई नया जुगाड़ बिठा।'

लाछी फुसफुसाते बोली, 'मेरी ना थोड़े ही है, पर तुम्हारी किस्मत ही खराब हो तो मैं भी क्या करूँ ? रात के अन्तिम पहर, बछड़ोंवाले बाड़े में आ जाना।'

'शर्तिया ?'

'हाँ, शर्तिया।'

इतना आश्वासन पाकर भोजा दूसरे मार्ग पर मुड़ गया। और रुनक-झुनक करती लाछी घड़ा उठाये अपने ध्यान में चलती रही। चोटी की फटकार से गढ़ के कँगूरे काँपने लगे। यह खेल तो अच्छा हाथ लगा ! आखिर तो भोजा की अक्ल भी हार-थकेगी। पति का वहम कभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न कभी तो फुफकारेगा ही। बाँसों गहरे अनजाने पानी में उतर गयी है तो अब पेंदे तक पहुँचकर ही दम लेगी।

शाम को लाछी ने एक भैंस के सामने खली की तगारी रखी तो उसने सूँघा तक नहीं। शायद प्यासी हो। चार-पाँच डोलियाँ कूँडी में पानी डाला, पर भैंस ने पानी की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखा। पीठ थपथपाकर पगहा खोला तो भैंस हुंकारती हुई भागी। कभी इधर तो कभी उधर। भैंस तो ऋतु में आ गयी। लाछी ने गले की पूरी ताकत से हुरत-हुरत करके भैंसे को आवाज दी। भैंसा तो मानो इसी आवाज की इन्तजार में था। तोप से छूटे गोले की मानिन्द भैंस के पीछे लपका। पाक-साफ कुदरत न किसी की झिझक मानती है, न किसी की शर्म। और न उस पर रिवाजों के आडम्बर का अंकुश ही है। पर इन्सान अपने चारों ओर कितनी दीवारों, कितने पर्दों, कितने लिबासों, कितने घूंघटों, कितनी चोलियों और काजल-बिन्दियों के बीच जकड़ा हुआ है। सात फेरों के बहाने औरत फकत एक ही मर्द का हाथ क्यूँ थामती है? और क्यूँ उस हाथ को थामना पड़ता है जिसके लिए सपने में भी उसकी रजामन्दी नहीं होती। लाछी का जोबन किसी भी गूजर के घर घूंघट निकाल सकता था। फिर वो जोबन एक मर्द की बन्दिश में क्यूँ जकड़ा रहे; जिस बन्दिश की मर्यादा में मर्द के हजारों स्वार्थ पूरे होते हैं। ठाकुर, ठिकाने के अहलकारों और कनवारिये को कोई औरत कहाँ तलक खुश रखे? ज्यों-त्यों करके जीना ही इन्सान का धर्म बन गया है। घर-गृहस्थी की गुजर-बसर से बड़ी कोई नैतिकता नहीं रह गयी है। इन्सान के लिए यही इतिहास का दूध है, यही ज्ञान का दही और यही धर्म का मक्खन! बाकी सभी छाछ और धोवन! पहले तो लाछी सफेद-सफेद सब दूध ही जानती थी, पर अब दूध में भी उसे कालिख नजर आने लगी। समझ-समझ का फेर है। कैसी दुविधा में फँसी? न रहे बनता है और न छोड़े बनता है। क्या ठाकुर के आतंक के सामने अर्धांगिनी के शील की कोई इज्जत ही नहीं! लाछी के सर में मानो अनगिनत ततैये भनभनाने लगे हों। जोड़ी का भरतार और खाती-पीती गवाड़ी! फिर किस अदीठ सुख की खातिर उसका मन व्याकुल हो रहा था? घड़ी-डेढ़ घड़ी रात रहते वह चौंककर उठ बैठी। पति को झिझोड़कर जगाया। बोली, 'तुम तो घोड़े बेचकर सोते हो! अब मैं देर-सबेर कहीं भी अकेली नहीं जाऊँगी। मेरे साथ चलो।'

गूजर ने काफी टालमटोल की, पर लाछी नहीं मानी तो उसको साथ जाना ही पड़ा। कृष्ण-पक्ष की एकादशी की हल्की चाँदनी छायी हुई थी। भोजा तो घड़ी-भर पहले ही आकर ठिकाने पर जम गया था। लाछी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्तजार में आँखें पथराने लगी थीं कि इतने में उसे बछोड़िये की ओर दो जने आते दिखायी दिये। एक तो लाछी, और दूसरा······गूजर! हराम-जादा, फिर साथ आ मरा! अब तो कोई दूसरी तरकीब सोचनी पड़ेगी।

अन्दर घुसते ही लाछी को गोबर बीनते एक आदमी नजर आया। जोर से पूछा, 'कौन है?'

वेधड़क जवाब मिला, 'यह तो मैं भोजा।'

लाछी झुँझलाकर कहने लगी, 'इस वक्त यहाँ क्या खोया हुआ ढूँढ़ने आये हो?'

भोजा गोबर बीनते-बीनते ही बोला, 'ठकुरानी के आज एकादशी का उपवास है। तुलसी का थाला पवित्र करने के लिए बछिया का गोबर लेने आया हूँ।'

गूजर ने कहा, 'इस अदने काम के लिए तुमने तकलीफ क्यों उठायी। मुझे खबर कर देते तो मैं पहुँचा देता।'

'मेरे कौन-से सुरखाब के पर लगे हैं जो झड़ जायेंगे। फिर तू तो जानता है कि ठकुरानीजी मेरे अलावा किसी पर विश्वास ही नहीं करतीं।'

भोजा का जवाब सुनकर लाछी बेहद खुश हुई। अक्ल हो तो ऐसी! क्या बात बनायी है!

उसके बाद दोनों मित्र परस्पर गुफ्तगू में मशगूल हो गये। गूजर ने पूछा कि ठाकुर साहब अब अधिक नाराज तो नहीं हैं? भोजा ने गुमान से कहा कि उसके रहते कैसे नाराज हो सकते हैं। भला, ऐसे जिगरी दोस्त का एहसान मरकर भी भुलाया जा सकता है? पति की नासमझी पर लाछी अन्दर-ही-अन्दर कुढ़ती रही, पर जबान से कुछ जाहिर नहीं किया।

तड़के दही बिलोते लाछी को लगा कि उसका मन ठीक इसी तरह मथा जा रहा है। जो बिलोवने की हालत, वही उसके मन की हालत।

घर की सीमा में बँधी लाछी बेमन से सारे काम वक्त पर आप ही निवटा देती थी। भरी दोपहर तमाम जानवरों को लेकर वह तालाब के किनारे पहुँची। मौका देखकर भोजा नजदीक आया। लाछी मुँह फिराकर खड़ी हो गयी। ढोर-डाँगरों के बीच राम जाने क्यूँ उसे इतनी शर्म महसूस हुई! ऐसा लगा कि वह अब कभी इन भोले जानवरों को अपना मुँह नहीं दिखा सकेगी। भोजा ने फिर सामने आकर कहा, 'लाछी, आज का चक्कर फिर बेकार गया।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चोटी के फुन्दे को सहलाते लाछी बोली, 'तो मैं भी क्या करूँ ? तुम्हारे भाई के शक का इलाज तो मेरे पास नहीं है।'

'पर मेरी बीमारी का इलाज तो तेरे पास है।'

'तुम्हारी तकदीर का इलाज तो विधाता के पास भी नहीं है। दिन डूबने पर बागर में आ जाना। घास की सेज पर तुम्हारा इलाज करूँगी।'

भोजा हँसकर कहने लगा, 'आज चन्द्र-ग्रहण है। तुझे सात पीढ़ियों का पुण्य एक साथ ही मिलेगा। देख भूलना नहीं!'

'यह भी कोई भूलने की बात है!'

अब ठहरने से क्या फायदा। भोजा वापस गढ़ की ओर चल पड़ा।

ठाकुर को तो बस एक ही रट लगी थी। भगवान के बदले वह लाछी के नाम की माला जपने लगा। बौखलाकर बार-बार पूछता था, 'भोजा, अभी तक कोई बात नहीं बनी रे?'

'बन रही है, अन्नदाता! तीतर-बटेर का शिकार करना आसान है, पर शेर का शिकार मुश्किल है। कई दफा जान से हाथ धोना पड़ता है, सो अलग से। आपकी जान अनमोल है। पूरी तसल्ली हुए बगैर आपको आगे कैसे करूँ! एक मर्तबा ही भूल हो गयी, सो अभी तक पछता रहा हूँ।'

ठाकुर अपने वफादार कनवारिये पर बेहद खुश हुआ।

उसके बाद भोजा घड़ी दिन रहते ही बागर में आकर मन के लड्डू खाने लगा। ये 'पचावों' की गलियाँ, यह डूँगरियों की ओट, और यह घास की सेज! यह लाछी की चोटी! ये अँगिया के बन्द! ये उरोज! ये होंठ! यह लहँगा! और यह ......!

कि इतने में किसी के पैरों से चारा दबने की चरमराहट सुनायी दी। लगता है लाछी आ गयी। पचावों की गली से झाँका—अरे, इस बदजात गूजर ने तो यहाँ भी पीछा नहीं छोड़ा। अब अगर शक न हो तो अचरज की बात है। कहाँ तक बहाने बनाये। पर तरकीब निकालना तो उसके बायें हाथ का खेल है। पीठ घुमाकर चारे की गाड़ी में से चुन-चुनकर कुश इकट्ठा करने लगा।

दूर से ही गूजर की गरज सुनायी दी, 'कौन है?'

उसने मुँह घुमाकर उतने ही जोर से जवाब दिया, 'यह तो मैं भोजा!'

'यहाँ बागर में क्या कर रहा है?'

'आज चन्द्र-ग्रहण है। कुश इकट्ठा कर रहा हूँ। तू तो जानता है कि ठिकाने में ग्रहण के दिन पूरे एक गट्ठर की जरूरत होती है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'कुश की तो तू फिक्र ही मत कर। खूब इकट्ठा कर रखा है। मुझे कहता तो मैं ही पहुँचा देता।'

'तू तो मेरी आदत जानता है। हाथों-हाथ काम निबटाने का तो मजा ही और है।'

लाछी मन-ही-मन हँसी। भोजा की अक्ल तो चरखे की तरह घूमती है। तयशुदा बात का भी इतनी जल्दी जवाब नहीं दिया जा सकता। एक यह अहमक गूजर है कि दिखाने पर भी नहीं दिखता।

चार घड़ी रात ढले चाँद पूरा ग्रसित हो गया। काले तवे की नाईं गोल। ग्रहण लगते ही तारों की रोशनी बढ़ गयी। आज का यह ग्रहण तो दुनिया जानती है, पर लाछी के ग्रहण का किसी को कुछ पता नहीं था।

उसके बाद चाँद के मुक्त होते ही वह गूजर की बाँहों में बँध गयी।

और उधर भोजा कनवारिये की सेज भी सूनी नहीं थी। लाछी के लिए उसका मन तड़फता तो बहुत था, पर उसकी नजर में हाथ लगी औरत ही सबसे अधिक सुन्दर होती है। फकत लाछी के नाम को तरसने से क्या होता है? शरीर की जगह कामना से काम नहीं चल सकता। लाछी से हताश होने पर भोजा पर सहवास का पागलपन सवार हो जाता था। ठाकुर के वफादार कनवारिये के लिए किस बात का कमी! एक की जगह दो हाजिर। और यों भोजा समझदार भी काफी था। बाँहों में कसी औरत को लाछी मानकर जबरन सन्तोष कर लेता था। अगर कोई इन्सान उम्र-भर एक ही हवा में साँस लेकर जीने का हठ करे तो उसका हठ पूरा नहीं हो सकता।

दूसरे दिन तालाब की एक चट्टान पर लाछी कपड़े धो रही थी कि सामने भोजा पर नजर पड़ी। वो कुछ बोले उससे पहले ही लाछी कहने लगी, 'मुझे उलाहना देने की जरूरत नहीं। सारा कसूर तुम्हारे भाई का है। कोई बहाना बनाकर उन्हें कहीं बाहर भेज सको तो तुम्हारी मुराद पूरी हो।'

वक्त पर चूक जाये तो इतने बरस भोजा की कनवार कैसे चलती। हाजिरजवाब तो था ही, तुरन्त बोला, 'फकत मेरी मुराद ही पूरी होगी, तेरी नहीं?' भोजा को चिढ़ाने की खातिर लाछी परिहास के सुर में बोली, 'मेरी मुराद तो हर रोज 'मेड़ी' में पूरी होती ही है।'

'तब मेरी फिक्र तुझे क्यूं हो?'

'मुझे तुम्हारी फिक्र करने की जरूरत ही कहाँ है? फकत मेरे ही भरोसे होते तो फिक्र भी करती। तुम्हारी कौन-सी कम चहेतियाँ हैं।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'पर कोई तेरे नख के बराबर भी नहीं है। लाछी, आज रात को ही कोई जुगाड़ भिड़ा।'

लाछी कपड़े धोते-धोते ही बोली, 'चाँद उगने पर 'आखरी' वाले मीठे नीम पर छुप जाना। वहाँ एकदम सुनसान है। फिर अपनी तकदीर!'

लाछी की सास आती दिखायी दी तो भोजा पानी पीने के लिए तालाब में घुस गया।

जब सूरज, चाँद और तारे भी आँखमिचौनी खेलते हैं, तब लाछी गूजरी को कैसी अड़चन! जितने दिन खेल चले, उतना ही अच्छा। लाछी को यह दूसरा महीना उतरने लगा है। नौवें महीने उसकी कोख फलेगी। इधर कोख में पला बाल-गोपाल अपनी बन्द आँखें खोलेगा और उधर कहीं, किसी इन्सान की आँखें मुंद जायेंगी। जीवन-मरण के बहाने कुदरत भी युग-युग से यह खेल खेलती आ रही है। एक पत्ता झड़ता है तो दूसरी कोंपल फूटती है। यही आदि और अनन्त खेल है। यौवन की लीला भी किसी से कम नहीं। इस धरती पर नित्य नया यौवन चढ़ता है और ढलता है। नित्य नये किरदार बदलते हैं। पर नाटक वोही का वोही!

या तो गूजर का लाछी पर अटल विश्वास था या उसका हृदय इतना निर्मल था कि वो वहम जैसी ओछी भावना को अपने पास ही नहीं फटकने देता था। या कि घर के स्वार्थ में गूजर इतना अन्धा था कि उसे दूसरा कुछ नजर ही नहीं आता था। ठिकाने के कारिन्दों पर वहम करने से कैसे काम चलेगा?

गौर व घर का सारा काम निपटाकर लाछी ने व्यालू किया, तब तक रात तीन, साढ़े तीन घड़ी ढल चुकी थी। गूजर मेड़ी में सोने लगा तो लाछी ने उसे हाथ पकड़कर उठाया। कहने लगी, 'सुथारों की एक लड़की ने पक्की खबर दी है कि अपने नीम को गड़रियों ने काफी साफ कर दिया है। अभी भी शायद एक आदमी पत्ते तोड़ने के लिए ऊपर चढ़ा हुआ है। तुम तो कुछ ध्यान ही नहीं रखते। चलो, अभी उसे सँभाल कर आते हैं।'

वो गूजर का मनपसन्द नीम था। अपने हाथों सींचकर उसे इतना बड़ा किया था। गौने के पश्चात् ठीक से देखभाल भी नहीं हुई। आज याद दिलाते ही वो तुरन्त उठ बैठा। 'आखरी' घर से दो-एक खेत की दूरी पर थी। आकाश की कोख चीरकर कुंकुम-सा चाँद निकला ही था। धीरे-धीरे चाँदनी छितराते हुए ऊपर चढ़ने लगा। पेड़ों की हरीतिमा सुनहरे मुलम्मे से जगमगाने लगी।

दोनों पति-पत्नी 'आखरी' का फलसा खोलकर अन्दर घुसे। भोजा को अब जाकर तसल्ली हुई कि लाछी वादे के मुताबिक आ तो गयी। वो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उमंग से छलकता, नीचे कूदने ही वाला था कि गूजर की गरज सुनायी दी, 'कौन है ?'

यह नाग-डसा गूजर तो किसी भी करवट कोई दाँव नहीं लगने देता। जहाँ-तहाँ छाया की तरह लाछी के पीछे लगा रहता है। पर यह समय बेकार सिर खपाने का नहीं है। अदेर उसके दिमाग में एक उपाय सूझा और वो दोनों हाथों से फटाफट पत्ते तोड़-तोड़कर नीचे डालने लगा। गूजर और कड़ककर बोला, 'मीठे नीम को कौन तोड़ रहा है ? बोलता क्यूँ नहीं ?'

छिवरे तोड़ते-तोड़ते ही भोजा बोला, 'यह तो मैं भोजा !'

खुद के आने की खबर देते लाछी कहने लगी, 'पर रात को नीम पर क्या रखवाली कर रहे हो ?'

भोजा ने निस्संकोच जवाब दिया, 'ठकुरानी की आँखें बुरी तरह दुख रही हैं। तब इन पत्तों के लिए रात को आना पड़ा। पर तुम दोनों बेवक्त आखरी में क्यूँ आये ?'

पत्ते तोड़कर भोजा नीचे उतर आया। गूजर उसके पास आकर कहने लगा, 'अभी एक सुथार की लड़की ने खबर दी कि कोई गड़रिया नीम छाँग रहा है। फिर मुझे चैन कहाँ !'

एक गहरा निश्वास छोड़कर भोजा बोला, 'नाहक जहमत उठायी।'

गूजर ने कहा, 'पर इसी बहाने तुझसे मिलना तो हो गया।'

गूजर की तरफ देखकर भोजा लाछी को सुनाते बोला, 'ऐसे मिलाप में क्या सार !'

पर यह 'सार' की बात अकेली लाछी के ही वश में नहीं थी। घर, गृहस्थी, बिरादरी, जाति, धर्म, संस्कार, मर्यादा और रीति-रिवाजों की कितनी रुकावटें हैं ! अकेली औरत अपने बूते पर इस भँवरजाल का क्योंकर सामना कर सकती है ? जानवरोंवाली स्वच्छन्दता का तो अब सपना ही कहाँ ? लाछी के दिल में कुछ इसी तरह की लौ जल रही थी। किस राह आगे बढ़े ? कौन-सी पगडण्डी ढूंढ़े ?

रात को सहवास के समय उसे ऐसा लगा मानो वह किसी अजगर की लपेट में बुरी तरह फँस गयी हो। औरत की इस जिन्दगी में वह इस जकड़ से कभी मुक्त होगी कि नहीं ? गृहस्थी की इस गँधाती धोवन से उसका सर फटने लगा। कोहनी के वार की खातिर भी सात फेरों के परिणेता ने उलटा उसे ही दुत्कारा ! उसे ही बुरा-भला कहा ! फिर किस दूसरी छाँह की आस करे ? आस करके भी उस छाँह का बसेरा कब मिल सकता है ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्नजाल में उलझी नींद के कारण लाछी कुछ देरी से उठी। उठते ही उसे ऐसा लगा मानो सूरज आज अपनी जगह पर नहीं उगा है। न उगा तो न सही। सूरज की बात सूरज जाने। गृहस्थी के काम के मारे उसे तो साँस लेने की भी फुरसत नहीं मिलती। वह हड़बड़ाती हुई मेड़ी से बाहर निकली। पशुओं की सार-सँभाल, दुहना, चारा-बाँटा, और फूस-बुहारा। आखिर काम तो करने पर ही निबटता है।

सूरज सिर पर चढ़ आया, तब कहीं वह चरागाह की तरफ रवाना हो सकी। काफी देर हो गयी थी। पति इन्तजार कर रहा होगा। जल्दी-जल्दी पाँव उठाने लगी। चूड़ियों की खनखनाहट, घाघरे की फटकार, ओढ़नी की सरसराहट और पायल की झनकार से हवा में मानो जादू ही घुल गया हो। लाछी के रूप-यौवन का परस पाकर जैसे सूरज की किरणों का भाग्य जगमगा उठा।

गाँव के बाहर निकलते ही भोजा मिल गया। देखने पर भी लाछी की चाल धीमी नहीं हुई तो भोजा साथ-साथ चलते कहने लगा, 'लाछी, अब तो लगता है कि अपना मिलाप मसान में ही होगा।'

लाछी होंठों-ही-होंठों में बोली, 'मरे बगैर तो मसान भी नसीब कहाँ ?'

'पर मरना तो अपने वश में है !'

'मेरे लिए तो मरना भी वश में नहीं है।'

'तो फिर ?'

'इसका जवाब तो मेरे पास भी नहीं है। मैंने तो काफी कोशिश की पर जुगाड़ नहीं बैठा तो किसे दोष दूँ। ज्यादा पीछा किया तो बस्ती में बदनामी होगी। तीनेक घड़ी रात ढले रसोई में मिलना। घर की इज्जत घर में।'

भोजा हामी भरते बोला, 'हाँ, यह जुगाड़ ठीक है। फिर मेरी तकदीर।'

तकदीर पर बात छोड़कर भोजा गाँव की ओर मुड़ गया और लाछी आगे चलती रही। पति खाने का इन्तजार कर रहा होगा।

गूजर खेजड़ी की छाँव तले बैठा अलगोजा बजा रहा था। चारों ओर छड़े-बिछड़े, ढोर-डाँगर जमीन में मुँह डाले घास चर रहे थे। लाछी पास आयी तो गूजर ने पूछा, 'बहुत देर लगा दी ?'

खाने की टोकरी उतारते लाछी कहने लगी, 'तुम वक्त पर सोने नहीं देते तब वक्त पर कैसे उठा जा सकता है !'

खाने का सामान बाहर निकाला तो गूजर ने हैरत से पूछा, 'आज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतना खाना कैसे ले आयी ?'

'ज्यादा देर होने लगी तो मैंने भी घर खाना नहीं खाया। पहले तुम खा लो, फिर मैं खा लूंगी।'

'क्यूं, फिर क्यूं ? आज तो साथ ही खायेंगे !'

गूजर के घर किस चीज की कमी ? गाढ़ा दही, राब, छाछ, मक्खन, मतीरे की सब्जी, लप्सी और बाजरे की रोटी। पति-पत्नी ने साथ बैठकर आराम से खाना खाया। उसके बाद गूजर ने कहा, 'मैं थोड़ी कमर सीधी कर लूं। तू जरा खयाल रखना, किसी के खेतों में कोई बिगाड़ न हो।'

यह हिदायत देकर पति तो सो गया और लाछी ढोर-डाँगरों को सँभालने के लिए चल पड़ी। पहली दफा ग्याभिन हुई गाय व भेंस की पीठ पर हाथ फिराकर लाछी पाँच-सातेक कदम आगे बढ़ी तो उसे एक करील में काला व चमकीला टुकड़ा नजर आया। पास जाकर गौर से देखा तो केंचुली समेत काला साँप। सू-सू करके छेड़ा तब भी करैत ने फन नहीं फैलाया। केंचुली ठेठ आँखों तक छायी हुई थी। थोड़ा-सा हिलकर फिर वहीं दुबक गया। केंचुली की वजह से दूर तक रेंगना उसके वश के बाहर था।

लाछी ने दो-तीन कंकर मारे। साँप कुछ रेंगकर आगे बढ़ा कि अचानक उसकी केंचुली करील के काँटे में उलझ गयी। करैत ने कुछ ताकत लगायी तो केंचुली ने अपनी जगह छोड़ी। फिर तो धीरे-धीरे करैत केंचुली से छूटकर सर्र-सर्र घनी झाड़ी में ओझल हो गया। लाछी तुरन्त केंचुली को अपने हाथ में लेकर अचरज से देखने लगी। सफेद चिकनी खोल पर बेशुमार बिन्दियाँ। केंचुली जकड़ी हुई थी तब तक करैत टस-से-मस भी नहीं हो सका। नितान्त अन्धा, मोटे रस्से की तरह पड़ा था। केंचुली से मुक्त होते ही दृष्टि के वेग से भागा। तो यह केंचुली सबसे बड़ा बन्धन है।

उसके बाद लाछी की आँखों के सामने ठौर-ठौर करैत की केंचुलियाँ-ही-केंचुलियाँ झिलमिलाने लगीं।

इधर-उधर चक्कर लगाकर खेजड़ी के नीचे लौटी तो पति खर्राटे भर रहा था। वह बारी-बारी से नींद में सोये पति और केंचुली को देखने लगी। कभी उसे केंचुली में पति का स्वरूप नजर आता, तो कभी पति केंचुली की तरह दिखने लगता। अचानक नजर की यह रंगत कैसे बदल गयी ? लाछी के मन की उथल-पुथल का कोई अन्त नहीं था।

कुछ देर बाद पति जम्हाई लेकर उठा तो उसे लाछी के गले में साँप की केंचुली लटकती नजर आयी। अचरज से पूछा, 'अरे, यह केंचुली कहाँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिली ? इसके शकुन बड़े अच्छे होते हैं। मंशानुसार तेरी कामना पूरी होगी।'

लाछी ने कोई जवाब नहीं दिया। केंचुली हाथ में लेकर उस खाली आवरण की ओर टुकुर-टुकुर देखने लगी।

पति लाछी के करीब आया। गले में बाँहें डालकर उसके गालों पर लगातार दो-तीन चुम्बन जड़ दिये। कहने लगा, 'जोशी को भी पूछने की जरूरत नहीं है। चाँद-सा बेटा होगा। और वो बहुत भाग्यशाली होगा। मेरी आजमाई हुई बात है। केंचुली के शकुन कभी गलत नहीं होते। तुझसे रिश्ता होने से तीन दिन पहले मुझे भी जंगल में एक केंचुली मिली थी।'

लाछी मुँह बिगाड़कर बोली, 'तब तो शकुन बिलकुल खराब हुए।'

गूजर लाछी का कंगन घुमाते बोला, 'वाह, खराब कैसे हुए ? तुझ जैसी जोरू मिली। इससे अच्छी किस्मत और क्या हो सकती है।' फिर उसकी आँखों में आँखों गड़ाकर कहने लगा, 'तेरी एक कामना तो अभी यहीं पूरी किये देता हूँ।'

होंठों पर होंठों का परस होने पर ही लाछी को पति की बात समझ में आयी। चौंककर दूर हटी। शिकायत जताते बोली, 'तुम्हारी अक्ल तो ठिकाने है ! मेड़ी के करतब तो मेड़ी में ही शोभा देते हैं।'

'यहाँ कौन देखता है ?'

लाछी हाथ से इशारा करते कहने लगी, 'ये बबूल, ये करील, यह घास और ये पक्षी।'

फिर तो वह वहाँ ठहरी ही नहीं। सरपट गाँव की तरफ भागी। पति आवाज देता रहा, पर उसने फिर पीछे मुड़कर देखा तक नहीं।

सीधी कोठरी में जाकर अपनी सन्दूक खोली। करैत की केंचुली को सँभालकर अन्दर रखा और वापस ताला लगा दिया। बैठे-ठाले कैसे चल सकता है ! गूजरों की गृहस्थी में काम का क्या अन्त ! गोबर, भूसा, सानी और पानी। काम निबटाती जा रही थी और सोचती जा रही थी कि रसोई में देखकर तो गूजर का शक जरूर जागेगा और शक के साथ उसका गुस्सा भी खौल उठेगा। इस बार भोजा का बचाव नामुमकिन है। देखें, क्या गुल खिलता है ?

पर लाछी की किस्मत कि कोई गुल नहीं खिला। चारेक घड़ी रात ढले लाछी ने पति को सचेत करते कहा, 'रसोई में शायद कोई आदमी छुपा हुआ है।'

इतनी बात सुनने के बाद गूजर के कैसी ढील ! गुँथी हुई लाठी लेकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुरन्त लाछी के साथ चल पड़ा। दीपक जलाकर देखा तो वाकई कोठी के पीछे एक आदमी छुपा खड़ा था। लाठी तानकर गरजते बोला, 'किसकी मौत आयी है?'

भोजा के इतनी देर कहाँ? तुरन्त बात सोच ली। बेखौफ सामने आकर कहने लगा, 'किसकी क्या, मौत तो तेरी ही आयी है। हुजूर से किसी ने शिकायत की है कि तेरे यहाँ रोजाना नयी बाजरी का खीच व सोगरे बनते हैं। अन्नदाता ने ज्यादा कुरेदा तो मुझे असलियत जानने के लिए आना ही पड़ा। भले मानस, तेरी औरत तो खुल्लमखुल्ला सोगरे बनाती है।'

फिर हाथ की रोटियाँ गूजर की ओर करते भोजा कहने लगा, 'अपने साथ मेरी भी इज्जत गँवायेगा। अब ये सोगरे तो हुजूर को बताने ही पड़ेंगे।'

गूजर हाथ जोड़ते बोला, 'तब तो मैं बिना मौत मारा जाऊँगा। इतने दिन तो भगवान के दिये हुए थे, आज से तेरे दिये हुए होंगे। जैसे भी हो यह फन्दा काट दे। अब कभी गलती नहीं होगी। तू तो जानता है कि बाजरी के अलावा एक कौर भी मेरे गले नहीं उतरता।'

आखिर भोजा को तो मानना ही था। गूजर काफी गिड़गिड़ाया। तब वो बड़ी मुश्किल से राजी हुआ। लाछी से फिर एक पल भी वहाँ नहीं ठहरा गया। सीधी मेड़ी में आकर चारपाई पर गिर पड़ी। ऐसा कापुरुष पति तो चिराग लेकर ढूँढ़े नहीं मिलेगा। पर भोजा की अक्ल के सामने सिर नवाना पड़ता है। क्या बहाना बनाया! किसी मर्द में अक्ल हो तो ऐसी!

भोजा को गली तक पहुँचाकर गूजर मेड़ी में लौटा। गूजर के घर तेल से घी सस्ता होता है। गाय के घी का दीपक मन्द-मन्द जल रहा था। आधी मेड़ी में गूजर की छाया फैल गयी। काफी देर तक वो भोजा के गुण गाता रहा। फिर पगड़ी उतारकर घरवाली के गालों पर हाथ फिराते बोला, 'चरागाह से भागकर तो घर आ गयी, पर अब मेड़ी से भागकर कहाँ जायेगी? आज ऐसी खबर लूँगा कि तू भी याद रखेगी।'

सात फेरों की ब्याहता इन्कार भी तो नहीं कर सकती! भले ही उसके दिल में कैसी भी उथल-पुथल मची हो। परायी औरत होती तो कुछ नखरे भी करती, पर लाछी की खातिर तो यह राह भी नहीं बची। ऐसी उलझन के समय इन नखरों से बदतर और क्या हो सकता है!

अँगिया के बन्द खुलते ही मेड़ी में ठण्डी हवा का झोंका आया। चमाचम करती बिजलियों में होड़ लग गयी। एक-दूसरे पर चढ़ते बादल जोर से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गरजने लगे। उतरते आसोज के मोती बरसने लगे। दिन को तो बरसात के कोई आसार ही नहीं थे, पर गोधूलि वेला में ऐसी उमस छायी कि दूर-दूर की बरखा एक ही ठौर इकट्ठी होकर तड़तड़ बरसने लगी। उसकी माया वोही जाने। लाछी के मन की लाछी जाने।

आज फिर उठने में देर हो गयी। मेड़ी से उतरते ही लाछी सीधी कोठरी में गयी। चारों ओर पानी-ही-पानी फैला था। रात-भर बरसात होती रही। सन्दूक खोला और करैत की केंचुली निकालकर लाछी एकटक उसे देखने लगी।

सास की आवाज सुनकर उसे चेत हुआ। और वह रोजाना की माफिक गृहस्थी के काम-धन्धे में उलझ गयी।

बादलों के सिवाय इतना छिड़काव भला कौन कर सकता है! बरसात के रुकने पर ठण्डी बयार चलने लगी।

दिन ढलते लाछी काचर-मतीरे लेकर घर लौट रही थी कि भोजा से सामना हो गया। नाराजगी जतलाते कहने लगा, 'लाछी, रात को तो रसोई में भी भूखा रह गया!'

'क्या करूँ, ननद ने बना-बनाया काम बिगाड़ दिया।'

'मुझे तो इस बिगाड़ का कहीं अन्त नजर नहीं आता।'

'थोड़ा इत्मीनान रखो। कभी-न-कभी तो पासा सही पड़ेगा। आज तुम्हारा चक्कर बेकार नहीं जायेगा। ढलती रात को तुम्हारे भाई ढोल बजाने पर भी नहीं उठते। मैं केशरिया शाल ओढ़े आँगन में सोयी मिलूँगी। गूजर सफेद खेस ओढ़े मेरे पास ही सोया होगा। शाल खींचते ही मैं तुम्हारे साथ चल पड़ूँगी। अब तो तसल्ली हुई?'

'तसल्ली तो होगी तभी होगी। मैं तो तेरे इशारे पर मरने को तैयार हूँ।'

लाछी फिर समझाते कहने लगी, 'मुझ पर केशरिया शाल होगी। देखो कैसी होशियारी से काम लेते हो।'

भोजा गुमान से बोला, 'होशियारी की बात तो तू छोड़। फकत तेरे सामने मेरा वश नहीं चलता।'

'अब तुम जाओ, लोग बातें बनायेंगे।'

भोजा वहीं से दूसरी राह मुड़ गया और लाछी घर आकर दुहने के काम में मशगूल हो गयी।

रात को गूजर ब्यालू करके मेड़ी की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा तो लाछी ने कहा, 'मेड़ी में ननदोई जी सो रहे हैं। तुम्हें तो कुछ खयाल ही नहीं है।' पति सीढ़ियाँ उतरते बोला, 'पर हम कहाँ सोयेंगे?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'थोड़ा धीरे बोलो, तुम्हें तो ग्राठों पहर सोने की ही लगी रहती है, ग्रौर मेरी जान पर बनी है। एक रात वाड़े में सो जाग्रो तो कौन-सा राज्य छिन जायेगा ?'

'बेचारा राज्य किस गिनती में है !'

तब दूध में जामन डालते लाछी बोली, 'ग्राँगन में चारपाई बिछी है। तुम चलो, मैं ग्रभी ग्रायी।'

'ढलती रात ठण्ड पड़ेगी। कुछ ग्रोढ़ने को लाना।'

फिर तो वही रात, वो ही ग्रँधियारा, वही लाछी ग्रौर वो ही गूजर !

गूजर को तो नींद ग्रा गयी, पर लाछी की पलक तक नहीं झपकी। भोजा की खुशामद के ग्रागे खाविन्द को शक की हल्की-सी झलक भी दिखायी नहीं देती। क्या स्वार्थ इतना ग्रन्धा ग्रौर गूँगा होता है? जहाँ पत्थर को भी शक हो, वहाँ पति के मन में कोई हलचल तक नहीं हुई। क्या इसी सुख ग्रौर सुहाग की ग्राशा में उसने ग्रपने यौवन को सहेजा था? ग्रनमोल मोती की तरह उसकी ग्राव बचाकर रखी थी? पर पति की नजर में तो तिनके जितनी भी इसकी कीमत नहीं है। फिर ढोल-नगाड़ों के बीच वेदी का वो ढोंग क्यूँ रचा ? क्यूँ इस घर के ग्राँगन में गाजों-बाजों के साथ एक परायी लड़की को ग्रपनाया ? वंश की बेल बढ़ाने के लिए ? सेज की भूख मिटाने के लिए ! कुनबे के कोल्हू में बैल की तरह खटने के लिए ? ठाकुर ग्रौर ग्रहलकारों के तलवे चाटने के लिए ? कोहनी के वार के साथ ग्रगर उस दिन पति की लाठी की ताकत जुड़ जाती तो उसके लिए कितनी खुशी की बात होती ! फिर तो उसके मन में किसी तरह का कोई दुख सर नहीं उठाता। हथलेवे का व्याहता तो उलटा उस पर ही नाराज हुग्रा। बार-बार उसे ही फटकारा। स्वार्थ पूरा हो तो पति को किसी भी बात का एतराज नहीं। फिर स्वार्थ के इस ग्राक पर इन कड़वे फलों को सँजोने से कौन-सा ग्रमृत हाथ लगेगा ? तब एक खसम की हाजरी का क्या अर्थ रह जाता है ?

लाछी के ग्रन्तस की बाँबी में ऐसे बहुत-से सवाल फुफकारने लगे। बगल में सो रहा परिणेता लम्बी ताने ग्रजगर की तरह खर्राटे भर रहा था। ग्राज पति ग्रौर भोजा की ग्राखिरी परख है। देखें, क्या मर्म उघड़ता है ?

ग्रौर उधर भोजा के लिए पल-भर का इन्तजार भी बर्दाश्त के बाहर हो रहा था। वो एक घड़ी पहले ही चोर कदमों से गूजर के ग्राँगन में आ पहुँचा। गौर से देखा। लाछी की बात तो बिलकुल सही निकली। ग्राज तो मन की कामना जरूर पूरी होगी। उसके बाद उसने भली सोची

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न बुरी, फौरन केशरिया शाल को खींचकर जोर से झटका दिया। गूजर ने झट-से उठते हुए गरजकर पूछा, 'कौन है ?'

सवाल के साथ ही बेखौफ जवाब मिला, 'यह तो मैं भोजा !'

गूजर ने फिर हैरत से पूछा, 'भोजा ?'

कनवारिया नजदीक आकर धीरे से बोला, 'हाँ, द्वारकाजी[1] चलना हो तो बोल ?'

'नहीं, मैं तो द्वारकाजी नहीं चलता।'

'फकत तुझे लेने के लिए ही मैं चुपके से आया हूँ। न चलना हो तो तेरी मरजी, पर चिल्ला तो मत। बेकार 'संग' बिदकायेगा। चुपचाप वापस सो जा।'

गूजर को सोने की हिदायत देकर भोजा उलटे पाँवों लौट पड़ा। लाछी सफेद खेस ओढ़े जगी हुई बाजू में लेटी थी। दोनों की बातचीत उसने पूरी सुनी। अब तो कोई भ्रम शेष नहीं रहा। सूरज के उजाले से भी तेज ज्वाला उसकी आँखों के सामने भभकी और उस भभक के साथ ही उसके पुराने संस्कार, रीति-रिवाज और समूची मर्यादाएँ जलकर भस्म हो गयीं। शायद वह इसी ज्वाला के इन्तजार में थी।

दुनिया के सामने हाथ थामनेवाले ने तो सात फेरों के सिवाय कोई जोखिम ही नहीं ली। पर भोजा की जोखिमों का तो कोई अन्त ही नहीं ! ऐसी अथाह चाहना की खातिर कैसे इन्कार किया जा सकता है ? ऐसा इस जोबन का दूसरा माहात्म्य भी क्या है ? फकत रोटी-कपड़ों के बदले गुलामों की तरह खटना ! शरीर नुचवाना ! क्या यही जिन्दगी का मोल है ? फिर एक मर्द की मिल्कियत की बन्दिश क्यूँ ? अब तो कुनबापरस्ती की केंचुली छोड़ने पर ही उसकी मुक्ति होगी।

दूसरे दिन ढोर-डाँगरों का झुण्ड लेकर लाछी चरागाह जाने लगी तो गूजर ने कहा, 'आज तो अल्ल सवेरे ही बला की उमस है, जरूर बरसात होगी। वापस जल्द लौटना।'

लाछी ने हाँ या ना का कोई जवाब नहीं दिया।

न चरागाह जाते वक्त भोजा से सामना हुआ और न घर लौटते वक्त। कनवारिये का विश्वास टूट चुका था। दुनिया की तमाम औरतों की गरज तो अकेली लाछी से पूरी नहीं हो सकती ! अपनी-अपनी ठौर और अपनी-अपनी सेज पर सभी औरतें अच्छी लगती हैं।

गाँव के मालिक के मन में अभी तक वही पीड़ा साल रही थी। बार-

---

१. ऐसी मान्यता है कि द्वारका की तीर्थ-यात्रा पर चोरी-छिपे जाना चाहिए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार वो ही रट—भोजा, कुछ बात बनी रे ?

आखिर आजिज आकर भोजा ने कहा, 'अन्नदाता, यह तो राँड ही शैतान की औलाद है। नाक-कान काटे बगैर इसकी अक्ल ठिकाने नहीं आयेगी।'

ठाकुर एक गहरी आह भरकर बोला, 'मैंने तो तुझे पहले ही कहा था, पर तू नहीं माना।'

'सात दफा कान पकड़ता हूँ, अन्नदाता ! बहुत बड़ी गलती हो गयी।'

दिन ढलते-ढलते ऐसी काली घटा उमड़ी कि देखते ही बनता था। चमाचम बिजलियाँ चमकने लगीं। होड़ मचाते आबनूसी बादल गरजने लगे। मानो हजारों हाथी एक साथ चिंघाड़ रहे हों।

अपने-अपने ठिकाने पर ढोर-डाँगरों को बाँधते हुए लाछी के हृदय में आज ऐसी ही काली घटा घुमड़ रही थी। पति को इस बरसात का तो काफी पहले ही अन्दाज लग गया, लेकिन भोजा पर दिखती आँखों भी कुछ शक नहीं हुआ। यह कैसा विवेक ?

ब्याहता के शरीर को मनचाहा भोगने के बाद गूजर गहरी नींद में सोया था। लाछी मेड़ी के दरवाजे तक आयी तो बरसात की फुहार व बिजलियों की चमक ने गाजों-बाजों के साथ उसके यौवन का अभिनन्दन किया। छलकते सौन्दर्य की बलैयाँ लीं। करैत की केंचुली हार की तरह उसके गले में झूल रही थी।

अब और कुछ सोचने का वक्त ही कहाँ था ? एक-एक करके समूचे कपड़े और तमाम गहने उतारकर वह मेड़ी की सीढ़ियाँ उतरने लगी। मूसलाधार पानी बरस रहा था। परस्पर प्रतिस्पर्धा से बिजलियाँ बढ़-चढ़कर चमक रही थीं। गले में केंचुली और जाँघों तक झूलती केशराशि, गोया उस पर कोई बदली झूम रही हो।

चमकती बिजलियाँ लाछी की सुन्दरता निहारकर सार्थक हुईं। बरसात की झड़ी उसके निर्वसन यौवन का परस पाकर निर्मल व पवित्र हो गयी। पेट में आस और गले में करैत की केंचुली ! इससे बढ़कर आश्वासन और क्या हो सकता है !

बरसात की मेहर में भीगती लाछी को किसी तरह का कोई डर नहीं था। सीधे भोजा के घर पहुँची। कुण्डी खटखटाने का इरादा किया ही था कि भीतर से किसी औरत की धीमी आवाज सुनायी दी, 'तुम तो लाछी के पीछे दीवाने हो रहे थे, आज मेरी याद कैसे आयी ?'

'भाड़ में जाये लाछी और उसका गुमान। मेरे सामने उस छिनाल का नाम मत ले।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाछी के होंठों की पवित्र मुस्कराहट बिजलियों की चमक में घुलकर ओझल हो गयी। धरर-धरर बरसात में भीगती वह आप ही आगे बढ़ने लगी। फिर न तो किसी दरवाजे पर रुकी और न किसी मर्द का सहारा माँगा।

पेट में अमर आस लिये, वह अभी तक ब्रह्माण्ड में निर्वसना घूम रही है! न कहीं मुकाम और न कहीं विश्राम! शायद इन मौजूदा चाँद-सूरज के भस्म होने पर उसकी कोख कभी उघड़े तो उघड़े!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आखिरी कसर

आस तो आस। क्या झूठ, क्या सांच। कैसी क्या तपास। आस का निवास मोटा। क्या बूढ़ा, क्या छोटा। क्या अबूझ, क्या ज्ञानी। आस की हर कहीं मनमानी। सभागे सपने और सुहागन आस। दोनों का एक ही गण और एक ही रास। कि किसी एक वक्त की ढलान पर, हवा और धूप के किनारे, गड़रियों की एक बस्ती बसी हुई थी। वहाँ एक खेतिहर ब्राह्मण का निवास था। बूढ़ी ब्राह्मणी के अलावा उसके तीन नौजवान बेटे थे। अनाड़ीपन में हू-ब-हू बाप की तरह। जबरदस्त अड़ियल और निरंकुश। वेद-पुराण से उनका कोई वास्ता ही नहीं था, फिर भी बस्ती से दाने माँगने के लिए झोली का चलन बदस्तूर जारी था। एक दफा एक गड़रिये ने रोज के इस चलन से तंग आकर ब्राह्मण को धिक्कारा कि पण्डिताई के बाकी गुण तो कुछ हैं नहीं, तब खालिस दाने माँगने के इस ज्ञान से कब तक काम चलेगा?

बूढ़े ब्राह्मण के कलेजे को मानो सहस्र शूलें एक साथ छलनी कर गयी हों। उसी वक्त झोली फेंक दी और फिर उस तरफ देखा तक नहीं। खीज भरे सुर में कहने लगा, 'यह धरती सब की जरूरतों को पूरा करती है। तब इन्सान-बन्दे के सामने क्या हाथ फैलाना! अब तो जिस धरती से तू माँगता है, मैं भी उसी से झोली फैलाकर दाने माँगूंगा।'

बरसों से तंग आये गड़रिये ने तुरन्त जवाब दिया, 'ये दाने झोली फैलाने से नहीं, पसीने के परस से हाथ लगते हैं।'

तब बूढ़े ब्राह्मण ने भी कटुता से तीखा जवाब दिया कि उसके शरीर में भी पसीने की कमी नहीं है।

और उस दिन से ही ब्राह्मण ने जो खेती से जीवनयापन करना शुरू किया तो फिर कभी किसी गड़रिये से पीछे नहीं रहा। खेती में खूब बरकत हुई। शास्त्रों का ज्ञान तो ऊँट के मुँह में जीरे के समान था। बाप की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीख के अनुरूप तीनों बेटे भी कड़ी मेहनत करते थे। बड़ा लड़का दैत्य की तरह बली था, लेकिन अक्ल से कुछ भोथरा था। खेतों में हल चलाता था। गुड़ाई करता था। गवाड़ी पर गाय-भैंसों को चारा डालता था। दूध दुहता था। समय पर दोनों भाइयों की रोटी पहुँचाता था। आठों पहर धन्धा करने से दोनों भाइयों को कड़कड़ाती भूख लगती थी। रोटी में देरी होने से बेहद झुँझलाहट होती।

गाँव से दो-एक खेत की दूरी पर गड़रियों के बाड़े थे। हरेक के पास दो-दो सिन्धी कुत्ते थे, जिनकी दहाड़ सुनकर एक बार तो बाघ-चीते भी पूँछ दबा लेते थे। बाड़ों के बीच से होकर ब्राह्मण के खेतों को सीधा रास्ता जाता था। बड़ा भाई राग अलापता हुआ रोजाना वहाँ से गुजरता था। तब कोई-न-कोई कुत्ता उस भूत का हुलिया देखकर अवश्य भौंकता था। और वो दुत्कारते-दुत्कारते अपनी राह चलता रहता था।

एक दफा एक गड़रिया अपना बड़ा रेवड़ लेकर जब बरसात के पहले वापस लौटा तब उसके साथ एक खूँखार कुत्ता था। दुगनी भारी दहाड़। बेहद चौड़े पंजे। मोटी खोपड़ी। एकदम तीखे, नुकीले दाँत। रोज की माफिक बड़ा भाई गुनगुनाते हुए सर झुकाये अपनी राह चल रहा था कि किसी अजनबी कुत्ते की हौंकार सुनकर पीछे देखा। अगर वक्त पर सचेत नहीं होता तो पिण्डली का अच्छा-खासा माँस तोड़ लेता। जोर से दुत्कार-कर ठोकर से धूल उछाली। कुत्ता पीछे खिसककर फिर उसी तरह लगातार भौंकने लगा, रुका ही नहीं। यह कुत्ता तो जबर ढीठ है! रोटियों की टोकरी नीचे उतारकर वो उसकी तरफ बढ़ा। कुत्ता डरकर पीछे हट गया, लेकिन भौंकना उसी तरह जारी था। मौका मिले तो तुरन्त गर्दन दबोच ले। ब्राह्मण ने हँसकर उसकी तरफ दाँत निकाले। उसके बाद दो-तीन बार ठोकर से धूल उछालकर फिर अपनी राह लगा। दोनों हाथों से रोटियों की टोकरी मजबूती से पकड़ी और तीखी और ऊँची आवाज में 'तेजा' गाने लगा। कम्बख्त, कुत्ता देखते-देखते फिर कूदकर पीछे आ गया। निरन्तर बिना रुके भौंके ही जा रहा है। इन कुत्तों को इस तरह भौंकना किसने सिखाया? गले में लकड़ी ठोंके बगैर इसका भौंकना बन्द नहीं होगा।

ब्राह्मण मन-ही-मन कुछ तदबीर सोचकर वापस मुड़ा—कुत्ते के भौंकने की नकल करता हुआ। अरे! इस भौंकने की तो लज्जत ही निराली है। मानो गला खुल गया हो। इन्सान का भौंकना सुनकर कुत्ता और जोर से भौंकने लगा। तब वो भी नकल निकालते हुए खुद-ब-खुद उसी तरह जोर-जोर से भौंकने लगा। अपने कानों से अपने गले का भौंकना सुनकर उसे बेहद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनन्द आया। इन्सान की फीकी-फीकी बोली की बनिस्पत यह भौंकना हजार गुना बेहतर है। दोनों में परस्पर भौंकने की होड़ लग गयी। सामनेवाले को नहीं हराये तब तक क्या बड़ाई ! कुत्ते का खयाल था कि अभी यह इन्सान भौंकना बन्द कर देगा। अगर इन्सान अपनी बोली बिसराकर इस तरह भौंकने लगे तो कुत्तों की क्या हालत होगी ? भौंकने के साथ ही ब्राह्मण सोचने लगा कि अभी कुत्ता हार थकेगा। राम जाने, इतने दिनों तक इन्सान ने भौंकना क्यूँ नहीं सीखा ? भला, भौंकने के ठाट को कौन पहुँच सकता है ? गिटपिट-गिटपिट की यह बोली किस काम की ? लेकिन भौंकने के साथ कुत्ते में एक खासियत और थी। पंजे से धूल उछालने पर मानो हौंकार के थप्पी लगती हो। कोरे-मोरे भौंकने से यह हरामी कुत्ता हार माननेवाला नहीं है। यह तरकीब सोचने के बाद उसके क्या ढील ! टोकरी उतारी और फौरन कुरता खोलकर दूर फेंक दिया। भौंकते-भौंकते ही धोती ऊपर चढ़ाकर साफा झाड़ी की ओर उछाल दिया। भौंकने के साथ-साथ दो-तीन दफा जाँघें ठोंकी। चारों हाथ-पैरों पर खड़ा होकर धूल उकेरने लगा। इधर कुत्ता और उधर इन्सान ! दोनों धूल उकेरते जा रहे थे और भौंकते जा रहे थे। चारों ओर गर्द ही गर्द फैल गयी थी। ब्राह्मण के नंगे शरीर पर धूल की अच्छी-खासी तह जम गयी थी। इतनी जिन्दगी जीकर भी कुत्ते ने इन्सान का ऐसा तमाशा कभी नहीं देखा। पर पूँछ दबाकर भागने पर तो सारी जाति के नाम पर बट्टा लगेगा। और उधर इन्सान इस कदर एक नाचीज कुत्ते से हार मान ले तो उसकी नाक कट जायेगी। फिर इन्सान को कौन पूछेगा ? पर इस फन की कुंजी तो आज ही हाथ लगी। भौंकने के साथ धूल उड़ाना तो बहुत ऊंचा काम है ! फकत कुत्तों ने ही इसकी मौज ली है। इन्सान के दूसरे प्रपंच तो इसके सामने पानी भरते हैं। आज इस दोगले कुत्ते को हराये बगैर उसे चैन नहीं मिलेगा। लगता है कि अब हारा, अब हारा। न पिद्दी न पिद्दी का शोरबा, कुत्ते की जात में जन्म लेकर इन्सान-बन्दे के सामने कब तक टिकेगा ? इन्सान का यह कौतुक देखकर कुत्ता भी पशोपेश में पड़ गया, फिर भी उसने भौंकना और धूल उकेरना बन्द नहीं किया। दोनों तरफ हो-हो की चढ़ती हुई हौंकारें। ब्राह्मण को राम जाने, क्यूँ यह पुख्ता विश्वास हो गया कि अब तो फकत एक हौंकार का काम है। आखिर कुत्ते को हारना ही पड़ेगा। फकत एक हौंकार और ! एक हौंकार की कसर सोचते-सोचते ब्राह्मण लगातार देर तक भौंकता रहा। रोटियाँ पहुँचाने की बात दिमाग से ही निकल गयी। माथापच्ची करने पर इन्सान के लिए ऐसा कौन-सा काम है जो कामयाब नहीं हो सकता ! मालूम नहीं पड़ रहा था कि कौन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वास्तव में भौंक रहा है और कौन नकल कर रहा है !

गर्द के गुब्बार में ब्राह्मण के लिए बाहर की दुनिया एकदम ओझल हो गयी थी। सूरज का उजास तक उस गर्द में धुँधला पड़ गया था। बगुलों की कतार किल्लोलें करती हुई उसके सर से गुजर गयी, पर उसे कुछ पता नहीं चला। तोतों की टोली टिव-टिव करती—पास से उड़ी तो भी उसे कुछ ध्यान नहीं रहा। मानो फकत भौंकने की खातिर ही उसका जन्म हुआ हो। गोया धूल उड़ाने के अलावा इन्सान की जिन्दगी का दूसरा कोई मकसद ही न हो !

अब तो फकत एक हौंकार का काम और है। कुत्ते की जात को भौंकना नहीं भुला दिया तो इन्सान के नाम पर जूती। परस्पर भौंकने की उस स्पर्धा में दिन ढलने लगा। रोटी में इतनी देर तो कभी नहीं हुई ! दोनों भाइयों की भूख से पसलियाँ टूटने लगी थीं। आखिर छोटा भाई हताश होकर गाँव की ओर रवाना हुआ। गड़रियों के वाड़े के बीच आते-आते उसने जो नजारा देखा तो एकबारगी उसे अपनी नजर पर विश्वास नहीं हुआ। गर्द के गुब्बार में बड़ा भाई—नंगे बदन। धूल से सना हुआ। बिखरे बाल। हाथ-पैरों से धूल उकेरते हुए कुत्ते के सामने भौंक रहा है। कुत्ता तो भौंकता है और धूल उकेरता है, इसमें क्या खासियत ? यह तो उसका आदिम स्वभाव है। लेकिन भाई को यह क्या सनक सूझी। कहीं सर तो नहीं फिर गया ! राह की एक तरफ रोटियों की टोकरी पड़ी थी। ऊपर धूल ही धूल जम गयी थी। झाड़ी पर साफा खुला पड़ा था। इन्सान को इस तरह भौंकना शोभा देता है भला !

अब तो फकत एक हौंकार की कसर है। कुत्ते को आखिर हार माननी ही पड़ेगी। जब तक भौंकना नहीं सीखा था, तब तक बात और थी। अब तो ऐसे दस कुत्तों को हराकर छोड़े। आखिरी हौंकार की आशा में वो लगातार भौंकता ही गया ! भौंकता ही गया !

कि इतने में छोटे भाई की आवाज सुन झिझककर रुक गया। हाँफते-हाँफते इन्सान की बोली में कहने लगा, 'बावले, तूने सब गुड़ गोबर कर डाला। फकत एक हौंकार की कसर थी। इस दोगले कुत्ते को हराकर ही मानता !'

'पर हमारी रोटी···!'

बड़ा भाई लज्जित होकर बीच ही में दुख और पछतावे के सुर में बोला, 'अरे हाँ ! यह रोटी की बात तो बिल्कुल ही भूल गया। भौंकने का स्वाद ऐसा ही होता है।'

छोटे भाई ने अत्यधिक आश्चर्य से पूछा, 'भौंकने का स्वाद !'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वड़ा भाई एक गहरा निःश्वास छोड़ते बोला, 'हाँ, भौंकने का स्वाद ! विना भौंके इसके स्वाद की कैसे पहचान हो ! फकत एक हौंकार में मेरी जीत निश्चित थी ! भले आदमी, तूने यह कैसा बदला लिया। एक जून रोटी नहीं खाने से तुम मर थोड़े ही जाते !'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रैनादे का रूसना

तमाम दुनिया को आलोकित करनेवाला सूर्य रैनादे के रंगमहल में कदम रखते ही धीमा पड़ जाता है। अपने तप-तेज की गुरुता अपनी रानी को क्या दिखाये ! और रानी भी रानियों जैसी। लाखों में एक। धरती तक लहराते अनन्त साँवले केश। बाल-बाल में अनगिनत मोती पिरोये हुए। असीम ब्रह्माण्ड में फरफराता सुरमई चीर। शाम को प्रियतम रंगमहल में पधारें तो गुलाल की वर्षा। भोर में रंगमहल से सिधायें तो गुलाल की वर्षा। देर-सवेर सहवास की वेला चाँद का चिराग जलाती। प्रियतम के वियोग में नित रूठती और नित आसक्त होती। और प्रियतम भी इस रूठने का पूरा आदी। रूठी रानी उसे ज्यादा लुभावनी लगती।

रोज की मानिन्द आज फिर वही दिनचर्या। प्रीत के गुलाल में सना हुलसित सूर्य रंगमहल में आया तो दरवाजा जड़ा हुआ था। चिड़ियों की चहचहाट के बहाने कुण्डी झनझनायी। रूठी रानी ने काफी देर से दरवाजा खोला। चिकने गेसुओं पर हाथ फिराते प्रियतम बोला, 'फिर वही बात ! बेचारे चिराग का क्या कसूर ? उसे तो जलाना था।'

'मुझे कहने की जरूरत नहीं। गरज हो तो खुद जला लो।'

'मैं जलाना नहीं जानता, तभी तुम्हारे इतने निहोरे कर रहा हूँ। चिराग के उजाले में तुम्हारा रिसाया रूप निहारता हूँ तो मेरी सारी जलन मिट जाती है।'

प्रियतम का हाथ झटकते रैनादे बोली, 'मैं तुम्हारे सारे लच्छन जानती हूँ। क्या ये ढोंग सीखने के लिए ही सारे दिन डोलते फिरते हो ? रात को गरज थी, तब कहा कि अभी चक्कर लगाकर घड़ी-आध-घड़ी में वापस आया। अगर वक्त पर ही आना था तो मुझे झूठा दिलासा क्यूं दिया ?'

हँसी के बहाने चमचमाता सूर्य कहने लगा, 'मेरी रानी, मुझे सारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुनिया का खयाल रखना पड़ता है। सारे प्राणियों को मैं भूखा जगाता हूँ, लेकिन भूखा सुलाता नहीं। फकत मेरा ही उन्हें भरोसा है। मैं नियम भंग करता हूँ तो उनका विश्वास टूटता है। तमाम प्राणियों के लिए दिन और तुम्हारी खातिर सारी रात। फिर भी तू रूसना करती है! हरेक की सार-सँभाल करते-करते मुझे एक पल भी चैन नहीं मिलता।'

रैनादे का रूसना अब थोड़ा निथरने लगा। बोली, 'तो क्या तुम खुद सारे उद्यम व प्रपंच करते हो?'

'मेरे अकेले के उद्यम और प्रपंच करने से पार नहीं पड़ता। इस खातिर मैं हर प्राणी को जरूरत मुताबिक हौसला व ताकत सौंपता हूँ।'

'मुझे तो तुम्हारी सौंपी हुई ताकत में कोई दम नजर नहीं आता। जो हाली-मजूर तुम्हारी धूप तले आठों पहर हड्डी-तोड़ मेहनत करते हैं, पसीना बहाते हैं, उन्हें सूखे-बासी टुकड़े मुश्किल से हाथ लगते हैं। और जो अमीर-उमराव गद्दों पर पसरे पड़े रहते हैं, तुम्हारे तप-तेज के पास भी नहीं फटकते, वे मौज उड़ाते हैं, ऐश करते हैं।'

सूर्य कुछ धीमा पड़ता हुआ झीने सुर में बोला, 'इन्सान से तंग आकर मैंने उसकी सार-सँभाल छोड़ दी है। उसकी आकांक्षाएँ बहुत बढ़ गयीं। अपने ज्ञान के अहंकार में डूबा, अब वो मेरे बस में नहीं रहा। जो पंछी-डाँगर फकत मेरे विश्वास पर जीते हैं, मैं उनकी ही आस पूरता हूँ।'

रैनादे बीच ही में उलाहना देते बोली, 'अच्छी आस पूरते हो! जीव, जीव का भक्षण करता है। आज ही मैंने झरोखे से देखा कि एक शेर एक गर्भवती हिरणी को दहाड़ता हुआ डकार गया। बेचारी अपने बच्चों की खातिर खूब रोयी, मिन्नतें कीं, लेकिन हत्यारे शेर के मन में कुछ भी दया नहीं आयी।'

'यह काम कुदरत का है। कुदरत जीवन-मरण में फर्क नहीं मानती। जीना सो मरना, मरना सो जीना। मैं प्राणियों के स्वभाव पालता हूँ, बदलता नहीं।'

'जहाँ वश नहीं चलता, वहाँ यूँ ही बात सँवारकर सन्तोष करना पड़ता है। क्या वाकई कोई नाचीज प्राणी भी तुम्हारी सार-सँभाल से नहीं बचता?'

सूर्य सर हिलाते कहने लगा, 'ऊँ हूँ, कोई नहीं बचता। इन प्राणियों की खातिर ही मैं तुम्हारी जुदाई बरदाश्त करता हूँ।'

रैनादे शर्त बदती हुई-सी बोली, 'और अगर कोई प्राणी तुम्हारी सार-सँभाल से बच गया तो?'

'तो मैं रनिवास के बाहर मुँह भी नहीं निकालूंगा।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'इतने फैलो मत ! तुम्हारे वादे की श्रौकात मैं जानती हूँ।'

रानी को बाँहों में भरते प्रियतम बोला, 'तुम नहीं जानोगी तो कौन जानेगा ? मेरी दाभ-जलन की तुम्हीं एकमात्र छाँव हो।'

मोतियों से जड़ी माँग सँभालते रैनादे बोली, 'इस खोखले प्यार के पीछे मेरे श्रमोलक मोती तो मत बिखेरो।'

'मेरी प्रीत के पीछे ही इन मोतियों का मोल है।'

'हाँ, यह बात तो सही है !'

फिर तो मोतियों के बिखरने का हिसाब किसी ने नहीं रखा। तड़के सूर्य ने रंगमहल से बाहर जाने की श्रातुरता दरसायी तब प्रियतम के गालों पर चुम्बन देती रैनादे बोली, 'एक दिन तो मेरे कहने से रुक जाश्रो। मर गयी तो मन में रह जायेगी।'

सूर्य श्रालिंगन छुड़ाते कहने लगा, 'हम दोनों ही श्रमर हैं। हमारे मर जाने से तो सारी दुनिया ही मर जायेगी।'

'फकत घड़ी-श्राध-घड़ी तो और ठहर जाते। क्या मेरे प्रेम की इतनी भी मर्यादा नहीं रखोगे ?'

'मर्यादा रखता हूँ, तभी तो समय पर जाना जरूरी है। एक क्षण की भी देरी होने से समूची दुनिया में हाय-तोबा मच जायेगी !'

रैनादे को बेमन से गुलाल की वर्षा करनी पड़ी। सूर्य मुस्कराता हुश्रा बाहर निकला श्रौर उसके मुस्कराते ही चारों श्रोर उजियारा-ही-उजियारा फैल गया।

रूठी रानी ने एक झटके से बचे हुए सारे मोती उतार दिये। श्रब तो प्रियतम की सही परख करने पर ही उसे चैन मिलेगा। शर्त जीतने के बाद उसे कभी रनिवास के बाहर नहीं जाने देगी। देखूँ तो सबकी सार-सँभाल लेनेवाले ऐसे महाबली को !

थोड़ी ही देर में उसने एक बढ़िया तदबीर सोच ली। कुंकुम की डिबिया में एक चींटी डालकर चोली में छिपा ली।

पल-पल के इन्तजार में दिन बेहद लम्बा हो गया। श्राज वह किसी भी कीमत पर नहीं मानेगी। जानबूझकर इतनी देर की !

रंगमहल की साँकल बजा-बजाकर सूर्य पूरा तंग श्रा गया। तब कहीं उसने मुश्किल से दरवाजा खोला। श्रामना-सामना होते ही उलाहना जताते बोली, 'श्राज इतनी देर कैसे हुई ?'

'मैं तो वक्त पर ही श्राया, लेकिन मेरी रूठी रानी को तो देरी महसूस होगी ही।'

रैनादे श्रावाज कसते बोली, 'किसी प्राणी की सार-सँभाल में कसर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो नहीं रही ?'

सूर्य गुमान से बोला, 'कसर रहने पर मेरे तप-तेज को कौन मानेगा ?'

'बहुत देखा तुम्हारा तप-तेज ! क्यूं फजूल की हाँक रहे हो !'

फिर पास आकर उसने चोली से सोने की डिबिया निकालकर पूछा, 'इस चींटी की सार-सँभाल ले ली ?'

सूर्य मुस्कराते बोला, 'तुम्हें वहम हो तो डिबिया खोलकर देख लो। अपने हाथ से आधा चावल डाला था। कुतरने के बाद अब भी थोड़ा बचा हुआ है।'

रैंनादे को तब भी विश्वास नहीं हुआ। तुरन्त डिबिया खोलकर देखा, सचमुच चींटी के पास चावल का कण पड़ा था !

उसके आश्चर्य और खुशी का पार नहीं रहा। प्रियतम पर गुलाल उछालते बोली, 'अब तो मेरे सारे मोती बिखर जायें तब भी परवाह नहीं।'

प्यार भरी इस वाणी के साथ ही उसने अपने प्रियतम को बाँहों में भर लिया। फिर तो सारी रात मोती-दर-मोती बिखरते ही रहे; बिखरते ही रहे !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेदाग चिकनाहट

इन्सान बिना जात कैसी! गधे बिना लात कैसी! मेंगनी बिना खात कैसी! प्यादे बिना मात कैसी! तारों बिना रात कैसी! और राजा बिना बात कैसी! तो परमेश्वर के रूठने पर धरती से राजाओं का राज जाये तो जाये, पर बातों के सिंहासन पर राजाओं का उसी तरह अटल निवास। वो ही अनहद गाजे-बाजे और वो ही अक्षय रास। राजाओं के गुणों मुताबिक एक राजा को बात काटने और नकारने से बेहद चिढ़ थी। इस खातिर राज्य की समझदार व भली रिआया और दरबारी राजा के हुंकारे को नीचे ही नहीं गिरने देते थे। जी हाँ, जी हाँ कहना। सुखी-कुशल रहना। यही चरम मन्तर। खरा और सच्चा जन्तर।

एक बार शिकार से लौटते वक्त साथ-साथ चलते दीवान की घोड़ी पर नजर पड़ते ही राजा ने आश्चर्य-भरे सुर में पूछा, 'दीवानजी, मेरी 'साँवली' घोड़ी कहाँ है?'

दीवान ने राजा की घोड़ी की ओर हाथ से इशारा करते कहा, 'अन्नदाता, आप उसी पर तो बिराजे हैं।'

राजा मुस्कराते कहने लगा, 'तो भी सावधानी जरूरी है।'

दीवान थोड़ा झुककर गर्दन हिलाते बोला, 'जय हो, महाराज की जय हो! हुजूर की सावधानी के वगैर तो यह राज्य एक पल भी नहीं चल सकता।'

सचमुच, दीवान की उस चापलूसी से बड़ा सत्य मनुष्यों की इस दुनिया में दूसरा कोई नहीं है। खजाना, फौज, चापलूसी और भय—इन चार अटूट खम्भों के सहारे समस्त राज्य टिके हुए हैं। कैसा भी भोला-भाला इन्सान यह बात समझता है कि मक्खन खाने की बजाय मक्खन लगाना अधिक फायदेमन्द है। अपने से बड़ों की चापलूसी के बिना इस दुनिया की गाड़ी नहीं चल सकती। सभी इसकी निन्दा करते हैं और सभी इसकी चाहना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं। खुशामद के स्वाद का ऐसा बेढ़व असर है कि यह सभी को बेहद मीठा लगता है।

एक मर्तबा दरबार में विराजे हुए राजा को राम जाने क्या सूझी कि उसने अपने संगमरमर के धवल सिंहासन पर हाथ फिराते-फिराते, बारहठजी को रुकने का इशारा किया। बारहठजी उस वक्त वीर-रस का 'गीत' सुना रहे थे। उनके ठहरते ही मानो गिरते हुए झरने के आगे अचानक कोई रुकावट आ गयी।

चिन्तन की मुद्रा बनाते राजा ने पूछा, 'बारहठजी, मुझे तो यह शिला कुछ बढ़ती हुई नजर आ रही है!'

उस सफेद-झक पत्थर पर थोड़ी देर नजर गड़ाकर बारहठजी कहने लगे, 'हाँ अन्नदाता! हुजूर की बात बिल्कुल सही है। यह शिला तो पल-पल बढ़ रही है। कहीं ऐसा न हो कि आँगन में समाये ही नहीं।'

बारहठजी की बात सुनकर राजा कुछ असमंजस में पड़ गया, पर थोड़ी देर सोचने के बाद उसे वास्तविक रहस्य का पता चला। होंठों पर झीने मर्म की हँसी बिखेरते कहने लगा, 'ना, यहाँ तुमने समझने की भारी भूल की है। शिला की तरह यह आँगन भी तो साथ-साथ बढ़ रहा है। बोलो, बढ़ रहा है कि नहीं?'

बारहठजी कोहनी समेत हाथ जोड़ते बोले, 'बढ़ रहा है, अन्नदाता! वाकई बढ़ रहा है।'

राजा ने गुमान-भरे सुर में फिर सवाल किया, 'फिर आँगन में समाने, न समाने की गुत्थी कैसे उलझेगी? बोलो!'

'बिल्कुल नहीं उलझेगी अन्नदाता! वास्तव में मैंने समझने की भूल की थी।'

राजा मूँछों के ताव देते बोला, 'तो फिर भूल करने का तुम्हें पूरा दण्ड मिलना चाहिए।'

बारहठजी पहले भी इस तरह के दो-तीन दण्ड भुगत चुके थे। दुहरे होकर राजा के चरणों का स्पर्श करते बोले, 'जरूर मिलना चाहिए। आपका तो दण्ड भी मेरे लिए वरदान से बढ़कर है।'

बारहठजी के कपड़ों पर थूककर राजा ने कहा, 'छोटी बात का छोटा ही दण्ड दूंगा। फकत एक गाँव की बखसीस। तुम्हारी इच्छा हो सो गाँव चुन लो। मैं कल ही ताम्रपत्र लिखवा दूंगा।'

उसके बाद बारहठजी जानबूझकर वैसी भूलें करते थे। दूसरे दरबारियों को यथासम्भव भूल करने का मौका ही नहीं लेने देते थे। सारे दरबारी मन-ही-मन उनसे जलते थे। और यदि उल्टे-सीधे बोल निकलने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर वास्तव में सजा मिल गयी तो कैसे पार पड़ेगी। इसलिए अगवानी होकर बोलने की किसी की हिम्मत ही नहीं होती थी। पर बारहठजी को अपनी समझ पर पूरा भरोसा था। निःशंक भूल करते थे और निःशंक दण्ड कबूल करते थे। राजा को भी बारहठजी की बातें सुने बगैर चैन नहीं पड़ता था।

एक दिन राज्य के बगीचे का माली कच्चे, कोमल और एकदम चिकने बैंगनों की टोकरी भरकर दरबार में लाया। बानगी स्वरूप एक बैंगन राजा के सामने करते कहने लगा, 'अन्नदाता, यदि इसकी जोड़ का बैंगन दूसरे राजा की वाड़ी में मिल जाये तो सर कलम करवा लूँ। एक दफा सभी राव-उमराव और दरबारी इसकी सब्जी बनाकर अरोगें तो मेरी मेहनत सफल हो।'

बैंगन हाथ में लेकर राजा एक अबूझ बालक की तरह सूँघने लगा। बारहठजी ने मौका देखकर टोकरी से एक साथ दो बैंगन उठाये और जोर-जोर से सूँघने लगे। राजा गर्दन हिलाते बोला, 'वाह, वाह! क्या बढ़िया खुशबू है। ऐसी कि चमेली और गुलाब की खुशबू को भी मात करे!'

राजा के मन को इतना चीन्हने के बाद बारहठजी कब पीछे रहनेवाले थे। बेजोड़ आशुकवि थे। बैंगन की प्रशस्ति में तुरन्त एक कवित्त सुनाकर कहने लगे, 'गुलाब और चमेली के फूलों की इसके सामने औकात ही क्या है, अन्नदाता! उनका तो फकत नाम ही है, पर सच पूछें तो बैंगन की खुशबू का कोई मुकाबला ही नहीं है! कैसा खूबसूरत रंग और कैसी चिकनाहट, तभी तो खुद कृष्ण भगवान ने अपने अंग पर इसका रंग धारण किया। यह तो तरकारियों का सरताज है, अन्नदाता! तभी तो कुदरत ने अपने हाथों से इसे मुकुट पहनाया है।'

बारहठजी के मुँह से मुकुटवाली बात सुनकर राजा को बेहद आश्चर्य हुआ। बैंगन को घुमा-फिराकर चारों ओर से ध्यानपूर्वक देखा। वास्तव में, यह तो साक्षात मुकुट है! कंगूरेदार! एकदम हरा! कैसा फबता और कैसा सुहाना! अचानक राजा को एक बहुत गहरी बात सूझी! दीवान की तरफ देखते बोला, 'बैंगन का इत्र निकलवायें तो कैसा रहे?'

जब राजा ने दीवान की तरफ देखकर सवाल पूछा तो उसे ही जवाब देना था। कुछ कहने के लिए बारहठजी होंठ मुलमुलाने ही लगे थे कि दीवान बोला, 'फिर तो कहना ही क्या अन्नदाता! सारे दरबार में खुशबू-ही-खुशबू फैल जायेगी।'

फिर राजा ने बारहठजी की ओर मुँह करके दीवान की बात पक्की करने के बहाने पूछा, 'क्यों बारहठजी, तुम्हारा क्या खयाल है?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बारहठजी उत्साह से कहने लगे, 'पूछो ही मत अन्नदाता ! मन में पछतावा फकत इसी बात का है कि यह बात पहले क्यूँ नहीं सूझी । देवता तक इस खुशबू की खातिर तरसेंगे । बार-बार सींकें माँगकर नाक में दम न कर दें तो गनीमत होगी ।'

राजा गर्व से बोला, 'पर इससे अपना खजाना कम थोड़े ही होता है । देवताओं के माँगने से तो उलटा अपना मान ही बढ़ेगा ।'

बारहठजी जुहार करते कहने लगे, 'इसमें क्या शक है, अन्नदाता !'

गर्व से फूला राजा फिर से बैंगन को अच्छी तरह ध्यान लगाकर देखने लगा । बैंगन के मुड़े हुए डण्ठल को दो-तीन दफा सीधा करके आश्चर्य से पूछा, 'यह अँकुए की तरह क्या है ? इसका मायना बताओ तो तुम्हारी समझ को मानूँ ।'

बैंगन की तारीफ में दो-तीन सोरठे सुनाकर बारहठजी कहने लगे, 'अन्नदाता, चींटी को तो पेशाब का रेला भी भारी होता है । क्या तो मेरी समझ और क्या उसकी औकात ! समझ तो फकत आपकी है । हम तो बेकार खोपड़ी का भार ढोये फिरते हैं । हुजूर के मुँह से अँकुए का बोल सुनते ही मैं हुजूर के मन की बात समझ गया । कानों के कुण्डलों में अँकुए के बल ये बैंगन लटकायें तो खूब फबेंगे, अन्नदाता !'

बारहठजी के कहने पर खुद राजा ने अपने श्रीमुख से स्वीकार किया कि उसके मन में यही बात थी । फिर किस बात की देर । दरबारियों में होड़-सी मच गयी । कानों में बैंगन लटकाकर सभी राजा की तरफ देखने लगे । राजा खिलखिल हँसते बोला, 'गजब फबे ! अब सभी सर हिलाओ, देखें गिरते हैं कि नहीं ।'

उसके बाद एक-एक करके सभी दरबारियों ने विशेष सावधानी से इस प्रकार सर हिलाये कि कहना ही क्या ! क्या मजाल कि एक भी बैंगन नीचे गिर जाये । फिर राजा ने माली की तरफ देखकर आदेश दिया कि वो बाकी बचे बैंगन सब्जी के लिए जरूरत मुताबिक दरबारियों में बाँट दे और राज-रसोई में एकदम ताजे बैंगनों की टोकरी भरकर पहुँचाए ।

दूसरे दिन फिर उसी तरह राजदरबार जुड़ा । राजाजी कुछ देर से पधारे । सिंहासन पर बिराजने के बाद, पेट पर हाथ फेरते बोले, 'तुम लोगों के पेट भी रात को दुखे क्या ?'

सभी ने एक साथ स्वीकार किया कि बैंगन की तरकारी खाने पर सारी रात बहुत पेट दुखा । मीठी-मीठी ऐंठन होती रही । बैंगन जितनी बादी किसी दूसरी तरकारी में नहीं होती । बारहठजी ने बिल्कुल झूठी तारीफ करके फालतू यह चाहना जगायी ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजा ने धीरे-धीरे पेट दबाते हुए बारहठजी की तरफ आँखों में रंग लाकर इसकी वजह पूछी। बारहठजी हाथ जोड़ते कहने लगे, 'भयंकर भूल हुई, अन्नदाता! माफी बख्शें। कल जल्दबाजी में अगली बात कहना भूल गया था। कुदरत के हाथों मुकुटवाली खूबी से बैंगन ऐसे इतराये कि क्या अर्ज करूँ! पोखर में समन्दर समाये तो समाये ही कैसे अन्नदाता! तब बैंगन के अहंकार पर कुदरत को ऐसा गुस्सा आया कि मुकुट पर काँटे-ही-काँटे घोंप दिये। भला, कुदरत के सामने नाचीज बैंगनों की क्या हैसियत! मुकुट धारण करने पर भी जो गुमान न करे वो तो सूरत ही दूसरी होती है। राजाओं की नकल करने पर आखिर बैंगन की यह दुर्गति हुई।'

सचमुच बारहठजी की बात बिल्कुल सही थी। कुदरत के कोप के काँटे साफ नजर आ रहे थे। बारहठजी को कुदरत की लीला का कितना ज्ञान है। राजा का गुस्सा काफी ठण्डा पड़ गया। धीरे-से पूछा, 'पर कल तुमने यह बात क्यूँ नहीं बतायी?'

बारहठजी दोहरे होकर चुपड़े सुर में कहने लगे, 'आपके आदेश के बिना कैसे बताता, अन्नदाता! मैं इन ना-कुछ बैंगनों का चाकर थोड़े ही हूँ। मैं तो फकत हुजूर का गुलाम हूँ। हुजूर की इच्छानुसार चलना ही मेरा धर्म है।'

बारहठजी की यह बात सुनकर राजा ऐसा खुश हुआ कि उन्हें एक गाँव और भेंट कर दिया।

चापलूसी के मक्खन की ऐसी जबरदस्त और अमिट चिकनाहट होती है कि सभी की आँखों से साफ दिखते हुए भी उसका दाग कहीं नज़र नहीं आता। चाहे घड़े भर-भरकर ही क्यूँ न चुपड़ें। और स्वाद ऐसा बेजोड़ कि एक दफा चखने के बाद धीरे-धीरे अधिक चाहना जाग्रत होती है!'

एक रात राजा को राम जाने क्या सूझी कि आधी ढलने के बाद उसने सभी दरबारियों को इकट्ठा करके पूछा कि पैदल तीर्थ जाने से पुण्य अधिक होता है या सवारी पर जाने से? उसके विचार से तो पैदल जाने के सत्कर्म की बराबरी कोई नहीं कर सकता।

बारहठजी के मुंह से जवाब सुनने के लिए सभी दरबारी टुग-टुग उनका मुँह ताकने लगे। तब बारहठजी दो-तीन दफा गला साफ करके कहने लगे, 'अन्नदाता, देवताओं के दरीखाने पैदल जाने से बड़ा पुण्य और क्या होगा? कदम-कदम पर पुण्य जुड़ता है। कुदरत के कण-कण की पहचान होती है। धरती पैर चूमती है।'

राजा बीच ही में संशय से बोला, 'पर पैदल पहुँचें कब! बिलकुल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धीरे-धीरे, घिसट-घिसटकर। और राजा को पैदल चलना शोभा देता है, भला ?'

'कैसे शोभा दे, अन्नदाता ! राजा तो स्वयं भगवान का साक्षात अवतार होता है। बात तो फकत भावना की है। पैरों को तकलीफ देने से क्या फायदा ! तीर्थ तो अपनी ठौर हैं। मार्ग की यात्रा जितनी जल्दी और आराम से कटे, उतना ही अच्छा।'

राजा को जितनी बात सुननी होती है, उतनी ही सुनता है। बारहठजी की बात काटते बोला, 'हाथी पर चलें तो कैसा रहे ?'

होंठों पर आयी बात को तुरन्त निगलकर बारहठजी कहने लगे, 'एकदम लाजवाब, अन्नदाता ! हाथी की सवारी का तो पूछना ही क्या ! हवा को ठेलता हुआ और धरती को कँपाता हुआ चलता है। गोया धरती स्वयं उसके साथ-साथ चल रही हो। हुलसित आकाश नीचे उतरने के लिए तरसता है। पर हाथी को किसकी परवाह ! सूंड को हिलाते और मस्ती के निशान अंकित करते चलता है। सूरज जैसी तकदीर होने पर ही हाथी की सवारी हाथ लगती है, अन्नदाता ! यदि तीर्थ स्वयं चलकर सामने न आये तो मैं उलाहने का भागीदार हूँ।'

पर राजा के पास किसी को उलाहना देने का वक्त ही कहाँ होता है ! रीझने पर बखसीस और खीजने पर दण्ड। हाथी की सवारी का चाव मिटते ही उसके मन में घोड़े की सवारी की चाहना जगने लगी। कहा, 'मुझे तो हाथी की बनिस्पत घोड़े की सवारी ठीक लगती है।'

बारहठजी हाथी को ठोकर से उड़ाकर घोड़े की महिमा गाने लगे, 'अन्नदाता, घोड़े का तो नाम लेते ही हवा पीछे रह जाती है। बेचारे हाथी की क्या हस्ती कि वो घोड़े के वेग का मुकाबला करे। थचक-थचक मन-मन की लीद करता हुआ, रास्ते की मर्यादा को रौंदता हुआ, धीरे-धीरे चलता है। कैसा बेडौल और कैसा लीचड़ ! बीस घोड़ों जितना अकेला ही डकार जाता है, पर चलने के नाम पर मौत आती है। ठीक से ध्यान रखे बिना पता ही नहीं चलता कि आगे बढ़ रहा है या पीछे खिसक रहा है। पर घोड़े को तो घोड़े की माँ ने ही जना है, अन्नदाता ! नजर की गति से भागता है। बड़गड़-बड़गड़ ! पेड़-पौधे साथ-साथ दौड़ते हैं ! टक्कर लगने पर हाथी भी सात गुलाँचे खाये ! तभी तो सूरज भगवान ने अपने रथ के लिए घोड़े चुने हैं !'

पर राजा और सूरज भगवान की क्या बराबरी। अचानक किसी ऊँट का अरड़ाना सुनकर राजा को ऊँट की सवारी अधिक पसन्द आयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घोड़े को मन से उतारकर कहने लगा, 'मेरे विचार से तो ऊँट की सवारी को कोई नहीं पहुँच सकता।'

मन के अस्तबल से घोड़े को भगाकर बारहठजी कहने लगे, 'ऊँट तो ऊँट ही है, अन्नदाता! इस तरह अरड़ाता है मानो बादल गरज रहे हों। ऊँट रेगिस्तान की दूरी ऐसे तय करते हैं गोया पानी में हंस तैर रहे हों। घोड़े तो ऊँट की ईढ़र के भी नहीं लगते, अन्नदाता। कैसी शानदार बनावट! दूज के चाँद की तरह तिरछी गर्दन। हवा में झूलता गोरबन्द। सुरंगी मोहरी। पीतल की काठी। जब नेवरियों को खनकाते हुए मस्ती में आकर भागता है तो धरती झुक-झुककर मुजरे लेती है। आलस्य और थकावट में तो समझता ही नहीं। लगातार पखवाड़े तक दौड़ने पर भी सुस्ती नहीं झलकती। घोड़े तो ऊँट की पासंग में तुलते हैं, अन्नदाता!'

कि अचानक राजा का मन पालकी के चारों ओर घूमर लेने लगा। कहा, 'क्यूँ बारहठजी, पालकी में चलने से ठीक नहीं रहेगा?'

'कैसे ठीक नहीं रहेगा, अन्नदाता! पालकी के तो ठाट ही निराले हैं। इन्सानों के कन्धों पर, इन्सानों का राजा बिराजे, इससे अधिक पुण्य का काम और क्या होगा! रानियाँ तो पर्दों में ही शोभा देती हैं। न हिलना, न डुलना। भले ही अन्दर सोते चलो। न कोई खौफ और न कोई जोखम। जानवर तो जानवर ही है, अन्नदाता। भागते हुए यदि वस में न आये तो कितनी जोखम! पर इन्सान तो इशारे से रुकते हैं।'

इस बार राजा को बारहठजी से मजाक करने की सूझी। इस सवारी की खातिर तो उन्हें नकारना ही पड़ेगा। मुस्कराते पूछा, 'मेरे खयाल से तो गधे की सवारी सबसे बढ़िया है।'

पर बारहठजी ने तो नकारना सीखा ही नहीं था। झट हामी भरते कहने लगे, 'अन्नदाता, यदि शुरू में ही गधे का खयाल आ जाता तो दूसरी सवारियों का बखान ही नहीं करता। 'शीतला-माता' की चुनिन्दा सवारी! बेहद सीधा व सरल। जो डालो, वही खाये। गिरने पर कोई जोखम नहीं। पिटने पर बुरा मानता नहीं। मालिक की जो इच्छा हो, वो ही हुक्म बजाता है। नखरे की जात नहीं। कहीं अड़ने की बात नहीं!'

इस बार राजा को तैश आ गया। गरजते बोला, 'क्यूँ बारहठजी, आखिर तुम मुझे गधे पर बिठाकर ही माने! राजा को गधे की सवारी कब शोभा देती है?'

बारहठजी कोहनियों तक हाथ जोड़ते बोले, 'वो तो आप जानें, अन्नदाता! मेरी क्या औकात कि आपको गधे की सवारी करने से रोकूँ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप तो देश के मालिक हैं। गधे पर चढ़ने से गधे की कीमत भी हाथी-घोड़ों से चौगुनी हो जायेगी। राजा की सवारी का गधा होना कोई मामूली बात नहीं है। इस खातिर तो स्वयं देवता भी तरसते हैं।'

बारहठजी की यह बात सुनकर राजा खुश हुआ या नाखुश, इस सवाल का सही जवाब देनेवाले को इक्कीस गाँव इनायत होंगे।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्यारी-न्यारी मर्यादा

मंशाओं की तीख किसने लाँघी, कौन लाँघे ? यह स्याह-सफेद सीख किसने माँगी, कौन माँगे ? अन्तस की असंख्य कलियाँ किसने सानी, कौन साने ? ये झूठ-साँच की गलियाँ किसने जानी, कौन जाने ? इन्द्रधनुष का चीर किसने ताना, कौन ताने ? यह मेह-बरसता नीर किसने छाना, कौन छाने? तो सूरज भगवान जने-जने की आँखों को आप-सरीखी रोशनी दे कि एक थे बारहठ-जी। तीसरा व्याह होते हुए भी, भरे-वदन नौजवानों को पीछे रखते थे। होंठों पर सरस्वती का निवास था। बेमाप की सूझती थी। मजमे के आला सिंगार थे। उनके होते किसी दूसरे व्यक्ति के होंठ ही नहीं खुलते थे। खुद की बोली खुद के कानों को भी अजनबी लगती थी। देश के मालिक का तो बारहठजी के बगैर मन ही नहीं लगता था। बड़ी हैरानी की बात कि बारहठजी की बातें राजा के लिए दवाई का काम करती थीं। दिन ढलने के साथ राजा को धीरे-धीरे अफरा चढ़ने लगता था और आठ-दस दफा जोर से हँसने पर आप ही उतर जाता था। उनकी बातें सुनकर राजा को बरबस हँसी आ जाती थी। मालिक को हँसते देखकर मुसाहिब दुगने जोश से हँसते थे। संयोग की बात कि बारहठजी को अक्ल से भी सवाया रूप हाथ लगा था। भरपूर कद। केसर के साँचे ढला फबता वदन। तैंतीस की उम्र के बाद वक्त का वेग मानो एक ही ठौर रुक गया हो। सभी लोग ताज्जुब करते थे कि कालचक्र कहीं वापस उलटा तो घूमने नहीं लग गया ! देश के मालिक को किस बात की कमी, पर पाँच बरस छोटे होते हुए भी राजा बारहठजी से आठ-दस बरस बड़ा लगता था।

इन सब गुणों के बाद बारहठजी में फकत काछ के ढीलेपन की ना-कुछ कमी थी। बारहठजी की आवाज सुनते ही औरतों के कलेजों पर मानो बखिया अथवा तुरपाई लग जाती थी। परिन्दों की नाईं बारहठजी की बातें औरों के लिए तो उड़ानें भरती थीं, पर बड़ी अजीब बात यह कि पत्नी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामने उनकी भृकुटी आठों पहर चढ़ी रहती थी। एक बार हिम्मत करके ठकुरानी ने पति से इसका मतलब पूछा तो बारहठजी ने अदेर जवाब दिया, 'बावली, मेरी जोड़ीदार होकर तू इतना भी नहीं जानती! बता, दुनिया में ऐसा कौन-सा पेड़ है, जिस पर अपनी छाया का परस होता हो? समूची दुनिया को सराबोर करनेवाले बादल तो एकदम कोरे ही रहते हैं! बता, हवा को कभी बयार लगी है? सूरज को किसी की रौशनी मिली है? और नीति की पुख्ता बात है कि औरतों को हँसना या मुस्कराना कतई शोभा नहीं देता।'

ठकुरानी ने अबूझ बच्चे की तरह शंका की, 'क्यूं हँसने-रोने पर कैसी बन्दिश? यह तो कुदरत की लीला है।'

'पर इन्सान की कारीगरी से कुदरत का मेल नहीं बैठता। उघड़ी कुदरत को ढाँपना ही इन्सान की समझदारी है। इसी खातिर हम कपड़े पहनते हैं। सिंगार करते हैं। पर्दे और घूंघट में ही इन्सान का आला ज्ञान छुपा हुआ है।'

ठकुरानी आधा घूंघट हटाकर धीरे-से बोली, 'जब तक तुम मर्द घूंघट नहीं निकालोगे, तब तक यह ज्ञान अधूरा ही रहेगा।'

बारहठजी केसरिया साफे पर हाथ फिराते कहने लगे, 'मर्द की अक्ल ढकी रहनी चाहिए और औरत की शक्ल। हँसने से औरत का पर्दा खुलता है और पाँव फिसलने की जोखम अलग से।'

बारहठजी कई दिनों से नयी ठकुरानी को इस ज्ञान की घुट्टी पिलाना चाहते थे। यह तीसरा ब्याह हुए सातवाँ महीना खत्म होने को आया, पर अभी तक अनमोल सीख देने का मौका ही नहीं मिला। आज अच्छा मौका हाथ लगा। अगर यह ठकुरानी भी ठीक से इशारे में नहीं समझी तो इसकी भी वही दुर्गति होगी। इसलिए पहले समझाना ही बेहतर है। घर की औरत को दिन के उजाले में ज्यादा मुँह लगाना अच्छा नहीं। लिहाज घटता है। इतने दिनों में दूसरों के मुँह से आप ही ठकुरानी को इस बात की पुख्ता जानकारी हो गयी होगी कि मर्यादा की सीमा लाँघने पर किसी भी सूरत में छुटकारा नहीं है। पिछली दोनों ठकुरानियों की तरह गला घोंटने में कुछ देर नहीं लगेगी।

पर ठकुरानी को तो शादी से पहले ही सारी बातें मालूम हो गयी थीं। जन्म देनेवाले माँ-बाप ने भी जब उन बातों की परवाह नहीं की, तब उसका क्या वश चलता! माँ-बाप जिसका हाथ थमाये, आँखें मूंदकर उसी हाथ को थामना बेटी का परम और पहला धर्म है। कई दिनों से घुटती ठकुरानी का आज हृदय खुला। हँसने के साथ पाँव फिसलने की बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनकर उसने निर्मल भाव से शंका की, 'और मर्दों के जो कदम-कदम पर पाँव फिसलते हैं, सो कोई बात नहीं ?'

बारहठजी के बुलन्द ज्ञान से कौन टक्कर ले सकता था ! फौरन जवाब दिया, 'मर्द की बनावट अलग है तो उसका चाल-चलन भी अलग है। दोनों को एक काँटे से नहीं तोला जा सकता। मर्द का क्या, चलते ही बाड़ में मूत दे। पर औरतों के लिए तो यह बात मौत से भी बदतर है। इसी खातिर मुझे दोनों ठकुरानियों का कल्याण करना पड़ा !'

'पर कल्याण हुआ कहाँ ? यह तो उलटा अकाज हो गया। मरने के बाद पछतावा करने की बात ही कहाँ रही ? और पछतावा तो मौत से भी ज्यादा दुखदायी होता है। ताजिन्दगी, पल-पल मौत से सामना करवाता है। देह छोड़ने पर तो मौत का दर्द ही नहीं होता।'

बारहठजी कुछ देर गुमसुम सोचने के बाद कहने लगे, 'अपने पसीने की ऐसी तासीर तो नहीं जानी थी! वास्तव में, उसके परस से तुझ में भी अच्छी-खासी अक्ल आ गयी, पर तू पूरा खयाल रखना, ऐसा न हो कि...।'

नयी ठकुरानी बीच में ही बोली, 'मेरी तो जगदम्बा लाज रखे। पर अब तो आप भी खयाल करिए। सफेदी नहीं आयी तो क्या, काले बालों की कोई मर्यादा ही नहीं होती ?'

बारहठजी बेसब्री दरसाते कहने लगे, 'कैसे नहीं होती ? भला, मुझसे ज्यादा कालों की मर्यादा कौन रख सकता है ? पर तेरी-मेरी मर्यादा में बहुत फर्क है। औरतों की मर्यादा मर्दों के लिए शर्म की बात है। और हम मर्दों की मर्यादा तुम औरतों के लिए डूब मरने की बात है। कुदरत का भेद आँखें मूंदने से एक नहीं हो जाता।'

काने घूंघट से पति की अनियाली मूँछों में नजर उलझाते ठकुरानी बोली, 'आँखें खुली रखने का यह गुरु-मन्तर कभी नहीं भूलूँगी। भ्रम का जाला कटा—तभी अच्छा। सात जनम तक आपका एहसान नहीं विसराऊँगी।'

बारहठजी के पसीने की मानिन्द उनके ज्ञान की तासीर भी कम नहीं थी। उस दिन से उनके मन का बचा-खुचा अन्देशा भी जाता रहा। दुगने जोश से दरबार में जाने लगे। उनकी बातों को नयी धार लग गयी। मन्द-मन्द मुस्कराहट छितराते राजा और मुसाहिबों को खूब हँसाते। राजा का अफरा उतरते ही उन पर कामदेव की खुमारी तारी होने लगती। खेह के बवण्डर उड़ाते बड़गड़-बड़गड़ मेड़ी की तरफ घोड़ा दौड़ाते। इशारा की हुई दासी आप ही जुगाड़ भिड़ाकर बारहठजी के घर पहुँच जाती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नयी ठकुरानी ने उस दिन के बाद न तो कभी रूसना किया और न कोई गिला। न्यारी-न्यारी मर्यादा की सीख रफ्ता-रफ्ता उसके हृदय में जमने लगी थी। जब-तब पति की इच्छा होने पर हिंगलु-सेज की हाजरी बजाने में भी वह कभी ना-नकुर नहीं करती थी। हथलेवे की ब्याही का नेग तो चुकाना ही पड़ता है! नेग के साथ सीख की बातें दुहराने में भी कभी गलती नहीं होती थी।

खुशियों की ढलान पर दिन मजे से लुढ़क रहे थे। घोड़े पर नित्य पाँच कोस का सफर। इसके बाद बारहठजी के मन का वेग। दिन चढ़ने से पहले-पहले बारहठजी दरबार में शामिल हो जाते थे। उनके आते ही आनन्द की अदीठ लहर नाचने लग जाती। राजा की तो जान ही मानो बारहठजी की साँसों में बसी हो।

एक दिन बारहठजी के बैठते ही दीवान ने कहा, 'बारहठजी, आपकी उम्र तो बहुत बड़ी है, इतनी देर से आपका ही जिक्र चल रहा था।'

बारहठजी राजा की ओर मुखातिब होकर कहने लगे, 'जब तक अन्नदाता की दया है तब तक बरस भी क्षण के समान लगता है।'

आगे राजा से ठहरा नहीं गया। होंठों पर मन्द मुस्कराहट बिखेरते बोला, 'एक बात पूछता हूँ, बेधड़क जवाब देना।'

बारहठजी नरमाई से कहने लगे, 'अन्नदाता के होते, मुझे किसका डर?'

'डर तो मेरा ही, यहाँ और डरानेवाला कौन है? क्या तुम्हें मेरा रंचमात्र भी डर नहीं?'

'पर मैं डर जैसा काम तो सपने में भी नहीं करता। आपसे डरने की बजाय तो मरना बेहतर है।'

राजव्यास ने राजा के कानों में कोई मन्तर सुनाया। राजा दो-तीन मर्तबा सर हिलाने के बाद बोला, 'अपने शास्त्र ही तो कहते हैं कि आग, राजा और जल से तो डरने में ही भलाई है। या तो अपने शास्त्र झूठे हैं या तुम मुझे राजा ही नहीं मानते!'

बारहठजी हाथ जोड़ते बोले, 'मेरे मानने और न मानने से क्या होता है! अन्नदाता, उल्लू सूरज को न माने तो सूरज का क्या घटता है! आग, राजा और जल को ठीक से इस्तेमाल करने पर कोई जोखम नहीं है।'

इधर-उधर की बातों का उलझाव छोड़कर राजा ने स्पष्ट पूछा, 'बारहठजी, तुम्हारा घर तो जहाँ है, वहीं है। जाते हुए ज्यादा वक्त लगता है कि यहाँ आते हुए। कोई कहता है कि नयी ठकुरानी की उमंग में, जाते हुए वक्त बिलकुल कम लगता है। कोई कहता है कि मेरे दरसनों की चाह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में, आते हुए आधा वक्त भी नहीं लगता।'

बरबस आती हँसी को दबाते बारहठजी बोले, 'अन्नदाता का मन क्या कहता है ? मेरे मन की बात आपसे क्या छुपी है !'

राजा सर हिलाते बोला, 'ऊँ हूँ, झूठी बात। किसी के जी में जी किसने डाला है ! तुम्हारे मन की मुझे क्या मालूम ?'

बारहठजी कहने लगे, 'मैं तो अब भी मानता हूँ कि आपका और मेरा मन अलग-अलग नहीं है। आप अलग मानें तो आपकी मरजी।'

राजा ने जोर देकर कहा, 'अलग है तभी तो अलग मानता हूँ। ये तो कहने की बातें हैं। माँ और बेटे के मन भी अलग-अलग होते हैं। मेरे हलक में पानी उतरने से तुम्हारी प्यास तो बुझने से रही ! तुम्हारे चोट लगने पर मेरे खून कब आयेगा ? अब टाल-मटोल न करके जो पूछा उसका सही जवाब दो।'

बारहठजी ने तो कहते ही जवाब सोच लिया था। बोले, 'अन्नदाता, यहाँ दरबार में आते वक्त तो मुझे यह एहसास ही नहीं होता कि मेरा घर दूर है। वक्त और फासले का मुझे कुछ ध्यान ही नहीं रहता। पर लौटते हुए मुझे जरूर लगता है कि मेरा घर काफी दूर है। दूना फासला और दूना वक्त महसूस होता है। बेचारी बीवी का क्या, एक की जगह इक्कीस लाकर बैठा दूँ पर आपकी ठौर दूसरा मालिक तो सूरज के ढूंढ़े भी नहीं मिलेगा।'

राजा खिल-खिल हँसते बोला, 'मैंने यही बात दीवानजी से बार-बार कही, पर वे माने नहीं। रानियाँ तो मैं भी सतरह ले आया, पर तुम्हारी जोड़ का कविराजा कहाँ से लाऊँ ? कैसी भी सुन्दर और सतवन्ती होकर भी वे तुम्हारी गरज कब पूरी करती हैं ? मेरा अफरा तो फकत तुम्हारी बातें सुनकर ही झड़ता है।'

राजदरबार की बातों का क्या अन्त ! ताली के साथ बातें बदलती हैं। न्यारी-न्यारी रानियों का रूप-सरूप चितारते हुए राजा के मन में एक नयी शंका खुदबुदाई। बारहठजी के चेहरे की ओर देखते कहने लगा, 'तुम तो खुद ऊँचे रसिया हो ! एक बात तो बताओ कि आदमी का एक औरत से काम क्यूँ नहीं चलता ? नित्य नयी तिसना क्यूँ जगती है ?'

बारहठजी ने फौरन जवाब दिया, 'अन्नदाता, इसमें इतना सोचने की क्या बात है! हलुवे जैसा पकवान भी मुँह आने पर खाया नहीं जा सकता। स्वाद बदलना ही पड़ता है। एक औरत तो मुँह आयेगी ही, स्वाद बदले बिना तृप्ति नामुमकिन है। एकरसता सारा मजा किरकिरा कर देती है।'

दीवान ने बीच ही में शंका की, 'पर कटोरियाँ अलग-अलग हुईं तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या हुआ, अन्दर पकवान तो एक ही है। समझे कि नहीं ?'

बारहठजी तो जैसे जवाब सोचे ही बैठे थे। तुरन्त बोले, 'मैं तो आपके बगैर कहे ही सब समझे बैठा हूँ। पर इतनी अक्ल होते हुए भी आपने नौ शादियाँ क्यूं कीं ? और बाकी बातें भी किसी से अनजानी नहीं हैं ! फिर भी सरेआम कहना अच्छा नहीं लगता। समझे कि नहीं ?'

दीवान जवरन मुस्कराने की चेष्टा करते कहने लगा, 'आपके समझाने पर तो समझना ही पड़ता है।'

उस वक्त राजव्यास से अबोला नहीं रहा गया। जोश में आकर कहने लगा, 'पर आपकी यह आला बात, लाख समझाने पर भी मेरी समझ में नहीं आती। आप सब जानते हैं कि मैंने पण्डिताइन को छोड़कर कभी किसी औरत के लिए मन नहीं ललचाया। फिर अभी तक पण्डिताइन मेरे मुँह क्यूं नहीं आयी ?'

बारहठजी के कैसी ढील। तपाक से बोले, 'प्याज, मिरच और रूखी रोटी कभी मुँह नहीं आती।'

सारे दरबारी एक साथ जोर से हंसे। राजा तो हँसते-हँसते दोहरा हो गया। राजव्यास का मुंह पीला पड़ गया। हँसी रुकने पर धीरे से बोला, 'मुझे तो जमींकन्द से परहेज है, पर आप हलुवे की उपमा से ही समझना चाहें तो मेरी पण्डिताइन भी किसी से कम नहीं है।'

राजा के मुँहलगे बारहठजी के कैसी लगाम ! हाथों-हाथ फारगती की, 'इसका हमें क्या मालूम ? पर आपकी यह बात लाख समझाने पर भी मेरी समझ में नहीं आती। हलुवा और औरत तो मुँह आयेंगे ही। पर फिर भी किसी के जी में जी किसने डाला है ! कोई मेरी तरह उघाड़े भाँड होते हैं और कोई आपके उनमान ऊँचे कारीगर !'

राजव्यास के चेहरे पर राख पुत गयी। गोया उसके शरीर का समूचा खून किसी ने निचोड़ लिया हो।

कि इतने में रुनक-झुनक करती रानी बारहठजी के करीब आकर खड़ी हो गयी। इतनी देर झरोखे में बैठी वह चुपचाप सारी चर्चा सुन रही थी। आखिर धीरज चुकने पर उससे रहा नहीं गया। बारहठजी की आँखों में नजर गड़ाकर ताने के सुर में बोली, 'आप मर्दों को हलुवा व औरत मुँह आ जाती है तो स्वाद बदल लेते हो, पर हमें पति मुँह आ जाय तो स्वाद बदलने की सख्त मनाही है। पति के मरने पर या तो साथ सती होती हैं या भूखों मरना पड़ता है।'

बारहठजी के बहाने रानी ने राजा को ये कड़वे बोल सुनाये थे। बरसों से पत्थर बने सीने को वाणी मिली थी। पुरानी चेतना भुलाकर वह मानो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नयी योनि में आ गयी हो। बारहठजी से पहले राजा का मुँह उतर गया। सूरज की तरह रौशन इस उजाले पर कैसे गिलाफ डाले! शर्म से गड़े राजा ने अटकते कहा, 'मैं नहीं जानता, इस बात का सही जवाब आपको ही देना पड़ेगा। इतनी देर तो आप कभी अबोले नहीं रहे?'

अब जाकर बारहठजी का होश ठिकाने आया। कहने लगे 'अन्नदाता, जवाब तो एक के बदले इक्कीस सूझते हैं। पर सिंहासन की इज्जत की वजह से जब्त करना पड़ता है। ये बातें मेरी जबान से निकलते हुए भी मेरी नहीं हैं। मैंने तो पण्डित-ज्ञानियों के पवित्र शास्त्रों के बोल दरसाये थे। पर पूजनीय रानियों को इस तरह भड़कना शोभा नहीं देता।'

बारहठजी की बात सुनकर रानी को बरबस हँसी आ गयी। पर उस हँसी में तोप के गोले-सा प्रकाश था। कहने लगी, 'हमें क्या शोभा देता है और क्या शोभा नहीं देता, यह हमीं पर छोड़ दो। पर बेपचे ज्ञान का ठौर-बेठौर वमन न करें तो बेहतर है।'

बारहठजी ताने का मीठा वार करते संजीदगी से बोले, 'पर बिना वमन किये आपकी आँखों का अँधेरा कैसे हटता?'

क्या मालूम क्या सोचकर रानी बर्राती-सी बोली, 'अगर इस रोशनी से तुम मर्दों की आँखें चौंधियाँ गयीं तो?'

'इसकी आपको क्या चिन्ता?'

'चिन्ता तो करनेवाले ही करते हैं। कोख की सिरजना का जिम्मा ओढ़ने के बाद ऐसी छोटी-मोटी चिन्ताओं की क्या गिनती!'

इन बोलों के साथ ही समस्त दरबारियों के कानों में मानो खौलता हुआ सीसा गिरा हो। आज तो उस गले की वाणी ही दूसरी थी। उसका सुर ही दूसरा था। उसकी ताकत ही दूसरी थी। हरेक के कानों में खुजली चलने लगी। सूनी-सूनी आँखों से सभी एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। वापस लौटते हुए, बिफरी हुई नागिन की तरह पूँछ फटकारते रानी बोली, 'पहली ही फटकार में यों क्या चित हो गये? शास्त्रों की जड़ों की पकड़ इतनी ढीली तो नहीं जानी थी!'

रानी के बहाने राजदरबार पर आज यह कैसी अचीती बिजली गिरी? सभी दरबारियों पर एक साथ यह कैसा तिलिस्म हुआ? राजा समेत तमाम दरबारी मुँह लटकाये मानो किसी की मातमपुरसी में बैठे हों! गाय के उनमान सीधी, सरल और निरीह रानी इतनी तल्ख होगी, यह तो नहीं सोचा था। उम्र में पहली मर्तबा उसकी जबान से यह कसैला-पन नमूदार हुआ था। इतने बरस किसी रानी ने गलती से भी कड़वा-मीठा कैसा भी गिला-शिकवा नहीं किया तो देश के भाग्यविधाता उस पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यूं विचार करते ? और आज बिन बादल यह अचीती बिजली गिरी तो तमाम श्रीमन्त संज्ञाहीन होकर अपनी सुध-बुध खो बैठे। समूची दुनिया को रौशन करनेवाले सूरज को ग्रहण लगने पर जैसे उसके तप-तेज की शेखी झड़ती है, उसी तरह रानी के बहाने मानो सत्ता के सिंहासन को ग्रहण लगा हो। किसी के कुछ समझ में नहीं आया—न दरबारियों के और न राजा के, कि अचानक यह क्या हुआ ?

औरत जब शर्मो-हया छोड़कर बोलने लगती है, तब भगवान को भी चुप रह जाना पड़ता है, इन्सान बेचारे की तो औकात ही क्या ? भला, शास्त्रों के अमिट वचन झूठे कैसे हो सकते हैं ! किसी अदीठ टोने के जोर से तमाम बाँकी मूँछवालों के जबड़े चिपक गये। आज किसी की जबान से विरोध के बोल सुनकर रानी बेइन्तहा उफनती, पर झुकी आँखों का यह निर्लज्ज मौन, उसके कलेजे को अंगारे की तरह छू गया। घिन और सूग से बदबू मारती हवा में साँस लेना जब दूभर हो गया तो मन के अनजाने उसके पाँव आप ही उसे धकियाते हुए रंगमहल में ले गये। किसी स्वप्न के वशीभूत, हिंगलु-सेज से मुँह मोड़कर वह नीचे ही सो गयी। जान रहते रंगमहल की इस अर्थी पर सोने का रत्ती-भर भी मन नहीं हुआ।

रानी के हृदय में पुरानी बातों के बुलबुले उठने लगे। विवाह के बाद इसी रंगमहल और इसी हिंगलु-सेज की पाँचवीं रात—राजा के इन्तजार में सुहागिया सपनों का ताना-बाना बुन रही थी कि राजा के साथ उसे एक अतुलनीय सुन्दर बालिका आती दिखायी दी। बीरबहूटी के साँचे में गोया चाँदनी की मूरत ढली हुई हो ! काले-भुजंग बाल और काजलिया भौंहें ! मृगनयन ! दूधिया बत्तीसी ! आँखों की नजर चुभे जैसी मुलायम पशम। रानी का मन काबू में न रहा तो वह उसकी ओर लपकी। उसके गालों पर लगातार चुम्बन देने लगी सो रुकी ही नहीं। तब नशे में झूमते राजा बोला, 'अब मुझे दोष मत देना !'

रानी चुम्बन देते-देते ही गुनमुनायी, 'क्यूं, इसमें दोष की क्या बात है ?'

दारू की भभक के साथ वासना का पुट घोलते राजा कहने लगा, 'जब औरत होकर तेरा भी मन वश में नहीं रहा तो मेरा मन कैसे वश में रहता ? चेहरे पर नजर पड़ते ही रोम-रोम में काम भड़क उठा !'

मानो नागिन की पूंछ पर पाँव पड़ा हो। झटके से खड़ी होकर गुस्से में तमतमाते बोली, 'मैंने तो बेटी की तरह इसको प्यार किया है ! यह तो मुश्किल से दस बरस की होगी !'

अंगारों की तरह दहकती मुस्कराहट के साथ राजा कहने लगा, 'पाँवों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से चलना सीखते ही औरत का रूप चलने लगता है। आखिर नजरों से देखकर ही तुम्हें मेरी बात पर यकीन होगा।'

रानी के सपनों का ताना-बाना पल-भर में राम जाने कहाँ ओझल हो गया! रुँधे सुर में पूछा, 'अगर यही यकीन दिलाना था तो मुझे व्याहने का नाटक क्यूँ रचा?'

नशे में धुत् राजा हकलाते बोला, 'इसका जवाब देने के लिए आज मेरे पास वक्त कहाँ है! धीरे-धीरे आप ही सारी बातें समझ में आ जायेंगी। आज का यह नाटक देखने के बाद शायद तुम्हारे मन में किसी तरह का कोई सवाल नहीं खटकेगा।'

उसके बाद राजा का इशारा पाते ही दरवाजे पर खड़ी दासी ने अदेर रंगमहल का दरवाजा बन्द कर कुण्डी लगा दी। रानी का कुछ भी वश नहीं चला।

फिर आगे का नाटक शुरू होते ही वह मुँह फेरकर खड़ी हो गयी। धरती कि सिरजना के बाद, आज दिन तक किसी औरत को, रौशन आँखों का ऐसा शाप नहीं मिला होगा। उस वेला रानी के मन में न खीज थी, न क्लेश, न दुख, न गिला। बेजान पाषाण पुतली की नाईं बिल्कुल सूना माथा लिये खड़ी रही। सहसा उसके कानों को एक तेज चीत्कार सुनायी दिया और उस तरफ मुँह करते ही वह बेहोश होकर नीचे गिर पड़ी!

तीन दिन के बाद रानी को बड़ी मुश्किल से होश आया। आँखें खुलते ही राजा के चेहरे पर उसकी नजर पड़ी। वापस आँखें मूँद लीं। उसकी खैरियत न पूछकर राजा ने फिर एक वाहियात मायना पूछा, 'मैं तीन दिन से सोच-सोचकर परेशान हो गया हूँ कि छोरी की चीख से तू बेहोश कैसे हो गयी?'

राजा ने घड़ी-घड़ी कुरेदा तो उसे जवाब देना ही पड़ा। मौन की जलन वह आगे बर्दाश्त नहीं कर सकी। बोली, 'जब मुझे ही नहीं मालूम है, तब आपको क्या बताऊँ!'

उस दिन के चेत के बाद बदनसीब रानी को कभी कोई सपना नहीं दिखा। न रात को और न दिन को। बेचारे सपने रंगमहल के उस नाटक के आगे कब तक ठहरते! आत्मा नाम की शह से उसका कोई वास्ता नहीं रह गया था। फिर तो रंगमहल का नाटक देखने के लिए रानी ने कभी किसी तरह की आनाकानी नहीं की। उस हिंगलु-सेज को कभी एतराज हुआ हो तो रानी को भी एतराज हो। समझ बदलने पर कुछ भी नामुमकिन नहीं होता! एक दिन राजा ने रानी की बदली हुई समझ का बखान करते कहा, 'सचमुच, अब तो मुझे तेरी समझ पर गर्व होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। नाहक चिकचिक से क्या फायदा! राजा करे सो ही न्याय। घर के बरतन का क्या, जब मरजी हुई बरत लिया। पराये बरतनों का इस्तेमाल करने में ही खासियत है।'

पर आज की इस नयी सुध-बुध के बाद रानी को ऐसा लगा मानो उसकी समझ का रूप फिर बदल गया हो। बिछड़ी आत्मा से सहसा वापस नाता जुड़ गया हो। सिर घूमने लगा, कलेजा जैसे खौलने लगा हो। झटके से खड़े होकर रंगमहल में इधर-उधर चक्कर लगाने लगी। दर्पण में नजर गड़ाकर काफी देर तक अपना चेहरा ध्यान से देखा तो असमंजस में पड़ गयी। अपनी आँखों अपना चेहरा ही उसने कहाँ पहचाना!

कि अचानक रानी के कानों को दासी की आवाज सुनायी दी, 'घुड़सवारी का वक्त हो गया। आपकी मंशा हो तो साईस को खबर कर दूँ।'

रानी ने चौंककर पीछे देखा। दासी की शक्ल देखते बोली, 'हाँ, कर दे।'

घुड़सवारी के तयशुदा काम में कभी नागा नहीं होती थी। थोड़ी देर बाद लिबास बदलकर वह खुशी-खुशी नीचे उतरी। पर आज बदली हुई समझ की माफिक उसकी खुशी भी बदली हुई थी।

हमेशा की तरह साईस जीने के सामने घोड़ियों की लगाम थामे खड़ा था। जुहार के जवाब में रानी ने मुस्कराकर लगाम पकड़ी। घोड़ी की पीठ थपथपाकर तुरन्त रकाब में पाँव रखकर ऊपर चढ़ गयी। 'चाल' के बदले रानी के इशारों के साथ घोड़ी सरपट भागने लगी। पीछे-पीछे साईस की घोड़ी भी सरपट भागी। उसकी जोड़ का घुड़सवार आस-पास की किसी रियासत में नहीं था। रानी को घुड़सवारी उसी ने सिखायी थी। तीन बरसों में रानी तो साईस से भी बढ़कर प्रवीण हो गयी। पर भंगी रानी का गुरु कैसे हो सकता है! सिखाने से क्या, चाकर तो चाकर की ठौर ही फबता है। पर बेहद अचम्भे की बात कि उस बदली हुई समझ के करिश्मे से आज ही उसे पहली दफा यह अहसास हुआ कि वो साईस भी जवान है! सुन्दर डील-डौल! फबता! सुहाना! और यह जग-जाहिर था कि यह साईस पुराने दीवानजी के अंश का है। पर इससे क्या! भंगिन की कोख से जन्मी औलाद तो भंगी ही होगी। सपने में किये दुष्कर्म का कोई प्रायश्चित होता हो तो बाहोश मर्द के गुनाहों का कोई प्रायश्चित हो। मर्दों का क्या, चलते ही किसी से चुहल कर लें! तिस पर बड़े आदमियों की तो बातें ही निरालीं। भगवान की लीला में कोई चूक हो तो मर्द की लीला में कोई चूक हो!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतने दिन तो रानी की नजर में घोड़ी, पेड़, टीले, नदी, नाले, पत्थर और साईस, सब बराबर थे। कभी कोई फर्क नहीं लगा। पर अछूत साईस की नजर में रानी और बबूल में भेद होने के बावजूद, मन की भावनाओं का इजहार करने की राह ही कहाँ थी! उसे तो वैसे सपनों पर भी लगाम रखनी पड़ती थी।

साथ-साथ चल रही रानी ने साईस की पीठ पर बेंत फटकारी तो उसने झिझककर रानी की तरफ देखा। आँखों की ललाई के बदले रानी के होंठों पर मुस्कराहट नाच रही थी। फिर भी उसने काँपते लहजे में हाथ जोड़कर पूछा, 'क्या गलती हुई अन्नदाता?'

अविरल मुस्कराहट का उजाला बढ़ाते रानी बोली, 'कोई एक गलती हो तो बताऊँ! तू तो तीन बरस से गलती-पर-गलती करता आ रहा है। कहाँ तक गिनाऊँ!'

साईस कोहनियों तक हाथ जोड़ते कहने लगा, 'उसी पल मुझे सूली पर चढ़ा देना था, अन्नदाता! हम कमीन-कारुओं को इस तरह बख्शने की क्या जरूरत?'

इस बार मुस्कराहट को दबाने की चेष्टा करती-सी रानी बोली, 'कसूर तो तेरा ऐसा ही है, पर गुरु जानकर मैंने परवाह नहीं की।'

'पर मैं तो हुजूर की जूतियों की नाचीज धूल हूँ। मुझे गुरु मानना तो सूली से भी बड़ी सजा है।'

मुस्कराहट को मुकम्मल तौर पर निगलने के बाद वह दाँत पीसते बोली, 'तेरे लच्छन तो ऐसे ही हैं। अगर अब भी गलती करने से बाज नहीं आया तो इससे भी बड़ी सजा दूंगी।'

साईस का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। अटकते हुए बोला, 'हुजूर के हाथों की सजा तो मेरे लिए वरदान से भी बढ़कर है, पर पहले मेरा कसूर तो मालूम हो।'

'बहुत-से आदमी तो कसूर समझाने के बाद भी नहीं समझते।'

'अन्नदाता, मैं इतना मूरख नहीं हूँ।'

रानी मीठा ताना कसते बोली, 'हाथ कंगन को आरसी क्या! अभी तेरी समझ का पता चल जाता है।'

साईस को दूसरा कुछ जवाब नहीं सूझा तो जबरदस्ती मुस्कराने की कोशिश करते कहने लगा, 'तीन बरस तक हुजूर की ठोकरें खाने के बाद मुझमें थोड़ी-बहुत समझ तो आयी ही होगी।'

'मुझे भी पहले यह भ्रम था। पर तेरे जैसा ठूंठ तो तू ही है। सारी दुनिया में ढूंढ़े भी नहीं मिलेगा।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रानी की ये पहेलियाँ साईस के रत्ती-भर भी पल्ले नहीं पड़ीं। उलझन में फँसा उदास-सा रानी के साथ-साथ चलता रहा।

रानी की बदली हुई समझ का न कोई छोर था और न पार। युग-युगान्तर के बन्धनों से मुक्त हुए रानी के पुराने संस्कार आपा ही खो बैठे। दुविधा के भँवर में डोलती नजर से वह साईस की आँखों की ओर देखकर कहने लगी, 'बता, तू निपट अन्धा है कि नहीं?'

साईस नजर नीची करने के बाद नरमाई से बोला, 'सच्ची बात तो आप जानें अन्नदाता, पर फिर भी मेरे खयाल से मैं अन्धा नहीं हूँ।'

'अन्धा नहीं है तो बता कि मैं बदसूरत हूँ या खूबसूरत?'

इस सवाल के मर्म का सर-पैर न समझने के बावजूद उसके मन का खटका मिट गया कि लम्बी-चौड़ी सजा की कोई बात नहीं है। बगैर सोचे आप ही उसकी जबान से बोल फिसल पड़े कि अगर रानी बदसूरत है तो फिर दुनिया में खूबसूरत कुछ है ही नहीं। रानी के रूप के आगे तो चाँद भी सात दफा पानी भरता है।

मन के सही जजबात पर खीज का ढक्कन ढाँपते रानी बोली, 'तब तो तेरा बहुत बड़ा कसूर है। ऐसा रूप मानते हुए भी तूने मुझमें और आटे की लोथ में कुछ फर्क नहीं जाना। सच बता, इन तीन बरसों में मेरे रूप की खातिर एक मर्तबा भी तेरा मन चल-विचल नहीं हुआ?'

साईस की रग-रग में बिजली दौड़ गयी। देश की मालकिन पर यह क्या खब्त सवार हुई! कानों के इस पाप का कैसे प्रायश्चित होगा। मन की भावना जाहिर न हो तब तक कुछ गुनाह नहीं है। राम जाने क्या सोचकर वो घोड़ी से नीचे उतर गया। उसे उतरते देखकर रानी भी अदेर नीचे उतर गयी। साईस ने लगाम पकड़े ही रानी के चरणों में सात दफा जुहार की। फिर खड़े हो कहने लगा, 'पिछले जनम में खोटे करम किये सो यह जिन्दगी भुगत रहा हूँ। फिर अगला जन्म बिगाड़ने का सामान कैसे करूँ; अन्नदाता! रानियों के रूप पर राजाओं के सिवाय खुद भगवान का मन भी चल-विचल नहीं होता!'

रानी झुँझलाती-सी बोली, 'भगवान की बात भगवान जाने, मैं तो तेरे मन की बात पूछ रही हूँ।'

"हम कमीन-कारुओं के कैसा मन और कैसी आत्मा! यह तो बड़े लोगों की जागीर है, अन्नदाता! हमें आपके चरणों में ठौर मिल जाये, तो और कोई सुख नहीं चाहिए।'

'दूसरा सुख तुम लोगों को दिखता भी तो नहीं है।'

'तभी तो हम कमीन-कारू कहलाते हैं, अन्नदाता!'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'और हमें बहुत-बहुत सुख दिखते हैं, इस खातिर हम वड़े लोग कहलाते हैं, क्यूं ?'

'इसमें क्या शक है अन्नदाता !'

सामने तालाब की पाल पर जंगी बरगद हवा के झोंकों से मन्द-मन्द झूम रहा था। उस पर नजर पड़ते ही साईस चालू बात को छिटकाकर कहने लगा, 'हमेशावाली मंजिल तो आ गयी। क्या आज भी घोड़ियों को यहीं पानी पिलायेंगे, अन्नदाता ?'

'क्यूं, आज क्या खास बात हो गयी ?'

वाकई, आज की तो सारी बातें एक-से एक बढ़कर खास थीं, पर साईस से वैसी कोई हामी नहीं भरी गयी। थोड़ी देर तक दोनों चुपचाप चलते रहे कि अचानक रानी की घोड़ी जोर से हिनहिनायी। उसकी देखा-देख साईस की घोड़ी भी सवाये जोर से हिनहिनायी।

टपाटप टापें भरती दोनों घोड़ियाँ पाल पर चढ़ गयीं। पानी देखते ही फिर एक साथ उसी तरह जोर से हिनहिनायीं। गोया रानी और साईस के बदले वे घोड़ियाँ दोनों के अन्तस की परतें खोल रही हों।

पानी पिलाने के बाद साईस ने घोड़ियों को हमेशा की तरह बरगद की जड़ों से बाँध दिया। अंगूरी लिबास पहने रानी किसी गहरे अन्तर्द्वन्द्व में मगन गुमसुम खड़ी थी। साईस को ऐसा लगा गोया सब्ज बरगद की यह कन्या अभी-अभी इस धरती पर अवतरी हो।

बयार के परस से विस्तृत तालाब हिलोरें ले रहा था—रानी की प्यास बुझाने की तरंग में। हमेशा की तरह रानी के पाँव आप ही तीर की ओर बढ़ गये। बरगद की छाँह लाँघते ही रानी के मन में पहली दफा एक बात कौंधी कि यह साईस भी प्यासा होगा। निःसंकोच हाथ का इशारा करते बोली, 'आ, तू भी पानी पी ले।'

इशारे के साथ ही साईस रानी की ओर दौड़ता आया। हाथ जोड़कर बोला, 'अन्नदाता, आपका तो बड़प्पन है, पर मैं ऐसा पाप कैसे करूँ ? प्यासा मरना कबूल है, पर मैं शाही तालाब का पानी सपने में भी नहीं पी सकता !'

रानी ताना मारते बोली, 'तब शाही तालाब की इस हवा में तू साँस क्यूं ले रहा है ?'

साईस लाचारी दरसाते कहने लगा, 'हवा की बात तो मेरे वश में नहीं है, पर पानी न पीना तो मेरे वश में है, अन्नदाता !'

'और मेरा हुक्म टालना तेरे वश में है कि नहीं ?'

'आपका हुक्म टालना तो किसी के भी वश में नहीं है, फिर मेरी तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रौकात ही क्या है, ग्रन्नदाता !'

रानी वेसब्री से बोली, 'तब चुपचाप मेरे साथ पानी पीने चल !'

साईस की तो साँप-छछूंदर वाली गति हो गयी। रानी का हुक्म माने तो बुरा ग्रौर न माने तो बुरा। हुक्म मानने पर युग-युगान्तर से एकत्र संस्कारों की मौत ग्रौर न मानने पर उसकी मौत। पर रानी का ग्रादेश टालने लायक उसकी बिसात ही क्या थी ! रग-रग में घुले संस्कार मरते हों तो मरें, पर रानी का हुक्म तो उसे बजाना ही पड़ेगा। दूसरे ही पल उसके पाँव ग्राप ही तालाब की ग्रोर बढ़ने लगे।

चलते-चलते ग्रचानक साईस की नजर ग्रपनी छाया पर पड़ी तो वो कूदकर पीछे हट गया। होंठों-ही-होंठों में बड़बड़ाया—ग्रनजाने में बहुत बड़ा गुनाह हो गया, ग्रन्नदाता ! माफी बख्शें। सचमुच, मुझे तो कुछ होश ही नहीं रहा।'

रानी ने पीछे मुड़कर पूछा, 'क्यूं, क्या हुग्रा ?'

साईस कोहनी सहित हाथ जोड़कर रुँधे गले से बोला, 'ग्रन्नदाता, ग्राप पर मेरी छाया पड़ गयी !'

साईस की बात सुनकर रानी के होंठों पर बरबस मुस्कराहट ग्रा गयी। जिस ग्रन्तर्द्वन्द्व में ग्राज वह डोल रही थी, उसमें यह बात सुनकर तो पत्थर भी हँसे बगैर नहीं रह सकता। बोली, 'बावले, यह छाया या तो धूप में दिखती है या उजाले में। ग्रँधेरे में तो इसका ग्रता-पता ही नहीं चलता। बोल, ग्रभी ग्रमावस की रात होती तो ?'

साईस तो बेजा फन्दे में फँसा। ग्रटकते-ग्रटकते बोला, 'ग्रन्नदाता, सरेग्राम दिन के उजाले में ग्रमावस की रात कैसे होती ?'

साईस की यह बात सुनकर रानी फिर जोर से हँसी। हँसते-हँसते ही बोली, 'तुझे इतना ठस तो नहीं जाना था। बता, रात पड़ने पर तो रात होती है कि नहीं ?'

'होती है ग्रन्नदाता !"

'ग्रौर घुप्प ग्रँधेरे में छाया दिखती है कि नहीं ?'

'नहीं दिखती ग्रन्नदाता !'

'फिर यह छायावाला गुनाह होगा कि नहीं ?'

'नहीं होगा, ग्रन्नदाता !'

तीर पर पहुँचते ही दोनों ठहर गये। काच जैसा निर्मल पानी प्यासे प्राणियों की प्यास बुझाने के लिए हिलोरें भर रहा था। ग्रंजलि भर-भरकर दोनों ने भरपेट पानी पिया। पानी पीने से तो कैसी भी दहकती प्यास बुझती है, पर साईस को इससे पहले पानी पीने का ऐसा ग्रथाह सुख ग्रौर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्तोष कभी नहीं मिला। रानी के संग, शाही तालाब में प्यास बुझाने का उसे सपना भी कहाँ नसीब था! पर बेहद अचरज की बात कि रानी के लिए भी यह कम सुख और सन्तोष की बात नहीं थी।

आज रानी के अन्तस का यह कैसा तहखाना खुला? और इस तहखाने में नयी-नयी बातों की यह कैसी धूम मची! काफी दूर तक दोनों चुपचाप साथ-साथ चलते रहे कि अचानक साईस की ओर मुँह करके रानी बोली, 'तुम कमीन-कारू तो रानियों के रूप-यौवन की खातिर निपट अन्धे होते हो···!'

राम जाने क्या सोचकर साईस बीच में ही हाथ जोड़कर बोला, 'अन्धा होना पड़ता है, अन्नदाता!'

'देखते हुए भी अन्धे बनो तो तुम्हारी मरजी, पर तुम्हारी तरह रानियों को तो अन्धा नहीं होना पड़ता। अगर किसी कमीन-कारू या अछूत के लिए किसी रानी का मन चल-विचल हो जाये तो?'

बगैर सोचे-समझे ही साईस के मुँह से एक बेजा बात निकल गयी। हाथ जोड़ते बोला, 'रानियों की इच्छा को कौन टाल सकता है, अन्नदाता! मालिक का मालिक कौन?'

एक गहरी निश्वास छोड़ते रानी बोली, 'हाँ, तेरी यह बात तो बिलकुल सही है कि मालिक का मालिक कौन? पर ऐसी मिल्कियत कितने दिन चल पायेगी?'

'यह तो आप जानें अन्नदाता!'

'मैं जानती हूँ, तभी तो कह रही हूँ।'

इस बात के साथ ही रानी की घोड़ी सरपट भागने लगी। साईस ने भी पीछे-पीछे घोड़ी दौड़ायी।

राजमहल में घुसते ही दोनों घोड़ियाँ एक साथ जोर से हिनहिनायीं। साईस चलती घोड़ी से नीचे उतर आया। जीने के पास आकर रानी ने पीछे मुड़कर देखा। घोड़ी की लगाम थामे साईस पैदल आ रहा था। वो ही रोजमर्रा का ढर्रा। पर आज उसे यह ढर्रा बुरा लगा। लगाम छोड़कर धम-धम सीढ़ियाँ चढ़ गयी।

गर्द से सनी रानी जब रंगमहल में आयी तो वही हमेशा का तयशुदा नजारा। उस दिनवाली लड़की सोने के पलंग पर बैठी राजा को सोने के प्याले से दारू की मनुहारें कर रही थी। तीन बरसों में वह लड़की छह बरसों जितनी बड़ी हो गयी थी। उसका रूप-यौवन सोन-पलंग और रंग-महल में समा नहीं रहा था। पर आज उसके गालों को चूमने का कतई मन नहीं हुआ। राजा से उसकी शक्ल कितनी मिलती थी! पर तमाम भेद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानते हुए भी उसके कभी होंठ नहीं खुले। आज बारी-बारी से दोनों के चेहरे निरखता हुआ मौन आप ही छलक उठा। रानी ने निस्संकोच पूछा, 'आपको तो जरूर मालूम होगा कि यह लड़की आपके ही अंश की है।'

राजा को अच्छा-खासा नशा चढ़ गया था। रानी को पूछते शर्म नहीं आयी तो वो कहने में क्यूँ झिझके! तपाक से जवाब दिया, 'यह बात राजमहल में सभी जानते हैं। किसी से छुपी नहीं है। पर इसकी माँ तो फकत मेरी दासी थी। ब्याही रानी होती तो यह अकर्म मैं मरकर भी नहीं करता।'

रानी मुस्कराती हुई ताने के लहजे में बोली, 'अब भी तुम्हें जीने का भरम है! धन्य है तुम्हारा भरम और धन्य है तुम्हारा जीवन!'

नशा न होने पर राजा इस ताने के मर्म को समझता कि नहीं, यह तो भगवान जाने, पर अभी राजी होकर कहने लगा, 'धन्य तो है ही! भला राजा का जीवन धन्य नहीं होगा तो और किसका होगा?'

दो दासियाँ रानी की चाकरी में तैयार खड़ी थीं। घुड़सवारी से लौटते ही रानी इत्र-फुलेल के गुनगुने पानी से स्नान करती थी। एक पल की भी देर होने से उसकी खीज की सीमा नहीं रहती थी। पर आज तो काफी देर हो गयी। नहलाने के लिए दासियों ने दूसरी दफा उतावली की तो रानी झुँझलाते बोली, 'आज मैं नहीं नहाऊँगी। तुम जाओ।'

वजह जानने के लिए दोनों दासियों के होंठ खुले ही थे कि राजा ने बात सँभाल ली। बोला, 'जो रानी की मरजी, तुम्हें पूछने की जरूरत नहीं है, पर सेजों का खेल देखने के लिए तुम यहीं ठहरना, जाना मत।'

रानी ने आगे बात नहीं बढ़ायी। मना करने के बावजूद वह चुपचाप चारों ओर काच-जड़े हम्माम में घुस गयी। डील की गर्द और डील का मैल तो नहाने से मिट जायेगा। रोम-रोम में इत्र-फुलेल की सुगन्ध घुल जायेगी। पर पीढ़ी-दर-पीढ़ी अन्तस में एकत्रित यह मल और सड़ाँध मारता कीचड़ हटे बगैर यह गन्दगी नहीं मिटने की। सड़े-गले संस्कारों को रगड़-रगड़कर धोये और चमकाये बगैर तो आगे साँस लेना भी दूभर है।

पर युगों-युगों से जमा इस गन्दगी और जंग को हटाकर चमक लायी जाये तो कैसे? मर्दों के आचरण की नकल करके? खुद औरतों का आचरण पवित्र रखकर? लेकिन पवित्रता के इस महसूल का खमियाजा औरतें कब तक भरेंगी? कब तक इस बोझ को वह अकेली ढोती रहे? दोनों की न्यारी-न्यारी मर्यादा से न तो मर्द कूता जा सकता है और न औरत। एक सूरज, एक चाँद और एक मर्यादा के बगैर यह अथाह अँधियारा मिटनेवाला नहीं है। उस्तरे की तेज धार के बगैर मर्दों की आँखों का यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाला किसी तरह नहीं मिटेगा। ये तो मानेंगे, तभी मानेंगे। किसी के समझाने से समझनेवाले नहीं हैं। औरतों की छूट देखकर ही इन्हें अपनी छूट की कालिख नजर आयेगी।

रानी का मन आज अजीब ऊहापोह में फँसा था। पर अचानक किसी औरत का स्यापा सुनकर उसका ध्यान भंग हो गया। लगातार चिल्ल-पों के साथ फरियाद-फरियाद का शोर सुनायी दिया। हर तरफ से लोग-बाग इकट्ठे होने लगे। हड़बड़ायी रानी सबसे पहले पहुँची। बगल में झाड़ू लिये रियासत की खास मेहतरानी दहाड़ें मार-मारकर रो रही थी। रानी उसकी पीठ पर हाथ फिराकर ढाढ़स बँधाते बोली, 'क्या हुआ? मुझे बेधड़क बता।'

इतनी देर में राजदरबार के काफी दरबारी इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये थे। मेहतरानी रोते-रोते बोली, 'अन्नदाता का दरबार लगे बगैर मैं कुछ नहीं बताऊँगी।'

सेजों का खेल पूरा होने पर अन्नदाता मस्ती से झूमते हुए पधारे। उनके आदेश से देखते-देखते दरबार लग गया। अलबत्ता राजव्यास ने दो-तीन बार बीमारी का बहाना किया, पर जब राजा नहीं माना तो उसे बेमन से आना पड़ा। घुड़सवार के बुलाने पर बारहठजी भी दौड़े आये। खचाखच भरे दरबार में मशालची चारों ओर मशालें लिये खड़े थे। हल्का-हल्का अँधेरा घिरने लगा था। इक्के-दुक्के तारे दरबार का मजमा निरखने के लिए आँखें झपका रहे थे। जलती मशालों का उजाला रफ्ता-रफ्ता बढ़ने लगा था।

राजा की इजाजत मिलते ही क्रुद्ध मेहतरानी राजव्यास की तरफ झाड़ू का इशारा करके इस तरह तीखे लहजे में कहने लगी गोया दहकते अंगारों को जबान मिली हो। दरबारियों के कानों में खौलता तेल गिरने लगा, 'इस बूढ़े खूसट के कारण मैंने आप लोगों को तकलीफ दी है। मेरी समझने लायक उम्र होते ही ये पूजनीय व्यासजी मेरे साथ मुँह काला करने लगे सो आज दिन तक मैंने एतराज या फरियाद नहीं की। मेरा क्या, मैं तो मेहतरानी हूँ। इनका धरम भ्रष्ट हुआ, सो इनका धरम-करम ये जानें। पर पिछले पखवारे से ये मुझे मेरी बेटी के लिए परेशान कर रहे हैं! हँसुली का लालच दिया, पर मैं नहीं मानी। यह मानने की बात ही कहाँ है? पर मेरे मानने न मानने से क्या होता है! आग लगे इनके पोथी-पानड़ों को! आखिर मौका देखकर अपने अंश की जायी बेटी के साथ ही इसने परसों धूल खा ली। वह अबूझ छोरी धरम-मर्यादा की इन बारीकियों में क्या समझे! ऐसी कमसिन बच्ची के लिए तो चाँदी की अँगूठी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का लालच ही काफी होता है। सिसकियाँ भरते घर ग्रायी। ग्रागे की बात न सुनो तो ही ग्रच्छा है। दो दिन तक मैं भीतर-ही-भीतर रोती रही। ग्राखिर सब्र नहीं हुग्रा तो देश के मालिक के सामने फरियाद करने के लिए ग्राना पड़ा। मेरी बात पर भरोसा न हो तो पण्डिताइन से पूछ लें। उससे कोई बात छुपी नहीं है। खाविन्द के लच्छनों से बेचारी मन-ही-मन कुढ़ती रहती है। तपेदिक की खाँसी से उसकी छाती ही खोखली हो गयी है, फिर भी बेचारी ने कभी पति से राड़ नहीं की।'

मेहतरानी की उस ग्रजीबोगरीब फरियाद से दरबार में सन्नाटा छा गया। दरबारियों की नफरत-भरी नजरें राजव्यास की तरफ मुड़ीं तो वे जमीन पर लोटते ही नजर आये। होंठों पर फेन ग्रौर पथरायी ग्राँखें! ग्रफीम की डिबिया ग्रौंधी पड़ी थी। मेहतरानी की फरियाद शुरू होते ही वे हथेली-भर ग्रफीम निगल गये थे। भला, सुहागन मौत के अलावा ऐसी मान-मर्यादा की रक्षा कौन कर सकता है? किसी की ग्रक्ल ने कुछ काम नहीं दिया। बारहठजी तक की बोलती बन्द हो गयी। राजा ने ज्यादा कुरेदा तो बारहठजी बमुश्किल धीरे से बोले, 'पण्डिताइन को पूछे बिना ग्रसलियत सामने नहीं ग्रा सकती।'

तब मेहतरानी कड़कते बोली, 'अगर व्यासजी इतने ही सच्चे थे तो उन्हें ग्रफीम नहीं खाना था।'

बारहठजी ने तुरन्त जवाब दिया कि झूठी तोहमत का डर भी कम नहीं होता। इज्जतदार ग्रादमी को ग्रपने हाथों मरना पड़ता है।

मेहतरानी ने हाथ जोड़कर फिर फरियाद की कि ये बिचौलिये कभी सही न्याय नहीं होने देंगे। खरा न्याय हुए बगैर वह दरबार से टस से-मस नहीं होगी।

पण्डिताइन की हालत दरबार में ग्राने की कतई नहीं थी। तब हद दर्जे लाचार होकर दीवान व बारहठजी राजव्यास की हवेली में पहुँचे। खाँसती हुई पण्डिताइन पलंग पर लेटी थी। दो-तीन मर्तबा सुनकर भी वह ठीक से समझी नहीं। हवेली का यह रहस्य नमूदार हुग्रा तो हुग्रा कैसे? बारहठजी व दीवान ने घड़ी-घड़ी पूछा तो भोली पण्डिताइन को मजबूरन कहना पड़ा कि पति की मर्यादा पर ग्राँच ग्राये, वैसी बात कहने के लिए उसे जबान ही नहीं मिली, तब क्या बताये ग्रौर क्या न बताये!

पण्डिताइन के बगैर कहे ही वे सारी बात समझ गये। दरबार में यह बात सुनते ही सभी मोतबरों ने पण्डिताइन के गुण बखाने कि पत्नी हो तो ऐसी! लाखों में एक। पति की मौत के बाद भी उसने बुराई के लफ्ज मुँह से नहीं निकाले। घर-घर ये ही माटी के चूल्हे ग्रौर ये ही उपलों की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राख ! पर राख तले दबी बात जब दरबार में सबके सामने प्रकट हुई तो जने-जने के कान झड़कर हाथ में आ गये। जब तक मल पेट में छुपा रहता है तब तक कोई किसी से घिन नहीं करता, पर बाहर दिखने पर सब नाक-भौं सिकोड़ते हैं। उस मजमे में बैठे तमाम दरबारी एक से एक बढ़कर लम्पट थे, फिर भी यह राजव्यासवाला अकरम किसी के गले नहीं उतरा। दूध-का-दूध और पानी-का-पानी करने की किसी की हिम्मत नहीं हुई। गोया इस न्याय के बहाने यह सबका ही शामिल न्याय हो।

मेहतरानी ने फिर इन्साफ के लिए अर्ज की। तब बारहठजी के होंठ मुश्किल से खुले। कहने लगे, 'तेरा न्याय तो भगवान ने ही निवटा दिया। तू ही बता, मरे हुए राजव्यास को और क्या दण्ड दें ? आत्महत्या के पाप से यह अवश्य ही नरक भुगतेगा।'

रानी उसके पास ही खड़ी थी। मेहतरानी ने हाथ जोड़कर सिसकियाँ भरते पूछा, 'आप ही फरमाएँ, क्या मेरे साथ यही अदल न्याय होगा ?'

रानी की आँखों में खून उतरा हुआ था, पर यहाँ किस पर क्रोध करे ? इन बेमुरौवत मर्दों के सामने गिड़गिड़ाने से तो उलटी उसकी ही मर्यादा घटेगी। मेहतरानी को ढाँढ़स देते बोली, 'तू इन लोगों से न्याय की आशा करती है, यही तेरा बहुत बड़ा भरम है। इन मर्दों के हाथों से अपना कभी न्याय नहीं होगा। हमारा न्याय तो हम को ही करना पड़ेगा।'

मेहतरानी अण्ट-सण्ट बकती आयी थी और अण्ट-सण्ट बकती वापस चली गयी। दरबार जैसे लगा वैसे ही वापस उठ गया। रात का अँधेरा अपनी जगह मजे से जमा था और गगन के नवलख तारे अपनी-अपनी ठौर मस्ती से झिलमिला रहे थे। रानी का वश चले तो वह एक-एक तारे को नोंच डाले। शायद ये तारे भी किसी का न्याय करने के लिए इकट्ठे हुए हों।

दरबार की चारदीवारी से बाहर निकलने पर भी बारहठजी राम जाने क्या सोचकर घोड़े पर नहीं चढ़े। काफी दूर तक हाथ में लगाम थामे पैदल चलते रहे। राजव्यास तो मरते-मरते भी सबके मुँह पर कालिख पोत गया। पर चिन्ता की सबसे बड़ी बात यह कि अछूत भंगिन की फरियाद करने की हिम्मत कैसे हुई ? राँड के लच्छन तो ऐसे हैं कि घोड़े की पिछाड़ी बाल बाँधकर घसीटें। और रानीजी की तो राम जाने आजकल अक्ल ही फिर गयी। कहीं दिमाग तो खराब नहीं हो गया ? अगर इस माहौल की रंगत नहीं बदली तो हँसी-मजाक की बातें एक सपना बनकर रह जायेंगी। राजाजी का अफरा न झड़ने पर कविराजा को कौन पूछेगा ? कुछ-न-कुछ जुगत तो बिठानी ही पड़ेगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आधी राह पार कर बारहठजी घोड़े पर चढ़े। अँधेरे को रौंदता-चीरता घोड़ा पलक झपकते मेड़ी के पास आकर आप ही ठहर गया। जानी-पहचानी हिनहिनाहट सुनकर भी ठकुरानी ने पलंग नहीं छोड़ा। आँखें मूँदे लेटी रही। मेड़ी में घी का दीपक जल रहा था। पति के बाजू में सोते ही आँखें खोलकर पूछा, 'आज किसका घर पवित्र करके आ रहे हो?'

बारहठजी झुँझलाहट दरसाते कहने लगे, 'वहम का इलाज तो हकीम लुकमान के पास भी नहीं है।'

ठकुरानी ने कहा, 'हजरत के कारनामे किससे छुपे हैं? आपकी बात पर एतबार नहीं होता। क्या इतनी देर से दरबार उठा?'

घरवाली की नजर में रत्ती-भर कद्र न होते हुए भी बारहठजी उसके सामने पहली दफा सच बोले। विस्तार से राजदरबारवाली सारी बात बतायी। ठकुरानी ने चुपचाप राजव्यास का पूरा वाकया सुना और छिड़े हुए बरों के छत्ते की मानिन्द उसके सर में भनभनाहट चालू हुई सो काफी देर तक नहीं रुकी। जैसे क्रौंच, टिटहरी या सारस सजातीय कूंजना सुनकर आप ही कूंजने लग जाते हैं, उसी तरह रानी और ठकुरानी के हृदय में एक सरीखी उथल-पुथल मची हुई थी।

घड़ी-डेढ़ घड़ी बारहठजी करवटें बदलते रहे। तब रानी के उनमान ऊहापोह में उलझी ठकुरानी बोली, 'कितनी ही करवटें बदलो, आज की रात आपको हरगिज नींद नहीं आयेगी।'

'क्यूं?'

'सुना है कि चोरों का मन जागता है। समूचा गाँव जानता है कि अपने हालिक की रगों में आपका खून दौड़ता है। हू-ब-हू आपसे शक्ल मिलती है। राजव्यास भंगिन से नहीं चूके तो आपने चमारिन तक नहीं छोड़ी। दोनों एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो। मरद जात का न तो कोई भरोसा है और न कोई लछमन-रेखा। मुझे तो लगता है कि मौका आने पर तुम लोग अपनी छाया से भी नहीं चूको।'

बारहठजी को गुस्सा तो ऐसा आया कि छिनाल का गला घोंट दें, पर हेकड़ी और हिम्मत ने जवाब दे दिया। फिर भी गरजते बोले, 'आजकल जबान ज्यादा लम्बी हो गयी दिखती है। ज्यादा जबान लड़ाई तो तू जाने।'

ठकुरानी ने उसी तरह ढीठता से जवाब दिया, 'अब खाली जबान लड़ाने से ही बात नहीं बनेगी। तुम्हारे तराजू और तुम्हारे बाटों से वापस सौदा तौले बगैर तुम लोग बाज नहीं आओगे।'

वेमाप की सूझ-बूझवाले कविराजा ने फिर चूं तक नहीं की। ढलती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात थोड़ी-बहुत आँख लगी और सवेरे शौचादि से निवृत होकर राज-दरबार की राह घोड़ा दौड़ाया। ठकुरानी की मनचाही हुई। खाविन्द के मुँह से नित प्रति सीख की बातें सुनते-सुनते बिल्कुल उलटी ढलान पानी चढ़ गया। सीख की बातें हर किसी के मुँह से नहीं फबतीं।

आग किसी का लिहाज नहीं रखती। अपने अन्दर गिरनेवाली हर चीज को तपाती और जलाती है। भरपूर नौजवान हालिक का हमेशा घर में आना-जाना था। दोनों वक्त शामिल चारा-पानी और दूध दुहना होता था। आवारा खाविन्द के मुँह से नित्य अपने आचरण से उलटे सीख के गुर सुन-सुनकर आखिर नाक में दम आना लाजिमी था। जिस दिन औरत छूट की राह स्वच्छन्द विचरण करने लगेगी, उसी दिन से मर्दों की पगडण्डी एकदम सीधी-सपाट हो जायेगी। आँखें मूंदकर कितने दिन अँधेरा रखेंगे!

चमार का लड़का बाड़े में चारा-पानी कर रहा था कि सोलह सिंगार किये ठकुरानी उसके करीब आकर कहने लगी, 'ये ढोर-डाँगर तो मुँह से बोलकर कुछ दरसाते ही नहीं फिर भी तुझे इनकी भूख-प्यास का पता लग जाता है। पर मेरी भूख-प्यास की तूने कभी परवाह नहीं की। कितने दिनों से मैं भूखी-प्यासी तड़फ रही हूँ, पर तू न तो बातों में समझता है और न इशारों में। आज साफ खोलकर कहने के लिए आयी हूँ। बोल, समझेगा कि नहीं?'

फकत समझाने से क्या होता है! गोखुर के पानी की कितनी गहराई! हिम्मत करने लायक हैसियत कहाँ से लाये? दोबारा पूछने पर हालिक डरते-डरते बोला, 'यह बात समझने लायक मेरे भाग नहीं हैं, अन्नदाता!'

साफ कहे बगैर पहेली नहीं सुलझेगी। इस खातिर ठकुरानी मुस्कराहट के अक्षर बरसाते बोली, 'भाग तो तेरे बहुत जोरदार हैं, पर उसे बरतने की हिम्मत नहीं है।'

राम जाने क्या सोचकर नादान हालिक कहने लगा, 'आपके पास तो हिम्मत की इफरात है, थोड़ी-बहुत उधार देने से कोई फरक नहीं पड़ेगा!'

'बावले यह भी कोई उधार लेन-देन की चीज है! तेरे जैसा नासमझ तो तू ही है। मेरी बदकिस्मती कि मैंने तुझ पर मन ललचाया। तू ऐसा सुन्दर नहीं होता तो आज मेरी यह दुर्दशा क्यूँ होती?'

यह बात कहकर ठकुरानी ने उसे बाँहों में भर लिया। फिर तो चाकर को भी हिम्मत करनी पड़ी। ठकुरानी का जीवन सफल हुआ। अछूत हालिक के परस से उसकी देह पवित्र हो गयी। पर चोरी-छिपे के ये काम जब तक खाविन्द के रू-ब-रू जाहिर नहीं होते, तब तक उसकी आँखें रौशन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं होंगी। मर्दों की आँखों में गर्म सलाइयाँ घोंपे बगैर उनका जाला नहीं कटेगा।

कपड़े झटकते-झटकते ठकुरानी ने हालिक की आँखों में नजर गड़ाकर पूछा, 'बोल, हिम्मत हुई कि नहीं? आखिर हिम्मत तो करने से ही होती है।'

अबूझ हालिक की जबान से फिर वही नादानी की बात। संकोच से बोला, 'नहीं अन्नदाता, मेरी इतनी औकात कहाँ! हिम्मत तो फकत आपकी है। आपकी हिम्मत ही मेरे काम आयी!'

ठकुरानी मीठा उलाहना जतलाते बोली, 'मुझे अब अन्नदाता-अन्नदाता कहने की जरूरत नहीं। तू तो मेरी सेजों का सिंगार है। पर एक हिम्मत का काम और करना पड़ेगा। उसके बगैर मरदों का खोखला अहम् कुचला नहीं जा सकता। मेड़ी की सेज, खुले दरवाजे और ठाकुर की आँखों के सामने! बोल, हिम्मत है कि नहीं?'

हालिक ने बेधड़क जवाब दिया, 'अब तो मुझे न मौत का डर और न मरने का!'

इसके बाद उसका हाथ पकड़कर ठकुरानी मेड़ी का जीना चढ़ने लगी। मेड़ी की दहलीज लाँघते बोली, 'मौत का डर मिटने पर ही जीवन का सच्चा सुख हाथ लगता है!'

और उधर राजदरबार में किसी अदीठ डर के वजूद से सुख और आनन्द शनैः-शनैः छीजने लगा था। दूसरे दिन दरबार तो वक्त पर ही लगा, पर हमेशा की जिन्दादिली नजर नहीं आयी। देश के मालिक और मुसाहिबों को हँसाने के लिए बारहठजी ने भरसक कोशिश की पर सब निरर्थक। राजा के हँसे बगैर दूसरों के हँसने की राह ही कहाँ थी! राजा का पेट फूलकर गुब्बारा हो गया। पेट में ऐंठन होने लगी। आखिर खीजकर राजा बारहठजी पर काफी गरजा, पर हँसाने की कोई भी जुगत चल नहीं पायी। बारहठजी ने अपनी तरफ से हँसाने में कोई कसर नहीं रखी, पर हँसना तो राजा के अपने हाथ में था। कलवाले वाकये से उसका मन खट्टा हो गया। आखिर बारहठजी तंग आकर बोले, 'मैं तो हार थका, अन्नदाता! अब आप खुद-ब-खद हँसें तो हुजूर का अफरा झड़े।'

राजा टसकते-टसकते कहने लगा, 'मैं कोई पागल थोड़े ही हूँ, जो खुद-ब-खुद हँसूँ। क्या मैंने इसलिए तुम्हें गाँव-पर-गाँव बख्शे हैं।'

यह बात कहकर राजा वाकई खुद-ब-खुद हँसने लगा, सो रुका ही नहीं। और थोड़ी देर में ही सारा अफरा झड़ गया। राजा की रीझ का क्या! बारहठजी को एक और गाँव बखसीस कर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रानी को मालूम होने पर वह भीतर-ही-भीतर कलपी। राज्य के नाम पर यह तमाशा कब तक चलेगा! दोहरी समस्या में उलझी वह गुमसुम बैठी थी कि उसे घोड़ियों की हिनहिनाहट सुनायी दी। राजी होकर रंगमहल के दरवाजे की ओर देखा तो दासी आती दिखायी दी। रानी मुस्कराकर बोली, 'तुझसे पहले ही मुझे घुड़सवारी की खबर मिल गयी। मैं तो कब से लिबास बदलकर तेरी राह देख रही हूँ।'

जीना उतरते रानी को सामने देखा तो साईस के होंठों पर मन से परे ही मुस्कराहट आ गयी। गुलाबी होंठों के साथ रानी मन-ही-मन मुस्करायी। नजदीक आने पर साईस की सुर्ख आँखों पर नजर पड़ी तो अचरज से पूछा, 'तेरी आँखें इतनी लाल कैसे हुईं? छूत तो नहीं लग गयी?'

साईस सिर झुकाकर धीरे से बोला, 'यहाँ नहीं बताऊँगा!'

रानी अदेर उसके मन की बात समझ गयी। परकोटे से बाहर निकलते ही उसने फिर वही सवाल किया। तब साईस बाशर्म लहजे में कहने लगा, 'आपकी बातें सुनकर कल सारी रात मुझे नींद नहीं आयी। उम्र में पहली मर्तबा मुझे इतनी देर करवटें बदलनी पड़ीं। इस जागरण जैसा सुख तो मुझे राज्य मिलने पर भी नहीं हो सकता। कुछ ऐसा लगा मानो खुली आँखों कोई सपना देख रहा होऊँ!'

रानी के हृदय में एक साथ हजार कमल खिल उठे। एक-एक कमल का मोल चक्रवर्ती राज्य से भी ज्यादा था। आज से पहले यही बदरंगी कुदरत उसे ऐसी खूबसूरत और सुहानी कभी नहीं लगी। एक ही रात में वनस्पति का यह धानी रंग इस तरह चमकने कैसे लगा? रानी ने अबूझ बच्चे की तरह आगे और सवाल किया, 'फिर क्या हुआ?'

साईस एक तपता निश्वास छोड़कर बोला, 'पर सुबह सूरज की लपटों में मेरे तमाम सपने जलकर राख हो गये।'

'क्यूं?'

'अबूझ बच्चा चाँद की खातिर हाथ-पैर मारे तो क्या होता है! चाँद अपनी ठौर चमकता रहता है और बच्चा अपनी ठौर रोता रहता है! एक ही रात में हजार बरसों का सुख हाथ लगा और दूसरे ही पल वापस छिन गया। इसकी बजाय सूरज उगने के साथ मर जाता तो मेरे जैसा सुखी कोई नहीं होता। अब वो सपना वापस कैसे आये?'

रानी मुस्कराहट को छिपाने की चेष्टा करते बोली, 'अगर वो सपना सच हो जाये तो?'

'पर सच होने से पहले उसका आनन्द कैसे बताऊँ! मेरी इतनी समझ कहाँ!'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साईस से मसखरी करने को रानी का मन कसमसाने लगा। कहने लगी, 'पर तेरा वो सपना था क्या ? बगैर बताये कैसे सच करूँ ? क्या मोतियों से भरा कलश चाहिए ?'

साईस सर हिलाकर साफ इन्कार कर गया, 'ऊँ-हूँ !'

'क्या बड़ा ठिकाना या राज चाहिए ?'

'ऊँ-हूँ !'

'क्या इन्द्रलोक की अप्सरा से ब्याह करना चाहता है ?'

'ऊँ-हूँ !'

'तू तो इन्कार के अलावा कुछ जानता ही नहीं। जो चाहिए सो साफ खोलकर बता ?'

साईस के चेहरे पर शर्म की हल्की पर्त चढ़ गयी। रानी के चेहरे की ओर देखने की हिम्मत नहीं हुई। मुँह फेरकर बोला, 'कहकर हो मन की सब बातें थोड़े बतायी जाती हैं ! आपमें मुझसे हजार गुना ज्यादा अक्ल है। आप तो बगैर बताये ही मेरे मन की बातें जान सकती हैं।'

रानी खिल-खिल हँसते बोली, 'वाह रे बावले ! बगैर कहे किसी के मन को कोई कैसे जान सकता है ?'

'मैं तो एकदम मूरख और गँवार हूँ। पर आपकी बात अलग है। सूरज के उजाले की तरह आपकी अक्ल का भी कोई पार नहीं है।'

'क्यूँ, मेरी अक्ल पर कौन से सुरखाब के पर लगे हैं ?'

'आप खीज न करें तो बताऊँ ?'

रानी ने अचरज-भरे सुर में पूछा, 'मेरी खीज का तुझे इतना डर लगता है ?'

तब साईस हामी भरते बोला, 'आपकी खीज को छोड़, अब मुझे मौत का भी डर नहीं लगता।'

'एक ही रात में तू बातें बनानी तो काफी सीख गया। पर अब भी तुझे यह होश नहीं कि मैं तुझ पर खीज करूँगी ? बेहिचक बता, मेरी अक्ल में तूने ऐसी क्या खूबी देखी ?'

तब साईस, गोया बात को चबा रहा हो, बोला, 'सूरज के उजाले में किसी के लिए भेदभाव नहीं होता। राजा के लिए भी वो ही उजाला और रंक के लिए भी वो ही उजाला। उसी तरह आपके रूप-यौवन ने भी मेरे लिए कोई दुराव नहीं बरता। तब आपकी अक्ल सूरज के उजाले से कहाँ कम है ?'

दोनों घोड़ियाँ टप-टप मस्ती से चल रही थीं। ऊपर बैठे सवारों के मन में भी कम मस्ती नहीं थी। गँवार होते हुए भी साईस रानी के मन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की बात पूरी तौर पर समझ गया था। सारी रात रानी की बातों का मर्म उघाड़ते-उघाड़ते वो बड़ी मुश्किल से पेंदे तक पहुँचा था।

झाड़-झंखाड़ों में दुबके तीतर घोड़ियों की टप-टप सुनकर किच-किच करते बाहर निकले और देखते-देखते टिव-टिव की बोली निकालते, पंख फड़फड़ाते दूर उड़ गये। साईस को लगा मानो वे तीतर उसके हृदय में ही कहीं दुबके हुए थे और रानी को लगा गोया वे तीतर उसकी रानों के जोड़ से उड़े हों! अदीठ न हुए तब तक दोनों नजर गड़ाकर उन तीतरों की ओर देखते रहे। उसके बाद नजरें चार होते ही वे एक-दूसरे के अन्तस में समा गये। घोड़ी के बहाने धरती से अधर होकर रानी के विचार भी अधर हो गये थे। साईस के चेहरे की ओर देखते कहने लगी, 'मैं आज गुरुदक्षिणा का कर्ज उतारना चाहती हूँ। माँग, तेरी इच्छा हो सो माँग।'

इशारा बिल्कुल साफ था। पर मंशानुसार माँगने की वो हिम्मत कहाँ से लाये? मुँह मोड़कर ढलते सूरज की ओर देखने लगा, शायद उसके तप-तेज का कुछ अंश उसके हाथ लग जाये!

पर रानी का तप-तेज उस वक्त सूरज से भी बढ़कर था। बोली, 'मन में कोई झिझक मत रखना। आज मैं किसी भी चीज की खातिर इन्कार नहीं करूँगी!'

नस-नस में लगी गाँठें यों आसानी से कब खुलती हैं! हिमालय को धकियाना आसान है, पर संस्कारों का बोझ सरकाना दूभर है। बड़ी मुश्किल से साईस के होंठ खुले। कहने लगा, 'आपके गुलाबी होंठों का जूठा पानी पीना चाहता हूँ।'

रानी ठहाका मारकर जोर से हँसी। हवा के रेशे-रेशे पर नशा चढ़ने लगा। कुदरत का कण-कण उस हँसी की गूंज सुनकर मग्न हो गया। हंसते-हँसते बोली, 'और भी कुछ इच्छा हो तो मन में मत रखना!'

साईस का संकोच कुछ-कुछ छँटने लगा था। रकाब पर धरे रानी के पैर की ओर देखते बोला, 'आपके गोरे-गोरे पाँव दबाना चाहता हूँ।'

रानी की प्रीत की घोड़ी ने जब किसी तरह की लगाम नहीं मानी तो वह अदेर नीचे उतर पड़ी और साईस का हाथ पकड़कर रेत के टीले की ओर दूसरे हाथ से इशारा करते कहने लगी, 'बता, बलुई रेत की यह अनछुई सेज किसकी बाट जोह रही है?'

साईस के होंठों से निकले बोल सुरंगी तितलियों की नाईं ठौर-ठौर नाचने लगे—अपनी! अपनी!!

उसके बाद ढल चुका सूरज वापस मुंह निकालकर काफी देर तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अँगरलियों की वह पवित्र लीला निरखता रहा। उसके नसीब में ऐसा उजाला कहाँ! कुदरत, कुदरत की बाँहों में कसी हुई थी। कहाँ वो घिनौना रंगमहल! कहाँ वो बेजान सुनहला पलँग! कहाँ छत की कारीगरी का वो जाला! और कहाँ वनस्पति के पत्ते-पत्ते से छनी मुक्त हवा की यह पाक खुशबू! सजीवन टीलों की प्यार भरी यह कोमलता! गुलाबी आकाश का असीम छत्र! रानी के रोम-रोम में अमृत व्याप्त हो गया। प्यासी कुदरत का कण-कण तृप्त हो गया। सूरज ने मुस्कराकर रानी को मुजरा किया और रंनादे की प्रीत की उमंग में तुरन्त अदीठ हो गया। आज रैनादे की खैर नहीं है!

सूरज के ओझल होते ही दोनों के हृदय में एक नया उजाला भर गया। दोनों घोड़ियाँ फिर एक दफा जोर से हिनहिनायीं। गोया इस निर्मल प्रीत की साक्षी दे रही हों।

साईस ने रानी के कपड़े झाड़ने का इरादा किया ही था कि रानी उसे बरजते कहने लगी, 'ऊँ-हूँ, इसमें डरने की क्या बात है? ये तो मेरे अमर सुहाग की अनमोल बिन्दियाँ हैं। मैं तो आज ही असली रानी बनी हूँ!'

'और मैं कुदरत का असली राजा!'

'तेरी बात तू जाने। मुझे क्या मालूम!'

साईस का हृदय हवा के उनमान मुक्त हो गया था। मुस्कराते कहने लगा, 'आपको मालूम नहीं होता तो यह अखण्ड राज्य अपने हाथ कैसे लगता?'

मसखरी का पुट घोलते रानी बोली, 'पहले ही झोंके से तुझमें अक्ल तो काफी आ गयी। बदहजमी का खयाल रखना!'

'मुझे अब किसी का खयाल रखने की जरूरत नहीं है। मैं बिल्कुल होश-हवास खो चुका हूँ।'

साईस के मुँह से ये बोल सुनकर रानी को ऐसा लगा गोया वह फूल की पंखुरी की नाईं हल्की होकर हवा में तैर रही हो। एकदम सटकर बोली, 'एक बात पूछूँ, सच बताना। हाथ-पैर मारनेवाले बच्चे के हाथ चाँद लगा कि नहीं?'

कुसुम्भी उरोजों पर नजर गड़ाकर साईस फख्र से कहने लगा, 'अकेला चाँद ही क्या, चाँद-सूरज दोनों मेरी मुट्ठियों में समा गये!'

'फिर इस दुनिया में रोशनी कैसे होगी?'

'कैसे क्या, वह तो दूनी, चौगुनी···नहीं-नहीं, हजार गुनी ज्यादा दमकेगी।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रानी उतावली दरसाते बोली, 'आज तो काफी देर हो गयी। चलो, जल्दी चलें।'

साईस ने अचरज से पूछा, 'वापस वहीं चलें ?'

रानी अचम्भा करते बोली, 'और नहीं तो कहाँ ?'

साईस कहने लगा, 'हवा और धूप को संग लिये हम आगे ही चलते रहें। जब तक इस धरती का छोर न आये, तब तक चलते ही रहें, चलते ही रहें !'

रानी सर हिलाते बोली, 'ऊँ-हूँ, यों मुँह छुपाने से बात नहीं बनेगी। यहाँ कौन-सी हवा नहीं है कि धूप नहीं है। इस बदबूदार रंगमहल और गलीज रियासत को पवित्र किये बगैर मुझे एक पल भी चैन नहीं मिलेगा। तू राजा से डरता हो तो बात अलग है।'

साईस ताली बजाकर जोर से हँसा। हँसते-हँसते ही कहने लगा, 'आपकी देह के परस से न जाने क्या जादू हुआ कि मुझे अब डर तो भगवान का भी नहीं लगता, बेचारे राजा की तो बिसात ही क्या है ! आप फरमाएँ तो यमराज से भिड़ जाऊँ, अन्नदाता !'

रानी टिचकारी देते बोली, 'तेरे मुँह से अब यह अन्नदाता का बोल अच्छा नहीं लगता। तू तो मेरे हृदय का उमराव है। मौत व यमराज का डर मिटने पर ही जीवन का मर्म अच्छी तरह समझ में आता है।'

उसके बाद अपनी-अपनी मुस्कराहट के प्रताप से अँधेरे के साँवले केशों में अनमोल मोतियों की मांग भरते वे दड़बड़-दड़बड़ राजमहल पहुँचे। गोया हवा में अधर उड़ते आये हों।

रानी बेधड़क रंगमहल की ओर रवाना हुई। राजा के रंगमहल का क्या कहना ! वही हमेशा की दिनचर्या। एक नयी लड़की सोने का जाम हाथ में लिये राजा के पास बैठी थी। रानियाँ तो घर के बरतन हैं, जब इच्छा हो बरत लें। पराये बरतनों को बरतने में ही खासियत है। अपनी लत में मगन राजा ने देरी की कोई कैफियत नहीं पूछी। पर नहलाने के लिए उतावली दासियों से सब्र नहीं हुआ। पूछा, 'आज देर बहुत हुई, अन्नदाता !'

हम्माम में जाते-जाते रानी बोली, 'मैं तो वक्त पर ही आयी, पर यह निगोड़ा दिन ही जल्दी ढल गया।'

हम्माम में घुसते ही दोनों दासियों ने रानी के वस्त्र उतारे। दीपक की मन्द-मन्द रोशनी ! निर्वसन रानी को आज से पहले कभी अपना डील इतना सुन्दर नहीं लगा था। दासी के हाथ का पीठ पर परस होते ही रानी चौंकी। उसका हाथ पकड़कर कहने लगी, 'आज मुझे किसी और का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परस नहीं सुहाता। तुम जाओ, मैं आप ही नहा लूंगी।'

'क्यूं अन्नदाता, आज ऐसी क्या अनोखी बात हो गयी ?'

'हाँ, ऐसी ही कुछ अनोखी बात हुई है।'

'हमें बताने लायक नहीं है ?'

'बताने लायक क्यूं नहीं है ! खास बताने लायक है। ऐसी अनोखी बात तो तुमने सपने में भी नहीं सुनी होगी। पर अकेले में गुप-चुप बताने लायक नहीं है। भरे दरबार में, सबके सामने खुलेआम बताऊँगी।'

रानी नहीं मानी तो दोनों दासियों को मजबूरन बाहर जाना पड़ा। उसके बाद इत्र-फुलेल घुले गुनगुने पानी से वह आप ही स्नान करने लगी। बाहर का डील तो सुबह-शाम हमेशा धुलता है, पर आज उस बलुई रेत के प्रताप से भीतर तक का समूचा मैल धुल गया !

पलँग पर सोते ही रानी को नींद आ गयी। नींद आते ही एक अनहोना सपना चालू हुआ कि अपने सिंगार के लिए वह चाँद की किरणों का अपने हाथों से झीना वस्त्र बुन रही है। जब तक वस्त्र तैयार नहीं हुआ तब तक उसका सपना चलता रहा और सवेरे जगने के बाद वह सूरज की किरणों का वस्त्र बुनने लगी। और बुनते-बुनते ही दीवान को बुलवाकर आदेश दिया कि दो-एक घड़ी रात ढले दरबार लगने की सब जगह मुनादी करवाये।

'जो हुक्म, अन्नदाता !'

उस आदेश के बाद रानी साईस को लेकर सीधी बारहठजी की हवेली पहुँची। कानों पड़ी भनक की पुख्ता जानकारी करने के लिए वह निःसंकोच अकेली बाड़े का फलसा हटाकर भीतर गयी और घुसते ही उसे हाथों-हाथ सबूत मिल गया। ठकुरानी से पूछने पर उसने कोई टाल-मटोल नहीं की। बेझिझक सारी बात बताकर कहने लगी, 'मैं तो खुद आपसे मिलने की सोच रही थी। मेरा अहोभाग्य कि आप यहीं पधार गयीं।'

रानी ने पूछा, 'बारहठजी कहाँ हैं ?'

मेड़ी की ओर अँगुली का इशारा करते ठकुरानी बोली, 'वहाँ एक नयी लड़की के साथ मुँह काला कर रहे हैं।'

रानी मुस्कराते बोली, 'क्यूं, इसमें मुँह काला करने की क्या बात है ! मर्दों के तो ये खास गुण हुआ करते हैं !'

थोड़ी देर के बाद इधर-उधर की बातचीत के दरमियान ठकुरानी हिचकते बोली, 'आप नाराज न हों तो एक बात पूछूं ?'

रानी संजीदगी से बोली, 'भला, इसमें नाराज होने की क्या बात है ? बगैर सुने ही जानती हूँ कि तुम क्या पूछना चाहती हो। इसी खातिर मैंने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दरबार लगने की मुनादी करवायी है। कल तुम्हारी व मेरी तमाम बातें हवा के रेशे-रेशे में घुल जायेंगी।'

'तो क्या साईसवाली बात बिल्कुल सच्ची है ?'

रानी बिना रुके बोली, 'फकत सच्ची होने से हो क्या होता है ! यह तो सच से भी बड़ा सच है। पर तुम्हारे मन में कोई खटका या डर तो नहीं है।'

'डर या खटके का तो नामोनिशान ही नहीं है। मैं तो खुद इसी दिन की राह देख रही थी। आखिर आपके हाथों मेरी साध पूरी हुई। आपका जितना एहसान मानूँ, कम है।'

उसके बाद जैसे रानी आयी वैसे ही वापस चल पड़ी। परकोटे के भीतर घुसते ही रानी को वो विशाल राजमहल मवाद से किचबिचाते फोड़े की तरह लगा। उस्तरे का चीरा लगे बगैर यह मवाद सूखने का नहीं।

पल-पल रानी के आने का इन्तजार करता राजा रानी को देखते ही हड़बड़ाया हुआ सामने लपका। पूछा, 'आज मुनादी करवाने का यह कैसा आदेश किया ?'

रानी बोली, 'आप तो रोजाना दरबार की शोभा बढ़ाते हैं। आज मैं भी मन की भड़ास निकाल लूँ। देखें, दरबार का मजमा कैसा होता है ? मैं आपकी रानी होकर किससे कम हूँ।'

'तब तो चिन्ता की कोई बात नहीं। दीवानजी ने तो बेकार ही डरा दिया।'

'भला, देश के मालिक को किसका डर ? राजा के डरने पर एक पल भी हुकूमत नहीं चल सकती। आप तो बहुत ताकतवर हैं।'

फूला हुआ राजा गुमान से बोला, 'मेरी ताकत का इम्तहान लेना चाहे तो आज ही भरे दरबार में लें लेना !'

'उसी इम्तहान के लिए ही मैंने दरबार लगने का आदेश किया है।'

और वाकई रानी के आदेश से दरबार खूब ही लगा। कुछ-न-कुछ नयी बात जानने के लिए बेशुमार लोग एकत्रित हुए। ऐसा बड़ा मेला तो राजतिलक के दिन भी नहीं हुआ था। एक के बाद एक मशालची चौतरफ मशालें लिये तने खड़े थे। गोया खुद अँधेरा धू-धू जल रहा हो। सोने के सिंहासन पर राजा विराजे थे। सर ार हीरे-मोतियों से जड़ा मुकुट। नीचे जाजिमात पर तमाम छोटे-बड़े स दार। रानी राजा के पास न बैठकर कुछ फासले पर बैठी। बाजू में बारहठजी की ठकुरानी। करीब ही साईस और हालिक। उस रात फरियाद करनेवाली मेहतरानी को खास हिदायत देकर बुलवाया गया था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रानी के खड़े होते ही खुसुर-फुसुर से भिनभिनाते दरबार में सन्नाटा छा गया। बेहद अचरज कि ऐसे खचाखच भरे मजमे के बीच भी रानी एकदम सादा लिबास पहनकर आयी थी। बारहठजी की ओर मुखातिब होकर रानी मुस्कराते हुए कहने लगी, 'आप इस मजमे की जान हैं। लिहाजा यह तो बतायें कि मैंने दरबार लगने का ढिंढ़ोरा क्यूँ पिटवाया ?'

कविराजा की अक्ल की क्या थाह ! तुरन्त जवाब दिया, 'रानियों के मन को कौन जान सका है ? मुझे तो फकत राजाओं के मन की पहचान है !'

'तब तो आपका ज्ञान अभी काफी अधूरा है। आप मेरे मन को नहीं जान सकते तो मैं बताती हूँ। अच्छी तरह कान खोलकर सुनना। दरबार का ऐसा मजमा फिर कभी नहीं जमेगा। उस रात राजव्यास की खुदकशी से, फरियाद करनेवाली मेहतरानी के साथ कतई न्याय नहीं हुआ।'

मेहतरानी दोनों हाथ ऊपर करके जोर से चिल्लायी, 'बिल्कुल सही फरमाया है, अन्नदाता ! मेरे साथ घोर अन्याय हुआ है।'

रानी उसे ढाढ़स बँधाते कहने लगी, 'थोड़ी तसल्ली रख। आज तेरा अदल न्याय होगा। तस्तुंबे की बेल के तमाम तस्तुंबे कड़वे होते हैं। उसी तरह इस रियासत की चारदीवारी के सभी मोतबर बदचलन हैं। एक-से-एक बढ़कर हरामी हैं। मक्कार हैं। राजव्यास ने कितने बरसों तक अपना पाप दबाये रखा ! जब पाप का भण्डा फूटा तो उसी क्षण अफीम खाकर अपनी इज्जत बचायी। क्यूँ बारहठजी ?'

बारहठजी धीरे से दबते सुर में बोले, 'आप जानें अन्नदाता !'

'पर आप तो बहुत ऊँची और गूढ़ बातें जानते हैं। एक बात पूछती हूँ, निःसंकोच जवाब देना। हलुवे की नाईं औरत का मन पति से भरता है कि नहीं ?'

बारहठजी तो मानो बोलना ही भूल गये हों। सर झुकाने के बाद उन्होंने रानी के सामने नजर उठाकर ही नहीं देखा। तब राजकवि की ठकुरानी खड़े होकर कहने लगी, 'पति का भद्दा न लगे, इसलिए इस सवाल का जवाब मैं देती हूँ कि हलुवा और मर्द तो मुँह आते ही हैं ! लिहाजा आज सरेआम कबूल करती हूँ कि मैंने जायका बदलने की खातिर अपने हालिक को चुना !'

बगैर घटा यह कैसी बिजली गिरी ! तमाम बाँकी मूँछोंवाले मर्दों की जबान तालु से चिपक गयी। दीवान सहमते बोला, 'यह हालिक तो बारहठजी के ही अंश का है !'

इस दफा रानी गरजते बोली, 'बिल्कुल ठीक फरमाया। आपसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौन-सी बात छुपी है ! यह साईस पुराने दीवानजी के अंश का है। और मैंने जायका बदलने के लिए इस साईस को चुना। मालिक का मालिक कौन ? धन्य हैं ये मालिक जो अपनी अंश की जायी बेटी से ही स्वाद बदलते हैं ! क्या हलुवे से मन उचटने के बाद स्वाद बदलने के लिए आपको अफीम की मनुहार करूँ ? पर आपकी ओर अँगुली कौन उठाये ? आप तो देश के मालिक हैं, लिहाजा खुदकशी करने की जरूरत नहीं, पर अब यह मुकुट आपके सर पर बिल्कुल शोभा नहीं देता। इतने बरस तो तुम मर्दों की ही चलती थी। सीना ठोंककर कहते थे कि राजा माने सो रानी। पर आज इस मिसाल को उलटना पड़ेगा कि रानी माने सो राजा।'

बरसों से कानों की न्यारी-न्यारी खुसुर-फुसुर आज सबके बीच इस तरह नमूदार हुई कि सुननेवालों का साँस जहाँ-का-तहाँ थम गया। बातें तो एकदम सच्ची थीं, पर सच को इस तरह भभकने का मौका आज ही मिला था ! सभी अचकचाये हुए से बैठे थे। गोया पुतलियों के समान स्थापित एक ठौर अविचल गड़ गये हों। खचाखच भरे उस मेले में किसी मर्द की मूँछ नहीं फड़की और न तलवार की मूठ पर ही किसी का हाथ गया। उस दिप-दिप करते साँच का तो उजाला ही न्यारा था। उसकी रंगत ही न्यारी थी।

जब सिंहासन पर बैठे राजा के कलेजे पर भी कँपकँपी तारी हो गयी तो दरबारी, कारिन्दे व सिपाही बेचारे कर ही क्या सकते थे ! रग-रग में थरथराहट घुस गयी कि राम जाने आगे क्या बीतेगी और क्या नहीं बीतेगी ! ऐसे लम्पट राज का खात्मा तो होना ही था।

कि अचानक रानी सिंहासन के पास आयी और अपने हाथों से राजा का मुकुट उतारकर साईस के सर पर रख दिया। होश-हवाश खोया राजा कोई हील-हुज्जत नहीं कर सका। थर-थर काँपते आप ही कठपुतली की नाईं अपनी जान बचाने की खातिर नीचे बैठ गया। देश के मालिक ने भी जब यों चुपचाप हार मान ली तो दूसरा कौन टोकता !

रानी का आदेश होते ही बारहठजी के हालिक ने फौरन दीवान-पद सँभाल लिया। रानी के रूप में मानो यह कोई देवी अवतरित हुई हो !

यह अदल न्याय निपटते ही रियासत की मेहतरानी मजमे के बीच घूमर लेकर नाचने लगी सो नाचती ही गयी। अब जाकर दरबारियों को चेत हुआ कि राजा तो बदल गया ! दीवान भी बदल गया ! दोनों ही कैसे सुन्दर और सुहाने। गोया चाँद-सूरज साथ बैठे हों। कैसा बढ़िया मुकुट फबा है ! जैसे इसी सर की बाट जोह रहा था !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसी अदीठ इशारे से जने-जने का मुँह खुल गया। 'जय हो-जय हो' की धूम मच गयी। देखते-देखते मशालों का उजाला बढ़ गया। नजरानों की ऐसी जबरदस्त बौछार हुई कि नये राजा की अक्ल ही गश खा गयी। देश के मालिक का ऐसा वरदान तो नहीं सोचा था! सिंहासन और मुकुट का झीना जादू उसके रोम-रोम में घुलने लगा। उसके नैनों में मदछकी ज्योति का नया उजाला व्यापने लगा।

अचानक रानी के चेहरे पर नजर पड़ते ही साईस का माथा ठनका। वह घोड़ियों की हिनहिनाहट! वह बलुई रेत की अनछुई सेज! वे रानी की किल्लोलें और वह निर्लज्ज प्रीत! ऐसी छिनाल का क्या भरोसा! हथलेवे के पति से भी जब नहीं चूकी तो उसकी कब तक वफादार रहेगी। ऐसी दगाबाज व बदकार औरत के क्या बन्दिश कि किस नये यार को कब राजा बना दे! और यह बेहया ठकुरानी! खुले मुँह सबके सामने खीसें निपोर रही है। पति के अंश के बेटे से भी नहीं चूकी। धिक्कार है इसकी जिन्दगी को। औरत जात होकर भी शर्म और मर्यादा का तो नाम ही नहीं! इनका खात्मा किये बगैर तो सिंहासन का पानी ही मर जायेगा।

कि सहसा पुराना राजा बावले की माफिक उठ खड़ा हुआ और रानी के सामने हाथ जोड़कर भरे गले से बोला, 'अगन-देवता की ओर हाथ करके कहता हूँ कि मेरा ज्यादा कसूर नहीं है। बहुत कुछ कसूर तो इस मुकुट और सिंहासन का है। मेरी हिम्मत और ताकत तो इतनी देर में ही ठिकाने लग गयी! इच्छा दरसाते ही तमाम सुख हाथ लगते हों तो कौन पीछे रहे? उम्र में पहली मर्तबा सच बोल रहा हूँ कि सारा कसूर मेरा नहीं है। ज्यादा कसूर इस हुकूमत का है!'

कुछ देर ठहरकर रानी संजीदगी से बोली, 'मैं जानती हूँ इस बात को। यही आजमाने के लिए मैंने यह तोहमत उठायी है!'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाटक

राईका बाग स्टेशन का फाटक भी बड़ा अजीब फाटक है। टन्-टन्-टन् की आवाज से राहगीरों को सचेत करता राम जाने दिन में कितनी बार बन्द होता है, इसका कोई हिसाब नहीं। फाटक लगते ही कितनी उलझनें पैदा हो जाती हैं। अपने-अपने काम, अपनी-अपनी भाग-दौड़ और अपनी-अपनी हैसियत मुताबिक, अपने-अपने विचारों में खोयी भीड़ फाटक के दोनों तरफ इकट्ठा होने लगती है। चाहे जैसी रफ्तार हो सबको वहाँ ठहरना पड़ता है। छकड़ा, साईकिल, मोटर-साईकिल, स्कूटर, ट्रक और कारें धीरे-धीरे जुड़ने लगते हैं। हॉर्न बजाने की झुँझलाहट, अपनी कुण्ठा भले ही तुष्ट करे, पर फाटक तो रेल पार हो जाने पर ही खुलता है। पैदल चलनेवालों को फकत यहीं सुविधा मिलती है। फाटक के बगल में छोड़े गये सँकरे रास्ते से निकलकर वे अपनी राह लगते हैं। कोई इक्का-दुक्का साईकिल-सवार भी जवानी के जोश में साईकिल उठाकर अपना काम सार लेता है।

दिल्ली से जोधपुर आनेवाली डाक गाड़ी के समय एक बार मैं भी एक बेढ़ब नजारे के बीच फँस गया। यूँ तो गाड़ी आने का सही वक्त पौने बारह का है, पर उस दिन गाड़ी सवा घण्टा लेट थी। फाटक के आस-पास काफी भीड़ एकत्रित हो चुकी थी। मुझे ऐसे समय झुँझलाहट और उतावली दरसाते चेहरे देखने में बेहद आनन्द मिलता है। एक हाथ में साईकिल सँभाले मैं अपने हिसाब से रस लेने लगा। फाटक बन्द होने से पहले शायद हरेक की भावना, विचार और ध्यान अलग-अलग थे, पर अब तो फकत एक-सा ध्यान, एक-सी बात, एक-सा विचार और एक-सी झुँझलाहट! फाटक, रेल, पटरियाँ और भीड़—इन चार शब्दों में सबकी अधिकांश चेतना उलझी हुई थी। मानो अपनी-अपनी भावना, विचार और समस्याओं के आगे अचानक कोई रुकावट आ गयी हो।

दोनों तरफ भीड़ धीरे-धीरे बढ़ने लगी। 'कमला नेहरू कॉलेज' की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कक्षाएँ छूटने पर लड़कियों की टोलियाँ भी भीड़ में जुड़ गयीं। कोई पैदल तो कोई साईकिल पर। अदृश्य आनन्द की मानो ठण्डी बयार आयी हो। उस तरफ की भीड़ को सामनेवाली भीड़ की किस्मत से ईर्ष्या हुई। तरह-तरह के लुभावने फूल ही फूल!

फियट-कार में एक जोड़ा बैठा था। घरवाली की मौजूदगी से मर्द की ताक-झाँक पर अंकुश लग गया। गर्दन तानकर स्टीयरिंग पर हाथ फेरता रहा। पर कभी-कभी, चुपके-चुपके गर्दन के बदले पुतलियाँ घुमाकर आड़ा-तिरछा झाँक लेता। उसकी पत्नी गुमसुम खूबसूरत मूर्ति की तरह अविचल बैठी थी, फिर भी स्वयं के चेहरे के लिए ताक-झाँक करनेवाली आँखों का उसे पूरा खयाल था। पास खड़े मर्द इस तरह देख रहे थे मानो आँखों से नोच खायेंगे।

रेल के कोयलों से भरे छकड़े पर सोलह-सतरह बरस का एक उच्छृंखल छोकरा बैठा था। फटे हुए काले कपड़े, कोयलों की रज से भरपूर। पर आँखें, होंठ और दाँत कालिख से अछूते। दाँतों की चमक और होंठों की ललाई उलटी ज्यादा बढ़ गयी थी। आँखें अपने आकार से बड़ी होने का आभास देतीं। खिलौने की तरह बार-बार गर्दन हिलाकर वो लड़कियों की तरफ देखता और गहरे निःश्वास छोड़ता। फिर सिनेमा के एक चालू गीत की पंक्ति गाने लगा।

दाहिनी बाजू लकड़ियों के एक छकड़े पर उससे दो-तीन साल बड़ा एक लड़का बैठा था। हथकरघे की नली की तरह आँखें घुमाते बोला, 'कितना ही काँव-काँव कर, कौए के हाथ कश्मीरी सेव नहीं लगते।'

पाँच-सातेक लड़कियाँ होंठों के भीतर-ही-भीतर कुछ मुस्करायीं। पर दूसरे ही क्षण बातों में इस कदर मशगूल हो गयीं जैसे उन्होंने यह बात सुनी न हो।

समाज में पद और धन के पैमाने पर बड़े कहलानेवाले लोग इस तरह का दिखावा कर रहे थे मानो वे इधर-उधर कुछ भी ताक-झाँक नहीं कर रहे हैं। पर उनकी आँखों में मुझे अपेक्षाकृत अधिक गन्दगी नजर आयी।

और, लड़कियाँ ऐसा दिखावा कर रही थीं कि ताक-झाँक करनेवाली आँखों का उन्हें जैसे कोई इल्म ही न हो। पर मेरी समझ में उन्हें पीठ पीछे की आँखों का भी पूरा-पूरा अहसास था।

पास खड़े हर व्यक्ति को ऐसा लग रहा था जैसे कोई-न-कोई लड़की उसकी हरकतें देख रही हो। तंग मोहरी का भगवा पेंट और छींटदार चोला पहने कॉलेज के एक लड़के ने खटाक से एक हाथ के बल साईकिल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उठायी और फाटक की बाजू से लाइन पार करने लगा। उसे लगा जैसे सभी लड़कियों की आँखें उसके लम्बे बालों में उलझ गयी हों। जैसे उसकी पीठ पर बहुत-सी आँखें सर्र-सर्र फिसल रही हों। पास खड़े दो-तीन छात्रों ने सोचा कि इस स्वयंवर में वे पीछे रह जायेंगे, इसलिए उन्होंने भी उसकी देखा-देखी एक हाथ के झटके से साईकिल उठायी और उसके पीछे-पीछे चल पड़े। हरेक को अपनी पीठ पर आँखें-ही-आँखें तैरती हुई लग रही थीं।

शायद भीड़ में अधिकतर आदमी यह बात सोच रहे होंगे कि गाड़ी और देर से आये तो अच्छा। पर बिल्ली के भाग से कहीं छींका टूटता है ? अचानक रेल की तीखी सीटी सुनायी दी। सीटी से चौंकने के बहाने पास खड़ी लड़कियों के चेहरे पर नजर फेंकने का उन्हें अच्छा मौका मिला। सीटी-पर-सीटी, घरघराहट व चारों ओर लड़कियों की मौजूदगी, मानो मीठी ऊँघ का सपना आँख-मिचौनी खेल रहा हो।

फाटक के आस-पास खड़े आदमियों के जागते सपनों का गला घोंटता मौत के काले रंग-सा इंजन तीखी आवाज और काले धुएँ की साँसें छोड़ता, एक दैत्य की तरह शोर मचाता आ रहा था। इंजन की धधकती भट्टी में कोयले झोंकते हुए खलासी को अचानक फाटक का खयाल आया। वो हमेशा की तरह भट्टी का ढक्कन देकर दरवाजे पर खड़ा हो गया। उसके गहरे आसमानी कपड़ों में काला रंग घुला हुआ था। सर पर रूमाल बँधा था। केवल लड़कियों के चिकने बालों तथा उनके चेहरों पर उसकी नजर अटकी थी।

इंजन फाटक के ठीक सामने आया तो वो बत्तीसी निपोरकर स्वयं ही हँस पड़ा। इंजन के वेग के साथ उसकी गर्दन लड़कियों की तरफ मुड़ती गयी। मानो किसी अदीठ जादू से बँधी डोर उसे जबरदस्ती उधर खींच रही हो। जब लड़कियों के चेहरे नजर की पहुँच से बाहर हो गये तो गर्दन अपने-आप सीधी हो गयी।

हू-ब-हू यही तमाशा सभी डिब्बों में हुआ। मानो पहले से ही सब कोई एक-सी मन्त्रणा विचारकर आये हों।

प्रथम श्रेणी के डिब्बे के दरवाजे पर रेशमी भगवा वेश पहने एक साधु खड़ा था। उसकी आँखों को शायद लड़कियों के अलावा दूसरी कोई वस्तु नजर ही नहीं आयी होगी। वो उन्मादी-सा उचककर दरवाजे के पास आया। यदि हत्था हाथ में न आता तो नीचे गिर पड़ता। काया की मुक्ति हो जाती। सामने खड़े सभी आदमी एकसाथ ठहाका मारकर हँसे। लड़कियों के चेहरों पर लज्जा की झीनी झाँई पुत गयी। पर उनका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो कुछ कसूर ही नहीं था। खलासी से कुछ देर बाद महात्मा की गर्दन सीधी हुई। मानो इन्द्रलोक का राज्य देखते-देखते छिन गया हो। पास खड़े वे लोग कितने सौभाग्यशाली हैं !

खिड़की से बाहर चेहरा निकाले एक सेठ का मुँह अचानक खुला तो खुला ही रह गया। फटी-फटी आँखों सहित उसकी गर्दन टेढ़ी होने लगी तो भीड़ में खड़ा एक छैला सेठ की तरफ लम्बा हाथ करते बोला, 'सेठजी, कहीं आँखें बाहर ही न गिर पड़ें !'

सेठ ने शर्मिन्दा होकर एकदम मुँह सीधा कर लिया। झटका लगते ही टोपी नीचे गिर पड़ी। खीसें निपोरते हुए गर्दन अन्दर कर ली।

खाकी वर्दी पर लाल पगड़ी बाँधे रेलवे पुलिस का सिपाही हाथ में डण्डा लिये दरवाजे के बीच खड़ा था। कठपुतली की तरह उसकी गर्दन भी लड़कियों की तरफ वैसे ही मुड़ी और आगे बढ़ने पर उसी तरह अपने-आप सीधी हो गयी।

दोनों फाटकों के बीच डाक गाड़ी घरघराहट के साथ फिसल रही थी। उस तरफ एकत्रित भीड़ शायद फाटक खुलने के इन्तजार में कसमसा रही होगी।

मैं गर्दनों का अजीब नजारा देखने में मगन था।

आँखों पर सुनहरा चश्मा। सर पर चाँद। वह एक आई. ए. एस. अफसर की वजनदार गर्दन थी। कुछ मुश्किल से मुड़ी और मुड़ने के बाद वापस मुश्किल से सीधी हुई।

वह एक खद्दरधारी नेता की गर्दन थी। निर्लज्ज हँसी हँसते हुए उसने तो गर्दन वापस सीधी ही नहीं की।

गाँव का एक बूढ़ा दरवाजे को थामे खड़ा था। सर पर साँगानेरी साफा। हवा में फरफराती सफेद दाढ़ी। कभी वो भी बालक था ! जवान था ! आज उम्र ढल गयी तो क्या हुआ ! देखनेवाली चीज की तरफ आँखें खुद-ब-खुद मुड़ जाती हैं। जिस तरह कोई अबूझ बालक खिलौने की तरफ देखता है उसी तरह वो भीड़ में खड़ी लड़कियों को देखने लगा। एक बार गर्दन मुड़ने के बाद वापस गर्दन सीधी करना ही भूल गया। बुढ़ापे में भूल पड़ना कोई अनहोनी बात नहीं है।

वह कॉलेज में पढ़ रहे लड़के की गर्दन थी। उसकी आँखें तो मानो अपनी जगह छोड़कर लड़कियों के ऊपर ही जा गिरेंगी। वह उसकी आँखों का कसूर नहीं, रगों में उफनते खून का कसूर था।

कैदियों की गर्दनों को सिपाहियों ने बाहर नहीं निकलने दिया। उनके हाथों में हथकड़ियाँ बँधी थीं और पैरों में बेड़ियाँ। लेकिन नजर पर कौन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढक्कन लगा सकता है। थोड़ी-सी झलक मिलते ही पुतलियों में ठण्डक दौड़ गयी।

वह एक कवि की गर्दन थी। जिसका वर्णन किसी कवि पर ही छोड़ दूँ तो ठीक रहेगा। उस नजर को अभिव्यक्त करना मेरे बस की बात नहीं है। मैंने तो अपनी धुँधली नजर से उसकी आँखों में तैरते सपनों को फकत इधर-उधर उछलते ही देखा।

हर डिब्बे की गर्दन मुड़ती और सीधी होती।

अरे, यह तो एक थानेदार की गर्दन है। उसकी नजर आप ही उस नजारे का मुआइना करने लगी।

घर्र-घर्र गाड़ी फिसल रही थी। आखिर गार्ड का अन्तिम डिब्बा आया। वह भी किसी जीवित इन्सान की गर्दन थी। आँखों के सामने तो कोई पर्दा तना हुआ था नहीं। फिर नजर कैसे दुबकी रहती! उसकी गर्दन भी पहलेवाली गर्दनों की तरह मुड़ी और सीधी हुई।

देखते-देखते गाड़ी फाटक से काफी आगे निकल गयी। इंजन ने एक जोर से सीटी दी। भीड़ के विचार-प्रवाह में एक दूसरा ही खयाल कौंधा। अपने-अपने ठिकाने पहुँचने की अकुलाहट कसमसाने लगी। थोड़ी देर तक जगती आँखों से सपना देखा, वही बेहतर। आखिर सपना तो टूटकर ही रहता है!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रहेरी

फागुन की असीम सुहानी रात। मोरपंखी आकाश में तारों की बेशकीमती जड़ाई। झिलमिल चमकते तारे। गोया कोई मायावी अभी-अभी अपने अदीठ हाथों से सारे गगन को साफ-सुथरा कर गया हो। चारों ओर चंगों की मधुर-मधुर गाज। लूर-फाग की धमाल। आंगन में बिछी हुई खटिया पर दादी के साथ सो रहा पोता बार-बार कहानी सुनने की जिद कर रहा था। तारे-तारे को अपनी पावन नजर से सहलाते हुए उसने एक बार फिर कहा, 'दादीमाँ, कल तुमने अहेरी की बात सुनाने के लिए कहा था। अब टालमटोल क्यूँ कर रही हो ? सुनाती क्यूँ नहीं ?'

'सुनाती हूँ मेरे लाल, सुनाती हूँ। थोड़ी देर ये चंग, ये लूरें और ये फाग अच्छी तरह कान लगाकर सुन तो सही। कैसे सुरीले और कैसे मीठे !'

सरल बाल-गोपाल ने तुरन्त दादीमाँ की गलती पकड़ ली। खिल-खिल हँसते बोला, 'मीठे ! यह कोई खाने की चीज थोड़े ही है, जो मीठी लगे।'

अदन्त मुस्कराहट छितराते दादीमाँ बोली, 'मेरे लाडले, कानों को भी मीठे-कड़ुवे की पहचान होती है ! थोड़ा और बड़ा होने पर तुझे भी इस बात का पता चल जायेगा।'

यह बात कहकर दादीमाँ गगन के झिलमिलाते तारों में अपना खोया हुआ बचपन, सौन्दर्य और यौवन ढूंढ़ने लगी। एक-एक तारे में इस प्रकार की खोज का सुख भी कम नहीं था !

पोते ने फिर दादीमाँ को उकेरकर कहा, 'अब तो चंग भी काफी धीमे हो गये। अहेरीवाली बात सुने बगैर नींद नहीं आती।'

बुढ़िया की आँखों के लिए अभी काफी तारे निहारने शेष थे। इसलिए बहाना करते कहने लगी, 'इतने दिन तुझे जो नक्षत्र समझाये, पहले तू उनके नाम-धाम बता। फिर मैं कहानी सुनाऊंगी।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'वे तो मुझे सब याद हैं।'

'पर वापस सुनाये बगैर पता कैसे चले ?'

पोता आतुर होते बोला, 'अभी बताता हूँ।'

और इसी आतुरता के साथ वो दादीमाँ को नक्षत्रों के नाम गिनाने लगा, 'चैत चड़पड़ा। सावन सरवण।'

दादीमाँ ने हँसकर पूछा, 'चैत के बाद सावन आता है ? और चड़पड़े का हवाला तो दिया ही नहीं।'

बाल-गोपाल पैर पटकते हँसकर बोला, 'भूल गया, भूल गया। चड़पड़ा कुछ धुँधला-धुँधला, कुण्डली मारे झिलमिलाता है। वैसाख विच्छू। साख्यात विच्छू जैसा। आगे टेढ़ी-मेढ़ी दो पनड़ियाँ और पीछे डंक। जेठ जुआ। जुए से जुते दो बैल। पीछे हल की बनावट। असाढ़ चौपड़। चारों कोनों पर चार तारे। भादों पनिहारी। गोया किसी औरत पर घड़ा धरा हुआ हो।'

'असाढ़ के बाद सावन कैसे आ गया ?'

'क्यूँ, सावन का नक्षत्र तो पहले ही बता दिया था। सावन सरवण। सरवण की तरह कन्धे पर काँवर उठाये हुए। आसौज······आसौज।'

पोते को अटकते देखा तो दादीमाँ बोली, 'आसौज इँडुरियाँ। गोल-गोल, अमूल्य मोतियों से जड़ी दो इँडुरियाँ।'

पोता मचलते बोला, 'तू बीच में क्यूँ बोली ? कार्तिक किरती। छोटे-छोटे तारों का गुच्छा। अगहन हिरनी। तीन बड़े-बड़े तारे। बिल्कुल सटे हुए। चारों कोनों पर चार कुत्ते। बेचारी हिरनियों का पीछा ही नहीं छोड़ते। पूस अहेरी।' होंठों पर अहेरी का नाम आते ही बाल-गोपाल व्यग्रता से बोला, 'अब मुझे अहेरी की कहानी सुना।'

'अभी तो दो नक्षत्र बाकी हैं।'

तब पोता आगे बेगार काटता-सा बोला, 'माघ जोड़ा। झिलमिलाते दो-दो तारों का जोड़ा। और फागुन हँसिया। बिल्कुल हँसिये की माफिक। आगे से मुड़ा हुआ और पीछे डण्डा।'

दादीमाँ ने एक सवाल और पूछा, 'जब कृतिकाएँ चाँद से बायीं ओर आगे निकल जाती हैं तो क्या होता है ?'

'अकाल पड़ता है।' यह जवाब देकर पोता ताली बजाकर हँसने लगा। तब दादीमाँ उसे टोकते बोली, 'नहीं बेटे, अकाल की बात पर हँसना नहीं चाहिए।'

'अब नहीं हँसूंगा।'

'तो अब अच्छी तरह कान देकर अहेरी की बात सुन। एक थी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिरनी। वेहद सीधी और भोली। औरत की जात होते हुए भी जबान की पक्की थी। एक बार काफी देर पानी न पीने के कारण उसे प्यास लगी तो वह रुनक-झुनक करती हुई झरने की तरफ चली।'

'रुनक-झुनक क्यूं ? वह कोई पायल व झाँझर थोड़े ही पहने हुई थी !'

'बेटे, वह हिरनी सती-सुहागन थी। फकत पायल व झाँझर ही क्या, वह तो सारा गहना आठों पहर ठसाये रहती थी। जैसी हिरनी, वैसा ही नेक उसका पति। उससे कभी भी नहीं झगड़ता था। तेरे जैसे दो खूबसूरत बच्चे थे उस हिरनी के। तेरे जैसे ही सरल, समझदार और आज्ञाकारी। जब वह हिरनी झरने के पास पहुँची तो वहाँ एक निर्मम अहेरी तीर-कमान ताने खड़ा था। नंगे पाँव। कन्धे पर टँगा हुआ तरकस। आँखों में मौत की ज्वाला। उसकी आँखें अंगारों की तरह दहक रही थीं। अकस्मात् तने हुए तीर पर नजर पड़ी तो हिरनी चौंकी। पर चौंकने के बाद भी वह मुड़कर भागी नहीं। वेहद हिम्मतवर थी वह। अहेरी को बहलाने की खातिर मुस्कराकर पूछा, 'इस तरह मेरी ओर तीर ताने क्यूं खड़ा है ?'

हिरनी की मुस्कराहट में ऐसा जादू था कि अहेरी भी तीर चलाना भूलकर उसकी बातों में बहक गया। कहने लगा, 'क्यूं क्या, तुझे मारने के लिए।'

भोली हिरनी बोली, 'पर मैं तो यहाँ मरने के लिए नहीं, पानी पीने के लिए आयी हूँ। प्यास के मारे मेरा गला सूख रहा है। पहले पानी तो पीने दे।'

तीर ताने हुए ही अहेरी ने शंका की, 'और पानी पीने के बाद तू मुझे चकमा देकर चम्पत हो गयी तो !'

हिरनी मुस्कराते कहने लगी, 'न तो तू ऐसा है कि चकमा खाये और न ही मैं किसी को चकमा देती हूँ। तेरा यह तीर मुझे कहीं भी नहीं छोड़ेगा ! और इसके बावजूद भी तुझे वहम हो तो मेरा कान पकड़कर पानी पिला दे।'

कान पकड़ने की बात सुनते ही अहेरी को हिरनी पर विश्वास हो गया। बहते झरने में मुँह डालकर हिरनी निश्चिन्त होकर पानी पीने लगी। अहेरी एकटक पानी पीती हुई हिरनी को देखता रहा। आग की मानिन्द पेट में यह हत्यारिन भूख नहीं सुलगती तो ऐसे भोले प्राणी की तरफ क्रूर दृष्टि से देखा भी नहीं जा सकता। पर यह तीर तो सन-सनाता हुआ, सीधा इसकी कोमल देह को पार कर जायेगा ! फकत पेट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पापी है! हत्यारा है!

छककर पानी पीने के बाद हिरनी पूँछ हिलाते अहेरी के पास आयी। भोले स्वर में पूछा, 'मुझे मारने से तुझे क्या हाथ लगेगा?'

अहेरी चिढ़ता हुआ बोला, 'कोई हीरे-मोती तो हाथ लगने से रहे, तेरा मांस ही हाथ लगेगा।'

तब हिरनी ने आगे एक और सवाल किया, 'कटे हुए मांस के टुकड़ों की बजाय मैं जीवित हिरनी तुझे खूबसूरत नहीं लगती?'

'खूबसूरत तो लगती है। पर खूबसूरत लगने से पेट थोड़े ही भरता है! मेरे बच्चे तीन दिन से भूखे हैं। वे बुरी तरह विलख रहे होंगे।'

बच्चों के बिलखने की बात सुनते ही हिरनी का दिल भर आया। डबडबायी हुई आँखों से अहेरी की तरफ देखते हुए कहने लगी, 'बच्चों की भूख की बात सुनकर मैं लाचार हो गयी। जैसे मेरे बच्चे, वैसे तुम्हारे बच्चे। उन्हें कैसे तड़फने दूँ! पर मरने से पहले एक बार अपने बच्चों को दूध पिला आऊँ। वे मेरा इन्तजार कर रहे होंगे। एक बार पति से भी अलविदा कर लूँ।'

हिरनी के मुँह से यह चालाकी की बात सुनकर अहेरी से हँसे बगैर नहीं रहा गया। हँसते-हँसते ही बोला, 'एक बार नजर आये हुए जानवर को छोड़ दूँ तो मेरे नाम पर बट्टा लगता है। मेरे तीर-कमान की मर्यादा घटती है। तेरे झाँसे में आ जाऊँ, ऐसा नासमझ मैं नहीं हूँ।'

हिरनी बोली, 'पर मैं तो बिल्कुल नासमझ हूँ। वास्तव में, यह झाँसे का बोल ही मैंने पहली बार सुना है। पति और बच्चों से मिलने की मन में न रही तो मैं मरते समय भी तुझे आशीर्वाद दूँगी। मेरे वचनों पर कोई अविश्वास करे, यह मेरे लिए मौत से भी बदतर है।'

भगवान जाने, हिरनी की उस पवित्र वाणी पर अहेरी को क्यूँकर विश्वास हो गया कि उसने खुशी-खुशी उसे अपने निवास पर जाने की इजाजत दे दी। तब हिरनी अहेरी का बहुतेरा एहसान मानती हुई अपने बच्चों के पास गयी। विस्तार से झरनेवाली सारी बात सुनायी। बच्चों ने मुँह उतारकर माँ के मुँह से अहेरी को दिये हुए वचनों तक की सारी वार्ता चुपचाप सुनी। इन्तजार कर रहे अहेरी के पास जाने की उतावली में, जब माँ ने दूध पीने के लिए कहा तो बच्चों ने साफ इन्कार कर दिया कि वे अब एक बूंद भी दूध नहीं पीयेंगे। इसकी वजह पूछने पर बच्चों ने कहा, 'माँ, अब तू आजाद कहाँ है? जब तू वचनों से बँधी हुई है तो तेरा दूध भी अब तेरा नहीं रहा। यह अहेरी की अमानत है। तब किसी और का दूध हम कैसे पी सकते हैं?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिरनी को अपने नन्हें-नन्हें बच्चों से इतनी तीव्र बुद्धि की आशा नहीं थी। सुनकर बेइन्तहा खुश हुई। फिर बच्चों को साथ लेकर पति के पास गयी। सारी बात सुनकर हिरन बोला, 'अहेरी को तो फकत मांस की जरूरत है जो मुझमें तुझसे अधिक है। वो उलटा अधिक खुश होगा। और पीछे तू बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा कर लेगी।' पर हिरनी भी पति से कम जिद्दी नहीं थी और न ऐसी भोली, जो अपने हाथों रँडापा कबूल करे। माँ-बाप को मौत के मुँह में जाते देखा तो बच्चे भी उनके साथ चल पड़े। किसके भरोसे दुख के दिन काटते! कौन उनकी सार-सँभाल करता!

पल-पल इन्तजार करते अहेरी ने जब हिरनी के साथ तीन और प्राणियों को आते देखा तो उसका माथा ठनका। पास आते ही वो हिरनी पर आँखें निकालते बोला, 'मैं जानता था कि तू मेरे साथ धोखा करेगी!'

अहेरी के मुँह से यह औंधी बात सुनकर हिरनी ने आश्चर्य से पूछा, 'क्यूँ, इसमें धोखे की क्या बात है? तुझे एक की जगह चार जीवों का मांस मिलेगा। मेरे बच्चों की कोमल-कोमल बोटियाँ खाकर तेरे बच्चे अधिक खुश होंगे। ये सभी मना करने के बावजूद जबरदस्ती मेरे साथ आये हैं। विश्वास न हो तो इनसे पूछ ले।'

अहेरी गर्दन हिलाते बोला, 'अब क्या तेरा सर पूछूं। अपने बच्चों की खातिर तेरे बच्चों को कैसे मारूँ? तूने इस तरह वचन निभाया तो तुझ पर तीर कैसे चलाऊँ?'

हिरनी जिद करती हुई बोली, 'तेरे बच्चे बिलख रहे होंगे। तू कमान पर तीर चढ़ा तो सही!'

तब अहेरी हिरनी के कहे-कहे बेमन से तीर चढ़ाते बोला, 'फकत तीर चढ़ाने से क्या होगा? अब मेरे हाथों में वो ताकत ही कहाँ रही?'

पोता साँस रोके चुपचाप कथा सुन रहा था। फटी ओढ़नी के पल्लू से अपनी आँखें पोंछती हुई दादीमाँ आगे कहने लगी, 'तब से वे सभी अमर हैं। बेचारी मौत की क्या बिसात जो उनकी तरफ आँख भी उठा सके। देख, वो रहा अहेरी। कमान पर अभी तक तीर चढ़ा हुआ है।'

दादीमाँ की अँगुली के इशारे की ओर ऊपर निगाह उठाये पोता गगन में एकटक देखता रहा। दादीमाँ आगे कहने लगी, 'वह रही भोली हिरनी! पास ही खड़ा है उसका पति और पीछे दोनों बच्चे!'

पोते की नजर उस नक्षत्र के चारों ओर घूमर लेने लगी। थोड़ी देर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में वो अहेरी देखते ही देखते उतरकर नीचे आने लगा सो आता ही चला गया। उतरते-उतरते आखिर हाथ के बिल्कुल करीब आकर रुका। पोते की सुकुमार अँगुलियाँ उस नक्षत्र को बार-बार सहलाने लगीं, सो आँख खुलने तक सहलाती ही रहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोहरी जिन्दगी

अदेही अनंग तुष्टमान होकर हरेक को दो-दो जीवन बख्शे कि बारह और बारह चौबीस कोस की दूरी पर दो बस्तियाँ बसी हुई थीं। उन बस्तियों के सेठ अपनी कंजूसी के लिए समूचे मुल्क में मशहूर थे। दोनों बस्तियों में सरीखी हैसियत के दो हमउम्र साहूकार रहते थे। दूर बसते हुए भी दोनों में गहरी दोस्ती थी। इत्तफाक की बात और अनमोल रात कि दोनों का एकसाथ सेहरा बँधा। बेहद सुन्दर बहुओं के साथ ही हथलेवा जुड़ा और सीप-सीप में साथ ही मोती पड़ा। तब खुशी-खुशी दोनों साहूकार परस्पर वचनबद्ध हो गये कि चाहे जिस किसी के बेटा-बेटी हो, वे एक-दूसरे के विवाह-बन्धन में बँधेंगे। पेट की आशा के दरमियान ही सन्तानों का रिश्ता तय हो गया।

एक-दूसरे की प्रीत में बावले और धनपागल उन सेठों को कुदरत के खेल का रंचमात्र भी खयाल नहीं था। नौवें महीने एक ही नक्षत्र में दोनों के दो लड़कियाँ जनमीं। कुछ तो दी हुई जबान के नशे में और कुछ कंजूसी की लत के दबाव में एक सेठ बेईमानी कर गया। बेटी होने के बावजूद सूप की जगह काँसे का थाल बजाया। नाई भेजकर दोस्त के गाँव बेटे की बधाई पहुँचवायी। दोनों सेठों की हवेलियों में उत्सव के साथ गुड़ बाँटा गया।

पहले-पहल माँ ने सोचा कि दोनों दोस्तों में परस्पर मजाक का रिश्ता है। वक्त आने पर आप ही सारी बात सामने आ जायेगी। तब तक इस भ्रम से कोई हानि नहीं है। अबूझ बचपन तक क्या तो छोरा और क्या छोरी। यह तो जवानी छाने पर ही भेदवाले मर्म की ठीक से पहचान होती है।

पर बाप ने उस भ्रम को मिटाने के लिए जाने-अनजाने कोई चेष्टा नहीं की। लड़की की लड़के के समान परवरिश की। वक्त से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहले ही कमर में मेखला और धोती, बदन पर अँगरखी और सर पर बँधेज का साफा। पहले तो सारी बातें मसखरी-सी लगती थीं, पर जब वक्त का उभार जाहिर होने पर भी बाप की नीयत नहीं बदली तो माँ का माथा ठनका। एक दफा मीठे उलाहने के साथ पति को सचेत किया। कहने लगी, 'यों देखते हुए भी अन्धे कैसे बने हो?'

तब हकलाते सेठ बोला, 'मैं तो कहीं अन्धा नहीं हूँ। मुझे तो तीन लोक की सूझती है।'

सेठानी सर के हाथ लगाकर बोली, 'तीन लोक की सूझनेवाले को बेटे के कपड़ों में बेटी का जोबन नजर नहीं आता?'

सेठ सफेद झूठ बोला, 'इन छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने के लिए मेरे पास वक्त ही कहाँ है?'

सेठानी की अभ्यस्त जबान से आप ही रोजाना का सम्बोधन निकला, 'मुन्ने के बापू, तुम यह क्या पागलपन कर रहे हो? बेटी तो पीले हाथ करने लायक हुई और तुम्हें यह छोटी बात नजर आती है?'

'पर पीले हाथ करने की मेरी मनाही थोड़े ही है। मेरी तेज अक्ल की कौन बराबरी कर सकता है! मैंने तो कोख के भीतर ही रिश्ता निबटा दिया था।'

सेठानी करीब आकर कहने लगी, 'तुम्हारे निबटाने से क्या होता है! भला, छोरी से छोरी की कहीं शादी हुई है?'

'शादी का क्या, की और हुई! पर दिया हुआ वचन तो मरते दम तक नहीं तोड़ा जा सकता।'

सेठानी की आँखें ऊपर ललाट में चढ़ गयीं। यह मजाक का लहजा तो नहीं है। सूरज की तरह दमकती सच्चाई पति को क्या दिखाये! भला, ये बातें किसी को समझाने की हैं! उसका मुँह फटा-का-फटा रह गया। पर अब इतमिनान रखने से गजब हो जायेगा। आखिर बमुश्किल मन कड़ा करके कहने लगी, 'भले आदमी, तुम्हारे वचनों से सेजों की कमी कैसे पूरी होगी? कुछ तो खयाल करो। मैंने तो इतने बरस मजाक मानकर तुम्हें छेड़ा ही नहीं।'

'मैं छेड़ने जैसा काम भी तो नहीं करता। बेशुमार दहेज मिलेगा। धूमधाम से बेटे की बरात ले जाऊँगा। मर्द की जबान नहीं बदला करती। कुदरत की गलती का नुकसान मैं क्यूँ उठाऊँ?'

सेठानी असमंजस में पड़ गयी। या तो अभी भी पति उससे हँसी कर रहे हैं, या अपने वचन से हरगिज इधर-उधर नहीं होंगे। पर आज बात को अधर में नहीं छोड़ना है। फैसला होने पर ही सेठानी को चैन पड़ेगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुस्से से खौलती कहने लगी, 'तुम्हारा नफा-नुकसान गया भाड़ में। तुम्हारे जैसा बाप मिलने पर बेटी सेजों का नुकसान कैसे पूरा करेगी ? इस बात का तुम्हें खयाल भी है ?'

सेठ गुमान से बोला, 'क्यूँ, खयाल क्यूँ नहीं है ! आठ-दस बरस पति के दिसावर जाने पर भी समझदार बहुएँ सब्र रखती हैं। ऐसा-वैसा पति मिलने पर जैसे-तैसे करके कोख की साध पूरती हैं। बाल-राँड भी आखिर अपने दिन काटती ही है। बेटी की किस्मत, बेटी के साथ। आप ही खींचेगी और आप ही ओढ़ेगी।'

अब जाकर सेठानी को पुख्ता विश्वास हुआ कि ये बातें हँसी की नहीं हैं। पति तो गुँथे हुए जाल की एक गाँठ भी ढीली नहीं करना चाहते। बेटी के चेहरे की धुँधली तस्वीरें उसे चारों ओर तैरती नजर आने लगीं। रुँधे गले से बोली, 'अपनी जायी बेटी है। यों कैसे उसे बाँधकर जलायें। छोरी के साथ शादी होने पर वह क्या तो खींचेगी और क्या ओढ़ेगी ! मुझसे तो सपने में भी इस अकर्म के लिए हाँ नहीं की जाती।'

पति चिढ़ते बीच में बोला, 'मैंने तुझे हाँ करने के लिए कहा ही कब है ! इस काम के लिए तो मैं अकेला ही बहुत हूँ। अगर फिर टाँग अड़ायी तो मैं खुदकशी करके मर जाऊँगा। वचन हारने से तो मरना बेहतर है। और, सेठों की सेजों का घाटा कैसे भरा जाता है, तू क्या समझती नहीं ! जान-बूझकर अनजान मत बन। तेरे बाप का नाम कैसे चला, समूचे इलाके में यह किसी से छुपा नहीं है। पर फिर भी मैंने दिखती आँखों मक्खी निगली कि नहीं।'

पति के मुँह से इस ताने की सेठानी को कतई उम्मीद नहीं थी। सुनते ही उसका मुँह मानो सी दिया गया हो। रगों का खून जम गया। वाकई यह किसी से छुपा नहीं था। उसकी माँ ने आँखों देखे किसी मर्द को नहीं छोड़ा। कापुरुष बाप तो अपने कारोबार और हिसाब-किताब में मगन था और उधर उन्मादित माँ जात-बदजात का खयाल ही भूल गयी थी। उस चमार के साथ खुल्लमखुल्ला ऐश करती थी। चमार गराँडील और खूबसूरत था। सेठानी हू-ब-हू उस पर गयी थी। वैसा ही चेहरा और वैसी ही चाल। ढकी हुई हँडिया का ढक्कन हटाते ही वह पस्त हो गयी। अटकते-अटकते बोली, 'जो तुम्हारी मरजी हो, करो।'

पति को ऐसे अचूक निशाने की आसा नहीं थी। बात की बात में सारा झगड़ा निबट गया। इत्तफाक की बात कि दूसरे ही दिन शुभ-मुहूर्त की घड़ी, साहूकार के घर सावा आया। बाप ने तो उत्साह से सावा कबूल किया, पर माँ के कलेजे पर आरी-सी चल गयी। फिर भी उसने न तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होंठ खोले और न चूं ही की। आपकरमी बेटी जाने और बेटी का करम जाने।

पर बेटी तो निरी नादान थी। उसे न तो अपने यौवन की जानकारी थी और न करम का कुछ खयाल था। बरसों बेटे की तरह पली कन्या मन-ही-मन खुद को बेटा ही समझने लगी थी। शादी का वास्तविक मतलब न जानते हुए भी उसे इस नयी बात की बेहद खुशी थी।

शादी होने पर जरूर चिकने गालों की मसें भीगेंगी। मूँछों को ताव देने के लिए उसे चुटकी में खाज चलती-सी महसूस होती थी। और बेटी की यह नासमझी देखकर माँ अन्दर-ही-अन्दर सुलगती रहती थी।

एक दफा एक हमउम्र लड़की ने उसे नहाते हुए अचानक देख लिया तो उसकी सारी गलतफहमी दूर हो गयी। इतने बरस तो उसने समझा कि माँ-बाप कोई टोटका कर रहे हैं, पर सावा कबूलने के बाद बरात चढ़ने के लिए उसकी उमंग देखी तो आखिर सब्र की पाल फूट गयी। उसे मेडी में ले जाकर समझाने लगी, 'देखो जीजी···!'

वह बीच में ही टोकते बोली, 'आज यह नयी बात कैसे? भाई और ददा के बदले तूने मुझे जीजी क्यूं कहा?'

लड़की मुस्कराते बोली, 'क्यूँ क्या? जीजी है तो जीजी कहने पर गुस्सा क्यूं? बावली, औरतजात होकर तू दूल्हा बनने का ख्वाब देख रही है? मर्दानगी हुए बगैर मर्द के इन तमाशों से कब तक काम चलेगा?'

'कब तक क्या, सारी उम्र काम चलेगा। पर तुझे मेरी मर्दानगी में क्या कमी नजर आयी? यह धोती, यह अँगरखी और यह सोलह हाथ का साफा!'

पड़ोसन लड़की होंठों-ही-होंठों में मुस्कराते ,बोली, 'सोलह हाथ के साफे से मर्द के साजो-सामान की कमी पूरी नहीं की जा सकती! इस शादी के लिए तू साफ मना कर दे। तेरी जवानी तो खुद जोड़ी का वर माँगती है। दोनों छोरियाँ साथ जुतकर क्या गार खूंदोगी। समझने लायक भरपूर उम्र होते हुए तू ये मामूली बातें भी नहीं समझती?'

सेठ की नादान लड़की फिर भी नहीं समझी। मुँह मस्कोरकर बोली, 'तू तो मेरी सुन्दर बीबी से डाह करती है। तुझसे मेरा सुख देखा नहीं जाता।'

पड़ोसन उसे सीने से लगाकर कहने लगी, 'अब तेरा क्या किया जाये? आखिर ठोकर खाने पर ही तुझे अक्ल आयेगी। पर फिर समझकर भी क्या होगा! बाप को तो दहेज का लालच है, पर तेरी माँ ने तुझे कुछ नहीं समझाया? बेहद हैरानी की बात कि उसका मन कैसे माना?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब वह अबूझ लड़की अधीरता से कहने लगी, 'अभी जाकर माँ से पूछती हूँ। वह मुझसे कुछ नहीं छुपायेगी।'

'न छुपाये तो अच्छा है।' इतना कहकर वह अपने घर चली गयी और बेटी हड़बड़ायी हुई माँ के पास पहुँची। पूछा, 'माँ, आज एक लड़की ने मुझे हैरानी की बात बतायी कि मैं फकत मर्दों के कपड़े पहनती हूँ, हकीकत में मर्द नहीं हूँ। पर मैं उसकी बात मानूं तब न! तू मुझसे हरगिज छुपायेगी नहीं। बोल, वह झूठी है कि नहीं? मैंने तो उसे मुँह पर ही कह दिया कि उससे मेरी सुन्दर बीवी का रूप सहा नहीं जाता।'

माँ ने मुँह घुमाकर आँखें पोंछीं। कुछ देर बाद रुँधे सुर में बोली, 'अगर ऐसी बात होती तो क्या मैं तुझे पहले ही होशियार नहीं कर देती! अबूझ लड़कियाँ चलते ही चुहल कर लेती हैं।'

बेटी जोश के सुर में बढ़-चढ़कर कहने लगी, 'चाहे कितनी ही चुहल करें, मैं किसी से दबनेवाला नहीं हूँ। आदमी न होकर औरत होता तब भी मैं इस शादी के लिए इन्कार नहीं करता। यह तो दिल मिलने की बात है। दिल मिल जाये तो दो औरतों की क्या शादी नहीं हो सकती?'

माँ धीरे-से बोली, 'तेरे बापू भी यही कहते हैं।'

बेटी नाचती हुई कहने लगी, 'मेरे बापू भी क्या कम समझदार हैं!'

माँ से जो पूछना था, पूछ लिया। फिर वहाँ ठहरने से क्या मतलब! साफे के लटकते छोर के फटकारे देती, नाचती, कूदती वहाँ से चली गयी और पीछे माँ उफनती सिसकियों को रोककर पाषाणमूर्ति की तरह अविचल एक जगह खड़ी गुमसुम सोचती रही।

दूसरे दिन उस लड़की से सामना होने पर उसने काफी उलाहना दिया। किसी के चक्कर में आनेवाली रात तो उसका जन्म ही नहीं हुआ था। सीना ठोककर कहने लगी, 'अगर मैं मर्द नहीं होता तो भी किसी औरत से शादी कर दिखाता। एक-दूसरे की आँखों में रत्ती-भर भी नहीं खटकते।'

पड़ोसन की कोख तो नहीं उघड़ी थी, पर फिर भी शादी हुए यह दूसरा साल था। भोलेपन की यह बेहूदा बात सुनकर उसे हँसी आ गयी। समझाते बोली, 'मुझे तो तेरे घर के कुएँ में ही भाँग पड़ी लगती है। अरे बावली, चक्की के पाट आपस में कितने ही टकरायें तो क्या होता है! मर्द की गरज़ तो मर्द से ही पूरी होती है।'

'मर्द क्या नौ की तेरह करता है, पर चक्की के पाटों पर तो सारी दुनिया पलती है। आटा पिसता है। दाल दली जाती है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस दफा पड़ोसन अपनी हँसी नहीं रोक पायी। ताली बजाकर जोर से हँसी। हँसते-हँसते ही बोली, 'अब तुम दोनों दाल दलने में पीछे मत रहना।'

उसकी हँसी से नादान लड़की शरमा गयी। जबरन हँसने की कोशिश करते बोली, 'क्यूँ, दाल दलने में क्या बुराई है?'

चुनरी के पल्लू से हँसी दबाते पड़ोसन कहने लगी, 'वक्त आने पर आप ही पता लग जायेगा।'

'तुझे भी तो कुछ पता लगा होगा?'

'पर तेरी-मेरी शादी का क्या मुकाबला!'

'हाँ, कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली! मेरे जितने दहेज की बात तो तेरे पुरखों ने भी नहीं सुनी होगी।'

पड़ोसन लड़की ने इसका बुरा नहीं माना। बायें गाल पर हल्की-सी चिकोटी काटते बोली, 'इस बकझक के बीच बेचारे पुरखों को क्यूँ घसीटती है? तुझे समझाना किसी के बूते की बात नहीं है।'

वाकई सेठ की वह नादान लड़की न तो आप समझी और न किसी के समझाने से उसके कुछ समझ में आया। सावे की घड़ी ज्यों-ज्यों नजदीक आती गयी, उसकी खुशी की लहरें ज्यादा मचलने लगीं। आखिर इन्तजार करते-करते वह मंगल वेला आयी। रिश्ते-बिरादरी में रोज नयी-नयी दावतें खाते उसकी बरात चढ़ी। सात घोड़े, ग्यारह ऊँट और बीस बहलों की सजी-धजी बरात! दूल्हे का बाप भूरे ऊँट के अगले आसन पर बैठा था और दूल्हा नागौरी बैलों की बहल पर।

धर-कूचों, धर-मजलों, रणकारे के साथ बरात बेटी के गाँव पहुँची। गाँव की सीमा पर नारियल चढ़ाया गया। कँवर-कलेवे के बाद गोधूलि सावे में दोनों मण्डप में बैठे। बीरबहूटी के समान दो नरम-नरम हाथों का हथलेवा जुड़ा। हथलेवे के साथ ही शरीर में बिजली-सी दौड़ गयी। दो अजनबी व्यक्तियों का ताजिन्दगी नाता जुड़ गया।

दीवट की रोशनी में साफा बाँधे दूल्हा, दुल्हन के इन्तजार में सुहाग-सेज पर बैठा था। आधी रात ढलने पर पायल की झंकार के संग सहेलियों की सरसराहट सुनायी दी। दुल्हन घूँघट निकाले मेड़ी के दरवाजे पर रुक गयी। दूल्हे के हृदय में कलियाँ खिलने लगीं।

दुल्हन ने चौखट थामकर कुछ आनाकानी की तो सहेलियों ने उसे भीतर धकेलकर दरवाजे की कुण्डी लगा दी। दुल्हन फकत धीरे-धीरे पैर उठाती हुई सुहाग-सेज पर दूल्हे से सटकर बैठ गयी। उसने घूँघट उलटकर दुल्हन का चेहरा देखा। घूंघट के भीतर यह तो हू-ब-हू चाँद छुपा हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है ! दूल्हे की खुशी मेड़ी की दीवारों के भीतर कसमसाने लगी । दुल्हन के गालों पर हाथ फिराते बोला, 'तेरी खूबसूरती की तारीफ तो बहुत सुनी, पर ऐसे रूप की तो मुझे सपने में उम्मीद नहीं थी।'

दुल्हन के गुलाबी होंठ खुले । मधुर आवाज में बोली, 'आप भी क्या कम खूबसूरत हैं ! मेरा रूप तो आपके सामने पानी भरता है।'

दोनों एक-दूसरे का चेहरा निहारते हुए सलोनी आब को नजरें भर-भर पीते रहे। मेड़ी के दरवाजे पर खड़ी औरतें दरारों में झाँक-झाँककर तंग आ गयीं, पर उनको घी के उजाले के अलावा दूसरा कोई उजास नजर नहीं आया । शायद आँखों की प्यास बुझने पर दूसरे अंगों की प्यास जगे ।

दूसरे दिन भी मेड़ी में वो ही नजारा । औरतों की आँखें पथराने लगीं, पर उन्हें चाह मुताबिक दूसरी कोई झलक नहीं दिखी । नाजुक पिण्डलियों में दर्द कसकने लगा तो एक-एक करके सभी सीढ़ियाँ उतर गयीं । शर्म, शर्म की जगह होती है ! ऐसी भी क्या शर्म ? लगातार दो अनमोल रातों का सत्यानाश कर दिया ! ऐसी तो कच्ची उम्र भी नहीं है। मुई आँखों की प्यास का क्या अन्त ! एक पल देखो तो वही बात और सारी रात आँखें फाड़ो तो वही बात । अपनी-अपनी प्यास और अपनी-अपनी समझ !

दुल्हन ससुराल आ गयी, पर तब भी दूल्हे की न तो शर्म दूर हुई और न उसकी समझ ही बदली । माँ की फिक्र का भी कहीं अन्त नहीं था। इस अजीबोगरीब शादी की वजह से आसौज की उमस में भी उसके शरीर की ठिठुरन का कोई पार न था । पास ही सोया सेठ तो खर्राटे भर रहा था, पर सेठानी की नींद राम जाने कहाँ उड़ गयी थी । दोनों छोरियाँ बैरन रात से कैसे जूझती होंगी ? असलियत सामने आने पर बहू की क्या हालत होगी ! अबूझ बेटो तो कुछ समझती ही नहीं । खुशी-खुशी शादी के लिए चल पड़ी । यह तो जानबूझकर खड्डे में गिरी, पर बेचारी बहू तो अभी तक हकीकत से अनजान है ।

और उधर मेड़ी में घी का मन्द-मन्द उजास जगमगा रहा था । दुल्हन साफे के सिरे को सहलाते कहने लगी, 'यों भी मेड़ी में बेहद उमस है । साफा उतारकर आराम से सोइए । मैं कुछ देर हवा करती हूँ।'

यह बात कहकर वह सुरंगी पंखी से पति को हवा करने लगी । पति कहने लगा, 'साफा तो मर्द का खास सिंगार है। उसके बिना तो मर्दानगी फीकी लगती है । तू कहे तो अँगरखी खोल दूं।'

इधर दुल्हन नाजुक कलाई से हवा कर रही थी और उधर पति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेझिझक अँगरखी के बन्द खोलने लगा। अँगरखी का गरेबान उघड़ते ही दुल्हन ने पति के निर्वस्त्र सीने को देखा तो अनजाने ही उसके मुँह से चीख निकल गयी। और चीख के साथ ही वह पलँग पर ढेर हो गयी। अर्धमूर्छित दुल्हन आँय-बाँय कहने लगी, 'तुम भी औरत हो! मुझसे यह किस जन्म का बदला लिया?'

पति का भ्रम पहली बार झुलसा और झुलसने के साथ ही काँवर की माफिक मर्द के कपड़ों में गुजरा जीवन उसकी आँखों के सामने तेजी से घूमने लगा। पड़ोसन का समझाना अब जाकर उसकी समझ में आया। भ्रम का भूत इन्सान को किस तरह अन्धा और बहरा बना देता है। उसे न कुछ दिखता है और न ही कुछ सुनायी पड़ता है। भ्रम के पर्दे पर वो जो छवि देखना चाहता है, उसे वही छवि दिखायी देती है। साँच तो अपना वजूद ही खो बैठता है।

इतने बरसों बाद उसकी आँखें सच्चाई देखने के लिए फड़फड़ाने लगीं। विक्षिप्त होकर उसने अपना साफा और अँगरखी उतार फेंकी। फिर दुल्हन के तमाम कपड़े उतारने पर जो असलियत उसके सामने नमूदार हुई तो उसकी आँखें फटी-की-फटी रह गयीं! भला, इतने बरसों तक यह साँच उसे क्यूँ नजर नहीं आया? दोनों शरीरों की बनावट एक-सी। बेहोश दुल्हन गुलाबी मछली की माफिक पलँग पर पड़ी थी। और एक वैसी ही 'सुजाग' मछली उसके करीब खड़ी थी। ऐसा तमाशा तो सृष्टि-रचना के बाद आज तक नहीं हुआ होगा।

उसके बाद 'सुजाग' मछली को न जाने क्या सूझी कि वह बेहोश मछली को झकझोरकर बार-बार कहने लगी, 'आँखें खोल। मेरा भ्रम दूर हो गया। मैं तेरा गुनहगार हूँ, मुझे पूरी सजा दे।'

ज्यादा झकझोरने पर बहू ने आँखें खोलीं। इधर-उधर देखा। चौंककर खड़ी हुई। एक साँचे में ढली दो मछलियाँ एक-दूसरे का रूप निरखने लगीं। पति बनी मछली ने फिर अपना कसूर कबूल किया। कड़े से कड़ा दंड भोगे तो कुछ शान्ति मिले। उसने तो खुद आफत को न्यौता दिया, पर बहू तो अनजाने ही इस आग में गिरी है। उसके साथ धोखा हुआ है। इस धोखे की जो भी सजा मिले, वह कम है।

बहू भली और सयानी थी। कसूर मानकर तहेदिल से पछताना ही सबसे बड़ी सजा है। फौरन समझ गयी कि यह सब अनजाने में हुआ है। फिर उसके बार-बार मना करने के बावजूद भी पति बनी मछली ने उसे अपने बचपन की समूची रामायण खोलकर सुनायी। वचन की झूठी और बेसिर-पैर की मर्यादा को निभाने के लिए अहं और दहेज के लालच की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खातिर बाप ने यह जाल बुना था। बेचारी माँ ने खूब हाथ-पाँव मारे, पर उसका कोई वश नहीं चला।

बहू सारी कहानी गुमसुम सुनने के बाद धीमे सुर में बोली, 'मैंने तो फकत सात दिन ही भ्रम की यह पीड़ा ढोयी है, पर तूने बरसों इस भ्रम की जलन सही है। तेरा दर्द मेरे दर्द से बड़ा है। हम दोनों पर एक-सी बिजली गिरी है। अब तो मुसीबत का शामिल ही भुगतान करना है।'

'पर दूल्हा बनकर तोरण तो मैंने 'बधाया' है। सारा कसूर मेरा है। तू तो मेरे हाथों छली गयी है?'

बहू बीच में ही बेसब्री से बोली, 'और तुझे भी इस छल की बराबर सजा मिल गयी।'

'नहीं, इस पाप से तो मुझे मरकर भी मुक्ति नहीं मिलेगी।'

तब बहू उसके गालों पर हाथ फिराते, शहद घुले सुर में बोली, 'अब तो हम दोनों की शामिल ही 'भागीरथी' होगी।'

तब दूसरी मछली आँसू बहाते बोली, 'अगर मैं जानबूझकर यह शादी करती तो मुक्ति में कोई अड़चन नहीं थी, पर अब धोखे का पछतावा मेरा पीछा नहीं छोड़ रहा है, वरना दो औरतों के विवाह की लाजवाब मिसाल कायम करके दिखाती।'

बहू ढाढ़स बँधाते कहने लगी, 'अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, तू पछतावे की नादानी छोड़। हमारी मुक्ति की राह हमीं को खोजनी होगी। मर्द और औरत की शादी में क्या नयी बात है! पूर्व में तो सूरज उगता ही है, पश्चिम में उगे तो कुछ खासियत भी हो।'

फिर बक्सा खोलकर बहू ने शादी का जोड़ा बाहर निकाला। अपने हाथों उसका सिंगार किया। गहना पहनाकर आँखों में काजल आँजा। उसे सजाने के बाद उसने खुद वापस कपड़े पहने। दीये की लौ की नाईं दोनों जगमगाने लगीं। बहू ने नजर उतारकर उसके गालों को चूमा। प्यार करते बोली, 'आज से तेरा नाम बीजाँ और मेरा नाम तीजाँ। यह हमारी खुशनसीबी है कि हमें ऐसा अचीता संयोग हाथ लगा। अब मेरे सामने पछतावे का जिक्र कभी मत करना।'

बीजाँ अपने सिंगार को गौर से देखते बोली, 'कहीं यह सपना तो नहीं है?'

तीजाँ उसे बाँहों में भरते बोली, 'बावली ऐसा साँच तो आज से पहले कभी प्रकट नहीं हुआ होगा।'

रात का अँधेरा छँटने पर सूरज तो अपनी ठौर ही उगा, पर मेड़ी का दरवाजा खुलने पर जो चमक सेठ की आँखों के सामने नमूदार हुई,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस पर नजर पड़ते ही उसकी आँखें चौंधिया गयीं। सारी बातें जानते हुए भी वो ऐसा हैरान हुआ, मानो इस सच्चाई का उसे कुछ भान ही न हो। पागल कुत्ते की तरह उनकी ओर लपका। बेटी को पहचानकर, उसकी ओर मुँह करके चिल्लाया, 'तूने यह सिंगार क्यूँ किया ? घर की इज्जत और मेरे वचनों का तुझे कुछ खयाल भी है ?'

हकलाते हुए बाप का हुलिया देखकर बीजाँ को बरबस हँसी आ गयी। बोली, 'इतने सालों के छल का खुलासा तो मैं तुमसे पूछना चाहती थी, पर अब कुछ नहीं पूछूँगी और न कोई जवाब ही दूँगी !'

बाप पैर पटकने के साथ थूक उछालते कहने लगा, 'बेहया, तू क्या जवाब देगी ? यह सिंगार मैं तुझे हरगिज नहीं करने दूँगा।'

मेड़ी के दरवाजे पर स्यापा सुनकर माँ दौड़ी आयी। सारी रात उसकी पलक तक नहीं झपकी थी। बेटी का यह सिंगार देखकर उसके रोम-रोम में बिच्छू के डंक की वेदना कसक उठी। बेटी की मौत से भी इस सिंगार का मातम ज्यादा तकलीफदेह था। बरसों के पाले-पोसे साँच ने जब इस कदर अपना रूप दरसाया तो एकबारगी वह उसे झेल नहीं पायी। कुछ पूछने के लिए बेटी के होंठ खुले ही थे, कि वह उससे लिपटकर फूट-फूटकर रोने लगी। रोते-रोते ही बोली, 'कुछ मत पूछ बेटी, कुछ मत पूछ। मैं खुद बेहद गिड़गिड़ायी, खुशामदें की, पर तेरी तरह मेरा भी कुछ वश नहीं चला। फिर भी मेरी हाथ जोड़कर यही विनती है कि तू अपने बापू को बद्दुआ मत देना।'

एक दफा तीजाँ के होंठों पर मुस्कराहट की आब थिरक उठी। बोली, 'तुम्हें अब भी बद्दुआ की फिक्र है ? इतमिनान रखो, न मैं किसी को बद्दुआ दूँगी और न इसके मुँह से बद्दुआ के बोल निकलेंगे। हम तो उलटा आप लोगों का एहसान मानेंगी कि हमें ऐसी अनमोल सीख हाथ लगी।'

तीजाँ के मुँह से ये बोल सुनते ही सेठ, अच्छा-बुरा कुछ भी न सोचकर अपनी पगड़ी उसके कदमों में रखते हुए गिड़गिड़ाने लगा, 'बहू, अब मेरी इज्जत तेरे हाथ में है। जैसे भी हो, इसको समझा कि यह सिंगार उतारकर पहलेवाला लिवास पहन ले !'

तीजाँ खिलखिलाकर हँसते बोली, 'तुम अब भी मुझे बहू के नाम से पुकारते हो ! धन्य है तुम्हारी इज्जत और तुम्हारी मर्यादा ! समझ में नहीं आता कि झूठे लिवास से तुम्हारी इज्जत कैसे बचेगी ? और ऐसी इज्जत बचाकर करना भी क्या है ? आज तक तुमने अपनी मनमानी की, अब हमें अपनी मनचाही करने दो। हम तो फकत तुम्हारे छल को सरेआम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वरदान की तरह कबूलना चाहती हैं।'

सेठ को अपना असली रूप जाहिर करने के लिए कोई बहाना चाहिए था। तीजाँ के मुँह से ये बोल सुनते ही वो अपनी असलियत पर आ गया। आँखों में रंग लाकर कहने लगा, 'इस घर में तो मेरी ही मनमानी चलेगी। अगर अपनी मनचाही करना चाहो तो यहाँ ठौर नहीं है।'

इस दफा बीजाँ बोली, 'हमें यह ठौर अब शोभा भी नहीं देती। फजूल की बकवास से बात दूसरी ओर मुड़ गयी। हम यही कहने के लिए तुम्हारे पास आ रही थीं। मरजी हो तो आशिष देना। हम अब चलती हैं। यहाँ साँस लेने को भी अब हमारा मन नहीं करता।'

सेठ मुद्दे पर आया। अण्ट-शण्ट बकने लगा, 'जाना हो तो जाओ, पर दहेज-गहने की एक कौड़ी भी मैं वापस नहीं दूंगा। इस भरोसे मत रहना।'

बापू गुस्से में खौल रहा था, पर बेटी से हँसे बगैर नहीं रहा गया। हँसते-हँसते बोली, 'अब हमें अपने सिवाय किसी पर भी भरोसा नहीं है। तुम बेकार क्यूँ खीज रहे हो? हमें दहेज-गहने का एक तुस भी नहीं चाहिए। तुम्हें शर्म न आये तो हम यहाँ से नंगी जाने को तैयार हैं!'

बाप-बेटी के लिहाज का मुखौटा उतारकर सेठ कहने लगा, 'यह नौबत तो आनी ही थी। अब तुम ठौर-ठौर नंगी तो नाचोगी ही। तुम्हारी करतूतें तुम जानो, पर ये गहने मेरे हैं। तुझे पाल-पोसकर इतनी बड़ी नहीं करता तो दहेज-गहने का सपना भी कहाँ नसीब था!'

'ऐसे सपने तुम लोगों को ही मुबारक हों!' इतना कहकर तीजाँ और बीजाँ अदेर अपना गहना खोलने लगीं। वास्तव में, बनाव-सिंगार की बेइन्तहा खुशी में उन्हें गहने का खयाल ही नहीं रहा। समूचे गहने उतारकर जब तीजाँ सर की रखड़ी उतारने लगी तो माँ का दिल भर आया। सुबक-सुबककर रोते बोली, 'बड़भागिन, सुहाग की यह रखड़ी तो मत खोल।'

सेठ के लालच की भी आज सीमा नहीं थी, पर असलियत में लालच की निस्बत हवेली के मालिक की आन ज्यादा भारी थी। पीढ़ियों की उस आन के आज बेटी के हाथों परखचे उड़ने लगे तो वो अपना होश-हवास गँवा बैठा। जिद और खीज की आग में घी धीरे-धीरे बढ़ता गया। सेठानी की बेहूदा बात सुनकर उसे फिर तैश आ गया। दाँत पीसते बोला, 'सुहाग से रखड़ी का क्या वास्ता? गरीबों के सोने की रखड़ी नहीं होने से क्या उनकी औरतों का सुहाग भी नहीं होता? मैं किसी भी सूरत में एक कील तक छोड़नेवाला नहीं हूँ।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों ने मुस्कराते हुए रखड़ियाँ खोलकर सौंप दीं। जिन्दगी में पहली बार सेठानी ने पति को झिड़का। करीब आकर बोली, 'तुम्हें कहीं पागल कुत्ते ने तो नहीं काट खाया है ?'

सेठ छाती पीटते बर्राया, 'पागल कुत्ते ने तो इन्हें काटा है, पर तुझे क्यूं नजर आने लगा ? मैं मनानेवाला नहीं हूँ। लाखों की दौलत को ठोकर लगाकर जाती हैं तो जाने दो।'

ऐसे घिनौने माहौल में उनका साँस लेना भी नामुमकिन हो गया तो दोनों बगैर कुछ कहे-सुने, वहाँ से चुपचाप चल पड़ीं। पर माँ के दिल में भी भ्रम की कमी नहीं थी। आँखों के पानी को ही वह ममता का रूप मानती थी। रुंधे गले से पूछा, 'बेटी, आखिर जाओगी कहाँ ?'

बीजाँ ने जाते-जाते धीरे से जवाब दिया, 'जहाँ तकदीर ले जाये।'

ऐसी बातों को न घोड़े पकड़ सकते हैं, न हवा। बस्ती के लोग जानबूझकर कानों में तेल डाले हुए थे। खुसुर-फुसुर सुनी भी तो ऊपर ढक्कन ढाँप दिया। कपड़ों में कौन नंगा नहीं है ? आगे होकर बात उठाने की हिम्मत कौन करता ? बड़ों के पत्थर भी पानी पर तैरते हैं। सूरज के बगैर चल सकता है, मगर महाजन के बगैर एक पल भी नहीं चल सकता। सर झुकाये, सभी गर्दन खुजाते रहे। अगुवाई कौन करे ? ऐसी अनहोनी आज तक न तो देखी और न सुनी, पर किसी का मौन नहीं टूटा। जिसका सिर खुजाये, वो होंठ खोले ! सभी जानकर अनजान बने हुए थे।

पर हवेली से सेठ के लड़के को औरतों के लिबास में बहू के साथ बाहर निकलते देखा तो हरेक की अक्ल गश खा गयी। भगवान आँखें न देता तो देखने का यह पाप क्यूं होता ! बिना कुछ बोले हवा में कानाफूसी फैल गयी और उस कानाफूसी के साथ ही हवा खौलने लगी। इधर-उधर छींटे उछलने लगे। भला, यह पत्थर कैसे गले उतारा जाय ? सूई के सूराख से हाथी कैसे निकाला जाय ? बर्रों का छत्ता बुरी तरह छिड़ गया। भिनभिनाते लोग आप ही गली-गली से दौड़कर इकट्ठे हो गये। दो औरतों की शादी ! अरे, दो छोरियों ने आपस में ब्याह किया ! यह तो मर्दजात के नाम पर तमाचा है। इस नये चलन से तो जात-बिरादरी बिखर जायेगी ! सूरज के मुँह पर कालिख पुत जायेगी ! सेठ ने इतने बरस इस साँच के उभार को कैसे दबाये रखा ? इससे बड़ी जालसाजी और क्या होगी ? यह मामला नहीं निबटाने पर पंच-पंचायती का रौब कौन मानेगा ? यह अजगर किसी की जेब में नहीं टिक सकता।

देखते-देखते बस्ती के तमाम छोटे-बड़े पंचों ने दोनों लड़कियों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौतरफ घेरा डाल दिया। हर ओर से ललकार सुनायी दी, 'खबरदार, जो मामले का निबटारा हुए बगैर एक कदम आगे रखा तो! औरत से औरत की शादी होने पर मर्द क्या चूहों के बिल ढूंढ़ेगा!'

तीजाँ ने तड़ककर कुछ जवाब दिया, पर पंचों की भिनभिनाहट में किसी को कुछ सुनायी नहीं पड़ा। चारों ओर से न्याय-न्याय की चिल्लाहट गूंजने लगी। बीजाँ ने हाथ ऊपर उठाकर रुकने का इशारा किया और इशारे के साथ ही होंठों तक आये बोल वापस हलक में उतर गये। चुप्पी होने पर वह जोर-से बोली, 'हमें तो न्याय नहीं करवाना है, फिर भी तुम्हें न्याय की इतनी ही पड़ी है तो मैं हवेली जाकर अभी वापस आती हूँ, तब तक यहीं ठहरना।'

यह कहकर वह अदेर हवेली की ओर चल पड़ी। लोगों ने आप ही रास्ता दे दिया। कुछ देर बाद जब वापस आयी, तब उसने एक हाथ में बिजूका थाम रखा था। वो ही साफा, वही अँगरखी और वही धोती। तीजाँ के पास आकर फौरन खड्डा खोदने बैठ गयी। लोग चुपचाप उस तमाशे को देखते रहे और उसने उस चौपाल में अपने हाथों से बिजूका रोप दिया। जमीन तक लटकता साफे का सिरा। हँडिया पर बने पकोड़े-से नाक के नीचे रौबदार मूँछें। फिर खड़ी होकर जोर से कहने लगी, 'इस बिजूके से डर लगे तो हमें तुम मूँछोंवाले मर्दों से डर लगे। तुम सभी मर्द इस बिजूके से भी गये-गुजरे हो। तुम्हें ललकारकर हम आगे बढ़ती हैं, देखें कौन मर्द का बच्चा हमें रोकता है?'

इन लफ्जों का ऐसा अचूक जादू हुआ कि हरेक को उस बिजूके में अपना चेहरा नजर आने लगा। तमाम पंच बिजूके की हँडिया में अपना चेहरा नजर गड़ाकर देखने लगे और वे बेझिझक वहाँ से चल पड़ीं। किसी ने नजर उठाकर उनकी तरफ देखा तक नहीं। उनके ओझल होते ही हरेक को ऐसा लगा गोया बिजूका डग-डग हँस रहा हो। भला, इसमें हँसने की क्या बात है? बिजूके की इतनी जुर्रत कि वो जिन्दा इन्सानों का मजाक उड़ाये! उनकी तौहीन करे! सभी की आँखों में बिजूके का रूप खटकने लगा, तो सभी उस पर एक साथ इस कदर टूट पड़े कि उसे चूर-चूर कर दिया। अँगरखी, धोती और साफे का चिथड़ा किसी तकदीरवाले के हाथ लगा तो किसी के नहीं। बिजूके के परखचे उड़ने पर सबको तसल्ली हुई। फिर जैसे आये थे, वैसे ही अपना-अपना मुंह लेकर चलते बने और माँद में सर घुसाते ही हरेक मर्द शेर बनकर घरवाली औरतों पर दहाड़ने लगा।

बीजाँ और तीजाँ एक-दूसरे के गले में बाँहें डाले गाँव से बाहर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रायीं। जमीन पर चारों तरफ हरियाली छायी थी। खेतों में सिर तक खड़ी बाजरी हिलोरें ले रही थी। मेढ़ों पर लताएँ पसरी हुई थीं। छोटी झाड़ियाँ और करील हरियाली के जालों से पूरी तरह ढके थे। आकाश में बादलों की घटाएँ इधर-उधर लोट रही थीं। वसुन्धरा के अपूर्व सिंगार का किसी भी दिशा में कहीं कोई ओर-छोर नजर नहीं आ रहा था। कुदरत की लाड़ली बेटियों का पहली बार कुदरत से मिलन हुआ। हिरनियों की तरह कुलाचें भरतीं वे सुहाने पहाड़ पर चढ़ीं। उमंग की मस्ती में इधर-उधर चक्कर लगातीं ठेठ चोटी पर चढ़कर घूमर लेने लगीं। इन्सानों की बस्ती के घरौंदे उन्हें चेचक के चकत्तों की तरह उभरे हुए नजर आये।

बादलों के दल पहाड़ पर पसर गये। मूसलाधार मेह बरसने लगा। चारों ओर खुशी के नगाड़े बजने लगे। लहराती बिजलियाँ दोनों सहेलियों का रूप निरखने के लिए बार-बार मचलने लगीं। बीजाँ का मुँह पोंछते तीजाँ बोली, 'अपने दरसन की प्यासी ये बिजलियाँ तरस-तरसकर झपट रही हैं। कपड़ों के पर्दे में इनकी प्यास शायद न बुझ पाये!'

तब बीजाँ बोली, 'हमें पर्दों की जरूरत ही क्या है! बेचारी बिजलियों को क्यूं प्यासी रखें!'

अँगियाँ खोलते ही बिजलियाँ चमकीं। गोया बादलों के भीतर भी वे युग-युगान्तर से प्यासी हों। दो जोड़ी कमल के फूलों की झलक पाकर उनकी जलन मिट गयी। खुशी के नगाड़े फिर धड़िंग-धड़िंग बज उठे।

कुछ देर बाद फिर बिजलियाँ चमकीं। यह बिजली की लहर काफी लम्बी थी। वीरबहूटी की मानिन्द दो पुतलियाँ सुध-बुध बिसराये, एक-दूसरे में समा जाने को बेताब, गुँथी खड़ी थीं—होंठों का अमृत पान करती हुई!

बदली के उनमान बरसने के बाद उनका आलिंगन ढीला हुआ। सुहाने पहाड़ की बेजान जिन्दगी सार्थक हुई। बिजलियों की चमक में एक नयी आब घुल गयी।

होश आने पर आप ही अपने-अपने कपड़े वापस पहने। बिजलियाँ गड़गड़ाकर फिर चमकीं। मानो कपड़ों से उन्हें बहुत चिढ़ हो। गड़गड़ाहट के साथ ही वे फिर एक-दूसरे के आगोश में कस गयीं।

बरसात में किल्लोलें करतीं, जब वे पहाड़ी से नीचे उतरने लगीं तो उन्हें ऐसा लगा, गोया वे फूलों की मानिन्द हलकी हो गयी हों। चारों ओर खुशी के झरने बह रहे थे। अघायी हुई जमीन अंग पसारकर बादलों की पवित्र प्रीत से सराबोर हो रही थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहाड़ी की तलहटी तक आने पर उन्हें अपने प्यार की ऊँचाइयों का आभास हुआ। बादलों के अनछुए पानी से भी निर्मल और पवित्र सत इस दुनिया में कोई है तो उनकी गाढ़ी प्रीत!

पर फकत प्रीत के सहारे ही इन्सानों की दुनिया में गुजर नहीं हो सकती और तिस पर वे दोनों लड़कियाँ थीं। बस्ती के मर्दों से बैर मोल लेकर वे अपनी तरह का एक नया ही घरवास करना चाहती थीं। यह तो पहाड़ को उथेलने जैसी नामुमकिन चुनौती थी। उनके वश में हो तो वे इन्सानों की बस्ती की ओर मुँह तक न करें।

बिना सोचे-विचारे, बातें करते-करते वे सीधी भूतोंवाली बावड़ी पहुँचीं। धरती पर अँधेरा रिसने लगा था। बरसात थमने पर उन्होंने अपने कपड़े निचोड़े।

साँय-साँय करता जंगल। सूनी बावड़ी। वहाँ एक सौ अट्ठाईस भूतों का बसेरा था। रात को चिड़िया भी पर नहीं मार सकती थी। और जिसने भी यह जुर्रत की, वो वापस अपने ठिकाने नहीं पहुँच सका। उस बावड़ी से कोस दूर निकलते हुए भरी दोपहरी में भी इन्सान डरता था।

दोनों बावड़ी की जगत पर बैठीं। बेखौफ बातों में मशगूल। ऊपर आकाश में तेरस का चाँद बादलों से आँख-मिचौनी खेल रहा था। अचानक बीजाँ बोली, 'इस चाँद ने तुझसे छिपाकर मेरे कान में एक मन्तर सुनाया। एक चुम्मा दे तो बताऊँ।'

तब तीजाँ बोली, 'तू मुझे चुम्मा दे तो मैं तुझसे यह मन्तर पूछूँ ही नहीं।'

'नहीं, बात तो जरूर पूछने लायक है।'

'तो फिर बिना पूछे ही बता दे।'

'यह चाँद मुझे बार-बार कुरेद रहा है कि पास बैठे चाँद को न देखकर, तू मेरा भद्दा चेहरा क्यूँ देख रही है?'

'झूठ, यह मन्तर तो उसने मुझसे कहा।'

दोनों चाँद एक-दूसरे का अमृत पीने लगे ही थे कि यकायक उनके कानों में एक गरजती हुई आवाज पड़ी, 'मैं जानता था कि तुम यहीं आओगी।'

चौंककर बाँहों का कसाव ढीला किया। इधर-उधर देखा। एक सफेद-झक आदमी सामने खड़ा मुस्करा रहा था। गोया चाँदनी के साँचे में ढला हो। वो मुस्कराते कहने लगा, 'आज हमारी सूनी बावड़ी पवित्र हुई। पर बड़ी हैरानी की बात है कि तुम्हें भूतों की बावड़ी पर चढ़ते हुए भी डर नहीं लगा!'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे झिझककर खड़ी हुईं। बीजाँ धीरे से बोली, 'डर तो इन्सान से लगता है, भूतों से कैसा डर ?'

बीजाँ के मुँह से ये बोल सुनकर भूतों का सरदार मुस्कराते कहने लगा, 'यह बात तो तेरी सोलह आना सही है। बेईमान इन्सानों की काली करतूतों की वजह से ही हम यह योनि भुगत रहे हैं। डरनेवालों को और अधिक डराकर बदला चुकाते हैं! इन्सान के नाम से ही हमें नफरत है। आज ही इन हरामजादों ने गाँव की चौपाल पर तुम्हें सताने में कोई कसर नहीं छोड़ी।'

तीजाँ ने बीच ही में हैरानी से पूछा, 'तुम्हें कैसे मालूम ?'

भूत आगे कहने लगा, 'तुम्हारी शादी की चर्चा इन्सानों की जबान से हमारे कानों में पड़ी। फिर तमाशे के शौकीन हम क्यूँ पीछे रहते ? इन्सानों की आँखों से अदीठ हमारी पूरी जमात ने यह खिलवाड़ देखा। देखते ही तुम दोनों पर प्यार आ गया। तुम्हें बचाने के लिए बिजूकेवाला हुल्लड़ हमीं ने करवाया था, वरना उन जंगलियों से तुम्हारा छुटकारा होता भला! कोई जोर-जबरदस्ती न करे, इस खातिर ठेठ पहाड़ तक मैं तुम्हारे साथ था।'

यह बात सुनकर वे शर्म से सिमटने लगीं तो सरदार को हँसी आ गयी। हँसते हुए बोला, 'तुमने बिजलियों से तो शर्म नहीं की, फिर मेरी बात सुनकर क्यूँ शरमा रही हो! तुम्हारी प्रीत निहारकर मेरा जीवन सार्थक हो गया। मैं इस जमात का सरदार हूँ। तुम बेखौफ यहाँ घरवास करो। इस बावड़ी के करीब ऐसा इकथम्भा महल खड़ा करूँगा कि राजा तक को रश्क हो। राज्य के खजाने में चाहे उल्लू बोलें, पर तुम्हें कभी कोई कमी नहीं होगी। मरजी मुताबिक तुम्हारी छोटी-बड़ी तमाम इच्छाएँ पूरी होंगी। तुम्हारे खालिस प्यार के दरसन से मुझे जो सुख मिला है, उसका एहसान मैं कभी नहीं चुका सकूँगा। औरतों के सिवाय मर्द की छाया भी तुम्हारी ओर तेज नजर से नहीं देख सकेगी! अब इस इकथम्भे महल में जी-भरकर रँगरलियाँ मनाओ।'

सरदार के हाथ का इशारा पाकर उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो सामने सफेदझक इकथम्भा महल दिप-दिप कर रहा था! कैसी बेमिसाल जालियाँ और कैसे अनोखे झरोखे! भीतर रोशनी जगमगा रही थी। बाहर तेरस की चाँदनी चँवर डुला रही थी।

अपनी प्रीत का ऐसा वरदान तो नहीं जाना था! दोनों इकथम्भे महल में घुसीं तो आक-बाक रह गयीं! केशर का आँगन। गुलाल की दीवारें। ईंगुर की छत। कमल का पलंग। गुलाब के फूलों की सेज। वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खुशी के झूले पर झूलने लगीं। कुंकुम के रंग को भी मात करनेवाले वे दोनों पंछी अंगरलियों के आनन्द में ऐसे मगन हुए कि उन्हें दीन और दुनिया का कुछ होश ही न रहा। भला, कामदेव की इस आदिम समाधि का मुकाबला कौन कर सकता है?'

आखिर समाधि टूटने पर फिर चेतना लौटी। एक-दूसरे की आँखों में नजर पिरोते दोनों एक साथ मुस्करायीं। उस पवित्र मुस्कराहट में वाणी के सुर घोलते बीजाँ बोली, 'भूतों के सरदार का जीवन फिर सार्थक हुआ होगा।'

तीजाँ के मुँह से अनजाने बोल आप ही फिसले, 'साथ ही स्वर्ग के देवताओं की अमरता भी निहाल हुई होगी।'

तड़के जब वे इकथम्भे महल से बाहर निकलीं तो सूर्योदय देखकर उन्हें ऐसा लगा गोया आज का सूर्य उनकी रानों के जोड़ की पवित्र पंखुड़ियों से उगा हो! उस रात के बाद अपनी पुरानी खोह का निवास छोड़कर सूरज हमेशा उसी नये ठिकाने से उगने लगा, सो आज तक उगता आ रहा है। तमाम दुनिया की खुशियाँ इकथम्भे महल की सेजों पर बसने के लिए छटपटाने लगीं। उनकी एक ही प्यास में ब्रह्माण्ड की समूची प्यास समायी हुई थी।

सुख का पखवाड़ा ताली बजते गुजर गया। भूतों के सरदार की देखभाल में कोई कमी नहीं थी। एक दिन भूतों के सरदार ने उनसे कहा, 'तुम तो अपने सुख में सारी दुनिया को भूल गयीं, पर दुनिया तुम्हें एक पल के लिए भी नहीं भूली। बेझिझक बस्ती का चक्कर लगाओ। तुम्हें कोई जोखम नहीं होगी। तुम्हारी पीठ के पीछे मैं हरदम तैयार रहूँगा। बस्ती की औरतों को यहाँ आने की पूरी छूट है। अकेला तो सूरज भी घुटता है! चाँद भी छीजता है।'

दोनों के मुँह से एक ही बात निकली, 'पर हम तो दो हैं।'

भूतों का सरदार मुस्कराते बोला, 'पर तुम्हारी जान तो एक है और सहवास की वेला उसमें भी कसर पड़ जाती है।'

अब उनकी झिझक भी काफी कम हो गयी थी। सरदार की बात सुनकर, खिलखिलाकर जोर से हँस पड़ीं। उनकी हँसी के सामने भूतों के सरदार की मुस्कराहट फीकी पड़ गयी।

इसके बाद तितलियों के उनमान उड़तीं और चक्कर लगातीं वे इन्सानों की बस्ती में पहुँचीं। वे ही बाड़ों और दीवारों के घेरे। वे ही छान-झोंपड़ों के दड़बे। अपनी-अपनी हदबन्दी। अपने-अपने चौके और अपने-अपने चूल्हे। अपनी-अपनी आँच और अपना-अपना धुआँ। तेरी-मेरी दाँताकसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तूं-तू, मैं-मैं। ठौर-ठौर घूरे का कचरा। सुख-शान्ति की खातिर आपा-धापी के दरमियान झाँकता दिवाला। औलाद की खातिर हाय-तोबा। बदबू मारते पोतड़े। चारों तरफ गन्दगी। घर-घर कलह और चिल्ल-पौं।

इतने बरस वे इस नरक में कैसे पलीं? कैसे बड़ी हुईं? आज उस गुजरी जिन्दगी को याद करते ही घिन आती है। हाय थू! पर बस्ती के लोग तो उसी तरह मगन होकर आँगन में लाल-पीली अल्पना सँजोते हैं। दीवारों पर चित्र आँकते हैं। उत्सवों पर गीत गाते हैं। त्योहारों पर पकवान बनाते हैं। झूला झूलते हैं। नाचते-गाते हैं। किसी को कहीं गन्दगी नजर नहीं आती!

आज उन्हें दूसरी मर्तबा साथ देखकर कोई भी इन्साफ करने के लिए तैयार नहीं हुआ। उलटे डर के मारे दरवाजे बन्द कर लिये। हरेक के दिल पर बावड़ीवाले भूतों का आतंक छाया हुआ था। चलते ही गर्दन मरोड़ दें! अपना-अपना गला सभी को प्यारा होता है। ये दोनों देवियाँ भूतों के साथ ही रहनेलायक थीं। आखिर उनकी सोहबत करके ही उन्हें चैन मिला। इनके लच्छनों का हो, वो इनसे निबटे। जो भी मिला, सर झुकाये निकल गया। तारों से गुँथी लाठियों तक में कँपकँपी पैठ गयी।

बीजाँ का बाप चबूतरे पर बैठा हिसाब-किताब कर रहा था कि सहसा उसकी नजर बेटी और बहू पर पड़ी। मूर्छित होते बाल-बाल बचा। थर-थर काँपते खड़ा हुआ। धोती की लाँग खुल गयी। हाथ जोड़कर बोला, 'तमाम गहना-दहेज सूद समेत देने को तैयार हूँ, मुझ गरीब पर मेहर रखना।'

बीजाँ चिढ़कर आगे बढ़ी। गर्दन हिलाते बोली, 'हमें गहने-दहेज की चाह नहीं है। हम तो फकत मिलने आयी हैं। हमें इस घर का तिनका भी नहीं चाहिए।'

होंठों के कोनों से थूक उछालते सेठ बोला, 'क्यूं नहीं चाहिए? तू मेरी बेटी नहीं है क्या?'

'बेटी हूँ, सो मुझे मालूम है! बाप के प्यार को भी जानती हूँ! पर आयन्दा लेन-देन का जिक्र किया तो मैं यहाँ कभी नहीं आऊँगी।'

बापू को फौरन कोई जवाब नहीं सूझा। हकलाहट थमने पर फिर हाथ जोड़कर बोला, 'अब तुम्हारा शाही ठिकाना है। बार-बार आया भी कैसे जा सकता है! खबर मिलते ही मैं हाजिर हो जाऊँगा।'

भूतों के डर का उसने जानबूझकर जिक्र नहीं किया। बेटी के अन्तस में सूग और घिन का पार नहीं रहा। मानो मल के दलदल में फँस गयी हो। वहीं से वापस मुड़ गयी। वैसे भी ससुराल की दहलीज पर चढ़ने के लिए तीजाँ की रत्ती-भर भी इच्छा नहीं थी। वह भी साथ ही मुड़ गयी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खुली लाँग को सँभालते हुए बापू खुच-खुच पीछा करते बोला, 'बेटी, माँ से मिले बगैर ही चली जायेगी ? वह बेचारी रो-रोकर अन्धी हुई जा रही है।'

बीजाँ जाते-जाते ही बोली, 'माँ को वहाँ भेज देना। कोई जोखम नहीं होगी।'

यह कहकर बीजाँ तेज चलने लगी तो तीजाँ को भी उसका साथ करना पड़ा। उसके मन की उथल-पुथल वह बिना कहे ही समझ गयी। गाँव की सीमा से बाहर निकलने पर बीजाँ मुँह मस्कोरकर बोली, 'अब तो इत्र-फुलेल के हौज में नहाऊँ तो चैन मिले।'

तीजाँ उसे बहलाने के बहाने कहने लगी, 'क्यूँ, अपनी साँसों की खुशबू क्या इत्र-फुलेल से कम है ?'

यह कहकर उसने बीजाँ को अपनी बाँहों में भर लिया। टहूकते मोर झुक-झुककर मुजरा लेने लगे। टर्र-टर्र के बहाने मेंढ़क हवा में मिठास घोलने लगे। कुलाँचें भरती हिरनियाँ एक जगह गड़ी हुई-सी उस मिलन को निरखने लगीं। कबूतर खुशी के मारे गुटर-गूँ करते मगन होकर नाचने लगे। झींगुर की अविरल स्वर-लहरी से जंगल के कण-कण पर जादू-सा छा गया। आलिंगन के उस अपूर्व बन्धन के बहाने मानो समूची कुदरत ने मुक्ति का वरण किया हो।

थोड़ी देर के बाद उन्हें इकथम्भे महल के एकान्त की याद सताने लगी और वे वहाँ से बावड़ी की तरफ सरपट भागीं। गलीज बस्ती का नरक बहुत-बहुत पीछे छूट गया था।

दूसरे दिन घड़ी दिन चढ़े दरवाजे पर लगातार दस्तक सुनायी दी तो बीजाँ चौंककर उठ बैठी। तीजाँ को जगाकर झटपट कपड़े पहने और धम-धम सीढ़ियाँ उतरकर चन्दन का दरवाजा खोला। मौसेरी बहन के साथ माँ खड़ी थी। बीजाँ कुछ बोले, उससे पहले ही बहन मसखरी की मुस्कराहट छितराते बोली, 'इतनी देर से तो शादीशुदा औरतें भी नहीं उठतीं।'

अभी तक बीजाँ की आँखों में नींद की खुमारी शेष थी। माँ का लिहाज बिसरा आँखें मसलते बोली, 'हम शादीशुदा औरतों से क्या कम हैं!'

इकथम्भे महल में कदम रखते ही वे दोनों अपना आपा ही खो बैठीं। कानों सुनी बातों पर अब यकीन हुआ। भूतों की जमात को काबू में किये बगैर ऐसी सिरजना कौन कर सकता है ? पर यह कैसे मुमकिन हुआ ! बेइन्तहा अचरज की वजह से उन्हें इकथम्भे महल का जो नजारा था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उससे भी चौगुना नजर आया। सोचकर तो बहुत-सी बातें आयी थीं, पर एक शब्द भी जबान से कहते नहीं बना। मानो दो मकड़ियाँ सोने के महल में फँस गयी हों।

समूचा नजारा देखने के बाद भौंचक्की सेठानी बीजाँ के चेहरे को टुकुर-टुकुर निहारती, सपने में बर्राती-सी बोली, 'क्या सचमुच अपनी कोख से मैंने तुझे जन्म दिया है!'

बीजाँ मुस्कराते कहने लगी, 'यह तो तू जाने या दाई जाने। भला, मैं इसका क्या जवाब दे सकती हूँ!'

सेठानी की बेतुकी बात को सुनकर बहन झुँझला उठी। उसे सचेत करते धीरे से बोली, 'क्या यही पूछने के लिए यहाँ आयी हो?'

तीजाँ ने मीठा उलाहना देते कहा, 'क्यूँ, आना बेकार गया क्या?'

फिर बीजाँ ने बड़े उत्साह से उन्हें नाना प्रकार के व्यंजन खिलाये। उसके बाद उन्हें सोने के पलँग पर सुलाकर दोनों ने साथ बैठकर खाना खाया।

फिर बीजाँ माँ की तरफ गयी। दोनों एक-दूसरे की ओर पीठ किये सो रही थीं। नींद न आये, बहुत कोशिश की, पर सोने के पलँग की उस मखमली सेज पर तो जखमों से कराहता इन्सान भी खर्राटे भरने लगता है। फिर थकावट से निढ़ाल तन्दुरुस्त औरतों की क्या बिसात!

तीसरे पहर दोनों चौंककर उठ बैठीं। चारों ओर देखा। ऐसे ठाट-बाट की खातिर तो राजा भी तरसता होगा। खुली आँखों का ऐसा सपना बहुत तकलीफदेह होता है। भानजी को उकसाते माँ ने कहा, 'आखिर तो बात करने पर ही होगी। यूँ चुप रहने से इन्हें कैसे पता चलेगा?'

भानजी एक गहरी आह भरकर बोली, 'ऐसा रंगमहल देखकर तो बड़ों-बड़ों का दिमाग चक्कर खा जाये। अब न तो कुछ सोचा जा सकता है और न कुछ नजर ही आता है।'

चारों साथ बैठकर घड़ी-अधघड़ी बतियाती रहीं। फिर मौसेरी बहन हिम्मत जुटाकर बोली, 'तीसरे दिन ही समूचे इलाके में इकथम्भे महल की बात फैल गयी। ऐसी बातें, बिना किसी से कहे, हवा के साथ पहुँचती हैं। भूतों की जमात का डर नहीं होता तो तुम दोनों से शादी करने के लिए दूसरा महाभारत छिड़ जाता। चढ़ाई करने को आतुर राजा तो बीच राह से ही भाग खड़ा हुआ! देश का मालिक हार मान ले, फिर किसकी हिम्मत? छोटे और बड़े, जवान और बूढ़े सब अन्दर-ही-अन्दर कसमसा रहे हैं।'

तीजाँ ने बीच ही में पूछा, 'हमने किसी का क्या बिगाड़ा है?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस वार माँ ने जवाब दिया, 'इससे बड़ा बिगाड़ और क्या होगा?' तुम्हारे घरवास से मर्दों का सारा पानी ही उतर गया।'

बीजाँ बहन की ओर देखते बोली, 'जिसका उपाय तो हमारे पास भी नहीं है।'

यह सुनकर बहन को बात आगे बढ़ाने की कड़ी मिली। हौसला बढ़ा। संजीदगी से समझाने लगी, 'तुम्हारे पास उपाय है, तभी तो हमने यहाँ आने की हिम्मत की।'

दोनों चहेतियाँ अच्छी तरह कान देकर सुनने लगीं। उसकी सीख जारी थी, 'तुम्हारा व्याह तो फकत एक मखौल था। अभी तो तुम्हारी छाया को भी मर्द का पसीना नहीं लगा।'

तीजाँ फौरन बोली, 'और न लगने देंगी!'

'ना बेटी, यह सपने में भी मुमकिन नहीं है। औरत का पानी बगैर चल सकता है, पर मर्द के पसीने बगैर नहीं चल सकता। तेरे बापू के पास बहुत-से रिश्ते आये हैं। इलाके के बेजोड़ अमीर नौजवान तुम दोनों से अलग-अलग शादी करने को तैयार हैं। खोखले गुमान को गोली मारो। अच्छा घर बसाओ। गृहस्थी सँभालो। दूधों नहाओ, पूतों फलो और वंश की बेल बढ़ाओ। तेरे बापू दोनों को दुगुना दहेज देने के लिए बेताब हो रहे हैं।'

तीजाँ मन्द-मन्द मुस्कराते बोली, 'हमारे बहाने वंश की बेल के ताँतें बढ़े, उसका फल तो हम भोग ही रही हैं! अब तो इन ताँतों को जड़ से उखाड़ना है। हमारे लिए तो यही सबसे बड़ा सुख है। फकत ताली बजाकर हँसने के सिवाय इस बात का कोई जवाब नहीं हो सकता।'

यह सुनकर माँ का चेहरा उतर गया। बीजाँ की ओर मुखातिब होकर पूछा, 'बेटी, तेरा क्या इरादा है!'

'मेरा इरादा कौन-सा अलग है! अब इस सीख की खातिर यहाँ आने की तकलीफ मत उठाना।'

बेटी की आँखों का रंग देखकर माँ का कलेजा बैठने लगा। भूतों की जमात का खयाल आते ही उसके रोयें खड़े हो गये। भानजी की ओर देखकर धीरे से बोली, 'काफी देर हो गयी, अब चलना चाहिए।'

भानजी चुपचाप उठकर चल पड़ी। इकथम्भे महल के निवास का जितना सपना देखा, वो ही बेहतर। बीजाँ तो दरवाजे तक छोड़ने भी नहीं गयी।

दूसरे दिन फिर वही दस्तक सुनायी दी। हड़बड़ायी बीजाँ ने दरवाजा खोला। दहलीज पर मौसेरी बहन सर झुकाये अकेली खड़ी थी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बीजाँ ताज्जुब से बोली, 'रात को सपने में मैंने तुझे दरवाजे पर ठीक इसी तरह खड़ी देखा था। बोसा लेते ही तू वापस भाग गयी। मैंने बहुत आवाजें दीं, पर तूने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। अभी फिर बोसा लेती हूँ, देखूँ कैसे भागती है!'

यह कहकर बीजाँ ने मुस्कराते हुए झट बहन के बायें गाल का बोसा ले लिया। बोसे के साथ ही बहन की आँखों से झर्र-झर्र आँसू बहने लगे। बीजाँ की मुस्कराहट बुझ गयी। उसकी बाँह खींचते बोली, 'मेरे चुम्बन का बुरा मान गयी? मैंने तो···!'

बहन बीच ही में भरे गले से बोली, 'भला, मैं तेरे चुम्बन का बुरा मानूँगी? मुद्दत से एकत्रित आँसुओं का बाँध चुम्बन का परस पाते ही फूट पड़ा। बहुत सर खपाया पर अभी तक यह नहीं जान सकी कि तुम दोनों ने इतनी हिम्मत कैसे की? मुझमें तो तुम्हारा मेल देखने लायक भी माद्दा नहीं है। कल मौसी के साथ कहने का कोई मौका नहीं मिला तो आज अकेली आयी।'

तीजाँ को देखकर फिर उसका दिल भर आया। वह बारी-बारी से दोनों चहेतियों के चेहरे देखती, जार-जार रोने लगी। उसकी पीड़ा आँसुओं के सिवाय कुछ भी दरसाने लायक नहीं थी। इस खातिर उन्होंने उसे रोने से रोका नहीं। एक-एक आँसू में समन्दर का खार कसियाया हुआ था।

आँसू थमने के बाद हृदय में बसे खार को मुँह से उगलते कहने लगी कि शादी पर पीहर छोड़ने के दुख के साथ ससुराल की खुशी भी कम नहीं थी, पर मेड़ी की अनमोल रात ही उसका दिवाला पिट गया। मर्द होते हुए भी हथलेवे के खाविन्द में मर्दानगी का लवलेश भी नहीं था। ससुरालवालों ने सब-कुछ जानते हुए भी धूमधाम से बरात चढ़ायी। शायद कुँवारी बहू के यौवन का परस पाकर उसमें गर्मी आ जाये। जवानी मचले। पर उनके सोचने में गलती हो गयी और उनकी गलती का नतीजा भुगतना पड़ा, अबूझ पत्नी को। और कोई जोर नहीं चला तो अपने टूटे अहं की बौखलाहट में पति ने उसके सारे शरीर को ठौर-ठौर दाँतों से काट डाला!'

इतनी भागवत सुनाने के बाद उसने अपना बदन उघाड़कर दिखाया। पीठ, छाती, बाँहें, नितम्ब और रानों पर ठौर-ठौर नीले चकत्ते उभरे हुए थे। माँ-बाप के सामने रोने-धोने पर भी कोई फल नहीं निकला। ऊँचे खानदान की मर्यादा दिखती आँखों नहीं टूटती, पर आँखों से अदीठ जो करतब होते हैं, उनका भण्डाफोड़ कौन करे? ससुर और जेठ की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनमानी से वह कितने दिन बची रह सकती थी ? उसे मजबूरन झुकना पड़ा। चीते की माँद में भेड़ की जान कब बची है ? खाविन्द को मालूम होने पर भी उसने कोई एतराज नहीं किया। कारोबार में और अधिक मन लगाने लगा। उसकी शादी के बाद खूब बरकत हुई। खूब तिजारत फैली। सुलक्षणी बहू से सभी खुश थे।'

बीजाँ की मौन समाधि टूटी। एक गहरा निश्वास भरते बोली, 'और उनके साथ तुझे भी खुश होना पड़ा।'

'और चारा भी क्या था!'

तीजाँ ने पूछा, 'अब भी खुश है ?'

'हाँ, इतने दिन तो खुश ही थी, पर तुम्हारी हिम्मत देखकर मेरे दुख ने फिर करवट बदली है।'

बीजाँ उतावली-सी बोली, 'अब तुझे कहीं जाने की जरूरत नहीं। तीनों मिल जायें तो अपने सामने कौन टिक सकता है ?'

वह सिर हिलाते बोली, 'ऊँ-हूँ, मैं यहाँ रहने के लिए नहीं आयी हूँ। तुम्हारे सामने रोकर मन हल्का हो गया। अब तो मरने से पहले ससुराल नहीं छूटेगा। लाखों की जायदाद है। ढोर-डाँगर हैं। सात तिमंजली हवेलियाँ हैं। इतनी आसानी से यह मोहपाश नहीं छूट सकता। अभी तो मेरी कोख भी नहीं उघड़ी। जायदाद का वारिस सौंपकर ही मुझे चैन मिलेगा। देवर लेने आया है। परसों मुझे जाना होगा। पर तुम्हारा एहसान मैं हरगिज नहीं भूल सकूँगी। तुम्हारी हिम्मत और तुम्हारा सुख देखकर मुझे सम्बल तो जरूर मिला, पर तुम्हारे साथ रहने लायक मुझमें शक्ति नहीं है।'

कहना तो बहुत कुछ था, पर आगे बोला नहीं गया। गला रुँध गया। आँखें भर आयीं। थोड़ी देर बाद आँखें पोंछकर बोली, 'कल भी तुमने मुझे अलग बिठा दिया था। आज तुम्हारे शामिल खाऊँगी। तुम्हारा जूठा खाने से शायद कुछ सुमति सूझे।'

तीजाँ ने कहा, 'सुमति तो तुझे पहले ही सूझी हुई है, पर संस्कारों का भूत पीछा नहीं छोड़ता।'

भूत का नाम लेते ही भूतों का सरदार अचीता नमूदार हुआ, पर बहन डरी नहीं। उस चमचमाती आब की तरफ टुकुर-टुकुर देखने लगी। अगले ही पल सरदार बोला, 'मुझे किसलिए याद किया है ?'

तीजाँ को बरबस हँसी आ गयी। कहने लगी, 'तुम वो भूत नहीं हो। तुम तो भावी की अदीठ शाश्वत ज्वाला हो। फिर भी खूब आये। तुम्हारी ताकत के बल पर ही हम जूझ रही हैं।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूतों का सरदार झेंपते बोला, 'ज्यादा तारीफ मत करो, मैं इतरा जाऊँगा।'

फिर बीजाँ की मौसेरी बहन की तरफ देखकर कहने लगा, 'मैंने तुम्हारी दर्द-भरी कहानी सुनी। अब तुम खुशी-खुशी ससुराल जाओ। तुम्हारा पति जवाँमर्द बना मिलेगा। जेठ और ससुर अब तुम्हारी ओर आँख उठाकर भी नहीं देख सकेंगे। पति के अंश से ही तुम्हारी कोख फलेगी। पाँच पाण्डव जन्म लेंगे।'

उसकी खुशी की सीमा न रही। तीजाँ ने उसकी हालत देखकर कहा, 'इस खुशी से कहीं तू पागल न हो जाये!'

बीजाँ ने भूत की ओर मुखातिब होकर पूछा, 'क्या तुम यह काम भी जानते हो?'

भूतों का सरदार गुमान से बोला, 'ऐसा कोई काम नहीं जो हम न कर सकें।'

उस अचीते वरदान की खुशी में चारों ने साथ बैठकर खाना खाया। कुछ देर बतियाने के बाद बीजाँ और तीजाँ बहन को बस्ती तक पहुँचाने गयीं। बार-बार पुरजोर हिदायत दी कि वह ससुराल पहुँचते ही अपने नये सुख की खबर दे।

वापस लौटते हुए बीजाँ को गुमसुम सोचते देखकर तीजाँ ने पूछा, 'तू किस सोच में पड़ गयी? मुझे नहीं बतायेगी?'

बीजाँ रुककर कहने लगी, 'भला, तुझसे कोई भेद कैसे छुपा रह सकता है! बात तो वाकई गौर करने लायक है। तू ध्यान देकर सुने तो बताऊँ?'

तीजाँ आँखें झपकाते बोली, 'तेरी अक्ल तो नहीं मारी गयी! तेरी बात सुनने के लिए मुझे ध्यान देने की जरूरत पड़ेगी?'

तब बीजाँ ने उसकी आँखों में नजर गड़ाकर पूछा, 'इस वरदान से तुझे कोई नयी बात नहीं सूझी?'

तीजाँ उसे बाँहों में भरकर बोली, 'तुझे सूझी, वह मुझे भी सूझी, पर अब उसके लिए सोचना ही बेकार है। अपने सुख में कमी क्या है?'

'कमी तो कुछ नहीं, पर आज इस वरदान से मेरे अन्तस का पछतावा फिर जाग उठा। तू हाँ कहे तो तेरे साथ हुए धोखे का कलंक अब भी मिट सकता है।'

'पर मैंने तो उसे कभी कलंक नहीं माना।'

'वो तो ठीक है, पर मैं उसकी कालिख से आँखें कैसे मूंद लूं? और आँखें मूंदने पर भी कालिख कम कहाँ होती है? वो उलटे अधिक फैलने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगती है। क्या तू मेरी इतनी-सी बात भी नहीं मानेगी ?'

बाँहों की बढ़ती पकड़ में कुनमुनाते तीजाँ बोली, 'मैं नहीं मानती तो यह सुख कहाँ नसीब था।'

'पर तू इसे ही सुख की सीमा क्यूं मानती है ?'

'सीमा है, तभी तो सीमा मानती हूँ।'

'ऊँ-हूँ, अभी सीमा बहुत दूर है।'

'यह तो फकत भ्रम का छलावा है, पर फिर भी तुझे सुख की सीमा आगे नजर आती हो तो यह वरदान तू ही माँग ले।'

बीजाँ आलिंगन छुड़ाकर अलग हुई। मीठी नाराजगी जतलाते बोली, 'तू अब भी ठीक से समझी नहीं। तेरे वरदान माँगने से ही मेरा पाप धुलेगा।'

'पर मैं तो किसी भी योनि में मर्द नहीं बनना चाहती। तेरी बचपन में लड़के की तरह परवरिश हुई, तेरी इच्छा हो तो मेरी मनाही नहीं है। देखें, इस घरवास की चासनी कैसी होती है ?'

तीजाँ किसी भी तरह नहीं मानी तो आखिर बीजाँ को राजी होना पड़ा। उस कामना के साथ ही उसकी चिमटी में मूँछों को ताव देने की खुजली फिर चलने लगी। मर्द के लिबास में अब वो असली मर्द होगी।

इकथम्भे महल के नजदीक आने पर उन्हें भूतों का सरदार दरवाजे पर खड़ा नजर आया। अब बीजाँ से एक पल भी सब्र नहीं हुआ। तीजाँ से आगे निकलकर सरदार के करीब पहुँची। निःसंकोच पूछा, 'क्या बहन के पतिवाला वरदान मेरे लिए नहीं फल सकता ?'

तीजाँ को सुनाने की खातिर भूतों का सरदार जोर से बोला, 'फल क्यूं नहीं सकता ? पहल करने में मुझे भी संकोच हुआ। तुम्हारी मन-चाही हो तो मेरे पास वरदानों की कमी थोड़े ही है!'

तीजाँ के चेहरे की सुर्खी बढ़ गयी। पैर के अँगूठे से मिट्टी कुरेदते हुए, नजर झुकाकर बोली, 'इतनी भी क्या जल्दी है ? आज इस घरवास की आखिरी साध तो पूरी कर लें।'

भूतों का सरदार मुस्कराते कहने लगा, 'इस घरवास का इतना ही चाव है तो इसमें एक गुंजाइश और रख देता हूँ। अगर मर्दपन से मन भर जाये तो बीजाँ अपनी मंशा दरसाते ही वापस औरत बन जायेगी।'

मर्दपन के ख्वाब देखती बीजाँ ने भूतों के सरदार को टोकते हुए कहा, 'बड़ी मुश्किल से यह वरदान मिला है, फिर ऐसी मंशा मैं क्यूं दरसाऊँगी ?'

भूतों के सरदार ने फौरन जवाब दिया, 'जैसी तुम्हारी मरजी।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस वक्त सुरमई आकाश में छुट-पुट तारे दिखायी देने लगे थे। उनकी ओर देखते तीजाँ बोली, 'पर आज की रात तो मेरी है। एक पल भी सोने नहीं दूंगी!'

बीजाँ ने भी उधार नहीं रखी। मुँह फिराकर बोली, 'फिर तुम्हें हमेशा रतजगा रखना पड़ेगा, सोच लेना।'

'इस रात के बाद तो मुझे कुछ सोचना ही नहीं है।'

तीजाँ के ये बोल साफ सुनने के बाद भी बीजाँ को इसका मर्म समझ में नहीं आया। दरवाजा बन्द कर, दोनों पायल झंकारती हुई रंगमहल में पहुँचीं। तीजाँ को आज बहुत जल्दी थी। बीजाँ ने अँगिया के बन्द खोले, तब तक उसने तमाम कपड़े उतार डाले। बीजाँ का हाथ खींचते बोली, 'आज तुझे इतनी तसल्ली कैसे है? पहले तो हमेशा बेसब्र होती थी।'

उसके बाद दो गुलाबी क्रौंच गुत्थमगुत्था होकर फड़फड़ाने लगीं, सो रातभर दम नहीं लिया। तीजाँ सोच रही थी कि यह रात कभी नहीं ढले तो अच्छा है। और बीजाँ सोच रही थी कि कितनी जल्दी सवेरा हो।

पर दोनों चाहे जो सोचें, रात को तो वक्त पर, अपने हिसाब से ही ढलना था और वह अपने हिसाब से ही ढली। तीजाँ की आँखों को सवेरे की वह सुहानी धूप बहुत तेज लगी।

और उधर बीजाँ को सूर्योदय के साथ ही अपने समूचे बदन में एक सरसराहट-सी पसरती महसूस हुई। देखते-ही-देखते उसकी छातियाँ सपाट हो गयीं। ऊपर के होंठ और गालों पर मूर फूटने की खुजली चलने लगी। खुजलाते-खुजलाते उसने अपने उपस्थ को टटोला। वाकई वह एक भरपूर जवाँमर्द बन गया था। समूचे बदन पर काली और घुंघराली रोमावली। बेइन्तहा खुशी की उमंग से शीशे में अपना चेहरा देखा। एक लमहे के लिए वह अपनी ही बलखाती मूँछों से डर गया। पर खुद के डरने से कैसे चलेगा? औरों को डराने में ही बाँकी मूँछों की शान है!

सामने खूँटी पर साफा, अँगरखी और धोती दिखी तो वो लपककर आगे बढ़ा। मर्दाना लिबास उसने बरसों अपने हाथों से पहना था। अदेर तिकाछी धोती पहनी। अँगरखी पहनी। फबता साफा बाँधा। घुटनों तक लम्बे साफे का छोर, अपनी आन में अलग ही झूल रहा था। गुमान से इधर-उधर देखा। तीजाँ कहीं नजर नहीं आयी। इस वक्त तो उसे यहीं होना चाहिए था। जोर-जोर से तीजाँ को पुकारते हुए इकथम्भे महल में चक्कर लगाने लगा। हमाम से तीजाँ की आवाज सुनायी दी, 'मैं नहा रही हूँ, अन्दर मत आना!'

आज यह नयी शर्म कैसी? पर हमाम से आयी इस आवाज की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओर सीधा लपका। लालों का पर्दा हटाकर भीतर घुसा। तीजाँ लज्जा से दोहरी होते बोली, 'तुम जरा उधर मुँह करो, मैं कपड़े पहन लूँ।'

पति ने बाहर निकलते हुए ताज्जुब से पूछा, 'ऐसी शर्म पहले तो कभी नहीं की ?'

'पहले की बात और थी।'

'पर हम तो वे ही हैं! तू मेरा नया रूप देख तो सही। ये मूँछें, यह साफा !'

'साफा तो पहले भी था।'

पति झुँझला उठा। चिढ़ते बोला, 'वहाँ खड़े-खड़े क्या बकवास कर रही है, जल्दी बाहर क्यूँ नहीं निकलती ?'

कि इतने में दमकता सिंगार किये तीजाँ बाहर आयी। पति को नजर भरकर ऊपर से नीचे तक निहारा। दिलकश रूप! बाँकी मूँछें! गठीली कदकाठी! काली भुजंग रोमावली! तीजाँ नजर उतारते बोली, 'कहीं नजर न लग जाये। चलो, कलाई पर काला डोरा बाँध दूँ।'

पति को आज तीजाँ का रूप ही दूसरा नजर आया। कैसी रसीली आँखें! कैसा मदभरा यौवन! पति के रोम-रोम से चिनगारियाँ चटकने लगीं।

डोरा बाँधते हुए तीजाँ की अँगुलियों का कलाई से परस हुआ तो वो बड़ी मुश्किल से अपने पर काबू रख पाया। समूचे बदन में एड़ी से चोटी तक बिजली दौड़ गयी। तीजाँ की बाँह पकड़कर बोला, 'सभी पुराने खातों की आज साथ ही फारगती किये देता हूँ।'

तीजाँ सर झुकाये चुपचाप सुनती रही। पति को राम जाने ऐसी बातें कहाँ से सूझने लगी हैं। बीवी को चिढ़ाते हुए वो फिर कहने लगा, 'आज तो मेड़ी में चिराग के बिना ही ऐसी रोशनी करूँगा कि तू भी क्या याद करेगी!'

तीजाँ पति को टोकते बोली, 'बस अब रहने दो। मर्द तो देर से बने और उनके गुर पहले ही सीख गये।'

'आज तो लगता है कि दिन अस्त होगा ही नहीं।'

'जल्द ही अस्त होगा, जरा तसल्ली रखो। रात की खुमारी है, खाना खाकर कुछ देर मेड़ी में आराम से सोओ। तब तक मैं बस्ती का चक्कर लगा आऊँ।'

'मुझ जैसा जागरण तो तूने भी किया, पर आज यह अनहोनी कैसी? मुझे पीछे छोड़कर तू अकेली जायेगी ?'

'नहीं तो क्या तुम्हारे संग जाऊँगी? तुम्हें तो लाज-शर्म कुछ है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं, पर मेरी अक्ल तो घास चरने नहीं गयी है ! दुनियादारी का खयाल रखे बगैर कहीं चलता है, भला !'

पति मुस्कराते बोला, 'तो अब तुझे दुनियादारी का खेल दिखाना ही पड़ेगा।'

यह बात कहकर उसने झट तीजाँ को बाँहों में उठा लिया। तीजाँ ने बहुत हाथ-पाँव मारे, पर उसका छुटकारा नहीं हुआ। गुलाब की सेज पर सुलाकर खुद ऊपर हुलस गया।

आँखों के आगे अँधेरा छाते-छाते, अगले ही पल एक नया उजाला फैल गया। कमल की पंखुड़ियाँ गोया अब टूटकर बिखरीं, अब टूटकर बिखरीं, पर कहीं कुछ नहीं हुआ! तीजाँ को ऐसा लगा मानो समूचा ब्रह्माण्ड उसके जिस्म में समा गया हो। अलग होने के बाद थोड़ी देर तो किसी को कुछ होश ही नहीं रहा।

फिर आँखें मूँदे-मूँदे ही पति बोला, 'इतने दिन तो हम बेकार ही मशक्कत करते रहे।'

तीजाँ करवट बदलते हुए कहने लगी, 'क्यूँ, बेकार क्यूँ ? उन रलियों का आनन्द तो मरकर भी बिसराया नहीं जा सकता।'

रात को फिर वही दौर! उन दौरों के दरमियान आहिस्ता-आहिस्ता पति के मन में एक नयी रोशनी जगमगाने लगी कि औरत की निस्वत मर्द अधिक ताकतवर होता है। उसकी बेशुमार ताकत से भला, अबला औरत का क्या मुकाबला ! पुरुष महाबली होता है।

उसी रात तीजाँ ने पति के अंश को अपनी कोख में धारण किया। रात के अन्तिम पहर में दोनों चूर-चूर होकर नींद के आगोश में जकड़ गये। तीन घड़ी दिन चढ़ने पर पति की आँख खुली। सूरज का अक्स मेड़ी में चमक रहा था। उस चमक के साथ उसके मन में यह अहम् जागा कि मर्द का तप-तेज ही सूरज का रूप धरकर गगन में उगता है। औरत तो फकत उसकी छाया है। पहले तो इस इकथम्भे महल पर दोनों की सरीखी मिल्कियत थी। दोनों का सरीखा हक-हकूक और उज्र था। तीजाँ कहीं पहलेवाली मिल्कियत के भरोसे ही न हो ! इसका खुलासा हो ही जाना चाहिए। बेहद ताज्जुब कि उसने तीजाँ के जगने का इन्तजार भी नहीं किया। तीजाँ-तीजाँ चिल्लाते हुए उसे झिंझोड़ने लगा। तीजाँ चौंककर उठ बैठी। आँखें मसलते पूछा, 'मुझे कच्ची नींद से क्यूँ जगाया ?'

पति के कानों को बीवी का यह सवाल सुहाया नहीं। रूखे सुर में बोला, 'नींद तो जब मरजी हो ले लेना, पर मुझे एक सवाल का जवाब अभी चाहिए, इस इकथम्भे महल का मालिक कौन है ? तू या मैं ?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात के मर्म को तीजाँ ठीक से समझ नहीं पायी। यकायक कोई जवाब न देकर अबोली बैठी रही। पति ने उतावली दरसाते फिर वो ही सवाल दोहराया। तीजाँ पति की मूँछों का बाँकपन देखते बोली, 'इसमें मालिक और गैरमालिक की क्या बात है ? इस इकथम्भे महल में तो हम दोनों साथ ही रहते हैं।'

'मैंने साथ रहने और न रहने को बात नहीं पूछी है, साफ-साफ जवाब दे कि इस जायदाद का असली मालिक कौन है ?'

तीजाँ धीरे से बोली, 'भूतों का सरदार।'

जवाब सुनकर पहले तो वो हक्का-बक्का रह गया, पर दूसरे ही पल आपा सँभालकर झुँझलाते बोला, 'तू घुमा-फिराकर बातें क्यूँ कर रही है ? साफ बता कि हमें सौंपने के बाद इसका मालिक कौन है ? यह अनमोल दौलत किसकी है ? तेरी या मेरी ?'

तीजाँ का दिमाग सुन्न हो गया। एक ही रात में यह रंगत कैसे बदल गयी ! बीजाँ ने तो ऐसा सवाल-जवाब कभी नहीं किया था। मर्द बनते ही सब ऊपर-नीचे हो गया। अब संकोच करने से बात बिगड़ जायेगी। बोली, 'इस जायदाद पर हमारा एक-सा हक है, फिर भी कुछ शक-शुबहा हो तो भूतों के सरदार से पूछकर खुलासा कर लेंगे।'

पति की नस-नस ऐंठने लगी। ताना मारते बोला, 'भूतों के सरदार का डर मुझे क्या दिखा रही है ! भला, तेरी बात रखते वो मेरी कब रखेगा ! मेरी हिमायत करने से उसे क्या मिलेगा ? तेरे मन में ऐसा फरेब होगा, मैंने सपने में भी नहीं सोचा था।'

'अब तो सोच लिया !'

बाँकी मूँछों के मर्द को आग-सी लग गयी। गुस्से में अण्ट-शण्ट बकने लगा, 'पर मैं भी तेरे इस यार से कम ताकतवर नहीं हूँ। नयी सल्तनत बसाऊँगा। अखूट खजाना इकट्ठा करूँगा। चतुरंगिनी फौज सजाऊँगा। सीसे के गार से मजबूत किला चुनवाऊँगा। तुझ जैसी सैकड़ों रानियाँ रंगमहल में मेरी हाजिरी बजायेंगी !'

तीजाँ बीच ही में टोकते बोली, 'बासी मुँह, सवेरे-सवेरे यह क्या बकवास ले बैठे ?'

फिर अँगड़ाई लेकर गुलाब की सेज से नीचे उतरी। आगे कुछ कहे बगैर वह रंगमहल से बाहर निकल आयी। इकथम्भा महल उसे काटने को दौड़ रहा था। एक ही रात में उनके बीच यह 'मैं' कहाँ से आ गया ? यह तो वो ही पुरखों का कदीमी और अधम मार्ग है। इस पर चलने से तो उसी दलदल में फँसना होगा। सूरज के डूबते ही जिस तरह चौतरफ अँधेरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छा जाता है, उसी तरह मर्द के खोल में घुसते ही बीजाँ के निर्मल अन्तस में कालिख ही कालिख भर गयी।

अमृत-कुण्ड में नहाने पर भी तीजाँ के मन को शान्ति नहीं मिली। ग्रहण लगने पर चाँद और सूरज का भी वश नहीं चलता। यहाँ रहने पर तो चिक-चिक से कसैलापन और बढ़ेगा। मौसेरी ननद के ससुराल जाकर उससे मिल आना ही बेहतर है। उसकी खबर का इन्तजार क्यूँ करूँ? कुछ दिन दूर रहने से शायद कुछ कलह मिटे।

सादा सिंगार करके वह इकथम्भे महल का दरवाजा खोलकर बाहर जाने लगी तो गुस्से में बौखलाये पति ने उसकी चुनरी का पल्ला पकड़कर पूछा, 'मेरे दिल में आग लगाकर तू अब कहाँ जा रही है?'

तीजाँ शान्ति से बोली, 'सच बताने पर भी तुम्हें विश्वास नहीं होगा, तब बताने से क्या फायदा?'

'फायदा-वायदा तो मैं निकालता रहूँगा, पर मुझसे पूछे बगैर तू कहाँ जा रही है?'

एक ही दिन में दोनों के दरमियान यह कैसी खाई खुद गयी! बात को सँभालने की चेष्टा करते तीजाँ कहने लगी, 'आज तुम अपने आपे में नहीं हो। तुम्हारी मौसेरी बहन के ससुराल जाकर उसकी खबर ले आऊँ। बीस-पच्चीस रोज में आप ही तुम्हारी सुध लौट आयेगी। तब तुम्हारा सन्देश मिलते ही मैं फौरन चली आऊँगी।'

'तू मुझे क्या घास चरा रही है! भूतों की जमात के साथ मिलकर मेरा सफाया करना चाहती है? मैं तुझ-जैसी छिनाल राँडों के लच्छन खूब जानता हूँ। शराफत से चुपचाप मेड़ी में चल, वरना······!'

तीजाँ मुस्कराकर बोली, 'वरना क्या करोगे?'

तीजाँ के होंठों पर मुस्कराहट देखकर वो अपनी बची-खुची सुधबुध भी खो बैठा। चुनरी का पल्ला छोड़कर झट उसकी चोटी पकड़ी। एक ही झटके में तीजाँ वहीं ढेर हो गयी। फिर चोटी से उसे घसीटते हुए बोला, 'मैं वो जोरू का गुलाम नहीं हूँ जो औरतों के नखरे उठाये।'

फिर उसने घसीटते हुए तीजाँ को मेड़ी के पलँग पर पटक दिया। तीजाँ ने दाँत भींचकर आँखें बन्द कर लीं। उसके मुँह से फिर चूँ तक नहीं निकली। ऐसे अधम पति के सामने कराहने में भी उसे बहुत ग्लानि महसूस हुई। जी घबराने से उसे अपना दम घुटता-सा लगा। थोड़ी ही देर में उसका होश गहरे डूबते-डूबते न जाने किस अदीठ गुफा में ओझल हो गया।

बेहोश तीजाँ को अकेले छोड़कर वो इकथम्भे महल से बाहर निकल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आया। बाहर से कुण्डी लगाकर वो पागल की तरह जंगल में इधर-उधर भटकने लगा। भटकते-भटकते वो उस दिनवाली पहाड़ी पर चढ़ा। रूखे पत्थरों के ढेर-सी वह अनघड़ पहाड़ी उसे बहुत ही बदरंग व भोंडी लगी। तमाम कुदरत मानो किसी के मातम में मुँह लटकाये बैठी हो।

चोटी पर चढ़ते ही उसकी आँखों के सामने उस दिनवाला नजारा घूमने लगा। आँखें मूँदने पर भी वो नजारा ओझल नहीं हुआ तो उसने चौंककर आँखें खोलीं। कहाँ वो मूसलाधार बरसता मेह! कहाँ वे बादलों की घटाएँ! कहाँ वे होंठ! कहाँ वो निर्वसन आगोश! कहाँ प्रीत की वह अटूट समाधि! उसका रोम-रोम वापस बीजाँ बनने के लिए तड़फने लगा। और उस मंशा के साथ ही उसका रूप बदल गया। फिर वैसे ही चिकने गाल। अँगरखी के भीतर कसमसाते दो कमल। तीजाँ की हथेलियों का परस पाने के लिए बेताब!

पहाड़ी की चोटी से बेतहाशा भागते बीजाँ इकथम्भे महल की कुण्डी खोलकर भीतर घुसी। हड़बड़ाते हुए रंगमहल में जाकर बेहोश तीजाँ को झिझोड़ते बोली, 'तीजाँ······तीजाँ···मैंने मर्द का खोल छोड़ दिया है। आँखें उघाड़कर अपनी बीजाँ को पहचान तो सही!'

अधिक झकझोरने पर आखिर तीजाँ की चेतना लौटी। पलकें उघाड़ने पर क्या देखती है कि ऊपर नागर-बेल का तरह बीजाँ हुलसी हुई है! वो ही नैनों में छलकता नेह! वही कुंकम-सी नरम देह! दोनों एक-दूसरे की बाँहों में कस गयीं जो आज तक उसी तरह कसी हुई हैं।

भूतों के सरदार का चमत्कार कि मर्द के उस घिनौने अंश के साथ तीजाँ के कोख की कोंपल तक जलकर भस्म हो गयी। बारह और बारह चौबीस कोस के इर्द-गिर्द वहाँ मर्द नाम का परिन्दा तक पंख नहीं मार सकता, फकत एक बार तीजाँ के बुलावे पर मैं वहाँ पहुँचा। इकथम्भे महल का नजारा मैंने अपनी आँखों से देखा और ज्यों तीजाँ ने मुझे यह कहानी लिखायी, मैंने लिखी। उसके अलावा एक लफ्ज भी जोड़ने पर भूतों का सरदार मुझे कब छोड़ता!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय-समय की हवा

समय की वात। समय के हाथ। कि किसी समय की गोद में एक सुखी व सन्तोषी गाँव बसा हुआ था। अपने-अपने घर और अपने-अपने दरवाजे होते हुए भी गाँव की चौपाल एक थी। सभी घरों के बुजुर्ग और नौजवान व्यालू से निबटते ही अलाव के चारों तरफ बैठकर घरेलू वातें करते थे। पुरानी वातों के झपाटे उड़ते थे। हँसने की वात सुनकर हँसते थे। दुख की वात सुनकर आहें भरते थे। किसी का भी मुँह झूठ और छल-कपट की वाणी सीखा हुआ नहीं था। सच्ची बात कहते थे और सच्ची वात सुनते थे। घर-घर चूल्हे में मन्द-मन्द आँच तो जलती थी, मगर किसी भी कोने में आग लगी हुई नहीं थी। बूते की कामना और बूते का काम। नीचे धरती और ऊपर राम।

मुट्ठी में समायें इतनी ही जरूरतें थीं। पेट के लिए रोटी। पीने के लिए पानी। पहनने को कपड़े। रहने को मकान। सूर्योदय से पहले ही घर-घर में रोशनी फैल जाती।

उस गाँव के जमींदार ने अपनी जमीन एक किसान को खेती के लिए सौंप रखी थी। किसान ने लगान देने की खातिर वहुत मिन्नतें कीं, लेकिन जमींदार किसी भी कीमत पर राजी नहीं हुआ। किसान ने ज्यादा मगज-मारी की तो जमींदार बोला कि उसके पास काफी जमीन है। मरने पर साथ तो ले जाने से रहा! जोतो, बोओ, कमाओ और खाओ। किसान ने एक दिन खटपट निबटाने के लिए चौपाल में वात चलायी तो वस्ती के सब लोगों ने जमींदार की वात ही रखी।

संयोग का खेल कि एक दिन जमींदारवाली जमीन से झाड़ियों की जड़ें निकालते समय किसान को मोहरों से भरा एक कलश नजर आया। चारों ओर से उकेरने पर एक-एक करके सात कलश हाथ लगे। काम छोड़कर किसान ने तुरन्त बैल जोते। गाड़ी पर सातों कलश रखे और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तपती दोपहर में जमींदार के घर की तरफ चल पड़ा।

जमींदार ने दूर से ही गाड़ी को आते देखा तो मन-ही-मन किसान पर नाराज हुआ। साफ इन्कार करने के बावजूद भी लगान की गाड़ी जोतकर लाया, तो लाने दो। अच्छी तरह खबर लेगा। बस्ती की बात को टालने की हिम्मत हुई तो हुई कैसे! लेकिन गाड़ी पर कलश देखकर उसका गुस्सा कुछ ठण्डा पड़ गया। मुस्कराकर पूछा, 'यह फिर क्या नयी मुसीबत ले आया?'

किसान ने भी उसी तरह मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'लगान न लेने की हेकड़ी तो निभ गयी, लेकिन अब यह मुसीबत तो कबूल करनी ही पड़ेगी।'

ढक्कन उघाड़ने पर जमींदार ने चमचमाती मोहरें देखीं तो आश्चर्य से पूछा, 'बाजरी की जगह खेत में मोहरें पैदा हुई हैं क्या?'

पैदावार की बात करने पर तो फिर वही लगानवाला फन्दा फँसेगा। इसलिए तुरन्त जमींदार की बात काटते कहने लगा, 'इससे पहले भी किसी के खेत में मोहरें पैदा हुई होंगी? जड़ें निकालते समय यह सात कलश हाथ लगे हैं, सो कबूल करो।'

जमींदार की त्योरियाँ चढ़ गयीं। बोला, 'तेरे हाथ लगे हैं तो तू रख, मेरे यहाँ क्यूँ लाया?'

किसान ने भी कड़ाई से जवाब दिया, 'जमीन तुम्हारी है, इसलिए लाया। आँखें दिखाने की जरूरत नहीं। मुझे काम के लिए देरी हो रही है। शराफत से चुपचाप कलश कबूल करके मेरा फन्दा काटो। लगानवाली बाजी निभ गयी सो ही बहुत है।'

जमींदार आत्मीयता के स्वर में मीठा उलाहना देते कहने लगा, 'देख, तू फिर अन्याय की बात कर रहा है। जड़ें निकालते समय कलश तेरे हाथ लगे हैं तो मैं कैसे कबूल कर सकता हूँ! मेरी अक्ल तो अभी तक ठिकाने है।'

'अगर अक्ल ठिकाने होती तो यूँ तुरन्त ना नहीं करते। ऐसी अबूझ बात तो कोई बच्चा भी नहीं करता। जब खेत तुम्हारे हैं तो कलश भी तुम्हारे हैं। इसमें ऐसी कलह की बात ही क्या है?'

जमींदार व्यंग करते हुए बोला, 'सारे इलाके की अक्ल का तू अकेला ही इजारेदार दिखता है। ऐसी बेवकूफी की बात सुनकर बस्ती के लोग हँसेंगे, फिर भी पंचायत बैठाने के लिए मेरी ना नहीं है।'

किसान ने कुछ तड़फते हुए जोर से कहा, 'तुम्हारी ना क्यूँ होगी, मेरी ना है। गरीब के साथ कोई भी न्याय नहीं करता। पंचायती के लायक बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो तो पंचायती भी करायें !'

जमींदार तैश में आकर कहने लगा, 'तेरे कहने से क्या होता है? कैसे पंचायती की बात नहीं है! उस दिन मेरे खेत में तेरे करचा गड़ा था तब मेरा पाँव तो बेकार नहीं हुआ? बता, चौमासे में मेरे खेत पर काम करते समय तुझ पर बिजली गिरे तो तू मरेगा, या मैं?'

'मुझ पर बिजली गिरेगी तो मैं ही मरूँगा!'

'खेत मेरा है तब मुझे मरना चाहिए! बता, मेरे खेत में काम करते हुए अगर तुझे साँप काट खाये तो उसका जहर मुझे चढ़ेगा या तुझे? बोल?'

'अब इन उल्टी-सीधी पहेलियों में मत उलझाओ। तुम पर अच्छा-खासा विश्वास करके मैं यहाँ आया था। मैं जानता हूँ कि पंचायती होने पर मेरे साथ इन्साफ नहीं होगा।'

'तब पंचायती क्यूँ करवाता है? चुपचाप ये कलश अपने घर ले जा। मैं कहीं भी चर्चा नहीं करूँगा।'

'खूब चर्चा करो, मैं किसी से डरता थोड़े ही हूँ। उधार लिया हुआ मुँह हो तब भी ऐसी बात करते थोड़ी-बहुत शर्म आती है। तुम्हारा माल मैं कैसे घर ले जाऊँ? ये कलश जानें और तुम जानो। मैं तो यहीं गाड़ी छोड़कर खेत जा रहा हूँ। इतनी देर में तो मैं आधी जड़ें निकाल लेता। खामखाँ बहस करना मुझे नहीं पोसाता।'

और यह आखिरी बात कहकर वो वहाँ से चल पड़ा। जमींदार ने उसे पुकारकर कहा, 'देख, बेकार जिद करके मत जा। पछतायेगा।'

'कोई बात नहीं।'

जमींदार के गुस्सा समाया नहीं। पर किसान नहीं माना, तब वो कर ही क्या सकता था! घड़ी-डेढ़ घड़ी रात ढलने पर वहीं अलाव के पास पंचायत जमी। राँझे की बात सुनकर पंचों ने भिड़ते ही किसान से सवाल किया, 'ये कलश अपने आप उछलकर बाहर आये या तूने खोदकर निकाले?'

'निकाले तो मैंने खोदकर ही। कलश अपने आप उछलकर बाहर कब आते हैं?'

पंच मुस्कराकर कहने लगे, 'तब तो यह न्याय तेरे अपने मुँह से ही हो गया कि तेरी मेहनत का फल तुझे ही मिलना चाहिए।'

लेकिन गँवार किसान तब भी नहीं माना। पंचों के सामने वही हठ करते कहने लगा, 'लेकिन जमीन तो मेरी नहीं है। दूसरे की जमीन में गड़ा धन लेने के लिए मेरा मन नहीं मानता।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंचों ने कहा, 'तेरे मन को मनाना हमारे वश में नहीं है। इन्साफ करना हमारे जिम्मे था, जो हमने निबटा दिया। धरती, पानी और हवा पर किसी का भी हक नहीं होता। अगर तू ऐसा ही हरिश्चन्द्र है तब दूसरे की जमीन पर बहती हवा में तुझे साँस भी नहीं लेना चाहिए।'

'आप फरमायें तो नहीं लूं?'

पंचों ने कहा, 'लेकिन हम ऐसी उलटी बात क्यों फरमायें। हमारा कहना मान, जब तक गाड़नेवाले का पता नहीं चले तब तक यह अमानत तू ही सँभाल।'

'यह अमानत मेरे किस काम की? यह तो नींद बेचकर जागरण मोल लेना है। भगवान जाने, किसने क्या आस करके ये मोहरें गाड़ी होंगी! या तो दूध का दूध और पानी का पानी करो, वरना मुझे ये कलश राज्य के खजाने में जमा कराने पड़ेंगे।'

पंचों ने कहा, 'हमने तो अपनी समझ के अनुसार जो इन्साफ करना था सो कर दिया। तू न माने तो तेरी मरजी।'

तब वो किसान चटकते हुए बोला, 'जब इन्साफ का रास्ता ही नहीं जानते तो इन्साफ करने के लिए मुँह धोते ही क्यूं हो?'

उसके बाद वो जिद्दी किसान सीधा राजदरबार पहुँचा। ध्यान से सारी बात सुनने के बाद राजा ने कहा, 'जान-माल की रक्षा के लिए मैं राजा बना, तब तेरा माल छीनने का मुझे अधिकार ही क्या है? तूने बेकार ही जूते घिसे। गाँव के पंचों ने तेरे साथ बेइन्साफी नहीं की। तू खुशी-खुशी ये कलश अपने घर ले जा। तेरी मेहनत और तेरा ही फल!'

राजा के मुँह से यह न्याय सुनकर किसान का मुंह फीका पड़ गया। वो कुछ दूसरी आस लेकर यहाँ आया था। धीमे सुर में कहने लगा, 'आपका यह आदेश तो मैं हरगिज नहीं मानूंगा। और इन मोहरों का मैं क्या करूँ? बेकार जगह घेरेंगी। आप नाराज न हों तो मैं पंचों के सामने उसी जगह ये सातों कलश वापस गाड़ दूं!'

उस वक्त की गोद में जैसी प्रजा थी, वैसा ही उसका राजा था। होंठों पर मुस्कराहट छितराते कहने लगा, 'जैसी तेरी मंशा।'

आखिर उस किसान की जो मंशा थी वही हुआ। तीसरे दिन सूर्योदय के वक्त बस्ती के लोग पास खड़े देखते रहे और उसने अपने हाथों, उसी जगह कलश वापस गहरे गाड़ दिये!

उसके बाद वक्त की ढलान पर, वक्त की हवा, निरन्तर बिना साँस लिये, बहती ही गयी; बहती ही गयी। हवा के उन थपेड़ों के आगे न तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वो किसान रहा, न वे बस्ती के लोग और न वो राजा। वक्त की गोद में नयी पीढ़ी अवतरित हुई। नया राजा और नये ही पंच। नयी पीढ़ी, नया ही खून।

नयी हवा में अभी तक वह पुरानी बात घुली हुई थी। एक दिन जमींदार का नौजवान बेटा उस किसान के बेटे के पास जाकर कहने लगा, 'मेरे पुरखे तो बिलकुल नासमझ थे। लेकिन मैं वैसा नासमझ नहीं हूँ।'

वो आगे कुछ और कहना चाहता था, लेकिन किसान का लड़का बीच में बोला तो उसे रुकना पड़ा। किसान का लड़का मुस्कराने की चेष्टा करते कहने लगा, 'आप क्यूँ नासमझ होने लगे? लेकिन मैं तो अभी तक अपने पुरखों की तरह वैसा ही नासमझ हूँ।'

'हाँ, तू नासमझ है, सो मैं जानता हूँ। तभी मेरे खेत में गड़े हुए कलश तू मुझसे बगैर पूछे, छुपाकर रात को घर ले आया।'

किसान के बेटे ने मन-ही-मन सोचा कि हजरत खेत की जमीन टटोल-कर आये दिखते हैं! वहाँ कलश हों तो मिलें! सुमत सूझी जो सात दिन पहले सारे कलश घर ले आया। नहीं तो आज एक मोहर भी हाथ न लगती। अब दबने से बात बिगड़ जायेगी। निस्संकोच बोला, 'क्यूँ, इसमें पूछने की क्या बात है? खेत कोई मुफ्त में नहीं जोतता! तीसरे हिस्से का लगान चुकाता हूँ। जड़ें निकालते समय अगर साँप काट खाता तो मेरे बच्चे यतीम होते। आपका कुछ भी नहीं बिगड़ता। अपनी मेहनत से खोदा धन अपने घर लाया। इसमें छुपाने की क्या बात है?'

दोनों में परस्पर बहुत दाँताकसी हुई, लेकिन जमींदार के लड़के की कुछ दाल नहीं गली। आखिर धमकी देते बोला, 'मैं भी देखता हूँ, मेरे खेत में गड़ा धन तुझे कैसे पचता है?'

'पचना-बचना क्या ठाकुर, वो तो पच गया। दूसरे के माल की आस करने से काम नहीं चलता। आखिर तो पसीने की कमाई से ही पार पड़ेगा।'

लाल-पीली आँखें निकालते वो बस्ती के लोगों के सामने चिल्लाया। पंचों ने सोचा, ऐसी शानदार पंचायती तो मुश्किल से ही हाथ लगती है। काफी दिनों तक आँतें और अँगुलियाँ चिकनी रहेंगी। जमींदार के लड़के ने पंचों को घर बुलाकर काफी खातिर-तवज्जह की। किसान के बेटे को पता चला तो उसने भी पंचों को अपने घर बुलाया और उनकी मुट्ठियाँ गर्म कीं। पंचों की राय फिर बदल गयी।

CC-0.Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात को नित पंचायत जुड़ती। आधी ढलने तक खूब थूक उछलता। गाँव में दो दल बन गये। आधे पंच खेत के मालिक के साथ और आधे किसान के साथ। सूत उलझा तो उलझा लेकिन पंचों की मौज में किसी तरह की कोई कमी नहीं थी।

काफी दिनों तक सर खपाने के बाद पंचों ने लगान के हिस्से माफिक मोहरें बाँटने का फैसला दिया। लेकिन किसान का बेटा नहीं माना। उसके पास सूरज के टुकड़ों की ताकत थी। उसने फिर पंचों को अपने घर बुलाकर शानदार आवभगत की। यकायक जमींदार के हिमायती फिसल गये। बेहाड़ की जबान इधर से उधर मुड़ गयी। बेचारे जमींदार ने खर्च-खाते के बावजूद सब्र किया।

वक्त की हवा फिर अपनी मस्ती में बही। खूब बही। गाछ-विरछों के अनेक पान झड़े और अनेक कोंपलें फूटीं। नये अंकुर उगे। अनगिनत नदियों का पानी समुद्र में इकट्ठा हुआ। असंख्य सूरज उदित हुए, चोटी पर चढ़े और अस्त हो गये। फिर एक पीढ़ी ठिकाने लगी। नयी पीढ़ी का नया खून नसों के भीतर उलटी छाती चढ़ने लगा। नयी हवा में अभी तक पुरानी बातें घुली हुई थीं।

उस जमींदार का नौजवान दिलेर पोता, नंगी तलवार लेकर किसान के घर पहुँचा। किसान का पोता भी ललकार सुनकर हाथ में फरसा लिये बाहर आया। कहा-सुनी से जब निबटारा नहीं हुआ तो जमींदार के पोते के एड़ी से चोटी तक आग लग गयी। पंजे के बल उचककर किसान के गले पर भरपूर वार किया। गाजर-मूली की तरह तलवार सपाक से गले के पार हो गयी। कटा मुण्ड पैरों में आ गिरा।

भाभी का चीत्कार सुनकर मँझला और छोटा भाई बाड़े से दौड़े आये। दोनों के हाथों में दो लम्बे तड़े[1] थे। नौजवान जमींदार के गले में मँझले भाई ने तड़ा फँसाकर जोर से झटका दिया तो उसका गला आधा कटकर लटक गया। खून की फुहार से सारा बदन सराबोर होने लगा।

उस गाँव की धरती पर पहली दफा पसीने की जगह खून की आकृति चित्रित हुई। गाँव के पंच शामिल होकर राजा की शरण में पहुँचे। गड़े धन की बात सुनते ही राजा को गुस्सा आ गया। हरामखोर पंचों ने इतने दिनों तक भेद छिपाकर क्यों रखा? गड़ा धन तो राजा का ही होता है।

---

१. पेड़ की शाखाएँ काटने का, हँसिये के आकार का औजार विशेष, 'जिसमें हत्थे की जगह लम्बा बाँस लगा होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके आदेश से पंचों को इक्कीस-इक्कीस जूतों की सजा मिली। तत्पश्चात् राज्य के घुड़सवारों ने घोड़े दौड़ाये, सो किसान के पचावे[1] में छुपाये हुए कलश तुरन्त सरकारी खजाने के हवाले किये।

समय-समय की हवा और समय-समय की बयार। उस सुखी और सन्तोषी गाँव की जमी हुई चौपाल उठ गयी। घर-घर आग की लपटें लपलपाने लगीं। भगवान जाने, वह आग बुझेगी कि नहीं। समय की बात। समय के हाथ।

1. सुरक्षित जमीन पर झोंपड़े के आकार का जमाया हुआ चारे का ढेर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रिम्रायत

एक था राजा। जैसा न्यायप्रिय, वैसा ही उदार। उसके राज्य में दण्ड के चयन की पूरी रिम्रायत थी। मुजरिम अपनी इच्छानुसार अपना दण्ड चुन लेता था। एक दफा एक चोर को चोरी के दण्डस्वरूप वैसा ही दण्ड सुनाया गया। चोर की इच्छा हो तो सौ बड़े-बड़े प्याज खा ले या सर में तड़ातड़ सौ जूते। चोर भी चोरों का सरताज था। जूतों के बदले खुशी-खुशी प्याज खाने के लिए तैयार हो गया।

न्यायप्रिय राजा मुस्कराकर बोला, 'जो तेरी इच्छा।'

पर चोर की इच्छा होते हुए भी उसकी बात पार नहीं पड़ी। चार-पाँचेक प्याज खाते ही मुंह में आग-सी लग गयी। आँखों से आँसू बहने लगे। आगे प्याज खाना तो दूर, उन्हें देखने से ही उबकाई आती। पर कोई न कोई दण्ड तो भोगना ही पड़ेगा। तब वो अपनी इच्छा से खुशी-खुशी सौ जूते खाने के लिए तैयार हो गया। जूते खाने का आदी था। मुंह में जलन तो नहीं होगी! थोड़ी देर सर झनझनाकर आप ही ठीक हो जायेगा। राज्य के हथमार फिर क्यूं ढील करते? नंगे सर, फड़िद-फड़िद सूखे जूते उड़ने लगे तो उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। सर तो मानो बिलकुल सुन्न पड़ गया हो। सौ जूते खाने पर तो सर की जगह सर मिलेगा ही नहीं। बीसेक जूते पड़ने पर सर मालपूए की तरह फूल गया। इसकी बनिस्पत तो प्याज खाने बेहतर हैं। जूतों की झनझनाहट के मारे वो प्याज की जलन भूल गया। ठहरने की मिन्नत करते ही हथमार रुक गये। उसने राजा से हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि वो बचे हुए प्याज खाने के लिए तैयार है।

वो अदल इन्साफी राजा तो किसी की इच्छा के विरुद्ध कोई बन्दिश रखना ही नहीं चाहता था। सर की झनझनाहट नहीं मिटी तब तक हिम्मत करके वो दनादन प्याज खाता गया। पर सर का दर्द मिटते ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुँह में मानो दहकते अंगारे सुलग उठे हों। आँखों की दुर्गति भी कम नहीं हुई। हथेली से मसलने पर अधिक चिरमिराहट होती। हिम्मत करके बड़ी मुश्किल से बीस-पचीस प्याज और खाये, तब तक वो पूरा पस्त हो गया मुँह, नाक और आँखों की जलन के कारण जूतों की मार विस्मृत हो गयी। इसके बनिस्पत तो जूते खाने आसान हैं। कोई भी दण्ड चुनने की उसे पूरी रिआयत थी। रिरियाते हुए याचना की कि वो बचे हुए जूते खाने को राजी है।

दयावन्त राजा तुरन्त उसकी बात मान गया। हथमार हाथ में जूते लिये खड़े ही थे। झुके हुए सर पर फिर से जूते बजने लगे। साठेक जूते खाने तक तो वो दाँत भींचकर डटा रहा, पर अब तो फकत एक जूते की मार से ही सर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। वो हाथ जोड़कर बुरी तरह चिल्लाया, 'अब जूते खाने की बिलकुल हिम्मत नहीं है। मैं बचे हुए प्याज खाने को तैयार हूँ।'

झनझनाते सर को सहलाते हुए वो फिर प्याज खाने लगा। फिलहाल सर है तो सलामत! आखिर प्याज खाते-खाते सर का दर्द काफी कम पड़ गया। मुँह में फिर वही ज्वाला दहक उठी। उबकाई आने लगी। अब तो फकत एक प्याज खाने से ही जान निकल जायेगी। वो फिर जूते खाने के लिए तैयार हो गया। पर बिलबिलाते सर की इतनी बिसात ही कहाँ थी! बीसेक जूते खाते ही प्याज की जलन बुझ गयी। अब तो ज्यों-त्यों करके बचे हुए प्याज खा ले तो पिण्ड छूटे।

पर उसका पिण्ड तो जैसे छूटना था, वैसे ही छूटा। बारी-बारी अपनी इच्छानुसार सजा कबूलते-कबूलते सौ जूतों के साथ वो सौ प्याज भी खा गया। तब लगातार एक ही सजा भोगने के लिए उसकी सामर्थ्य क्यूँ चुक गयी? भला, इस लाचारी का मायना कौन बता सकता है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आश्वासन

सांच की बजाय झूठ बेहतर। न खटके, न लगे दुष्कर। झूठ से दिलासा मीठा। किसने जाना, किसने दीठा! दिलासे का आश्वासन भारी। न दवा, न लगे कारी। आश्वासन से चलते राज। बिना खुजलाये मिटती खाज कि किसी गाँव में एक सुथार रहता था। जिसके यहाँ आठों पहर गप्पों के दौर चलते रहते थे। सुथार को कारीगरी की बनिस्पत गपशप करने का अधिक शौक था। कभी वादे पर किसी का काम नहीं करता था, फिर भी बस्ती के लोग उससे बहुत खुश थे। उस सुथार का ऐसा बेढ़ब स्वभाव था कि वो न तो कभी स्पष्ट इन्कार करता था, न कभी किसी काम के लिए टाल-मटोल करता था, और न कभी किसी का काम निबटाता था। दिलासे-दिलासे से लोग-बाग पूर्ण सन्तुष्ट हो जाते थे। सुथार के बोल मानो मिश्री के ही घोल। हरेक के हाल-चाल बूझता था। दुखियों को ढाढ़स बँधाता था। किसी भी काम के लिए तुरन्त हाँ भर लेता था और सामनेवाले का कलेजा एकदम ठण्डा कर देता था। लेकिन बावड़ी का नाम गुलसप्पा!

एक मर्तबा एक व्यक्ति खतोड़ में पैर पटकते हुए आया। तैश में सुलगता हुआ। खड़े-खड़े ही उलाहना देने लगा, 'तुम्हारे जैसे कारीगर तो तुम्हीं हो। बरात में साथ चले थे तब तुम्हें पालने की हिदायत दी थी और आज बच्चा हुए पखवाड़ा गुजर गया, लेकिन अब भी पालना कहाँ? सपने में! हमेशा सुबह-शाम बेकार चक्कर लगवाते हो।'

उस व्यक्ति की खीज और आतुरता देखने के बाद भी कारीगर मन्द-मन्द मुस्कराता रहा। धीरे से बोला, 'इसमें चक्कर की क्या बात? आपकी अपनी खतोड़ है। सौ बार पधारें तब भी कम है। आराम से बैठो! चिलम-पानी पीओ। पालना कहीं भागकर तो जायेगा नहीं!'

'पालना हो तो भागे!'

कारीगर हँसते-हँसते बोला, 'लेकिन भले आदमी, उससे तुम्हें क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलेगा ?'

'तो क्या वाकई पालना बना दिया ?'

'और नहीं तो क्या ! मुझे और काम ही क्या है ! लेकिन पालना अभी दिखाऊँगा नहीं । गुस्से की लपटों में भस्म हो गया तो !'

'भस्म होने की परवाह नहीं, लेकिन एक दफा नजरों से देख लूं तो फिर कुछ खटका नहीं रहेगा । लच्छन तो तुम्हारे ऐसे हैं कि मेरा वश चलते तुम्हें भस्म कर दूं ।'

कारीगर ने सर को हाथ लगाकर मुस्कराते कहा, 'मेरी ऐसी किस्मत कहाँ ?'

सुथार के इन शब्दों से उसका गुस्सा तुरन्त ठण्डा पड़ गया । गोया उफनते दूध में पानी डाला हो । मन-ही-मन सोचने लगा कि पट्ठा है कितना गमखोर ! कभी गुस्सा नहीं करता । काम करे या न करे, उससे क्या फर्क पड़ता है । आज तक किसी को कड़वे बोल नहीं कहे । चार बातें सुनायीं तब भी हँसकर सुन लीं । और अब पालना बनने के बाद झगड़ने में क्या सार ! सुमति सूझी तभी भली ! जमीन पर बैठते हुए कहने लगा, 'मैं खुद हाथों-हाथ पालना लेकर जाऊँगा, कहे देता हूँ ।'

'बेटे की इतनी खुशी कि लोकलाज का भी कोई खयाल नहीं ! लेकिन मैं पालना ले जाने दूं, तब न ! मैं पहुंचा दूंगा । मेरे पैर तो घिसने से रहे !'

'यह तो तुम्हारा बड़प्पन है, लेकिन तुम्हें मेरी कसम, सच बताओ, पालना बना तो दिया न ?'

कसम दिलाने पर फिर झूठ नहीं बोला गया । चुटकी बजाते कहने लगा, 'पालना बनाने में क्या वक्त लगता है । फकत चार पाये और एक 'सीरा' ही तो बाकी है । अभी बनाये देता हूं ।'

अभी-अभी करते डेढ़ बरस गुजर गया था । फिर भी उस व्यक्ति की आस नहीं टूटी । और पालने में चार पाये व एक सीरे के अलावा होता ही क्या है ? लेकिन कारीगर की चुटकी और मीठी बातों से उसे ऐसा लगा मानो वास्तव में पालना इसी क्षण तैयार हो जायेगा । उलाहने की बात भूल वो खुद बातों में मशगूल हो गया । गुस्सा उतरने के बाद कैसी खीज ! चिलम के चारेक कश में गुस्सा, गुस्से के ठिकाने लगा ।

गपशप के शौकीन लोग अपने साथ खलीतों में जर्दा भरकर लाते थे । बचा हुआ अलाव के पास पड़े बासन में डाल जाते थे । कारीगर की तो फकत आग सुलगती रहती थी । बातें और तम्बाकू दोनों नहीं पोसाते ! वो पालने की खुशी में सवेरे जल्दी ही आ गया था । घड़ी-आधघड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बतियाने के बाद जाते वक्त हिदायत देते बोला, 'खैर, अब पालने के साथ गाडोल्या भी ले जाऊँगा।'

कारीगर ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'जैसी तुम्हारी मरजी।'

पास बैठे लोग एक साथ ठहाका लगाकर जोर से हँसे। उस खतोड़ का ढर्रा ही ऐसा था। औरों की मजाक तो सभी की समझ में आती थी, लेकिन अपना खयाल किसी को नहीं था।

उस कारीगर ने किसी बात का स्पष्ट और पुखता जवाब तो देना सीखा ही नहीं था। अगर दूसरे गाँव का कोई अजनबी खतोड़ में आकर उसका नाम बूझता तब वो संजीदगी से कहता कि नाम तो फकत भगवान का है। बाकी सब बेकार के सम्बोधन हैं। झंझट और माथा-पच्ची। किसी के नाम में क्या धरा है ?

एक दफा एक राहगीर खतोड़ में पानी पीने की खातिर रुका। थोड़ी देर बाद इधर-उधर की बातों के बीच पूछा, 'क्यूं कारीगर, तुम्हारे कितने बाल-बच्चे हैं ?'

'बाल-बच्चे तो बाजरी के हैं। कमाकर खिलायें तब तक बेटे, और कमाने लगें तब बाप के भी बाप। इन्सान बेचारे के कैसी औलाद और कैसे बच्चे !'

एक मर्तबा सारी रात जमकर बरखा हुई। सवेरे मुंह-अँधेरे लोग खतोड़ में पहुँचे। प्रफुल्लित होकर पूछा, 'रात को बरसात कैसी हुई ?'

कारीगर के गले की तो वही बान और होंठों की वही मुस्कान। कहने लगा, 'इन्द्र भगवान में जितना पावना माँगते थे, उतनी बरसात हो गयी।'

एक दफा ठिकाने के कनवारिये ने आठ महीने पहले से ही अपनी बेटी के दहेज की खातिर बढ़िया पलंग बनाने की हिदायत दी, तब कारीगर टिचकारी देते बोला, 'मेरी तो इस हलके में बिलकुल साख ही उठ गयी। इतनी जल्दी हिदायत देने की क्या जरूरत है ? यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है। ठीक ब्याह के दिन आदेश करते तब भी चुटकियों में पलंग बना देता। एकदम नफीस।'

कनवारिये ने उसे खुश करने के लिए कहा, 'यह तो तेरा भरोसा ही है। फिर भी पहले हिदायत देने से मेरी जबान में फोड़ा तो होने से रहा। लेकिन बनाना ऐसा कि मुंह बोलने लगे।'

'उसकी तो आप बात ही छोड़ें। दूसरा कारीगर-बन्दा वैसा पलंग बना दे तो अपने हाथ कटवा लूं।'

कनवारिये को पूरा विश्वास हो गया। तब भी उसका स्वभाव जानते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुए वो छठे-सातवें दिन रोज उसे याद दिलाता रहता। लेकिन कारीगर का स्वभाव तो सभी के लिए समान था। सामने आयी लकड़ी को छीलना— भले ही वह बबूल की हो, भले ही रोहीड़े की और भले ही करील की। उसकी नजर में कोई दुराव नहीं था।

ज्यों-ज्यों ब्याह का मुहूर्त नजदीक आने लगा, त्यों-त्यों कनवारिये की बेचैनी बढ़ने लगी। लेकिन कारीगर ने दिलासेवाली बान नहीं छोड़ी। रोज हिदायत देने पर चुटकियाँ बजाकर कहता कि यह तो उसके बायें हाथ का खेल है! ऐसा शानदार पलंग बनायेगा कि वाह-वाह करते लोगों के गले का थूक सूख जाय।

कनवारिया हर रोज आश्वासन पाकर घर लौट जाता। दूसरे दिन फिर वही हिदायत और बदले में फिर वही आश्वासन। यों करते-करते बरात तो आ गयी, लेकिन पलंग तो अभी कारीगर की जबान पर ही था ज्यादा ताकीद की तब कारीगर ने कहा कि अभी तो विदाई में दो दिन बाकी हैं। तब तक तो वो दस पलंग बना दे। कनवारिये ने जैसे-तैसे अपने मन को समझाया। लेकिन विदाई के वक्त भी जब पलंग नहीं आया तब कनवारिये के खलबली मची। हड़बड़ाकर खतोड़ की तरफ भागा। अधीरता से पूछा, 'पलंग तैयार हुआ कि नहीं?'

'वाह, मेरे इतनी ढील कहाँ। पलंग तो एकदम तैयार है। फकत आपकी राह ही देख रहा था।'

कनवारिये की जान में जान आयी। चक्कर लगाये सो सार्थक हुए! खुश होकर मीठा उलाहना देते कहने लगा, 'भले आदमी, ब्याह की सौ मुसीबतें और हजार झंझट। तुम्हीं पहुँचा देते।'

'एक बार छोड़, दस बार पहुँचा दूँ। मेरे कौन से पाँव मैले होते हैं?'

कनवारिये ने खुश होकर कहा, 'यह तो तेरी मेहरबानी है, लेकिन अब एक पल की भी देर मत कर। बराती विदाई के लिए तैयार बैठे हैं।'

'अभी हाजिर करता हूँ।' यह कहकर कारीगर ने मझले बेटे को जोर से आवाज देकर पलंग लाने की आतुरता दरसायी।

और आतुरता के अनुरूप ही मझला लड़का दोनों हाथों में एक पाया लेकर हाजिर हुआ। कनवारिये के सामने पाया करते हुए नरमाई से बोला, 'लीजिए।'

तब कनवारिये ने झुँझलाकर कारीगर की तरफ देखा। आक्रोश घुले सुर में कहने लगा, 'इस पाये से मैं क्या अपना सर फोड़ूँ? पलंग कहाँ है?'

कारीगर खड़ा होकर कनवारिये के पास आया। पाये की बारीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खुदाई का बखान करते बोला, 'पहले इस पाये की कारीगरी तो देखो, गोया कसीदा काढ़ा हो।'

कनवारिया हामी भरते कहने लगा, 'हाँ, कारीगरी तो वाकई बेजोड़ है। लेकिन फकत एक पाये से पलंग की कमी कैसे पूरी होगी?'

कारीगर ने कहा, 'क्यूँ, पलंग में क्या कमी है? कसर है तो फकत दो ईसों, दो उपलों, तीन पायों और बीच के झावाजोल की। बाकी पलंग तो तैयार है। इसकी बेजोड़ कारीगरी को अच्छी तरह नजर गड़ाकर देखो तो सही! आँखों को मुश्किल से विश्वास होगा। इतनी-सी कसर से कुछ फर्क नहीं पड़ता। आप खुशी-खुशी यह पलंग ले पधारें।'

विदाई में देर हो रही थी। वास्तव में पाये की कारीगरी तो लाजवाब थी। कारीगर की बातों के करिश्मे से उसकी आँखों पर भी भ्रम का जाला छा गया। कनवारिया मन-ही-मन सोचने लगा कि कसर है तो फकत दो ईसों, दो उपलों, तीन पायों और बीच के झावाजोल की!

कारीगर की जबान का ऐसा ही मायावी असर था। मन के परे अनजाने ही स्वयमेव तसल्ली हो जाती थी।

एक मर्तबा काफी सूरज चढ़ने पर ठाकुर का छुट-भाई लाठी के सहारे झुका हुआ कराहता-सा खतोड़ में आया। कारीगर की नजर पड़ते ही वो हड़बड़ाकर उठ बैठा। पास जाकर पूछा, 'क्या बात हुई? लाठी का सहारा क्यूँ लिया?'

दोनों गहरे मित्र थे। एक दाँत रोटी टूटती थी। कहीं बाहर जाने के कारण इतने दिन खतोड़ में आना नहीं हुआ था। वरना सारे दिन यहीं मण्डली जमती थी। नाराजगी जतलाते कहने लगा, 'तू तो खैरियत पूछने भी नहीं आया?'

'लेकिन मुझे कुछ मालूम हुआ हो तो!'

'यह तो बिना मालूम हुए ही कलेजे में खटकनेवाली बात थी। तेरी दोस्ती का पता चल गया। ससुराल गया तो घोड़े पर था लेकिन वापस सवेरे ही गाड़ी पर सोते हुए लौटना पड़ा। 'बादी' से सारा शरीर जकड़कर ठण्ठ हो गया है।'

'मुझे खबर क्यं नहीं भेजी? यह तो आपने भारी भूल की। खबर मिलते ही सर के बल दौड़ा नहीं आता तो मेरा कसूर था।'

'भला, तेरा कसूर क्यूँ होने लगा! कसूर-वसूर तो सारा इस बादी का है। कुल्हाड़ी से सारा शरीर काट डाले तो चैन मिले। इसी खातिर जैसे-तैसे खतोड़ में आया हूँ।'

'थूको अपने मुँह से। मेरे जीते-जी ऐसे बोल निकालने की जरूरत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं ! बादी के लिए सेही का मांस रामबाण है। गोया फूटे घड़े पर लाखें दी हो। फकत दो जून मांस खाते ही दौड़ने नहीं लग जाओ तो मैं जात और नाम दोनों फिरा लूं।'

छुट-भैया कराहते बोला, 'लेकिन यह सेही हाथ लगे कैसे ? कौन इसका बिल जानता है और कौन इसके खोज पहचानता है ?'

तब कारीगर छाती ठोंकते हुए बेहद जोश में बढ़-चढ़कर कहने लगा, 'फिर यह दोस्ती किस दिन के लिए है ? मेरे ये नाचीज प्राण कब काम आयेंगे ? मुझसे ज्यादा इस इलाके में कोई नहीं जानता—न सेही के बिल को और न सेही के खोजों को !'

कारीगर के ढाढ़स मात्र से ही छुट-भैया को ऐसा लगा गोया बादी तो फुर्र करती उसके शरीर से उड़ गयी हो। अब तो फकत दो जून मांस खाने की देर है। अपना काम छोड़कर खुद कारीगर उसकी खातिर तपती धूप में मुसीबत उठाने को तैयार है। दोस्ती हो तो ऐसी। वो कारीगर तो जैसे खड़ा था वैसे ही हाथ में लाठी लेकर जंगल की तरफ चल दिया। लेकिन खतोड़ से बाहर निकलते ही राम जाने क्या सोचकर वापस लौट आया। मीठे सुर में कहने लगा, 'इस कच्ची काया का क्या भरोसा ! कब क्या रोग हो जाये, कुछ पता नहीं चलता। आप किस उत्साह से ससुराल गये थे और ठण्ठ होकर वापस आये। अगला साँस आये या न आये। इसी खातिर आपको और दो-तीन और साथियों को साथ चलना पड़ेगा। अभी गाड़ी जोतता हूँ। सभी को सेही के बिल और उसके खोजों की अच्छी तरह पहचान करवा दूं। क्या मालूम किस भाई-बन्धु के किस वक्त क्या काम पड़ जाये ?'

भला, ऐसी नेक सलाह कौन नहीं मानता ? बाड़े में जाकर कारीगर ने गाड़ी जोती और बैल की पूंछ मरोड़ते हुए पूरे उत्साह से जंगल की तरफ चल पड़ा। साथियों के बीच गाड़ी पर सो रहे मित्र को ऐसा लगा जैसे बादी से छुटकारा मिलने पर वो सूरज की किरणों के सहारे ठेठ गगन तक ऊपर चढ़ जायेगा। सेही का मांस खाते ही दुरुस्त होकर वो घोड़े से भी तेज दौड़ने लगेगा। ऐसे मित्र की बराबरी तो सगा भाई भी नहीं कर सकता।

गणमण-गणमण गाड़ी चल रही थी। चलते-चलते मार्ग की एक बाजू टेढ़ा बिल देखकर कारीगर ने गाड़ी रोकी। नजर गड़ाकर बिल की ओर देखने लगा। बादी से जुड़े मित्र ने कराहते पूछा, 'सेही के बिल का पता चल गया ?'

'लगता तो ऐसा ही है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मित्र के आनन्द का पार नहीं रहा। कोहनी टिकाकर थोड़ा ऊपर हुआ। एक साथी को रास थमाकर कारीगर बिल के पास गया और इधर-उधर ध्यान लगाकर देखने लगा। कभी सेही के खोज ढूंढ़ने के लिए आँखें फाड़ता तो कभी बिल के अन्दर गहरा झाँकता और कभी बिल को अँगुलियों से नापता।

इस कारीगर को ऐसा गुणी तो नहीं जाना था! खतोड़ में खटपट करते हुए भी कितना ध्यान रखता है! जमीन पर गहरी नजर गड़ाकर इस तरह देख रहा था गोया रेत पर लिखे किसी के अक्षर बाँच रहा हो। कुछ फासले तक उसने दो-तीन चक्कर लगाये। अब तो सूर्य के उजास में कुछ वहम हो तो कारीगर के लिए उसके विश्वास में कुछ वहम हो। जो वक्त पर काम आये, वो ही अपना। बीमार होने पर ही निरोगी काया का महत्त्व अच्छी तरह समझ में आता है। इस बार चंगा होने पर वो भँवरे की तरह फूल-दर-फूल चक्कर लगाता उड़ेगा। मित्र के इलाज की मेहरबानी से फकत दो जून सेही का मांस खाते ही उसका पोर-पोर मुक्त हो जायेगा। इस बादी जैसी खराब बीमारी दूसरी कोई नहीं है। जन्म-जन्मान्तर भला हो इस कारीगर का, जो इतना आसान इलाज बताया।

कि इतने में अत्यधिक उत्साह से प्रफुल्लित कारीगर गाड़ी की तरफ दौड़ता नजर आया। बादी से जकड़े मित्र के हृदय में आनन्द का ओर-छोर नहीं रहा। अब वो तीसरा सूरज उगते ही सवाया अच्छा हो जायेगा। कराहना बन्द करके उत्साह से पूछा, 'क्या सेही मिल गयी?'

कारीगर दुगुने उत्साह से बोला, 'नहीं तो क्या जंगल में घास खोदने आया था! सेही तो क्या, सेही के पुरखे भी मेरी नजर से नहीं बच सकते।'

'पुख्ता जाँच हो गयी?'

'हाँ, एकदम पुख्ता! या तो सेही बिल में है या जंगल में कहीं चरने गयी है। तीसरी बात हो ही नहीं सकती। बेचारी सेही की क्या औकात कि मेरी नजर से बच जाये! सात पाताल तक नहीं छोड़ता। यहाँ नहीं मिलती तो मैं चाँद की घाटियों तक पीछा करता।'

मित्र ने पूरा विश्वास करने के बहाने फिर पूछा, 'तो सेही की खोज कहाँ हुई?'

गोया सेही हाथ में आ गयी हो, इस तरह कारीगर दूने जोश से बोला, 'या तो सेही बिल में है या जंगल में कहीं चरने गयी है।'

बादी में जुड़े मित्र को पुख्ता तसल्ली हो गयी कि वो अब तन्दुरुस्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ ही जाता है। सेही या तो बिल में या जंगल में! तब किसी तीसरी जगह का सवाल ही कहाँ उठता है? मित्र हो तो ऐसा। खतोड़ का काम छोड़कर उसकी खातिर कितनी तकलीफ उठायी। मरकर भी एहसान नहीं बिसराया जा सकता!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोजी

पीढ़ी-पीढ़ी की गति न्यारी। जने-जने को मति भारी। मन माने सो सुख का साझ। मन सोचे सो दुख की दाझ। हृदय-हृदय के न्यारे भाव। वश चले सो अच्छा दाव। कि बरसों पुरानी बात है कि किसी बस्ती में सात बनिये बसते थे। सातों ही सगे भाई। सभी एक से बढ़कर एक दौलतमन्द। शादीशुदा। सज्जन व गुणवान। पर मझले भाई को छोड़कर सभी निस्सन्तान थे। बाल-बच्चों से वीरान उन सातों हवेलियों में फकत एक बार ही थाली की झंकार सुनायी दी। जैसे-तैसे पुरखों का वंश तो चला। फिर किस बात की कमी! सभी बहुएँ कोख से जन्मी औलाद से भी ज्यादा उसे प्यार करने लगीं। सातों भाई आँखें बिछाये रहते थे। देखते ही तबीयत बाग-बाग हो जाती थी। बारी-बारी सातों हवेलियों के आँगन में खेलता हुआ वो नन्हा बालक भरपूर नौजवान हो गया। निपट निरोगी काया। सात धनकुबेरों की आँखों का इकलौता तारा। एक चीज माँगे तो सैकड़ों हाजिर।

पर इन्सान का यह कैसा अनूठा स्वभाव है कि अत्यधिक सुख से धीरे-धीरे ऊब होने लगती है। बेहद मौज और ऐश अन्दर ही अन्दर सुलगने लगते हैं। कोई वस्तु मुश्किल से हाथ लगे तो दिल खुश होता है। अगम्य ठौर पहुँचने से आनन्द मिलता है। सीधी-सरल राह चलने की क्या खासियत! दुर्गम पथ पर चलना ही जीवन है।

यथायोग्य समझ आते ही बनिये के उस लाडले को ऐशोआराम, सुख-शान्ति और दौलत के ठाट-बाट से उकताहट होने लगी। वो रोजाना ही आधा भूखा रहने की कोशिश करने लगा। पर घरवाले तो हवेली के उस चिराग की खातिर एक पाँव पर खड़े थे। कितने दिन तक यह भेद छिपा रहता! सभी ने शामिल होकर भूख कम लगने का कारण पूछा। उसने समझाने की काफी कोशिश की, पर बात कुछ बनी नहीं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चारों ओर सेवकों को भेजकर नामी वैद्य और ओझाओं को बुलवाया गया। बढ़िया-से-बढ़िया इलाज किया गया। गण्डे-ताबीज बाँधे गये। पर वो इन सबसे और अधिक विचलित हो गया। अब सभी उसे अपनी आँखों के सामने रखना चाहते थे। एक पल भी नजर नहीं आने पर वे बैचेन हो उठते थे। उसने भरसक समझाया कि इस तरह आठों पहर रखवाली करने से उसका अहित ही होगा। अबूझ बच्चे को भी काफी छूट देनी पड़ती है, फिर वो तो पूरा नौजवान है। यदि उसे अब भी अपनी मर्जी से नहीं चलने दिया गया तो उसे ताजिन्दगी औरों का मोहताज रहना पड़ेगा।

पर घरवालों को अपनी समझ और लाड़-दुलार पर पूरा विश्वास था। बेटे की बात इस कान से सुनते और उस कान से निकाल देते। अब वो क्या उपाय करे! घरवाले तो उसे दर्पण में अपनी सूरत देखने के लिए भी अकेला नहीं छोड़ते थे। तब वो अपने-आपसे कब पहचान करे? कैसे वो अपनी इयत्ता को सबसे अलग देखे और जाने।

कभी वो झुंझलाकर चिढ़ता हुआ कहता कि यह कैसा अजीब पहरा है, जहाँ अपने-आप से भी मिलने की गुंजायश नहीं है। कभी वो नाराजगी जतलाता कि उससे अधिक अनाथ और असहाय शायद ही दुनिया में कोई और हो।

समूचे हालात पर अच्छी तरह विचार करके बस्ती के लोगों ने कहा, 'इस उम्र में माँ-बाप की संगत से नहीं, औरत के सहवास से मन रमता है। शीघ्र ब्याह कर दो।'

बुजुर्गों की सीख उनके गले उतर गयी। उस हवेली से रिश्ता करने के लिए शायद लक्ष्मी भी तरसती थी। घरवालों को मुश्किल से दो होंठ हिलाने पड़े और सारे इलाके में बात फैल गयी। बेटे के मना करने के बावजूद एक करोड़पति सेठ की इकलौती बेटी से जल्द ही उसका ब्याह हो गया। और बहू भी लाखों में एक। अप्सरा के समान सुन्दर। साथ में बेशुमार धन और गहनों का दहेज। इस तरह इकट्ठा हुए धन के समन्दर को कैसे पार किया जा सकता था?

बड़े-बूढ़ों की सीख एकदम बेकार तो नहीं गयी। वाकई सूने और दम-घोंटू जीवन की सड़ाँध में ब्याह की अनमोल रात एक नयी खुशबू का संचार हुआ। नया उत्साह, नया आनन्द। पाँवों तले बिछी हुई धूल, मदमस्त हवा के जादू से बवण्डर की तरह झूम उठी। उसके बाद सारे दिन वो अत्यधिक बेताबी से रात के अँधेरे का इन्तजार करने लगा। आग बरसाता हुआ दिन उसे बरस के समान लगता और अमृत बरसाती हुई रात उसे एक पल की तरह छोटी महसूस होती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर नयी बात नौ दिन, खींचा-तानी तेरह दिन! कैसा भी नया आनन्द हो, बार-बार दुहराने से बेस्वाद हो जाता है। धीरे-धीरे सेजों का स्वाद भी उसे फीका लगने लगा। नयी बात में नित्य नयी खोज का श्रम कहाँ तक पाला जा सकता है? रोजमर्रा की अभ्यस्त आँखें चाँद-सूरज से भी मुँह फिरा लेती हैं। फिर रंगमहल के चिराग की तो हस्ती ही क्या?

वो मायापति साहूकार फिर अपने होश गँवा बैठा। वे ही हवेलियाँ, वे ही कँगूरे। वो ही परिवार, वो ही प्यार-दुलार। वो ही सुख, वही माया। वो ही सूरज और वही छाया। वो ही धन्धा और वो ही व्यापार। वे ही हाट-बाजार और वे ही भण्डार। वे ही कुएँ और वो ही पानी। कहाँ तक वही प्यास बुझाये?

बुजुर्गों ने गहरा विचार किया और फिर वही राय दी कि एक बहू से मन भर गया हो तो दूसरा व्याह कर दो। तीसरा कर दो। ऐसे साहूकारों को बेटी देने की लालसा कौन नहीं करता? पर इस बार उनकी सीख का उसने रत्ती-भर भी खयाल नहीं किया। साफ इन्कार कर दिया कि अगर ज्यादा जिद की तो वो सब छोड़-छाड़कर धूनी रमा लेगा।

घरवालों ने सलाह-मशवरा करके समझाया, 'बेटे, यह कुबेर का खजाना देर-सवेर तुझे ही सँभालना है। धन्धा व व्यापार करने लायक तेरी भरपूर उम्र है। जितनी जल्दी समझ आयेगी, उतना ही फायदा होगा। बनिये के घर जन्मे को निठल्ले बैठे शोभा नहीं देता।'

तब उस नौजवान ने राम जाने क्या सोचकर जवाब दिया कि अपनी यह दौलत तो पीढ़ियों तक फूंकने पर भी चुकनेवाली नहीं है, फिर घूरे की तरह इसे बढ़ाने में क्या सार है?

परस्पर काफी विवाद करने के बावजूद् किसी की समझ में कुछ नहीं बैठी। आखिर तंग आकर उस बात को जहाँ की तहाँ छोड़ दिया। अधिक खींचने पर बात टूटती है।

चढ़ती जवानी के दिल में उथल-पुथल मची हुई थी कि जलती आग में अकस्मात् घी आ पड़ा। आधी रात ढलने के बाद पति-पत्नी दोनों ही फूलों की सेज पर अगाढ़ निद्रा में सोये हुए थे। अपने-अपने सपनों में सुध-बुध बिसराये हुए। अचेत। संज्ञाहीन।

सवेरे आँख खुलने पर पत्नी ने मुस्कराकर पूछा, 'यह मसखरी कब सीखे? मेरा गहना क्यूं खोला? सर की रखड़ी तक नहीं छोड़ी!'

पत्नी के कहने पर नौजवान को खयाल आया कि उसके गले का हार और अँगूठियाँ भी गायब हैं। उसने सोचा कि पत्नी ने मजाक किया है और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्नी ने सोचा कि पति ने मजाक किया है।

कि इतने में माँ-बाप हड़बड़ाते हुए रंगमहल में आये। हाँफते-हाँफते पूछा, 'कोई चोरी तो नहीं हुई? अच्छी तरह अपना गहना वगैरह सँभालो।'

गहना हो तो सँभालें! पट्ठे चोर ने तो शरीर पर कुछ भी नहीं छोड़ा। थोड़ी देर में ही खलबली मच गयी। सातों भाई उद्विग्न-से इधर-उधर चक्कर काटने लगे। हवेली के समूचे धन की जाँच की गयी। सेठों की सम्पत्ति का इन्तज़ाम इतना माकूल था कि उस तक चोरों की पहुँच नामुमकिन थी। अतः और कुछ वश नहीं चला तो चोरों ने दोनों का गहना ही उतार लिया। लाखों की सम्पत्ति हाथ से निकल गयी। थोड़ा-बहुत तो ध्यान रखना चाहिए था! घोड़े बेचकर सोते हैं!

घरवालों ने ज्यादा झिकझिक की तो वो सोच-विचारकर बोला, 'इतना अफसोस करने की क्या बात है? अपने लिए इस चोरी से क्या फर्क पड़ता है? ले गये तो कोई बात नहीं। जिसका दारिद्र्य दूर हुआ सो ही अच्छा।'

घरवाले उस अबूझ नौजवान की उलटी सलाह कैसे मानते! चोरों ने घर देख लिया था, फिर क्या अन्त! कमाने में बरस लगते हैं, पर चोरी जाने में कुछ समय नहीं लगता। वे चोरों को शीघ्र पकड़वाने की युक्ति सोचने लगे। चोरों के खोजों को तगारियों के नीचे दबाने को कहकर वे ठाकुर को फरियाद करने के लिए दौड़े। चोर नहीं पकड़े जाने पर ठिकाने को नीचे देखना पड़ता। तुरन्त खोजियों को दौड़ाया। एक-दो खोजी तो ऐसे उस्ताद थे कि पानी के अन्दर खोज ढूंढ़ लें।

समूचा गाँव सेठों की हवेलियों के सामने इकट्ठा हो गया। हरेक अपनी समझ मुताबिक राय दरसाने की उतावली कर रहा था कि कितनी जल्दी और कैसे चोर पकड़े जा सकते हैं?

इस मेले के दरमियान साहूकारों का लड़का एक नयी ही उलझन में फँसा हुआ था। उसे न तो चोरी गयी सम्पत्ति की चिन्ता थी और न चोरों को सजा देने की व्याकुलता। उसे तो आश्चर्य हो रहा था कि चोरों ने ऐसा करिश्मा कैसे कर दिखाया! चारों ओर सख्त पहरा! फिर भी किस सफाई से सेंध लगायी! निःशंक हवेली में घुसे। सोये हुए पति-पत्नी का समूचा गहना उतार लिया और भनक तक नहीं होने दी। सर झुकाना पड़ता है इस फन के सामने। यह तो कोई बात भी हुई! जोखिम के बिना जीने में क्या मर्दानगी है! कारोबार-तिजारत का काम तो सीधा-सरल काम है। कोई अपाहिज भी कर सकता है। लेकिन चोरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने के लिए सवा हाथ का कलेजा चाहिए। हिम्मत, विश्वास ग्रौर ग्रक्ल की रोशनी चाहिए। उसका वश चले तो वो चोरों की पीठ ठोंके। चरणों में भेंट चढ़ाकर उन्हें ग्रपना गुरु बनाये।

खोजियों का निर्देश मिलते ही सामनेवाले ठिकाने की ग्रोर ऊँट ग्रौर घोड़ों का कारवाँ कूच कर गया। चोर निश्चिन्त होकर सम्पत्ति का बँटवारा कर रहे थे कि चारों ग्रोर घेरा डाल दिया गया। वे कुछ सोचें कि यह क्या हुग्रा, उससे पहले ही उन्हें रस्सियों से जकड़ दिया गया। सारे गहनों को कब्जे में ले लिया। चोरों की तो किस्मत ही खराब थी, वरना उनके हुनर में तो कोई कसर नहीं थी। कँटीली बेंतों से पिटते हुए तीनों चोरों का गाँव में घुसना हुग्रा कि तमाशबीन उन्हें देखने के लिए दौड़े। साहूकारों के घर का नौजवान भी उनके साथ हो लिया। फन के उन बन्दों के दर्शनों की खातिर वो बेहद ग्रधीर हो रहा था। पर उसने ग्रपनी ग्राँखों से जो नजारा देखा तो ग्रन्दर की साँस अन्दर ग्रौर बाहर की साँस बाहर रह गयी। उन चोरों की कमर पर एक चिथड़ा लिपटा हुग्रा था। नंगे पाँव। नंगे बदन। दोनों हाथ पीठ पीछे बँधे हुए। कमर से एक लम्बा रस्सा बँधा हुग्रा, जिसे पाँच-सात व्यक्ति मजबूती से पकड़े थे। चोरों के दोनों ओर दो-दो नौजवान कँटीली बेंतों से सटाक-सटाक उन्हें धुनते चल रहे थे। उनका सारा शरीर लहूलुहान हो गया था। टप-टप खून के रेले झर रहे थे। प्रत्येक खोज पर खून के चित्र ग्रंकित हो रहे थे। चिल्लाना तो दूर, चोरों ने चूँ तक नहीं की। तमाशे की उत्साही भीड़ हँसी-ठट्ठा करती हुई साथ-साथ चल रही थी। पर सेठों का लड़का यह नजारा देखकर संज्ञाहीन हो गया। गोया कोई काठ का पुतला किसी ग्रदीठ जादू के वशीभूत स्वयं ही चलने लग गया हो। सुध-बुध विसराया हुग्रा वो पुतला पैरों की बैसाखियों पर भीड़ के साथ-साथ गढ़ में पहुँचा। चोरों को पहचानते ही ठाकुर दाँत पीसते गरजा, 'हरामजादो, कचूमर निकालकर ग्रधमरा करने के बावजूद भी तुमने फिर मेरे ठिकाने में चोरी की ?'

चोर सर झुकाये चुपचाप खड़े थे। वे क्या जवाब देते ! उनके मौन से ठाकुर के क्रोध के उफान को ग्रौर ग्राँच लग गयी। हथमारों को ग्रादेश दिया, 'यों इनकी ग्रक्ल ठिकाने नहीं ग्रायेगी। खाट पर चढ़ाकर ग्रच्छी तरह धुनाई करो। तब भी न मानें तो सर पर कसकर गीले चमड़े की रस्सी बाँधो।'

खाट पर चढ़ाने का वो वीभत्स नजारा देखते ही उस साहूकार के लड़के के सर में जैसे कोई विस्फोट हुग्रा हो। ऐसा लगा कि खोपड़ी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। पागल की तरह लपककर वो चोरों के पास पहुँचा। हथमारों की तरफ देखते हुए लड़खड़ाती आवाज में कहने लगा, 'छोड़ दो इन्हें। हाथ लगाने की भी जरूरत नहीं। मुझे चोरी का कुछ भी खमियाजा नहीं लेना।'

उसकी आवाज से एकदम सन्नाटा छा गया। सभी एक-दूसरे का मुँह जोहने लगे। ठिकाने की प्रजा ठाकुर के चेहरे की तरफ घुर-घुर कर देखने लगी और ठाकुर बारी-बारी सातों साहूकारों के मुँह की ओर देखने लगा। समूचे ठिकाने का मालिक होते हुए भी वो उन साहूकारों का मालिक नहीं था। उन हवेलियों के सहारे राम जाने कितनी बार ठिकाने की इज्जत बची थी। इसलिए ठाकुर का मुँह भी गूँगे की तरह बन्द हो गया। ठिकाने की रिआया भी उन हवेलियों की इज्जत ठाकुर के बराबर ही करती थी।

सब की जबान मानो तालू से चिपक गयी हो। सातों भाइयों के सर भी चक्कर खाने लगे। यदि इस मौके पर पुलता न्याय नहीं हुआ तो हवेलियों की नींवें तक अपनी जगह पर नहीं मिलेंगी। चोरों को तो बस इतना ही बहाना चाहिए। अब तो फकत लड़के का बाप ही बात सँभाल सकता है। वरना तीर तो छूट ही गया समझो। बाप के सर में मानो दबी हुई आग भभक उठी हो। वो घबराया हुआ बेटे के पास पहुँचा। थूक उछालते बोला, 'जिस दिन तेरी कमाई हुई सम्पत्ति हो, उस दिन इन चोरों को छोड़ना। मैं तो इनको पूरी सजा दिलवाऊँगा।'

किसी ने आज तक बेटे को किसी बात के लिए टोका नहीं था। पहली दफा बाप के मुँह से यह झिड़की सुनकर वो कुछ घबरा गया। पर चोरों की हालत देखकर उसे तुरन्त होश सँभालना पड़ा। गम्भीरता से बोला, 'अब ये कभी चोरी नहीं करेंगे।'

बाप ने तुरन्त जवाब दिया, 'बेटे, इन नकटों को कोई लाज-शर्म थोड़े ही है। इस तरह मार खाते-खाते तो इनकी उम्र गुजर गयी।'

बेटे ने आश्चर्य से पूछा, 'क्या इसके पहले भी ये ऐसी मार खा चुके हैं?'

बाप ने मुस्कराकर कहा, 'ऐसी क्या, इससे भी कहीं ज्यादा। इसी ठिकाने में सात बार इनकी हड्डियाँ ढीली हुई हैं।'

'तब भी इन्होंने चोरी नहीं छोड़ी?'

'नहीं, तभी तो बेशर्म और कमीने कहलाते हैं।'

बेटा विक्षिप्त-सा होकर बोला, 'तब तो चोरी से बेहतर दूसरा कोई काम नहीं है। मैं भी चोरी करूँगा।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके मुँह से यह क्या बात सुनी ? थोड़ी देर तक वे उसका चेहरा इस तरह देखते रहे मानो फटी हुई आँखों की पुतलियाँ बाहर आ गिरेंगी। ऐसे बोल सुनकर भी उनके कानों के पर्दे नहीं फटे, सो ही आश्चर्य की बात थी। बाप अटकते हुए रुँधे गले से बोला, 'चोरों की दुर्गति तो तू देख ही रहा है!'

अनजाने बोल स्वतः ही उसके गले से फिसल पड़े, 'देख रहा हूँ, तभी तो इस जीवन की कामना करता हूँ।'

यह बात कहकर वो सर झुकाये चोरों के खोजों पर अंकित लाल मोतियों को नजर के अदीठ धागे में पिरोते हुए गढ़से बाहर निकल गया। इन खोजों के जरिये वो अपना सुख ढूंढ़ेगा! मनुष्य-योनि की शान्ति और मुक्ति खोजेगा। कारोबार और तिजारत करना बड़ी लाचारी है या चोरी करना बड़ी लाचारी है ? धन जोड़ना निकृष्ट काम है या चोरी करना ? इन्सान के लिए क्या धर्म है और क्या अधर्म, इसका फैसला कौन करे ? उसके दिमाग में कुछ ऐसी ही बातों का उबाल उठ रहा था।

किसी भी तरह का, कैसा भी काम करने के लिए जब इन्सान का रोम-रोम इस कदर तड़फने लगे तो उसे सीखने में न कोई समय लगता है और न ही किसी गुरु की जरूरत होती है। वो आप ही उस काम में माहिर हो जाता है।

थोड़े ही दिनों में वो मायापति साहूकारों का लड़का चोरी के काम में ऐसा माहिर हुआ कि नामजद चोरों को भी उसने पीछे छोड़ दिया। खोजी खोजों का पीछा करते हुए सीधे सेठों की हवेलियों पर पहुँचते। पर यह बात तो सपने में भी कब सम्भव थी ? खोजियों की अक्ल भी गश खा गयी। इस इलाके में यह चोर तो नया ही आया। साहूकारों के लड़के से उसके खोज हू-ब-हू मिलते थे। मानो उसी के पाँव काटकर लगा दिये हों। राम जाने, हवेली के किस कोने में जाकर छिप जाता है ? यदि मन की शंका जाहिर करें तो उलटे खोजियों को लोग पागल कहें। बात तो खूब ही उलझी।

उधर सेठों के इकलौते पुत्र का दिमाग धीरे-धीरे सुलझने लगा था। हृदय में खुशी व आनन्द की नित्य नयी शिराएँ खुलने लगीं। सहवास की अपेक्षा रात को चोरी करने का आनन्द अधिक है। कोई भनक न सुन ले इस खातिर नंगे पाँव। कोई पहचान न ले इस खातिर राखपुता शरीर। अपने घर आकर वापस हुलिया बदल लेता। पहली चोरी में ऐसा लगा गोया स्वर्ग का राज्य हाथ लग गया हो। सौभाग्य और शकुन की बात कि फिर कभी उसे घबराहट नहीं हुई। पहले-पहल तो उसे ऐसा लगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि गगन के तारे उसका पीछा कर रहे हों। हवा में हिलते पेड़-पौधे मानो अभी जोर से चिल्ला उठेंगे--चोर···चोर! मानो बाड़-काँटे और दीवार-दरवाजे उसके पैरों की चाप सुन रहे हों। पर धीरे-धीरे सारा भय जाता रहा। अब तो पकड़े जाने पर उन चोरों की तरह मार खाये तो उसे सन्तोष हो। जानबूझकर पकड़े जाने पर तो धन्धे की मर्यादा घटती है। उसके खोजों पर भी जब उसी तरह खून के चित्र अंकित होंगे तभी उसका मनुष्य-जीवन सफल होगा। पहली दफा पीटे जाने पर ही धन्धे से किनारा कर ले तो जीना बेकार है। पेढ़ी और हाट पर बैठकर लेन-देन करना या वस्तुओं का नाप-तोल करना तथा स्याह-सफेद करना कितना गन्दा काम है! एकदम निकृष्ट और घिनौना! कोई अबला भी ऐसा काम कर सकती है।

बड़े घरानों को छोड़कर वो कहीं भी हाथ नहीं डालता था। अपनी हवेली के तहखानों में छिपाया हुआ चोरी का माल वो रोजाना अपने हाथों से सँभालता था। अब तो ठाकुर के गढ़ में चोरी करने पर ही उसे सन्तोष होगा।

पर उधर सारे इलाके के सभी छोटे-बड़े चोर उसकी चोरियों से दुविधा में पड़ गये कि यह पहुँचा हुआ चोर कहाँ से आ टपका? उसके बदले में मार खा-खाकर उनके अस्थि-पंजर ढीले हो गये थे। बगैर चोरी किये कैसे कबूल करें! खोजियों की तो सारी साख-पेठ उठ गयी। खुद के मन में आश्वस्त हुए बगैर वे मायापति साहूकारों के लड़के पर सन्देह भी कैसे करते? सैकड़ों चोर उड़ाकर ले जायें तो भी उनकी सम्पत्ति कम होनेवाली नहीं थी। तब वो क्यूं चोरी करता? किसी काइयाँ चोर ने यह तरकीब तो बड़ी निराली सोची। अवश्य ही कोई मायावी होगा। यदि खुद चोरों ने पीछा करके पकड़वाने का उपाय नहीं किया तो चन्द दिनों में यह इलाका छूट जायेगा। अपने-अपने बूते पर सभी चोर सतर्क हो गये और छिप-छिपकर पहरा देने लगे।

एक बार साहूकारों का लड़का होशियारी से चोरी करके गढ़ के पिछवाड़े से उतरा ही था कि छिपे हुए चोर फटाफट उसे पकड़ते ही नजर आये। नहीं पहचाना तब तक उसकी अच्छी-खासी धुनाई कर दी। पर पहचानते ही उलटे खुद थर-थर काँपने लगे। अरे, यह तो साहूकारों का लड़का! उसे यह क्या मसखरी करने की सूझी? जिन साहूकारों के बल पर जो ठिकाना अब तक कायम है, वहीं चोरी करने की क्या तुक है? बार-बार पैर पकड़कर वे बहुत गिड़गिड़ाये। माफी माँगी।

इस अप्रत्याशित व्यवहार से साहूकारों का लड़का चकित रह गया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहने लगा, 'तुम यह क्या तमाशा कर रहे हो ? मुझे भी उन चोरों की तरह कँटीली बेंतों से मारो। सारा शरीर लहूलुहान होने पर ही मुझे शान्ति मिलेगी।'

उन चोरों को यह पहेली कुछ समझ में नहीं आयी। कहने लगे, 'किस की माँ ने सवा सेर सोंठ खायी है जो आपकी तरफ अँगुली भी उठाये।'

'मैंने तो इससे पहले भी काफी चोरियाँ की हैं। पकड़ा तो फकत आज ही गया हूँ। जो दूसरे चोरों की सजा है, वही मेरी सजा है। इसमें दुराव क्यूँ ?'

'आप तो शायद मजाक कर रहे हैं। वरना आप जैसे तकदीरवालों को चोरी करने की क्या जरूरत ?'

'इसमें जरूरत की क्या बात है ! मेरी जरूरत तो मैं जानता हूँ।'

पकड़नेवाले उन बहादुर चोरों ने उसकी कोई बात नहीं सुनी। पैर पकड़कर विवियाने लगे, 'अन्नदाता, हम गरीबों पर कृपा-दृष्टि रखना। यदि आपका पता होता तो हम पीछा ही नहीं करते।'

'लेकिन चोरी तो मैंने की है। उलटे तुम क्यूँ डर रहे हो ?'

'आप जैसे सिकन्दर चोरियाँ करेंगे तो आकाश धरती पर आ गिरेगा। चोरी करनेवाले अभागे तो हमीं बहुत हैं।'

हलचल सुनते ही आस-पास के लोग इकट्ठे होने लगे सो थोड़ी देर में ही अच्छी-खासी भीड़ हो गयी। किसी की भी समझ में यह नहीं आया कि साहूकारों के लड़के ने इस तरह सारे शरीर पर राख क्यूँ मल रखी है ! शायद इन चोरों को पकड़ने की खातिर हुलिया बदला हो। पर ये बातें तो एकदम विपरीत निकलीं। कान पापी हैं। ऐसी बातें तो सुनने से ही पाप लगता है। जिसके कानों में यह बात पड़ी, उसे कुछ ऐसा लगा मानो उसने कोई बड़ा पाप या अकर्म किया हो। लोगों के मन की यह रंगत देखकर उसकी सारी आशाएँ बुझ गयीं। तब वह स्वयं अगुआ बनकर गढ़ की ओर रवाना हुआ।

ठाकुर को देखते ही उसे पकड़नेवाले चोर दूर से ही चिल्लाये, 'अन्नदाता, भारी गलती हो गयी। सर कलम करने का आदेश फरमाएँ तब भी कम है।'

इतने में उसके घरवाले दौड़ते-हाँफते गढ़ में आये। बात तो सुनी, उससे भी अधिक सच निकली। पर इस अपार सम्पत्ति के मालिक को चोरी से क्या सरोकार ? दुश्मनों ने अवश्य कोई गहरी चाल चली है !'

पकड़नेवाले तीनों चोरों पर नजर पड़ते ही सातों भाइयों ने तुरन्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहचान लिया कि ये तो उसी दिनवाले चोर हैं। मझला भाई छड़ी ऊपर करता हुआ कहने लगा, 'चण्डालों, तुमने फिर चोरी करने की हिम्मत की ?'

साहूकारों का लड़का शीघ्रता से बोला, 'चोरी इन्होंने नहीं, मैंने की है।'

एक भाई मुस्कराने की चेष्टा करते बोला, 'इन्हें बचाने की खातिर तू क्यूं झूठ बोल रहा है ?'

उसे पकड़नेवाले चोर बाप के पाँव पकड़कर कहने लगे, 'हमें चोरी करने की शर्म नहीं है, पर आज तो चोरी से भी बड़ा जुर्म हो गया। हमारा अंग-अंग काँटों से बींध डालो।'

आस-पास के लोगों ने अपने-अपने हिसाब से सारी बात समझी। वे तीनों चोरों पर हाथों की ऐंठन झाड़नेवाले ही थे कि साहूकारों के लड़के ने सामने आकर सबको रोक दिया। फिर जो हकीकत उसने अपने मुँह से बयान की तो सुननेवालों के चेहरे उतर गये। यह कैसी अनहोनी हुई ? कौन दो सिरवाला है जो सेठों के तहखानों में छिपाये हुए माल की तलाशी लेने जाये। इसमें जरूर कुछ रहस्य होगा। सबको इस तरह अविचल खड़े देखा तो सेठों के लड़के ने बढ़-बढ़कर कहा, 'विश्वास न हो तो मेरे साथ चलो। एक-एक चीज का हवाला दे दूंगा कि यह किसके घर से चोरी हुई है।'

एक बराबरी का अड़ियल सेठ, जो उन सातों भाइयों की सम्पत्ति से ईर्ष्या करता था, बोला, 'चलने में क्या हर्ज है ? चोरी के कारणों की जांच-पड़ताल तो होती रहेगी, पर एक बार चोरी हुआ माल तो अपनी नजरों से देख लें।'

घरवाले कुछ जवाब देने ही वाले थे कि बेटा बीच ही में बोला, 'फिर तो मुझे भी वही सजा मिलेगी न ? एक मर्तबा अपने खोजों पर खून के चित्र देख लूं तो बनिये की जिन्दगी सार्थक हो।'

मानो किसी के मुंह में जबान ही न हो। पलकें झपकाते हुए एक-दूसरे को चोर-दृष्टि से देखते रहे। बराबरीवाले सेठ ने अधिक जिद की तो मोतबरों को मायापति सेठों के तहखानों की तलाशी लेने के लिए जाना पड़ा।

वास्तव में इलाके की अनगिनत दौलत उन तहखानों में छिपी हुई थी। सभी मुंह उतारकर वापस गढ़ में आये। ठाकुर ने बार-बार सभी से जोर देकर पूछा, फिर भी उन्होंने हाँ या ना, कुछ भी जवाब नहीं दिया। कभी-कभी सच बिना बोले ही जाहिर हो जाता है। तब उसकी ताकत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हजार गुना बढ़ जाती है। पर सातों भाइयों की दौलत का चमत्कार कि आग लगते-लगते बुझ गयी। बराबरीवाला सेठ इधर-उधर झाँकते बोला, 'बात है तो सही, पर समझ में कुछ नहीं आता !'

तब साहूकारों का लड़का आवेश में गरजते बोला, 'तुम लोग समझना ही नहीं चाहते। मैं कह रहा हूँ कि मैं चोर हूँ और मुझे चोरोंवाली सजा दी जाय। तुम्हारे न्याय के विधान में चोरों की खातिर नहीं, फकत गरीबों की खातिर सजा है।'

फिर तो उसने देर तक निरर्थक बकवास की, पर किसी के दिमाग में कुछ बैठी नहीं। उन लोगों की समझ ही अलग थी ! सो अपनी समझ मुताबिक सातों भाइयों ने मिलकर, अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए सभी को दुगुना धन लौटा दिया। अपना-अपना हिस्सा कबूल करके लोग-बाग काफी खुश थे। सेठों की दौलत के भण्डार में तो कुछ फर्क पड़ा नहीं, बल्कि उनका यश और बढ़ गया। सेठों की शालीनता कि उन्होंने दान करने का यह नया ढंग निकाला ! उसके बाद हर व्यक्ति सेठों के लड़के से हाथ जोड़कर अरदास करने लगा कि वो उसके घर चोरी करने की कृपा करे। चोरी जैसे नाचीज जुर्म की उसे इतनी भारी सजा तो नहीं मिलनी चाहिए थी ? उसकी नस-नस ऐंठने लगी। चोरी के सुख की हलकी-सी झलक मिलते ही उस पर पाला पड़ गया। अब वो सुख का खोजी किन खोजों के जरिये आगे बढ़े। चोरी करने के तो सारे रास्ते ही बन्द हो गये !

उसके घरवाले भी निराले थे और दुनिया के लोग भी निराले। उस इलाके में भले ही कोई चोरी करे, सातों भाई मुँहमाँगा हर्जाना भर देते थे। और लोग भी कम हजरत नहीं थे। बिना चोरी के ही चोरी का शोर मचा देते थे। फकत दो होंठ हिलाने से ही हर्जाना मिल जाने पर कौन पीछे रहता ? ठिकाने के चोरों की तो किस्मत ही खराब थी। आखिर तंग आकर उन्होंने दूसरे ठिकाने की राह ली।

साहूकारों का लड़का अन्दर ही अन्दर घुटने लगा। अब वो सुख की प्राप्ति के लिए क्या करतब करे ? जबरदस्त ऊहापोह से घिरा, वो गुमसुम बैठा था कि उसे अपनी हवेली के पास शोर-शराबा सुनायी दिया। उसने हड़बड़ाकर जो नजारा देखा तो उसके घुटते हुए मन को कुछ राहत मिली। उसी दिन की तरह एक नौजवान कँटीली बेंतों से पिटता हुआ उधर ही आ रहा था। सारे बदन से लहू चू रहा था। खून की धाराएँ बह-बह कर उसके खोजों पर चित्र अंकित कर रही थीं। सुख के खोजी की आँखों में फिर एक नयी आशा जगमगाने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूछने पर पता चला कि उस नौजवान ने एक औरत के साथ बलात्कार करने की कोशिश की थी। औरत के घरवालों ने अच्छी-खासी मरम्मत की और उसके बाद रस्सियों से जकड़कर गढ़ में हाजिर किया। उस दुराचार के लिए उस ठिकाने में दण्ड की यही परिपाटी थी। भीड़ छँटने के पश्चात साहूकारों का लड़का उस लम्पट के खोजों पर अंकित चित्रों को नजर गड़ाकर निहारता रहा। शायद ये खोज उसे सुख की अदृश्य मंजिल तक पहुँचा सकें!

वो ऐसा ही औघड़ खोजी था। समझ में आने के बाद कैसी ढील! दूसरे ही दिन राजा कर्ण की वेला, पनघट जाती हुई एक हसीन पनिहारिन को उसने लपककर बाँहों में भर लिया। सहेलियों का झुण्ड हिरनियों की मानिन्द बिखर गया। हल्ला सुनते ही लोग-बाग इकट्ठे हो गये। बलात्कार की चेष्टा करनेवाले व्यक्ति को पकड़ा। अरे, यह तो साहूकारों का लड़का! यदि पहले पता होता तो सुनी-अनसुनी कर देते। घर के काम से देरी हुई सो अलग से। जिस पर मक्खी बैठे, वो ही उड़ाये। पर अब सामने आकर कैसे छिपें! सभी उसके चारों ओर इस तरह खड़े रहे मानो वे अपराधी हों। तब साहूकारों का लड़का कहने लगा, 'गुनहगार तो मैं हूँ। मुझे सजा दो। उस नौजवान की तरह मुझे भी कँटीली बेंतों से पीटो।'

एक बोला, 'यह काम हमारा नहीं, मालिकों का है।'

'तो मुझे भी उनके पास ले चलो।'

'पधारिए।'

भीड़ से भी पहले उसके घरवाले गढ़ में पहुँच चुके थे। खबर सुनकर औरत के घरवाले भी दौड़े आये। ठाकुर से हाथ जोड़कर फरियाद की। थोड़ी देर में राम जाने अन्दर-ही-अन्दर क्या जाल गुँथा कि औरत के घरवाले राजी हो गये। लोग-बाग तो पहले से ही राजी थे। माया का मायावी असर ऐसा ही होता है! घरवालों को मुँहमाँगा हर्जाना मिल गया। माया से बड़ी कोई मर्यादा नहीं होती। एक-एक करके सारी भीड़ छँट गयी। नहाये सो ही पुण्य!

ठाकुर ने साहूकारों के लड़के को समझाते हुए कहा, 'तुझे इन चुहलबाजियों का क्या शौक चर्राया है? तेरे घर में किस बात की कमी है? चाँद-सी बहू। बेशुमार दौलत। ऐसे इज्जतदार माँ-बाप!'

उसने कुछ जवाब नहीं दिया। इस तरह गुमसुम खड़ा रहा मानो उसकी जबान अचानक कट गयी हो।

घरवाले जैसे-तैसे उसे घर ले गये। तरह-तरह की मिसालें देकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझाने लगे तो वो बावले की तरह झुँझलाकर बोला, 'आप मुझे जीने देंगे या नहीं? दौलत के इस घूरे के भीतर मैं कीड़े की जिन्दगी नहीं जीना चाहता। मेरा दम घुटता है। अपनी समझ के मुताबिक मैं कुछ न कुछ अनहोनी करना चाहता हूँ और आप हर बार मेरे सारे रास्ते बन्द कर देते हैं।' घरवालों ने कहा, 'पगले, हम से ज्यादा तेरा खैरख्वाह और कौन होगा? समूचे देश में अपने मुकाबले का दौलतमन्द और कोई नहीं है। भला, दौलत से बड़ा सुख और क्या हो सकता है? तू तो सोने के पालने में झूला है।'

'लेकिन इतनी दौलत की हमें जरूरत कहाँ है? वह न तो खायी जा सकती है, न चाटी जा सकती है, न पी जा सकती है और न ओढ़ी जा सकती है। जरूरत पड़ने पर चिलम के नाजीज तम्बाकू की गरज भी इस दौलत से पूरी नहीं हो सकती! तब छाती पर पहाड़ की तरह इसका बोझ क्यूँ? इस बोझ तले मेरा तो दम घुटता है। मैं खुली हवा में साँस लेना चाहता हूँ और आप चारों ओर दीवारें खड़ी कर देते हैं। ऐसे जीने से तो मरना बेहतर है।'

माँ उसके गालों पर हाथ फिराते कहने लगी, 'थूक अपने मुँह से। तेरे तो दुश्मन का भी सर न दुखे। तू ही तो इन सातों हवेलियों का चिराग है। हमारी आँखों की रोशनी है।'

'इन हवेलियों का चिराग और आपकी आँखों की रोशनी मैं नहीं, आपकी दौलत है।'

इस बार बाप को कहने का अच्छा मौका हाथ लगा। बीच में ही बोला, 'पर यह सारी दौलत तेरे लिए ही तो है। हम इसे साथ तो ले जाने से रहे! बेटे, तेरे सुख की खातिर ही हम इतना प्रपंच कर रहे हैं!'

बेटा हाथ झटकते कहने लगा, 'नहीं चाहिए मुझे इतनी दौलत। यदि मैं आपका प्यारा हूँ और आप वाकई मेरा सुख चाहते हैं तो यह तमाम दौलत बाँटकर मुझे मेरी मरजी से जीने दें।'

बाप को थोड़ा तैश आ गया। तो भी डरते बोला, 'अपनी मरजी से तो तू चोरियाँ करता है, पनहारियों से छेड़छाड़ करता है। हर्जाना दे-देकर आधी दौलत तो ठिकाने लग गयी।'

एक-एक अक्षर को धकेलते बेटा कहने लगा, 'इस दौलत के बीच तो मुझे कोई दूसरी बात सूझती ही नहीं। मेरा तो दिमाग ही फिर गया।'

बेटे के मुँह से दिमाग फिरने की बात सुनने के बाद, कैसी ढील और किस बात की कमी? कई देशों के आला वैद्य बुलवाये गये और बढ़िया-से-बढ़िया इलाज करवाया। पर बेटे की हालत ठीक होने की बजाय दिन-ब-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन अधिक बिगड़ने लगी।

वहू आठों पहर उसकी सेवा में रहती थी, उसका हुक्म बजाती थी। बाँदी के समान उसकी सेवा-वन्दगी करती थी। पर पति का सूखा हुआ दिल हरा नहीं हुआ। अपने मन का हाल वो ही जाने। आठों पहर उसकी आँखों के सामने वे खोज और उन पर अंकित खून के चित्र तैरते रहते। कभी धुंधले और कभी एकदम साफ! उन खोजों के अतिरिक्त उसे कोई दूसरी राह नजर ही नहीं आती थी। किधर आगे वढ़े? किधर पीछे मुड़े?

एक बार संयोग की बात कि वो पहरेदार के हाथ में थमी तलवार देखने लगा सो देखता ही रहा। तलवार चमचमा रही थी। नजर नहीं टिके, ऐसी तेज धार। राम जाने उसे क्या सनक सूझी कि उसने लपककर तलवार छीन ली। पहरेदार का गला काटा और उसके बहते खून में नजर गड़ाकर जोर से चिल्लाया, 'अब मैं डाके डालूंगा।'

आवाज सुनकर घरवाले इकट्ठे हो गये। उनका लड़का खून में सनी तलवार थामे निःशंक खड़ा था। किसकी हिम्मत जो उसके हाथ से तलवार छीने! थरथर काँपते घरवाले चुपचाप खड़े रहे। अब इस पूत के लिए करें तो क्या करें? सात घरों में ऐसा नालायक कैसे पैदा हुआ? किसके पुण्य में कसर है?'

घरवालों की समझदारी कि जैसे-तैसे उस मामले को रफा-दफा किया। मरे हुए को जीवित करना तो उनके वश में नहीं था, पर जीवित लोगों को खुश करने के उनके पास काफी उपाय थे। जो मर गया वो दुख के लफड़ों से मुक्त हुआ। साँप का डसा अचानक मर जाता है तो उसका भी सब्र करना पड़ता है। फिर उन्होंने तो स्वर्गवासी के घरवालों की सात पीढ़ियों का सुख कर दिया था। तव घरवाले क्यूं चिकचिक करते? दुनियादारी निभाने की खातिर रो-धोकर अपने हाथों से अपनी आँखें पोंछ लीं।

पर अपने लड़के को समझाना उनके वश की बात नहीं थी। यदि हाथ में नंगी तलवार न होती तो समझाने का प्रयास भी करते। उनके देखते-देखते सातों हवेलियों का उजियारा ओझल हो गया और वे आँख तक न झपका सके। साहूकारों का बेटा डाकू बन गया। सम्पूर्ण इलाके में उसके आतंक की धूम मच गयी। पर घरवाले हों तो ऐसे। डाकों का बेहिसाब हर्जाना चुकाने में वे भी पीछे नहीं रहे।

घरवालों की नेकनामी के साथ लोगों की समझदारी भी कम नहीं थी। सेठों का मन रखने के लिए वे तुरन्त घर का सारा धन-माल लाकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप ही सौंप देते थे। फिर तो डाकों में भी कुछ दम नहीं रहा। घरवाले राम जाने किस जन्म का बदला चुका रहे हैं। कहीं भी उसकी दाल नहीं गलने देते। उसकी मनचाही नहीं होने देते।

आखिर उसने बेहद लाचार होकर तलवार भी फेंक दी। अब तो फकत देश के मालिक राजा को ही नुकसान पहुँचाने पर उसकी तमन्ना पूरी हो सकती है!

अभी तक उन खोजों की सुखं झलक उसकी आँखों से ओझल नहीं हुई थी। रात को नींद में भी उस चिर-प्रतीक्षित सुख को पकड़ने के लिए वह तड़फता था।

ऐसे औघड़ खोजी के दिल में हिम्मत और जोश की कमी नहीं होती। सो एक दिन सीधा राजदरबार पहुँचा। उस वक्त राजा तीनों रानियों के साथ रंगमहल में चौपड़ खेल रहा था। पाँचों राजकुमार भी पास बैठे खेल का आनन्द ले रहे थे कि इतने में वो बावला खोजी बेधड़क रंगमहल में घुसा और राजा को पीठ पर लादकर फौरन बाहर निकल आया। रानियाँ और राजकुमार चिल्लाते हुए पीछे दौड़े। शोर-शराबा सुनकर चौतरफ सैनिकों ने नंगी तलवारें लेकर घेरा डाल दिया। यदि वार करें तो राजा को भी नुकसान पहुँचने का अन्देशा था। घबराया हुआ दीवान कुछ दूसरा आदेश देने ही वाला था कि सामने धड़ड़ करता हुआ रंगमहल गिर कर मलबे का ढेर बन गया। यदि अन्नदाता अन्दर होते तो एक साथ ही समूचे राज-परिवार का सफाया हो जाता। यह अजनबी अवश्य ही कोई पहुँचा हुआ सन्त है। फिर कौन पीछे रहता? हरेक ने उसके चरणों में सर नवाकर माफी माँगी!

बेचारे खोजी की तो किस्मत ही खराब थी। उसने बार-बार कहा कि वो राजा के साथ घात करनेवाला था। उसे उसकी सजा दो। कँटीली बेंतों से उसकी धुनाई करो। पर किसी ने भी उसकी इस झूठी बात पर विश्वास नहीं किया। रानियाँ उसे राज्य का सम्पूर्ण खजाना देने के लिए हठ करने लगीं और राजा आधा राज्य सौंपने के लिए मिन्नतें करने लगा। औघड़ खोजी का सर फिरकी की तरह घूमने लगा। उसका यह वार भी बिलकुल खाली गया। दौलत से तंग आकर भागा तो आगे वही दौलत हाजिर! किसको क्या समझाये? फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। धैर्य के साथ कहने लगा, 'मुझे एक दिन की मोहलत दो। आज तो मैं कुछ भी स्वीकार नहीं करूँगा। कल मेरी जो भी इच्छा होगी, जाहिर कर दूँगा।'

ऐसे पूजनीय सन्त की बात काटने की हिम्मत किसी में भी नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थी। जैसा उसने कहा, सभी ने मान लिया। पर उसके दिल में जो ज्वालामुखी धधक रहा था, वो कैसे शान्त हो ?

दूसरे दिन दर्शनों की खातिर अपार भीड़ एकत्रित हो गयी। तिल भर भी जगह नहीं बची। सोने के सिंहासन पर बैठे राजा के पास ही वो पूज्यवान महात्मा बैठा हुआ था। दोनों तरफ चार सुन्दर दासियाँ चँवर डुला रही थीं कि अचानक उस पहुँचे हुए सन्त पर क्या खब्त सवार हुई कि वो सिंहासन से झट उठ खड़ा हुआ और हाथ में जूता लेकर राजा के सर पर दनादन पाँच-सात जूते मारे और पगड़ी दूर फेंक दी!

राज-दरबार में सन्नाटा छा गया। कोई दूसरा होता तो अब तक खोपड़ी धड़ से अलग जा गिरती।

दीवान पगड़ी उठाने के लिए नीचे झुका तो उसे पगड़ी के भीतर एक अध-कुचला साँप नजर आया। चौंककर पीछे हटा। घबराकर जोर से चिल्लाया, 'साँप, अन्नदाता साँप! देश का भाग्य कि हुजूर के सर पर जूते फटकारने से इसका फन कुचल गया!'

फिर तो जिसने भी देखा, उसने यही कहा कि डसने पर पानी माँगने की भी जरूरत नहीं थी। दीवान का इशारा मिलते ही सैनिकों ने उस साँप की चिन्दी-चिन्दी कर डाली।

तीनों रानियों ने एक साथ सन्त के चरणों में दण्डवत प्रणाम किया। हर्ष के मोती बरसाते बोलीं, 'अब पता चला कि आपने एक दिन की मोहलत क्यूँ माँगी थी?'

राजा पैर पकड़कर रुँधे गले से बोला, 'आधा राज्य सौंपे बगैर मैं तो मुँह में पानी भी नहीं डालूँगा।'

जय-जयकारों की गूँज के दरमियान हतप्रभ-सा वो औघड़ खोजी सूखे ठूँठ की तरह अविचल खड़ा था। सुख के किन खोजों पर आगे बढ़ा और क्या हाथ लगा? अब इसकी सीमा कहाँ है? लेकिन जीवन की तो सीमा है। उम्र का तो अन्त है। किसे अपने मन की बात बताये? बताने पर समझेगा कौन? और समझाने की जरूरत भी क्या है? मन की बात मन में रहने पर ही उसकी मर्यादा है!

राजा ने हाथ जोड़कर अरदास की, 'भगवन्, सारा दरबार आपका प्रवचन सुनने के लिए तरस रहा है।'

तब वो औघड़ खोजी ठहाका लगाकर जोर से हँसा, गोया बिजली कौंधी हो। हँसते ही उसने अपना अन्तिम प्रवचन सुनाया, 'जीवित इन्सान कभी सुखी नहीं हो सकता। मौत ही उसके घिनौने जीवन की मुक्ति है। चरम सार्थकता है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कहकर उसने लपककर एक सैनिक के हाथ से नंगी तलवार छीन ली और अपने ही हाथ से अपना गला काट डाला ! खून में सनी तलवार लिए वो पाषाण-मूर्ति की तरह खड़ा रहा । पर नीचे गिरे हुए सर की हँसी अभी तक धुंधली क्यों नहीं हुई ? उस रहस्य भरी मुस्कान का मर्म आज तक किसी की समझ में नहीं आया । अपनी-अपनी समझ है ! वो औघड़ खोजी वापस जिन्दा हो तो इस गूढ़ पहेली का अर्थ समझाये !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लजवन्ती

किसी एक वक्त की ढलान पर, कुदरत की गोद मे एक गाँव बसा हुआ था। गाँव, गाँव के साँचे में ढला हुआ था। वे ही नयी-पुरानी झोंपड़ियाँ। वे ही गोबर से लीपी दीवारें। वे ही उखड़ते पलस्तर। घर-घर वे ही मिट्टी के चूल्हे। वो ही फिरोजी धुंआ। मर्दों के सर पर वे ही बाँके साफे। वे ही तारों से गुँथी लाठियाँ। औरतों के जाति माफिक अलग-अलग लहँगे। वे ही छाती तक घूंघट। वही भेड़ों की में-में और वही खुरों से उड़ती खेह। वही तेरी-मेरी दाँताकसी। वो ही अपने-अपने झमेले। वे ही जंजीरें, वे ही पगहे और वे ही खूंटे। वे ही ठाँव, वो ही घासफूस और वही गोबर। वे ही कुएँ और वो ही पानी। वे ही ठाकुर और वही ठकुरानी।

अपनी मर्यादा लायक वो गाँव एक मगरे पर काफी ऊपर बसा हुआ था। डेढ़ेक कोस दूर एक तालाब था। पानी फकत दीवाली तक ही टिकता था। तालाब के सूखने पर कुएँ चालू हो जाते थे। फिर तो वे ही गड़गिड़ियाँ, वे ही डोलियाँ और वे ही रस्सियाँ। वे ही पनिहारियाँ और वे ही घड़े। रिम-झिम की झंकार से राह कुछ ऊपर उठ जाती थी। गीत गाती उन टोलियों के इर्द-गिर्द हवा तरसती-सी डोलती रहती थी। सूरज की किरनें उनके रूप-जोबन का परस करती थीं। पेड़-पौधे झुक-झुककर मुजरे लेते थे।

बस्ती से बाहर निकलते ही उन पनिहारियों के मानो पंख निकल आते थे। पंख गले के। पंख हृदय के। लेकिन एक पनिहारिन तो गोया लज्जा की ही पुतली हो। सहेलियों के साथ सुनसान जंगल में भी घूंघट नहीं हटाती थी। न मजाक व चुहलबाजी की कुछ परवाह करती और न ही पलटकर कोई तेज जवाब देती। बीस बार बतलाने पर भी बड़ी मुश्किल से बोलती थी। गुलाबी कलाई और पीली ओढ़नी। गोया इन्द्र-धनुष के दो रंगों ने गगन का मुकाम छोड़कर उसकी देह में शरण ली हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुरंगी ईढूंनी पर पीतल का चमचमाता घड़ा और दमकता कलश, गोया ठठेरे को चाँद का टुकड़ा हाथ लग गया हो। सहेलियाँ हर तरह की मजाक कर-कर थक गयीं, पर उसका वेवड़ा छलका हो तो वह छलके। घूंघट के भीतर सिन-फिन मुस्कराती रहती।

एक मर्तबा एक हमउम्र सहेली ने नाक तक आजिज आकर आखिर ताना मारा, 'अगर घूंघट ही औरतों के शील की सही कसौटी है तो हम सभी बेहया व छिनाल औरतें हैं।'

ताने की उस मार से भी उसके होंठ नहीं खुले। एक बार सहेली की ओर देखकर वापस मुँह मोड़ लिया। तब साथ चल रही दूसरी सहेली ने कहा, 'देख, तू घूंघट कभी उघाड़ना ही मत। मनचला सूरज तुझे चूमने के लिए टूटकर नीचे गिर पड़ा तो सारी दुनिया में हमेशा-हमेशा के लिए अँधेरा हो जायेगा।'

एक बोली, 'अगर कोई मरद परिन्दा गाल नोच डाले तो!'

दूसरी बोली, 'मरदों की बनिस्पत इसे औरतों का डर ज्यादा लगता है। बचपन में जरूर कोई जबरदस्त चोट हुई होगी।'

बाजू में चलती एक सहेली धकियाती हुई कहने लगी, 'किसी ने कहा था कि इसके तो जनमते समय भी नाभि तक घूंघट खिंचा हुआ था। सोलह सिंगार किया हुआ था।'

एक प्रौढ़ पनिहारी बोली, 'ताने मार-मारकर तुम चाहे जितना थूक उछालो, चिकने घड़े पर बूंद नहीं ठहरती। मैं इसके हाथ पकड़ती हूँ, कोई घूंघट हटाने की हिम्मत करे तो आँखों की प्यास बुझे।'

'अगर आँखें भेंगी हुईं तो!'

'अगर चेहरे पर चेचक के दाग हुए तो!'

'अगर होंठ रावणखण्डा हुआ तो!'

'अगर दाँत···!'

आगे के बोल होंठों से बाहर निकलनेवाले ही थे कि उसके चेहरे पर नजर पड़ते ही जीभ की नोक दाँतों के बीच थोड़ी कट गयी। ऐसा रूप न सुना न देखा। वाक़ई यह रूप तो ढका ही ठीक है। एक साथ सभी सहेलियों के चेहरे उतर गये। सूर्योदय के बाद पूनम के चाँद की क्या बिसात! लाख भला हो बेचारी का जो तमाम औरतों की इज्जत रख ली, वरना सात फेरे के शौहर भी मुँह मोड़ लेते। ऐसा रूप तो सात तालों के भीतर ही छुपा रहना चाहिए।

उन बोलों के साथ ही घूंघट उघाड़नेवाली सहेली ने फौरन वापस घूंघट नीचे क्या डाला गोया चाँद के आगे झीनी बदरिया छा गयी हो।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक गहरी आह भरकर बोली, 'जब यह चाँद दिन को भी ऐसा चमकता है तो फिर राम जाने रात को कैसा दमकता होगा ?'

'राम से ज्यादा तो इसका पति जानता है।'

तमाम सहेलियों के पाँव मानो चिपक गये हों। हाथ पकड़नेवाली प्रौढ़ औरत बमुश्किल अटकते-अटकते बोली, 'फकत ऐसा रूप होने पर ही रस के लोभी भँवरे सपने में भी दूसरे फूलों पर नहीं मँडराते।'

एक ने कहा, 'इस मरदजात का तो मुझे मरकर भी एतबार नहीं होता। इनको तो मिश्री की बजाय अफीम मीठा लगता है।'

'लगता होगा, पर एक बात तो हमने सोची ही नहीं। अगर तमाम भँवरे दूसरे फूलों से मुँह फेरकर एक फूल पर ही मँडराने लगे तो अपनी कैसी दुर्गति होगी ?'

एक सहेली व्यंग से हँसते कहने लगी, 'पर साथ ही साथ उस फूल की दुर्गति भी कम नहीं होगी।'

कि सहसा पनिहारियों की नजर सामने से आते एक आदमी पर पड़ी। पर वो तो अपनी धुन में ही मगन था। उसके दोनों हाथों में दो सफेद कबूतर थे, जिससे बतियाते हुए उसने एक दफा आँख उठाकर देखा तो उसे भी मार्ग पर कुछ औरतें नजर आयीं। गोया पेड़-पौधों के झुण्ड पर नजर पड़ी हो। अनघड़ पत्थरों से अधिक उसने उनकी परवाह नहीं की। राह से जरा हटकर दूर-दूर चलने लगा। सफेद साफा। सफेद अँगरखी और सफेद ही धोती। आबनूसी दाढ़ी। चेहरा तो ठीक से नहीं दिखा, पर फबती निरोगी कद-काठी। हाथों में थामे कबूतरों को देखते वो काफी आगे निकल गया। एक दफा पीछे मुड़कर देखना तो दूर रहा, उसके मन में ऐसी चाह भी शायद नहीं जगी हो।

तमाम सहेलियाँ चुपचाप एक-दूसरे का मुँह जोहने लगीं कि अचानक राह के सन्नाटे को तोड़ती वह हाथ पकड़नेवाली प्रौढ़ औरत उसके घूँघट की ओर देखते बोली, 'अगर इस भँवरे को नचा सके तो तेरे रूप को मानूँ।'

घूँघट उघाड़नेवाली सहेली बोली, 'यह तो आँखें रहते भी अन्धा है। मन की आँखें भी मुँदी हुई हैं। न जाने यह कैसा मर्द है।'

एक सहेली गर्दन हिलाती कहने लगी, 'मुझे तो इसके मर्दपने में ही कमी लगती है।'

साथवाली सहेली ने शंका की, 'पर तुझे इस जाँच का मौका कब मिला ?'

मुस्कराहट दबाते बोली, 'सपने में।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इर्द-गिर्द चल रही तीन-चार सहेलियाँ बोलीं, 'फिर भी तू नसीब वाली है। तेरा सुहाग बड़ा है।'

इस बार लजवन्ती नार के होंठ खुले। कोयल से सवाई मीठी वाणी में कहने लगी, 'पतियों की पीठ पीछे भी तुम्हें ऐसी बातें करते शर्म नहीं आती ?'

एक सहेली के मुँह से बरबस जवाब निकला, 'तूने शर्म और रूप को एक पल भी छोड़ा हो तो हमारे हिस्से में आये ?'

सहेलियों से बहस करने में कोई फायदा नहीं। वैसे भी वह बहुत कम बोलती थी, पर उस दिन के बाद तो एकदम मौन ही साध लिया। सचमुच विवाह की वेदी पर उसे ऐसा ही कुछ लगा था गोया आकाश और जमीन का परस्पर पाणिग्रहण हुआ हो। अग्नि-देवता की ज्वालाओं की वह अटूट साक्षी कैसे विसरायी जा सकती है ?

दोनों हाथों में उसी तरह दो सफेद-झक कबूतर लिये उस आदमी से राह में सामना होना और उसका जरा दूर हटकर जाना उसी तरह जारी था। वह लजवन्ती नार झीने घूँघट से उसका सफेद लिबास और सफेद कबूतर निरखती रहती। एक दिन एक सहेली ने कहा, 'अगर यह बावला वचन दे तो मैं औरत की योनि छोड़कर कबूतरी बनने को तैयार हूँ। फिर तो पीछा करके अपने हाथों से मुझे पकड़ेगा ही।'

दूसरी सहेली ने तपाक से जवाब दिया, 'अगर उसके कानों में यह भनक पड़ गयी तो वो कबूतर पकड़ना ही छोड़ देगा।'

राम जाने क्या सोचकर एक सहेली ने लजवन्ती नार की ओर मुखातिब होकर पूछा, 'क्यूं, तेरा मन कबूतरी बनने को होता है या नहीं ?'

तब वह लजवन्ती नार धीमे से बोली, 'इन्सान की जिन्दगी का ऐसा सुख छोड़कर मैं कबूतरी बनने की कामना क्यूं करने लगी ? इस इलाके में मेरे पति से सुन्दर और समझदार कितने चेहरे हैं ?'

वह प्रौढ़ सहेली एक गहरे राज की बात बतलाते कहने लगी, 'हाथ लगे सोने की बजाय औरों का जस्ता ज्यादा सुहाना लगता है। मन की इस बान पर कौन अंकुश रख सका है ?'

उसके बाद तमाम सहेलियों ने बढ़-चढ़कर यह बात कही कि उस लजवन्ती नार के शरीर में मन या हृदय नाम की कोई चीज है ही नहीं। वह फकत पत्थर की खूबसूरत मूरत की मानिन्द है। फकत हिलने-डुलने, चलने, बोलने व साँस लेने की खासियत है।

फिर तो हर रोज वे ही मजाकें। वही चुहलबाजी। राह चलते समय, पानी सींचते समय। पानी छानते समय। सर पर रखे घड़े खाली हों या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भरे। वही गुफ्तगू। गोया दुनिया की दूसरी तमाम बातें चुक गयी हों।

ग्राखिर वेहद ग्राजिज ग्राकर एक दिन उस लजवन्ती नार ने अपने चिपके होंठ खोले। बोली, 'ग्रब तो तुम्हारे साथ एक पल भी रहने का धर्म नहीं है।'

सहेलियों को यह वात वहुत बुरी लगी। कहा, 'जैसे तेरा मन माने, ग्रपना ग्रलग धर्म निभा, पर ग्रौरत-जात होकर इस वेजोड़ रूप ग्रौर यौवन के साथ नितान्त ग्रकेली इस सुनसान जंगल में ग्रपना पानी कैसे रख सकेगी ? हम तो इतनी ग्रौरतें एक झुण्ड में होते हुए भी भीतर-ही-भीतर डरती हैं।'

तब लजवन्ती नार निस्संकोच बोली, 'जिसके मन में चोरी की चाह नहीं, उसे रोशनी से क्या भय ! मेरे मर्द को मुझ पर पूरा भरोसा है। मेरे ससुरालवालों को मुझ पर किसी तरह का वहम नहीं है। फिर कैसा डर ? किसका डर ? मैंने तो डर का नाम ही ग्राज तुम्हारे मुँह से सुना है।'

उस दिन ग्रौर उस घड़ी से ही तमाम सहेलियों ने उसे छिटका दिया। तब भी उसके मन में भय नहीं हुग्रा ग्रौर न ही किसी के संग-साथ की उसने कोई दूसरी जुगत सोची। सर पर बेवड़ा लिये बेहिचक पानी लेने ठेठ कुइयों तक जाती ग्रौर भरा बेवड़ा लेकर वापस बेहिचक अकेली ग्राती। सर पर सूरज भगवान की निगहदारी फिर बेचारे इन्सान से क्या भय ! कबूतरोंवाला आदमी सामने मिलता हो तो मिले, वो तो उल्टा राह छोड़-कर काफी दूर से निकल जाता है। कभी ग्राँख उठाकर भी उसकी ग्रोर नहीं देखता। ग्रगर ग्रपने मन में कोई पाप नहीं है तो फिर वो कबूतरों के बदले नंगी तलवार लेकर उसके पास से निकले तो भी उसका क्या बिगाड़ लेगा ! पर बस्ती के दूसरे मर्द तो एकदम टुच्चे हैं। शादीशुदा होते हुए भी ऐसे बदनीयत हैं, मानो आज दिन तक किसी ग्रौरत-जात की शक्ल देखना तो दूर उसका नाम तक न सुना हो। खूबसूरत ग्रौरत का पका हुग्रा मांस तक खाने के लिए भी इन लफंगों की मनाही नहीं है।

गाँव के घर-घर में उस खब्ती ग्रादमी की चर्चा वक्त-बेवक्त चलती ही रहती थी। ऐसा पागल व्यक्ति तो वैरन की कोख में भी पैदा न हो। राम जाने ग्रकेले रहने में ही इसे क्या सुख मिलता है ! देखते-देखते ग्रपनी सारी बपौती फूंक दी—फकत इन कबूतरों की खातिर। पिछले जन्म में जरूर यह बावला कबूतरों की बिरादरी का सरदार रहा होगा। हजार सफेद कबूतर इकट्ठे करने की सनक पाल रखी है। न ग्राज तक किसी का कहना माना है, न ग्रागे ही मानेगा। कबूतरों के सिवाय उसे दूसरी किसी बात का शौक नहीं। न मवेशियों का, न खेत-खलिहानों का, न जमीन-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायदाद का, न धन-दौलत का और न ही घर-गृहस्थी का। इन्सान की योनि में आकर कबूतरों के साथ जिन्दगी काट रहा है।

हर रोज दो नये कबूतर पकड़ने का प्रण पूरा किये बगर वो मुंह में पानी तक नहीं डालता था। राम जाने किस जंगल के किस कोने से वो सफेद कबूतर पकड़ कर लाता था? कबूतर हाथ लगने पर उसे ऐसा लगता गोया चाँद-सूरज उसकी पकड़ में आ गये हों। एक बार बाड़े में पहुँचने के बाद भोले कबूतर उस ठौर को छोड़ना ही नहीं चाहते थे। मानो जन्म देनेवाले माँ-बाप के घोंसले में आ गये हों। उससे नजरें चार होते ही कबूतर तो कबूतर, बाज, गिद्ध, कौवे और साँप तक उस पर एतबार कर लेते थे। पर उसने अपनी प्रीत का प्रसाद कबूतरों के सिवाय किसी को नहीं बाँटा। हाथों से दाना चुगाता। हाथों से पानी पिलाता। एक-एक कबूतर को प्यार से सहलाता।

एक दफा उस लजवन्ती नार को राम जाने कैसा अन्देशा हुआ कि अपनी छोटी ननद से साथ चलने को कहा। सारी बात ध्यान से सुनकर ननद ने फौरन उसके वहम का निवटारा कर दिया। कहने लगी, 'कबूतर-वाले इस पागल आदमी से तो जरा भी डरने की जरूरत नहीं है। यह तो सपने में भी किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता। निरीह कबूतर तक जब उसका भरोसा कर लेते हैं तो फिर तुम्हें काहे का डर!'

उसके बाद दूसरे-तीसरे दिन बीच राह उस आदमी से सामना हो जाता। झीने घूंघट से उसकी छवि ठीक से नहीं दिखती, तब वह कभी-कभी पीछे मुड़कर, घूंघट हटाकर उसे देखती। पर वो आदमी अपनी धुन के सिवाय किधर भी आड़ा-टेड़ा नहीं झाँकता था। वह मुंह मस्कोरकर, आगे चल पड़ती। होंठों-ही-होंठों में कुनमुनाती---बावला कहीं का! माँ की कोख ने नाहक नौ महीने बोझ ढोया। पर मर्द जात होकर यह राह से दूर क्यूं हट जाता है? औरतों का डरना तो वाजिब है, पर इसके मन में ऐसा क्या डर है? बिलकुल उलटी खोपड़ी का है।

एक दफा पानी भरने के बाद वह रस्सी समेट रही थी कि वो सामने से आता दिखायी दिया। पानी सूखने पर कुएँ से सटकर सीधा रास्ता था। कोई दूसरा आदमी होता तो प्यास के बहाने जरूर पानी पीने आता। पर इसे तो कबूतरों के अलावा कुछ दिखता ही नहीं। कुएँ के करीब से जब वो आगे निकलने लगा तो उसने टिचकारी देकर हाथ से बुलाया। उसने मुंह फिराकर उसकी ओर देखा। तब उसने बेवड़ा उठवाने का इशारा किया, पर वो तो अपनी जगह से हिला ही नहीं। खड़े-खड़े ही अबूझ बच्चे की तरह बोला, 'मेरे तो दोनों हाथों में कबूतर हैं। छोड़ूंगा तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उड़ जायेंगे।'

फकत इतनी बात जतलाकर, वो अपनी राह आगे चल दिया। और वह लजवन्ती नार पाषाण-पुतली के उनमान एक ठौर रुप गयी। कुछ देर बाद होश आने पर ऐसा लगा मानो किसी अदीठ आग में उसका रूप-यौवन धू-धू जल रहा हो। इससे तो मौत आ जाये तो बेहतर। बेमन हाथों बेवड़ा क्या उठाया मानो दो अनघड़ पत्थर सर पर रखे हों।

दूसरे दिन राम जाने क्या सोचकर वह घर से बड़ा घड़ा और बड़ा कलश लेकर पानी लेने रवाना हुई। हमेशा से घड़ी सवा घड़ी पहले।

संयोग की बात कि रस्सी समेटने के बाद उसने इधर-उधर देखा ही था कि वो गाँव से आता दिखायी दिया। कुएं से दो-एक खेतवा दूर। शायद कबूतरों की खोज में जा रहा है। ज्यों-ज्यों वो नजदीक आने लगा त्यों-त्यों वह दाहिने हाथ से पीठ पीछे का ओढ़ना इस तरह नीचे सरकाने लगी, मानो उसे इस हरकत का कोई ध्यान ही न हो। मानो वो हाथ और वो जिस्म, उसका न होकर किसी और का हो।

करीब आते ही उसे बतलाते कहने लगी, 'अब तो तुम्हारे दोनों हाथ खाली हैं। फिर क्या बहाना लेकर मना करोगे?'

उस अमृतवाणी से चौंककर वो लजवन्ती के चेहरे की ओर देखकर होंठों-ही-होंठों में बड़बड़ाया, 'अब तो फकत इक्कीस कबूतरों की कमी है।'

तब वह लजवन्ती नार मुस्कराती-सी बोली, 'कम हैं तो पूरे कर लेना, पहले मुझे बेवड़ा तो उठवा दो।'

'कल किसने उठवाया था?'

'कल तुमने मना कर दिया तो गुस्से के जोर से मैंने आप ही उठा लिया।'

'अब वो गुस्सा कहाँ गया?'

'पर आज तो गुस्सा करने पर भी यह बेवड़ा उठने का नहीं है।'

'क्यूं, आज ऐसी क्या नयी बात हो गयी?'

'दिखता नहीं, यह बेवड़ा उससे कितना बड़ा है?'

'तब यह बड़ा बेवड़ा किसके भरोसे लायी?'

'किसी भले आदमी के भरोसे, जिसके हाथों में अभी कबूतर नहीं हैं।'

तब वो गर्दन लचकाता कहने लगा, 'जब तुमने इतना भरोसा किया है तो जरूर पूरा करूँगा।'

और वाकई वो नीमपागल आदमी उसे बेवड़ा उठवाकर झट रवाना हो गया। न आगे बात बढ़ायी और न एक बार भी पीछे मुड़कर देखा। इसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनिस्पत घूंघट का भरम बना रहता तो बेहतर था। सृष्टि-रचना से आज तक किसी खूबसूरत औरत के यौवन की इतनी तौहीन नहीं हुई होगी। राह का फासला तय करना मुश्किल हो गया।

दूसरे दिन वह ननद को साथ लेकर कबूतरों के बाड़े में गयी। वह छाती तक घूंघट डाले बाड़े का फलसा उघाड़कर भीतर घुसी। अजीब और अनूठा नजारा था। अनगिनत सफेद कबूतर-ही-कबूतर उसके इर्द-गिर्द दाना चुग रहे थे। गुटरगूं-गुटरगूं की अमृतवाणी घोलते, पंख फड़फड़ा रहे थे। बारी-बारी उमंग से उस आदमी के सर और कन्धे पर चढ़-उतर रहे थे। दोनों बिलकुल पास चली गयीं, तब भी कबूतरों तक ने कोई तवज्जुह नहीं दी। न डरे और न ही उड़े। उस आदमी की आँखों के सामने फकत कबूतर-ही-कबूतर नाच रहे थे। फिर वो क्यूं किसी का ध्यान रखे।

ननद जोर से पुकारकर बोली, 'मेरी भाभी कबूतरों का मेला निरखने के लिए आयी है।'

तब वो कबूतरों को दाना चुगाते हुए कहने लगा, 'पहले ही आना चाहिए था। कबूतरों से बढ़कर इस दुनिया में है ही क्या! पर घूंघट में यह नजारा ठीक से नजर नहीं आयेगा। इन भोले कबूतरों से कैसी शर्म!'

पर तब भी लजवन्ती नार ने घूंघट नहीं हटाया। ननद बोली, 'मेरी भाभी ने तो घूंघट न हटाने की मानो कसम खा रखी हो। मैंने भी अभी तक इसका मुँह नहीं देखा।'

कुछ देर घूंघट के भीतर से ही वो नजारा देखकर वह जैसे आयी थी, वैसे ही वापस चल दी। अपनी धुन में मगन वो कबूतरों को दाना चुगाता रहा।

लजवन्ती नार घर आयी तब भी उसकी आँखों के आगे वो ही नजारा पंख फड़फड़ा रहा था। मीठी गुटरगूं। वे ही सफेद कबूतर समूची मेढ़ी में फड़फड़ाने लगे सो रुके ही नहीं। बेइख्तियार पति के गालों पर हाथ फिराते कहने लगी, 'तुम दाढ़ी रखो तो तुम्हें भी खूब फबेगी।'

और उस सुझाव के साथ ही वह आँखें मूंदकर पति के बहाने उस कबूतरवाले आदमी की बाँहों में समा गयी और काली भुजंग दाढ़ी के परस से अपनी सुध-बुध ही भूल गयी। फिर तो कितनी रात और कितना सपना!

दूसरे दिन पनघट की आधी राह तय करने पर उसे सपनेवाला आदमी सामने से आता दिखायी दिया। दोनों आमने-सामने राह चल रहे थे। औरत के सर पर खाली बेवड़ा और आदमी के दोनों हाथों में दो कबूतर। पर आज यह आदमी रास्ते से अलग क्यूं नहीं हटा?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लजवन्ती के रोम-रोम में झुरझुरी दौड़ गयी। निगोड़े के मन में खोट दिखती है ! यह सुनसान जंगल ! कोई आवाज सुननेवाला भी आसपास नहीं है। अब करे तो क्या करे ?

पर उसे कुछ भी करने की जरूरत नहीं पड़ी। बीस कदम दूर से ही वो आँय-आँय बोलते कहने लगा, 'फकत दो कबूतर कम हैं। कल मेरा प्रण पूरा होगा। इस खुशी में राह से हटना भूल गया। पर मुझसे डरने की कतई जरूरत नहीं है। इतने बरस कबूतरों की सोहबत यों ही नहीं की !'

मन का खटका मिटते ही वह घूँघट के भीतर से बोली, 'कबूतरों की सोहबत से तुम कंकर खाना तो नहीं सीखे !'

वो आदमी कुछ धीमा पड़कर कहने लगा, 'उनकी देखा-देख कंकर खाने की कोशिश तो बहुत की, पर कामयाबी नहीं मिली। पेट फूलकर ढोल हो गया। बड़ी मुश्किल से मरते-मरते बचा।'

अपने ही मन का चोर लुप्त होने पर उस लजवन्ती नार को काफी-कुछ इत्मीनान हो गया। घूँघट के भीतर मुस्कराती-सी बोली, 'कबूतर तो एक पल की खातिर भीं कबूतरी का पीछा नहीं छोड़ते, पर तुमने तो अभी तक ब्याह ही नहीं किया। औरतजात से ही किनारा करते हो।'

काली भुंजग दाढ़ी के भीतर दूधिया हँसी छितराता वो कहने लगा, 'कल प्रण पूरा होने पर यह बात सोचूंगा। पर सपने के लायक कबूतरी मिलना वश में थोड़े ही है ! सपने की उस कबूतरी की खातिर ही तो यह प्रण पाला है। बाईस बरस पहले मुझे ऐसा ही एक अनहोना सपना आया था। तभी से मैंने उस सपने का पीछा नहीं छोड़ा।'

तब वह अकेली पनिहारी खिल-खिल हँसती बोली, 'पागल के सर पर सींग थोड़े ही होते हैं ! उस सपने के भरोसे सारी जिन्दगी गँवा बैठोगे।'

किसी अदीठ खुशी के जोर से वो आदमी उत्साह से कहने लगा, 'हजार कबूतरों की आशिष से क्या मुझे एक भी वैसी कबूतरी नहीं मिलेगी ?'

उस सवाल का कोई पुख्ता जवाब न देकर, वह आगे रवाना होते हुए बोली, 'तुम जानो और तुम्हारा सपना जाने। मुझे तो पानी को देर हो रही है।'

फिर तो उसने पीछे मुड़कर ही नहीं देखा। पर चोटी की सुरंगी लड़ियों में उलझी उस आदमी की निगाहों ने काफी दूर तक उसका पीछा नहीं छोड़ा।

दूसरे दिन फिर उसी जगह सामना हुआ। दोनों हाथों के कबूतरों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को लजवन्ती के घूंघट के सामने करते वो बेइन्तहा खुशी से बोला, 'आज मेरी प्रतिज्ञा पूरी हुई। भोले कबूतर जरूर मेरे सपने की लाज रखेंगे।'

यह बात कहकर उसने बावले की तरह खाली कलश की ओर ऊपर देखा ही था कि यकायक वह लजवन्ती एक फटकार के साथ घूंघट हटाकर तेज सुर में बोली, 'भोले कबूतरों की सोहबत से ही तुमने ये बिल्लीवाले छलकपट सीखे हैं? तुम्हारी आँखों का मैल मुझे साफ नजर आ रहा है। इस सुनसान जंगल में मेरे साथ जबरदस्ती करना चाहते हो?'

'पर मेरे दोनों हाथों में तो कबूतर हैं।'

'तो क्या हुआ? कबूतर खाली घड़े में डालकर ऊपर से कलश का ढक्कन नहीं दिया जा सकता?'

लजवन्ती के उन बोलों के साथ वो आदमी खुशी से नाचता बोला, 'हू-ब-हू वो ही सपना! मुझे कल की तरह याद है। मेरे सपने की कबूतरी, तूने मुझे बाईस बरसों के बाद दरसन दिये। शायद उसी रात तेरा जन्म हुआ होगा। अब ये कबूतर उड़ते हैं तो उड़ने दो। सारा आकाश सामने पड़ा है।'

तब शर्म से दुहरी हुई लजवन्ती के कानों को मनचाही फुसफुसाहट सुनायी दी, 'मेरे सपनों की कबूतरी! अब तो एक पल की जुदाई भी मेरे वश में नहीं है।'

दाढ़ी के वास्तविक परस से उसने होश-हवास बिसराते पूछा, 'तब इतने बरस यह जुदाई कैसे बर्दाश्त की?'

'पर मेरा सपना तो आज ही सच हुआ है! फिर जुदाई कैसी!'

हाथों की बन्दिश से छूटते ही दोनों कबूतर सफेद पर फड़फड़ाते उड़े सो उड़ते ही गये। अछोर आसमान जाने और उनके पर जानें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कागपन्थ

स्वारथ साँइं, स्वारथ राम। स्वारथ पूजा, स्वारथ धाम। कैसा दोस्त और कैसा भाई! कैसी बहन और कैसी भौजाई! कहाँ मुल्क और कहाँ भलाई! थूक उछाले मिले मलाई। कैसी माँ और कैसा बाप! सब है मतलब का सन्ताप। धरम-करम की बातें झूठी। अपने दाने, अपनी मूठी। खटदरसन का खोटा ज्ञान। थोथी माला, थोथा ध्यान। झूठी प्रीत और रूखा नेह। किसका घर और किसका गेह! भजन-साखी, हेली-हरजस। तीर हलाहल, टेढ़े तरकस। सूने मार्ग और सूने पंथ। उजले वेश और काले सन्त। तो निर्गुण निराकार साँइं हरेक का स्वार्थ पूरा करे कि एक दफा थार के रेगिस्तान में लगातार तीन साल तक ऐसा विकट अकाल पड़ा कि अमीरों को जब दाँत कुचरने के लिए तिनके भी दुर्लभ हो गये तो बेचारे जानवरों कि बिसात ही क्या! कहीं भी चारा-पानी मयस्सर नहीं हुआ तो लाचार होकर जहाँ थे, वहीं ऐसे बैठे कि फिर उठने की ताकत ही नहीं रही। बेहरकत पड़े उन ढोर-डाँगरों के पिंजरों से कब धीरे-धीरे प्राण निकले, गिद्ध-कौवों के अलावा उन गूंगे जानवरों को भी उसका एहसास नहीं था।

काँव-काँव करते बेशुमार कौवे एक-दूसरे की होड़ में चोंच मारने के मजे लेते रहे, पर किसी जानवर ने पूंछ तक नहीं हिलायी। पूंछ हिलाने के लिए भी ताकत चाहिए। काले कौवों पर दयावन्त भगवान ऐसा मेहरबान हुआ कि सृष्टि-रचना के बाद आज तक ऐसे भोज का जुगाड़ नहीं हुआ होगा। पेट भरने के बाद यूं ही चोंच मारने का स्वाद भी कम नहीं था।

कौवे रात को जानवरों की ओट में ही आराम करने के आदी हो गये थे। सूर्योदय होते ही फुदक-फुदककर उड़ते थे और काँव-काँव के साथ चोंच मारते थे। आखिर बदबू फैलाते-फैलाते स्वयं हवा भी सड़ने लगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्सानों के लिए साँस लेना नामुमकिन हो गया, पर गिद्ध-कौवों की जिन्दगी सुधर गयी।

एक दिन गले तक छके हुए एक कौवे ने मस्ती में आकर अपनी अर्धांगिनी से कहा, 'मानसरोवर की तारीफ तो बहुत सुनी है, पर अभी तक देखने का मौका नहीं मिला। ये लाशें तो सालों तक नोचने पर भी खत्म होने से रहीं। तू कहे तो एक दफा वहाँ का नजारा भी देख आयें?'

कौवी कहने लगी, 'तुमने तय कर लिया तो फिर पूछना क्या! यह सुहाना मुल्क छोड़ने को मन तो नहीं करता, पर तुम्हारी इच्छा टालने पर तो मुझे नरक में भी जगह नहीं मिलेगी।'

कौवा खुशी से झूमता बोला, 'तो चलो। सूर्यवंशी कौवे तो उड़ें तभी शुभ-मुहूर्त और पहुँचें वहीं सवेरा।'

चलने पर चींटी भी अपनी मंजिल पहुँच जाती है। फिर वे तो कौवे थे—लम्बी उड़ान भरनेवाले डैनों के मालिक। तीसरी सुबह ही ठेठ मान-सरोवर के किनारे जाकर दम लिया।

हिमालय की गोद में निर्मल पानी हिलोरें भर रहा था। पेंदे तक आर-पार साफ दिखायी दे रहा था। तरह-तरह के दरख्त चँवर डुला रहे थे। तरह-तरह के फूल आरती उतार रहे थे। तरह-तरह की लताएँ चरणों में शीश नवा रही थीं। धवल हंसों की कतारें मन्त्र उच्चार रही थीं। अनमोल मोतियों का प्रसाद ठौर-ठौर बिखरा पड़ा था।

पर थार के उन कौवों को यह नजारा कुछ पसन्द नहीं आया। उस सन्नाटे, उन निर्जन टीलों और उन लाशों की तो छवि ही निराली थी! वे असहाय पड़े ढोर, वे खून रिसते घाव और वे उलझी आँतें! यहाँ तो बेचारे हंस कंकर चुगते हैं। मानसरोवर का वह घिनौना नजारा उन्हें अच्छा नहीं लगा। तारीफ सुनी, सो सरासर झूठी। उनके हृदय में मातृभूमि की याद कसमसाने लगी। कौवे कंकर कब खाते हैं! वापस उड़ने का इरादा किया ही था कि हंसों की कतार उनके चारों ओर घेरा डालकर खड़ी हो गयी। टोली का मुखिया हंस उनका स्वागत करते हुए कहने लगा, 'हमारा अहोभाग्य कि आप जैसे मेहमान पधारे। बिना आवभगत किये वापस जाने दें तो हमारी हेठी लगती है।'

तब काँव-काँव करते कौवा बोला, 'पर हमारी आवभगत तुम क्या करोगे? इन कंकरों का दाना तो हमारे मुल्क में कोई नहीं चुगता।'

हंसों को काफी हैरत हुई कि ये किस लोक के वासी हैं, जिन्हें मोतियों का दाना भी नहीं रुचता। मुखिया नम्रता से बोला, 'आप अच्छी तरह गौर फरमायें, ये कंकर नहीं हैं। हमने तो आज तक मोतियों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिवाय कोई दाना नहीं चुगा, आपकी इच्छा हो सो हाजिर करूँ—मानिक, मोती, पन्ने और लालें...।'

कौवी मुँह बिगाड़कर बोली, 'दूर हटा अपने इस कचरे को। इस निगोड़ी चमक से मेरी आँखें चुंधिया रही हैं। काले बादलों के अलावा दुनिया में पानी कहाँ है! मुझे तो सफेद रंग के नाम से ही चिढ़ है। दफा हो जाओ यहाँ से। मेरा दम घुट रहा है।'

मुखिया का इशारा पाकर उसकी संगिनी के अलावा, बाकी सभी हंस उड़ गये। फिर वो कौवे के काले रंग में नजर गड़ाकर कहने लगा, 'हम इतने सालों इस गलतफहमी में फूले हुए थे कि ऐसी दिलकश जगह कहीं और नहीं है, पर आज आपके कहने से हमारी गलतफहमी दूर हो गयी। आप किस लोक के हंस हैं?'

कौवा काँव-काँव करते कहने लगा, 'हम थार-लोक के हंस हैं। वहाँ के नजारे का तो सपना भी तुम्हें नसीब नहीं हो सकता। एक मर्तबा चलकर देखो तो तुम्हारी जिन्दगी सफल हो जाये।'

हंस-हंसनी दोनों एक साथ कूंजते बोले, 'आपकी मेहर होगी तो जरूर उस लोक के दरसन करेंगे।'

उन कागों के साथ मुखिया ने जोड़े समेत जाने का इरादा किया तो बिरादरी के तमाम हंसों ने साथ चलने की जिद की। तब मुखिया ने उन्हें समझाते कहा, 'हम दोनों पहले उस लोक की छवि देख आयें, तब तक तुम जिद मत करो। फिर मैं किसी को नहीं टोकूंगा।'

तमाम हंस उसके कहते ही मान गये, पर जुदाई के वक्त आँसू रोकना किसी के वश में नहीं था। जमीन पर गिरते ही सारे आँसू मोती बनकर दमकने लगे।

हंस पर सवार होकर कौवे तत्काल वापस अपने मुल्क के लिए चल पड़े। नीचे उतरने से पहले ही बदबू के मारे हंसों का दम घुटने लगा। यह कैसा थार-लोक? दरख्तों का नामोनिशान तक नहीं। चौतरफ बदरंग टीले-ही-टीले। ठौर-ठौर ढोर-डाँगरों की लाशों पर मँडराते गिद्ध-कौवे। कदम-कदम पर बिखरी आँतें। इन बदजात कौवों ने कैसा विश्वासघात किया!

काँव-काँव करके कौवा बोला, 'किस सोच में पड़ गये? जितने चाहो, उतने ढोर अपने कब्जे में कर लो। मेरे रहते तुम्हें कोई कुछ नहीं कह सकता।'

हंस के जोड़े का वहाँ साँस लेना भी नामुमकिन हो गया। ऐसे कुठाँव को देखने से ही पाप लगता है। हंसनी बोली, 'यह थार-लोक तुम कौवों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को ही मुबारक हो। यहाँ एक पल भी रहने को हमारा दिल नहीं करता।'

यह कहकर हंस वापस उड़ गये। बदजात कौवे ने राम जाने काँव-काँव करके क्या इशारा किया कि बेशुमार कौवों की बरात पूरी ताकत से पंख फड़फड़ाती उनके पीछे उड़ी। पर हंसों का पीछा कौवे कहाँ तक करते! आप ही हार-थककर लौट आये। सभी परिन्दे कौवों की तरह समझदार थोड़े ही होते हैं! लाशों की रसीली खुराक का स्वाद बेचारे हंस क्या जानें!

कौवों के झाँसे में आकर देश छोड़ना तो उनके वश में था, पर वापस खैरियत से ठिकाने पहुँचना उनके वश में नहीं था। कौवों की सोहबत का यही अंजाम होता है। चौतरफ आँधी और बरसात ने घेरा डाल दिया। बिजलियों की चमक और बादलों की गरज के साथ मूसलाधार पानी बरसने लगा। ठण्डी हवा के थेपड़ों पर थेपड़े लगने लगे। तरबतर पंखों से नीचे उतरना तक मुश्किल हो गया। ज्यों-त्यों कुलाँचें खाते बरगद के एक पेड़ तले उतरे। पंखुड़ी-पंखुड़ी सिहरने लगी!

बरगद के तने में एक खोखल थी। कूंजते-कूंजते दोनों उस खोखल में घुसे, तब सिहरन कुछ कम हुई। पर एक दूसरी मुसीबत आ खड़ी हुई। फुहार से भीगे दस-बीसेक चूहे चूँ-चूँ कर रहे थे। हंस के जोड़े को दया आ गयी। आँखों के सामने किसी को तकलीफ कैसे देखी जा सकती है! जितनी उनसे बन पड़ी, उन्होंने सर्दी में ठिठुरते चूहों की मदद की। पंखों में दुबकने पर चूहों को काफी राहत मिली।

हंसों ने चूहों का भला किया तो उन्हें उस भलाई की सजा मिलनी ही थी। भला चूहे अपनी लत कैसे छोड़ें! गर्मी मिलते ही वे उनके पंख कुतरने लगे, सो रात-भर कुतरते रहे।

सवेरे हंस प्यार से दुलारते बोला, 'हम तो अब चलते हैं। तुम आराम से रहना। जो हम से बन पड़ा, हमने किया।'

हंसनी आशिष देकर हंस के साथ खोखल से बाहर निकलने लगी। शरीर इतना हल्का कैसे? पीछे मुड़कर देखा—पंखुड़ियों की दो अलग-अलग ढेरियाँ पड़ी थीं। दोनों आँसू छलकाते हुए एक-दूसरे की ओर देखने लगे। यह तो बहुत बुरा हुआ। पंख कटने की बजाय मरना बेहतर था, पर मौत के सामने गिड़गिड़ाने से तो मौत का दिल भी नहीं पसीजता। कौवों पर विश्वास करने और चूहों पर दया दिखाने की उन्हें इतनी सजा तो मिलनी ही थी।

पर इत्तफाक की लीला कौन जान सका है! उसकी तहों में सूरज भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं झाँक सकता। गुमसुम हंसों का जोड़ा रास्ते पर मुँह लटकाये बैठा था कि एक दौलतमन्द सेठ का जवान लड़का दिसावर से लौटते हुए वहाँ से गुजरा। आनेवाली तेरस को उसका गौना है। उम्र कम होते हुए भी उसने तिजारत के गुर व हुनर तो काफी जान लिये थे, पर था एकदम नीम-पागल और खब्ती। आप ही हाथों के इशारों से अकेले बातें करते जा रहा था। हाथ में सोने की छड़ी। कन्धे पर लटकती गठरी और पानी की 'बुगती'। गेहुँआ रंग। फबता चेहरा।

अपने हाल में मस्त वो हंसों के करीब से गुजरा, पर उसे कुछ नजर नहीं आया। दो दिन की भूखी-प्यासी हंसनी गिड़गिड़ाते बोली, 'राही, यों बचकर क्या जा रहे हो? हम अभागे हंसों की तकलीफ तो जरा सुन लो।'

तब उसने चौंककर पीछे देखा। मुस्कराते हुए पास आकर बोला, 'मुझे कुछ खयाल ही नहीं रहा। हंस हो, सो तो ठीक है, पर तुम्हारी पंखुड़ियाँ क्या हुईं?'

हंस ने रुँधे सुर में अपनी सारी रामायण सुनाकर कहा, 'बुगती में पानी हो तो पिलाओ, हमारे गले सूखे जा रहे हैं।'

फिर चुल्लू भर-भरकर उसने उन दोनों को पानी पिलाया। उनके बदरंग शरीर को प्यार से सहलाया। सहसा उसे कटोरदान में रखे चूरमे का खयाल आया तो हथेली में चकाचक चूरमा लेकर उनके सामने किया। हंस अपनी लम्बी गर्दन हिलाते बोला, 'मोती और लालों के सिवाय हम कोई दाना नहीं चुगते।'

वो सनकी लड़का हँसते हुए कहने लगा, 'इसकी खूब फिक्र की! मेरे पास लालें भी बहुत हैं और मोती भी। तुम्हारे नाम लिख दूंगा। मान-सरोवर आऊँ, तब फारिखती कर देना।'

पानी पीकर जी में जी आया। हंसनी बोली, 'फारिखती की खूब कही। वहाँ पहुँचकर गाड़ियाँ भर-भरकर मोती दें, तब भी तुम्हारा एहसान नहीं उतर सकता। पर वहाँ जाना हो कैसे?'

बनिये का लड़का उतावली से कहने लगा, 'तुम तो बावले हुए हो। मैं दौलतमन्द सेठ का इकलौता बेटा हूँ। गौने के बाद बहल से पहुँचा दूंगा। चलो मेरे साथ।'

नादान हंस थे। जब कौवों पर भी विश्वास कर लिया तो उस पर शुबहा कैसे करते?

उसके बाद साहूकार के लड़के ने उन्हें मोतियों का दाना चुगाकर अपने कन्धे पर बिठाया और अलमस्ती में होंठों-ही-होंठों में गुनगुनाता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने गाँव की राह चल पड़ा।

घर पहुँचने पर सेठ हंसों के लिए नाराज तो बहुत हुआ, पर आखिर लड़के की जिद के आगे उसे झुकना पड़ा। वो बार-बार बापू को समझाने लगा कि इन हंसों को चुगाये हुए मोती कभी बेकार नहीं जायेंगे। कारोबार के नये गुरों से वे वाकिफ नहीं हैं।

गौने के बाद बहू हंसों की सार-सँभाल करने लगी। वह बेहद सरल, समझदार और सुशील थी। बेइन्तहा खूबसूरत। गुलाबी झलक देता गोरा रंग। मेहँदी रचे हाथों से वह उन्हें सहलाती। मोती और लालें चुगाती। कोख से जनमे लाड़ले के समान उन्हें प्यार करती। मेहँदी रचे हाथों का ऐसा जादू हुआ कि सर्र-सर्र पंख निकलने लगे। मुलायम और चिकने। रात को उन्हें अपने साथ सुलाती। उसके चुम्बनों और उरोजों के स्पर्श से हंसों का शरीर दूना बढ़ गया। और इस कदर तेजी से पंख निकलने लगे गोया किसी के खींचने से बढ़ रहे हों। रोजाना साथ नहलाती। सीने से लगाती। इस स्पर्श से तो पत्थर के भी पंख निकल आते, फिर वे तो जिन्दा हंस थे। सूरज की धवल किरणों की मानिन्द उनके बदन पर पंख फड़फड़ाने लगे।

बहू ने अपनी हथेलियों के साथ-साथ हंसों की पाँखों पर भी मेहँदी के माण्डणे चित्रित किये। फिर वे हंस आकाश में तीन-चार लम्बी-लम्बी उड़ानें भरकर वापस बहू की गोद में उतरे।

जुदाई के वक्त हंसों के जोड़े ने बहुत आँसू बहाये। बहू भी फूट-फूटकर रोयी। पर बेहद अचरज की बात कि बहू के आँसू और हंसों के आँसू मिलते ही अनमोल मोती बन जाते।

आँसुओं का यह अनोखा मिलन देखकर सेठ का लड़का बहू की ओर मुखातिब होकर मुस्कराते बोला, 'अब बस करो। भोले हंसों को बड़ी मुश्किल से अपने देश जाने का मौका मिला है। ज्यादा रोकर अपशकुन मत करो।'

माँ-बाप पास ही खड़े थे। सेठ बेटे को टोकते बोला, 'पागल कहीं का! रोने से भी कहीं अपशकुन होते हैं! मोतियों का यह नजारा तू देख नहीं रहा है? इससे बढ़िया और क्या शकुन होंगे बेटा! इन्हें खुलकर रोने दो। रोने से मन हल्का हो जाता है। मैं न कहूँ तब तक कोई रुकना मत।'

हंसों के जोड़े को यों भी एहसान उतारना था। तीन दिन और तीन रात वे जुदाई के आँसू बहाते रहे। जितने चुगे उससे चौगुने मोती उस हवेली के आँगन में जगमगाने लगे। सनकी बेटे का यह गुर तो खूब काम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आया। एक-एक मोती सवा लाख रुपये का। सुलक्षणी बहू का इस घर में आना बहुत शुभ रहा। नादान का तरफदार भगवान होता है। बावले बेटे ने हंसों को मोतियों का दाना चुगाकर कितना अच्छा किया ! अब उसे कभी नहीं टोकेंगे।

बहू के सीने पर लोटकर हंसों के जोड़े ने सीधे ऊपर आकाश का रुख किया। डैनों की हवा से सेठ की हवेली में फिर मोतियों की बरखा हुई।

हरामजादे कौवों की वजह से बेचारों को कितनी मुसीबत उठानी पड़ी! कांव-कांव करते हुए कौवे दीवार पर बठते तो बनिये का लड़का अदेर उन्हें उड़ा देता। एक दिन झुंझलाकर सेठ ने बेटे को समझाया, 'बेटे, यह क्या पागलपंन है ! इन कौवों को तो अपने हाथों गुलगुले खिला। अगर ये हंसों के साथ घात नहीं करते तो हमें यह अचीती दौलत कैसे मिलती ? कुछ तो अक्ल से काम लिया कर !'

'अपनी अक्ल अपने पास रखें, मुझे देने की जरूरत नहीं।' इसके बाद अधबावले बेटे ने रूठकर बाप से बोलना ही छोड़ दिया। बहू ने बड़ी मुश्किल से मनाया। फिर बेटे ने अधिक हठ किया तो कौवे उड़ाने के लिए एक नौकर रख दिया, जो हाथ में बेंत की छड़ी लिये सारे दिन फकत कौवे उड़ाता रहता।

यों कौवे उड़ाते-उड़ाते सेठ की गृहस्थी की गाड़ी तीन साल तक सुख से चलती रही। एक दिन सेठ बेटे को समझाने लगा, 'बेटे, यूं बंधी-बंधायी पूंजी खाने से कब तक चलेगा ?'

बेटे को गुस्सा आ गया। बापू को झाड़ते हुए कहने लगा, 'आठों पहर फिजूल की झिकझिक कर ; सारे हलके को अपने खिलाफ कर लिया। तुम्हारे दिसावर जाने से दुगुना काम निबटेगा। कितना ही चीखो-चिल्लाओ, बहू की कोख फले बगैर दिसावर जाना तो दूर, मैं यहां से हिलूंगा भी नहीं।'

'पगले, कोख फलना क्या हाथ की बात है ! सभी पण्डितों ने अलग-अलग पञ्चाङ्ग देखकर कहा है कि तेरे सन्तान का योग नहीं है। वे हंस तुझे रोज याद करते होंगे। एक दफा मानसरोवर जाकर उनसे मिल तो आ।'

सेठ का तीर निशाने पर बैठा। बेटा खुशी से नाचते कहने लगा, 'अरे, यह बात तो मैं भूल ही गया। बेचारे याद में सूखकर कांटा हो गये होंगे।'

उसके बाद अच्छा मुहूर्त देखकर सेठ ने बड़ा बहल जुतवाकर बेटे को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानसरोवर के लिए विदा किया। वह उदास आँखों से बहल की उड़ती खेह देखती रही और देखते-देखते पति आँखों से ओझल हो गया।

गणमण-गणमण करती बहल पाँचवें महीने ठेठ मानसरोवर पहुँची। मुखिया हंस खबर लगते ही हवा की नाईं अपने रक्षक के पास आया। डैनों से हवा की। उसकी गोद में लोटा। बच्चों को खिलाती हंसनी के कानों में भनक पड़ी तो वह भी उड़कर आयी। बहू और माँ-बाप की खैरियत पूछी। बच्चे के बारे में पूछा तो सेठ के लड़के ने होंठों से मुस्कराहट गिराते कहा, 'बहू के तो अभी आशा ही नहीं ठहरी, फिर भी बापू ने मुझे तुमसे मिलने के लिए जबरन भेज दिया।'

हंसनी ने कहा, 'इसमें जबरदस्ती कैसी! हम तो हमेशा तुम्हारा इन्तजार करते रहते थे। पाँच-सात रोज और नहीं आते तो हमें आना पड़ता।'

कुछ देर में चारों ओर हंस-ही-हंस इकट्ठे हो गये। मुखिया जोड़े की देखभाल के लिए सभी ने उसका बेहद एहसान माना। कैसे सुन्दर और अबोध हंस! दूध से धुले। जैसा निर्मल पानी, वैसा ही निर्मल उनका अन्तस। मानिक-मोतियों से जमीन अटी पड़ी थी। बहल भरने की बात करते भी शर्म आती है।

हंसनी ने बार-बार उसे बहू को न लाने का उलाहना दिया। बहल के रहते अकेले आने की क्या जरूरत थी? वाकई मानसरोवर का अनोखा नजारा देखकर वह खुशी से फूली नहीं समाती। अगली यात्रा में जरूर साथ लायेगा।

हंसनी ने बेहद खातिर-तवज्जुह की। घी से झरते मालपुए और खीर। लालों का बघार देकर कमल-नाल की सब्जी बनायी। सेठ के लड़के का खाते-खाते मन भरा ही नहीं।

शाम को ब्यालू से निबटकर गपशप करने बैठे तो पास के कल्पवृक्ष पर बैठी चकवी बोली, 'कह रे चकवा बात।'

'घरबीती या परबीती?'

तब चकवी बोली, 'घरबीती का क्या कहना और क्या सुनना। परबीती सुनाये तो कुछ मजा भी आये!'

चकवा ठसके से कहने लगा, 'मैं परबीती का महान पण्डित हूँ। मेरी परबीती कभी भी गलत नहीं होती। अच्छी तरह कान खोलकर सुन।'

चकवी ध्यान देकर सुनने लगी और चकवा मीठे सुर में आगे कहने लगा, 'आज मुखिया हंस के यहाँ एक दौलतमन्द सेठ का लड़का आया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ है। यह नौजवान आड़े वक्त इनके बहुत काम आया था। अगर यह देखभाल नहीं करता तो ये कुत्ते की मौत मर जाते। आज वापस एहसान उतारने का मौका आया है।'

चकवी के साथ-साथ हंस-हंसनी और वो नौजवान भी कान लगाकर बात सुनने लगे। चकवा आगे कहने लगा, 'इस नौजवान की हवेली में दौलत के तो भण्डार भरे हैं, पर सन्तान का योग नहीं है। आज अमृत-वेला है, अगर आधी ढले इसका बहू से मिलन हो तो कड़े नक्षत्रों में बेटे का जन्म होगा। बचपन में उसके थूक से अनमोल मोती बनेंगे और बड़े होने पर खखार के साथ सवा लाख की लाल गिरेगी।'

इतनी बात सुनकर हंस से पल-भर भी रुका नहीं गया। आतुर होकर सेठ के लड़के से पूछा, 'तुमने कुछ सुना ?'

सेठ का लड़का आह भरकर कहने लगा, 'फकत सुनने से ही क्या होता है! आधी ढले तो वहाँ सपने में भी नहीं पहुँचा जा सकता।'

हंस ने उसे आश्वासन देते कहा, 'सपने में पहुँचा जा सकता है कि नहीं, यह तो सपना आने पर ही कहा जा सकता है, पर मैं आधी रात से पहले ही तुम्हें बहू की मेड़ी तक पहुँचा दूंगा। मुझे अपनी उड़ान पर पूरा भरोसा है। आँखें बन्द करके तुम मुझ पर बैठ जाओ। सपने से भी पहले न पहुँचा दूं तो मेरे पंख काट देना।'

राम जाने क्यूं, सेठ के उस बावले लड़के को हंस की बात पर एतबार हो गया।

बहू से मिलने की उमंग में हंसनी ने साथ चलने की इच्छा जाहिर की तो दोनों मान गये। आँखें मूंदकर ऊपर बैठते ही हंस ने आकाश का रुख लिया। ऊपर हंसनी और नीचे हंस। फिर बेचारी हवा का क्या वेग! आधी ढलने के पहले तीनों प्राणी मेड़ी के सामने उतरे। उस वक्त बहू सपने में पति की बाँहों में थी कि अचानक कुण्डी की खटखटाहट के साथ पति की आवाज सुनकर चौंककर उठ बैठी। खुशी में हड़बड़ाकर दरवाजा खोला तो सामने चाँदनी में रू-ब-रू पति खड़ा मुस्करा रहा था। क्या चौदहवीं की चाँदनी का ऐसा मायावी असर भी हो सकता है! हंसों का प्यारा जोड़ा पास खड़ा पंख फड़फड़ा रहा था।

चारों मेड़ी के भीतर आये। हंस ने बहू को चकवा-चकवी की पूरी बात तफसील से सुनायी। उसके बाद बहू ने घी का दीवट जलाया। अबोध परिन्दों से कैसी शर्म! हंसों का जोड़ा देखता रहा और दोनों पति-पत्नी कामदेव की समाधि में लीन हो गये। अमृत-वेला की शुभ घड़ी बहू के आशा ठहरी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रुकने पर बापू खामखाह गुस्सा होंगे, इसलिए रात ढलने से पहले ही तीनों ने मानसरोवर का रुख किया। बहू का सपना पूरा हुआ। जन्म-जन्मान्तर भला हो इन हंसों का, जिन्होंने उसके मन की साध पूरी।

पर इन्सानों की बस्ती में इन्सानों के बहाने क्या कौवे नहीं बसते! भला, उनके होते अगर किसी की साध यों पूरी हो जाये तो उनकी कांव-कांव को कौन पूछे! एक होशियार दाई ने बहू के पाँव भारी होने की बधाई सुनायी तो बस्ती के मोतबर कौवे कांव-कांव करते एकत्रित हुए। बहुत दिन हुए सेठजी को दूसरों के झगड़े निबटाते! जब खुद का मामला गले पड़ेगा, तब उनकी आँखें खुलेंगी। सेठजी को पर्वत की आग तो नजर आती है, पर कदमों के पास की आग का कोई खयाल ही नहीं!

आखिर एक दिन तो सेठ के कानों में यह कांव-कांव पहुँचनी ही थी। तीन-चार बराबर के सेठों की दुश्मनी फुफकारने लगी। नगरसेठ ने जोर देकर कहा कि यह बात सरासर झूठ है। बहू से पूछने पर ही सही बात का पता चलेगा।

पंचों ने कहा कि बहू से पूछने में बरस थोड़े ही लगते हैं! पर यह तो नजर से देखने की चीज है। उभरा पेट कब छुपता है! औरत के पेट में न तो बात टिकती है और न बच्चा। नौवें महीने तो बच्चा बाहर आयेगा ही। फिर इत्मीनान से पूछना कि यह किसके अंश का है?

सुनते ही सेठ के बदन में आग लग गयी। गुस्से से तमतमाया हुआ बहू के पास गया। बहू के कानों में इस कांव-कांव की भनक पहले ही पड़ चुकी थी। उसके सर पर हाथ फेरकर ससुर कहने लगा, 'तू मेरी बेटी के समान है। मुझसे कुछ छुपाना मत। मुझे इस अफवाह का मायना बता।'

बहू के मन में तो कोई पाप था नहीं। जो सच्ची बात थी, वह खोलकर सामने रख दी। सुनते ही सेठ का सर घूम गया। काँपते सुर में बोला, 'बेटी, इस बात पर विश्वास करने लायक इन्सान कहाँ हैं! बहुत दिनों बाद उन्हें यह मौका मिला है, आसानी से छोड़ेंगे नहीं।'

बहू का दिल बैठने लगा। क्या साँच को झूठ पछाड़ देगा? बोली, 'क्या आपको भी मेरे कहे पर विश्वास नहीं है?'

सेठ सर हिलाते बोला, 'फकत मेरे अकेले के विश्वास करने से क्या होगा! लोगों की समझ का तो हिसाब ही दूसरा है।'

लाचार सेठ ने समझाने की भरसक कोशिश की, पर किसी भी पंच को उनकी बेसिर-पैर की बात पर यकीन नहीं हुआ। समझदार लोगों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समझने लायक वह बात ही कहाँ थी ! मुखिया ने कहा, 'सेठजी, आज तक आपने खरे-खोटे इन्साफ के बहाने बहुत-से घर उजाड़े हैं। आज वे सभी अपना पिछला हिसाब चुकता करने को तैयार खड़े हैं। मेरा कहा मानो, कसूर मंजूर करके बहू को निकाल बाहर करो। उसका काला मुँह होने पर पंच आगे बात नहीं बढ़ायेंगे, वरना अब इस हवेली की इज्जत बचाना मेरे हाथ में नहीं है।'

सेठ नरमाई से कहने लगा, 'हाथ में तो जिसके है, उसी के है। मुँहमाँगा हरजाना भरने को तैयार हूँ, पर सुलक्षणी बहू को यह सजा मत दो। वह सुनते ही दम तोड़ देगी।'

पंच बेहद समझदार थे। माकूल जवाब दिया कि दुनिया में अमर होकर कौन आया है ! एक दिन तो सभी को मरना है। जीते-जी इज्जत बनी रहे तो बहुत है। या तो बहू को निकाल बाहर करो, या फिर बिरादरी से बाहर निकलने के लिए तैयार हो जाओ।

जूतियाँ फटने पर नयी पहननी ही पड़ती हैं। पर 'न्यात-गंगा' का न्याय कैसे टाला जाये ! बहू बहुत रोयी, बहुत गिड़गिड़ायी, पर सेठ का दिल नहीं पसीजा। खुद हाथ पकड़कर बहू को सूनी राह पर छोड़ आया। ससुराल से निकाली हुई को माँ-बाप का भी सहारा कहाँ ! अभृत-वेला का यह कैसा जहर फूटा ?

सूनी राह। सूना जंगल। पीछे के सारे रास्ते बन्द। आगे का कोई ठिकाना नहीं। अब किस मौत की ओर कदम बढ़ाये ?

दिन को सूरज और रात को चाँद की रोशनी में अपनी ही छाया का पीछा करती वह आखिर भटकते-भटकते फिर अपने ससुराल आ गयी। सेठ देखते ही उस पर गरजा। थूक उछालते कहने लगा, 'यह काला मुँह दिखाते तुझे शर्म नहीं आती ?'

बहू सुबकते बोली, 'मैंने शर्म जैसा कोई काम नहीं किया।'

'फिर पेट में यह किसका अंश है ?'

'आपके बेटे का।'

सेठ चिढ़ते बोला, 'तेरा यह ढोंग यहाँ नहीं चलेगा। इस हवेली में बसने की इतनी ही चाह थी तो पहले अपना मन वश में रखना था। तुझ जैसी छिनाल के लिए यहाँ कोई जगह नहीं है।'

बहू हाथ जोड़कर बोली, 'आप ही बतायें, मैं औरतजात अकेली कहाँ जाऊँ ?'

सेठ ताना मारते बोला, 'यह बात तो अपने यार से पूछनी थी।'

यह कहकर सेठ ने जोर से दरवाजा बन्द करके कुण्डी लगा दी। एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन गाजों-बाजों के साथ जिस हवेली के दरवाजे पर उसे बधाया गया था, आज उन्हीं आँखों के सामने, वो दरवाजा उसके लिए हमेशा-हमेशा के लिए बन्द हो गया। अब रोने-गिड़गिड़ाने से कोई फायदा नहीं। आँखें खुली रखने पर तो फिर वही हवेली नजर आयेगी। पीठ फिराते ही उसने फौरन कसकर आँखें मूंद लीं और पाँव जिस दिशा में, जिस ओर आगे बढ़े, वह चुपचाप उधर ही चल पड़ी। सत्यानाश हो उन चण्डाल कौवों का। हंसों के बहाने राम जाने उससे किस जन्म का बदला लिया है। गोह के पाप से पीपल को जलना पड़ता है। कौवों का यह काला रंग, किस मुँह पर, कितनी कालिख पोतेगा—इसका हिसाब किसके पास है!

आँखें मूंदे वह एक कुम्हारी के फलसे के पास से गुजर रही थी कि कुम्हारी उसका हाथ पकड़कर बोली, 'भली मानस, यों आँखें मूंदे कहाँ जा रही है?'

आँखें मूंदे ही बहू ने जवाब दिया, 'जब मुझे ही नहीं मालूम तो तुम्हें क्या बताऊँ?'

कुम्हारी प्यार से उसके गालों पर हाथ फिराते कहने लगी, 'अब कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है। तू मेरी बेटी है और मैं तेरी माँ। बन्द आँखों से तो फकत माँ के दरवाजे पर ही पहुँचा जा सकता है।'

अन्धे को क्या चाहिए, दो आँखें! उसकी हमदर्दी से उसके आँसू निकल आये। आँखें आप ही खुल गयीं। देखा, सामने एक बुढ़िया खड़ी थी। झुर्रियों से भरा चेहरा। मिची-मिची आँखें। दन्तहीन मुंह। सन-से सफेद बाल।

आँखें मूंदकर आगे बढ़ने से, आखिर ठिकाना तो मिला। खुली आँखों से तो न जाने किस कुएँ में गिरती!

घर के मालिक को गुजरे यह तीसरा साल था। सात बेटे थे। सातों ही शादीशुदा। पोते-पोतियों से आँगन भरा था, पर बेटी के बिना घर एकदम सूना लगता था। अब बेटी के आने से घर आबाद हुआ। माँ की खुशी का कोई ओर-छोर न था। गोया एक बार फिर इस जर्जर शरीर में जवानी झूम-झूम उठेगी।

खेतिहर कुम्हारों के घरों में सेठवाली हवेली का सुख कहाँ, पर फिर भी जैसे-तैसे दिन बीत रहे थे। बुढ़िया के कारण सभी उसका खयाल रखते थे। बहू भी अपनी शक्ति व समझ के अनुसार काफी काम करती थी। पीसना, बुहारना, चारा-पानी, दुहना वगैरह।

जो सूरज उदय होता है, वो अस्त भी होता है और अस्त होकर फिर उदय होता है। होते-होते बहू को नौवाँ महीना उतरने लगा। बुढ़िया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आठों पहर उसकी हाजरी में रहती थी। एक बार आधी ढलने पर पेट में चसमस दर्द उठा तो उसने माँ को आवाज देकर जगाया।

सूरज की पहली किरण के साथ ही बहू के बेटा हुआ। आँवल काटकर डोकरी ने अपने हाथों से काँसे की थाली बजायी और थाली की झनकार के साथ खुद बच्चे की तरह नाचने लगी।

लोई से मालिश करते समय बेटे के मुँह से थूक निकला और निकलते ही अनमोल मोती में बदल गया। इस अनहोनी से बुढ़िया के अचरज की सीमा न रही कि सफेद-सफेद चिकने कंकरों की तरह यह क्या उगल रहा है? बहू से पूछा तो उसने माँ से कुछ नहीं छुपाया। पूरी बात बता दी।

पर मोतियों की बात सुनकर कुम्हारी के बेटों को तसल्ली नहीं हुई। वे भागे-भागे सुनार के पास गये। सुनार ने मोती देखा तो देखता ही रह गया। सुनार किसके अपने होते हैं! वे अपनी माँ तक की छातियाँ काट लेते हैं। नीयत बिगड़ने पर वो व्यंग से मुस्कराया। सर हिलाते कहने लगा, 'तुम मुझे क्या उल्लू बना रहे हो? मुझसे पूछकर झूठ बोलते तो ऐसी वाहियात बात नहीं करते। साफ-साफ बताओ, यह मोती कहाँ से चुराया? वरना राजा के सामने हाजिर करूँगा।'

कुम्हारी का बड़ा लड़का कहने लगा, 'भला, झूठ बोलकर हमें क्या मिलेगा! तुम्हारे मन में खोट आ गयी हो तो यह मोती तुम्हीं रखो, नहीं तो साथ चलकर अपनी आँखों से देख लो।'

विश्वास करने लायक बात तो नहीं थी, फिर भी सुनार बेमन से साथ चल पड़ा। किसी के अविश्वास करने से सच्ची बात दब थोड़े ही जाती है। आँखों से रू-ब-रू देखने के बाद भी सुनार को इस अनहोनी बात पर बड़ी मुश्किल से यकीन हुआ।

फी मोती सौ मोहरों का इकरार करके सुनार वहाँ से खुशी-खुशी चला गया। कुम्हारी के घरवाले भी बेहद खुश थे, पर बहू अतीत के भँवरजाल में फँस गयी। कहाँ पति? कहाँ ससुराल? और कहाँ माँ-बाप? इस आफत की उसे सपने में भी उम्मीद नहीं थी। सूरज की रोशनी में भी मौजूदा पल से आगे दिखायी नहीं देता। अगर ऐसा मालूम होता तो पति को उस रात वापस जाने देती भला! पर दौलत के लालच और माँ-बाप की नाराजगी के सामने उनके दिल में भी डर समाया नहीं। आधी रात ढले आये और मुँह-अँधेरे वापस चल दिये।

इन्सानों की इस दुनिया में हरेक को अपनी-अपनी लगी रहती है। इससे वक्त मिले, तब न औरों के बारे में सोचें! बच्चे के थूक से मोती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनने की वह अनहोनी बात जानकर सुनार के दिल में हलचल कम नहीं थी। फी मोती सौ मोहरें देने पर भी उसे काफी फायदा था। बैठे-ठाले बिलकुल आसान कमाई और वह भी बेइन्तहा। एक ही दिन में सात पीढ़ियाँ तर जातीं। पर लालच बुरी बला है। उसकी कोई सीमा नहीं। भगवान ने ठक-ठक की विनती सुनी तो सही। अगर यह बच्चा हाथ लग जाये तो निपूते का कलंक भी मिट जायेगा और थूक के साथ जगमगाते मोती हाथ लगेंगे, सो अलग से। राजा तक उसकी पहुँच हो जायेगी। वक्त पर राम सुमति न दे तो ऐसी बातें किसे सूझ सकती हैं!

भगवान की मेहर हो तो ऐसी कौन-सी बात है, जो कामयाब नहीं हो सकती! सुनारी हर रोज छाछ के बहाने कुम्हारी के घर जाने लगी और घड़ी-आधघड़ी सेठानी के लड़के को खिलाती। खिलाते-खिलाते ही एक दिन मौका देखकर, बच्चे को ओढ़नी में छुपाये सीधी पति के पास पहुँची। सुनार पहले से ही एक तेज ऊँट लिये तैयार खड़ा था। अगले आसन पर पति और पिछले पर गोद में बच्चा छुपाये घरवाली बैठ गयी। चारों पैरों को एक इकाई बनाये, ऊँट बवण्डर की गति से दौड़ पड़ा।

सुनार ने ठेठ राजमहल पहुँचकर ही ऊँट रोका। राजदरबार में सिंहासन पर बैठे राजा के चरणों में सात दफा शीश नवाकर फरियाद की। कोहनी तक हाथ जोड़ते कहने लगा, 'अन्नदाता, आखिर भगवान का सहारा छोड़कर आपकी शरण में आया हूँ। बचाइए हुजूर, मुझे बचाइए।'

राजा ने ढाढ़स बँधाकर पनाह की वजह पूछी तो सुनार ने खुलासा किया कि उसके पाँच बच्चे हुए थे, पर पीछे लगी एक डायन पाँचों को खा गयी। पुश्तैनी ठिकाना छोड़कर जाते भी कहाँ? रो-धोकर दिल पर पत्थर रख लिया। पर आखिर माँ का जी कहाँ तक बर्दाश्त करता! घरवाली ने अन्न-जल छोड़ दिया तो लाचार होकर आपकी शरण में आना पड़ा। यह छठा बच्चा डायन के हवाले करने की हिम्मत नहीं हुई। इस कसूर के लिए जो भी सजा मिले, वो खुशी-खुशी भुगतने को तैयार है। खूनी डायन यहाँ भी पीछा नहीं छोड़ेगी।

सुनार का दुख सुनकर राजा की आँखें छलछला आयीं। गला भर आया। समूचे दरबार में सन्नाटा छा गया। राजा ने खुद अपने हाथों से सुनार के आँसू पोंछे। दीवान को हिदायत दी कि आठों पहर कड़े पहरे में कमी न होने पाये। कोई अजनबी औरत आये तो पहले दरबार में खबर की जाये। चारों बुर्जों के पहरेदारों को डायन का हुलिया अच्छी तरह बता दिया। हुकूमत की पनाह के बाद सुनार को कोई खतरा नहीं था।

दूसरे ही दिन सुनार ने एक तिमंजिली हवेली खरीदी और ठाट से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहने लगा। हर रोज राजा को अपने हाथ से एक मोती नजर करता। राजा दीवान से भी ज्यादा सुनार की इज्जत करने लगा। फिर दरबार में उसके दबदबे का क्या कहना!

पर उधर सेठानी और कुम्हारी के घरवालों की पीड़ा का कोई अन्त नहीं था। सेठानी के रो-रोकर आँसू ही खत्म हो गये। अगर बेटे के थूक से मोती बनने की अनहोनी बात न होती तो यह बिजली उस पर क्यों गिरती? कुम्हारी के लड़के भी माँ की देखा-देख खूब रोये। फी मोती सौ मोहरों का घाटा अब कैसे पूरा हो? सातों भाइयों ने हर दिशा में खोज की, पर सुनार का पता नहीं चला। उनके हताश होने पर माँ सेठानी को साथ लेकर सुनार की खोज में निकल पड़ी। जो मिलता उसी से पूछताछ करतीं। पशु-पक्षी, पत्थर-चट्टान और पेड़-पौधों तक को पूछे बिना नहीं छोड़ा, पर सुनार की वापस भनक तक नहीं मिली। जिस बच्चे के लिए सेठानी का घर-बार छूटा, उसी को ढूँढ़ने के लिए वह दर-दर भटकने लगी।

एक बार कड़ा दिल करके वह फिर ससुराल पहुँची। मानसरोवर के बेशकीमती मोतियों की गाड़ी भरकर सेठ का लड़का भी घर लौट आया था। न्यात-गंगा के इन्साफ का पता लगने पर वो बेहद गुस्सा हुआ। बहुत अंट-शंट बोला। बार-बार जोर देकर कहा कि वह अमृत-वेला की बात बिलकुल सही है। हंस पर बैठकर, आधी ढले, वो खुद मेड़ी में आया था। पर बापू के डर से रात ही को वापस लौट पड़ा। बापू को भी जब इस अनहोनी बात पर यकीन नहीं हुआ तब पंचों के मानने का तो सवाल ही कहाँ पैदा होता है। सेठ ने फबती कसते हुए कहा कि घर की इज्जत यों नहीं ढकी जाती। बात बनाने से पहले पंचों से जरा सलाह-मशविरा तो कर लेना था।

तब उस नीमपागल लड़के ने झुँझलाकर कहा, 'ऐसे नालायक पंचों के सर पर सौ जूते मारकर एक गिनता हूँ। मैं किसी का मातहत नहीं हूँ, जो डरूँ।'

पंच नाराज होकर उल्टा-सीधा बकते वहाँ से चले गये। सनकी बेटा बापू की तरफ देखकर कहने लगा, 'छठे महीने वापस घर आया, उससे पहले ही आपने बेचारी बेकसूर बहू को घर से निकाल दिया। तुम्हीं बताओ, अब रात को मेड़ी में किसके साथ सोऊँ?'

बेटे के मुँह से यह फूहड़ बात सुनकर बाप को शर्म आ गयी। पीठ फिराकर बोला, 'बेटे, इसमें फिक्र काहे की? तू कहे तो शाम को ही तेरा ब्याह कर दूँ। तुझे बहुओं की क्या कमी?'

'मेरे दिसावर जाने पर तुम उसे फिर निकाल दो तो! तुम्हारा क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भरोसा ! अब मैं हरगिज तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा, और मेरे लाये मोतियों की गाड़ी में से एक मोती की भी उम्मीद रखी तो मुझसे बुरा कोई न होगा।'

फिर उसने किसी का भी कहा नहीं माना। दूसरी शादी होते ही बापू से अलग हो गया। अपनी अलग हवेली चुनवा ली।

किसी कुएँ का पानी खारा तो किसी का मीठा। किसी बावड़ी का पानी भारी तो किसी का हल्का। पर पीने से प्यास तो बुझती ही है। इसी तरह औरतों का रंग-रूप और स्वभाव अलग हो तो क्या, सेज का आनन्द एक-सा ही मिलता है। पुरानी यादों के जंजाल कभी रंग में भंग डालें तो क्या हुआ ! आखिर सेठ के लड़के का मन दूसरी औरत के साथ अँगरलियों में रम गया कि अचानक एक दिन पहली औरत दरवाजे पर खड़ी दिखायी दी। पहचानते ही सनकी खाविन्द पास आकर कहने लगा, 'सारे मुल्क में भटककर तू यहाँ किसलिए आयी है ? जितना तू समझती है, उतना नासमझ मैं नहीं हूँ। अब तू मेरे किसी काम की नहीं है।'

बहू को सहसा अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। पति के मुँह से ये क्या बोल सुने ? पर एक बार तो मन की भड़ास निकालनी ही होगी। अाक-वाक होकर बोली, 'सब-कुछ जानते हुए, क्या तुम भी मुझे कसूरवार समझते हो ?'

'क्यूँ न समझूँ, मैं तुझ से डरता हूँ क्या ? बापू के निकालने पर, यहीं दहलीज पर सर फोड़कर मर जाती तो बेहतर था। अब जने-जने का जूठा पानी मैं नहीं पी सकता।'

बहू पति के चरणों की तरफ हाथ करते कहने लगी, 'तुम्हारे अलावा इस पानी को किसी ने छूआ तक नहीं है। जिस बच्चे के लिए इतनी तोहमत उठायी, आज वो भी मेरे पास नहीं है। मोतियों के लालच में एक सुनारी घात कर गयी। मुझे तुम्हारी सेज का लालच नहीं है। हवेली में बहुतेरे काम हैं। बर्तन माँजने और झाड़ू-पोचे के बदले इस हवेली में बासी टुकड़ों की कमी नहीं है। पिछले जनम का पाप कि इस जनम में औरत की जिन्दगी मिली। पति के सहारे बिना इन्सानों की बस्ती में मेरा जीना मुहाल है।'

यह कहकर वह सुबक-सुबककर रोने लगी। पर नीमबावले पति का दिल नहीं पसीजा। पुरानी प्रीत को भुला, दुत्कारकर कहने लगा, 'इस ढोंग से मैं गुमराह होनेवाला नहीं हूँ। यहाँ रहकर तू नयी बहू से डाह करेगी। नुक्ताचीनी करेगी। औरत का एक रात भी बाहर रहना बुरा है, फिर तू तो इतने अरसे तक राम जाने कहाँ-कहाँ डोलती रही ? चाहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कितनी ही क्यूँ न गिड़गिड़ाये, कोई भला आदमी तो इस पर विश्वास करने से रहा ! हवेली की बात तो दूर, तू इस गाँव में भी नहीं रह सकती।'

पति के मुँह से ये बोल सुनकर आगे कुछ भी कहने या दाद-फरियाद करने के लिए उसका मन नहीं हुआ। आँसुओं को पोंछकर चुपचाप वहाँ से चल पड़ी, मानो नींद उचटने पर कोई सपना टूटा हो। पर बड़े अचरज की बात कि तीसरी दफा उस हवेली से दुत्कारे जाने पर उसे पहले जितना दुख नहीं हुआ। सीता को सिर्फ एक बार वनवास मिला था, पर इस सीता ने तीन दफा वनवास सहा। निपट अकेले। पति ने भी इस बुरे वक्त में साथ नहीं दिया।

पर कोख के लड़के को खोजे बगैर चैन कहाँ ? माँ का मन हार माने भी तो कैसे ? सूरज को साथ लेकर वह दर-दर भटकी। चाँद और तारों को संग लिये घर-घर छान मारा, पर उसे बेटे का पता-ठिकाना नहीं मिला। आखिर भटकते-भटकते वह राजा के दरबार में पहुँची। सुनार को यही डर था। देखते ही पहचान लिया। राजा के पास आकर हाथ जोड़ते बोला, 'अन्नदाता, डायन तो आ गयी। मेरे बेटे की जान अब आपके चरणों में है।'

राजा के चरणों में आने के बाद कैसा खतरा ! रोजाना एक मोती का नजराना भी कम नहीं था। माँ की तो फरियाद तक नहीं सुनी गयी। जल्लादों को हुक्म हुआ कि इसी पल इसे सूली पर चढ़ा दिया जाये।

अक्लमन्द दीवान ने सलाह दी कि इस जैसी चण्डाल डायन का एक दफा सूली चढ़ना काफी नहीं है। रोजाना सूली भुगते तो कुछ सजा भी हो। लक्खू वेश्या की जवानी ढलने पर है, वह खुशी-खुशी इस छिनाल के एक लाख रुपये दे देगी। राज्य के खजाने का खयाल किये बगैर, उसकी बरकत नहीं हो सकती।

यह बात राजा को जँच गयी। लक्खू को हुस्न की अच्छी परख थी। बगैर माँगे सवा लाख रुपये दे दिये। दीवान को शाबासी के साथ सिरोपाव मिला और लक्खू को रुपयों के बदले सौन्दर्य और यौवन। दोनों खुश थे।

ढलता सूरज भी अपनी रोशनी कब छोड़ता है ! इसी तरह लक्खू ढलती जवानी में भी कम सुन्दर नहीं थी। पर सेठानी को देखते ही नजर उतारकर बोली, 'आज तुझे देखकर मेरी गलतफहमी दूर हो गयी। पर सबका हिस्सा होने पर ही इस खूबसूरती की शान है। एक खूंटे से बँधना इसकी तौहीन है।'

पहले तो लक्खू की गूढ़ बातें सेठानी की समझ में नहीं आयीं, पर धीरे-धीरे उन बातों का मर्म उसकी समझ में आने लगा। वह जहाँ भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गयी, उसे दुत्कार ही मिली। लक्खू ने उसकी इतनी कीमत तो आँकी! फिर भी सेठानी ने डरते हुए शंका की, 'इस पाप की राह तो मुझे नरक में भी जगह नहीं मिलेगी। यह जनम बिगड़ा सो बिगड़ा, अगला जनम क्यूँ बिगाड़ूँ!'

सेठानी की बात सुनकर लक्खू को हँसी आ गयी। सारी औरतें ऐसी ही नादान हुआ करती हैं। तमाम जिन्दगी इस गलतफहमी में जीती हैं और इसी गलतफहमी में मर जाती हैं। उफनती हँसी को जबरन रोककर वह कहने लगी, 'इन्सानों की दुनिया में इससे बढ़िया राह और क्या होगी? मैं खुद पहले इसी गलतफहमी में थी। अभी समझाने से तू समझ नहीं पायेगी, तब समझाना बेकार है। वक्त और मुसीबत ही सबसे बड़ा वेद है। मेरे यहाँ दस लड़कियाँ और हैं। उनकी रामायण से बड़ा कोई शास्त्र नहीं है, पर उसे समझने लायक अक्ल चाहिए। वह अक्ल न आये तब तक तुझे एक मौका देती हूँ। मेरे सवा लाख रुपये गये तो कोई बात नहीं। तू एक दफा अपने माँ-बाप, ससुरालवालों और ननिहालवालों से मिल आ। जो भी मन में हो, निकाल लेना। उसके बाद थोड़ा समझाना ही तेरे लिए काफी होगा।'

सेठानी ने शंका की, 'अगर मैं वापस नहीं लौटी तो?'

लक्खू मुस्कराकर बोली, 'न लौटे तो तेरी मरजी। तुझे पूरी छूट है। मैं औरत के शरीर का सौदा करती हूँ, उसकी जिन्दगी का नहीं।'

सेठानी आँखें फाड़कर लक्खू के चेहरे की ओर टुकुर-टुकुर देखने लगी। वेश्या के मुँह से ऐसी वाणी! पके हुए फोड़े में गोया तीखी शूल घुसेड़ दी गयी हो। उसकी आँखों से झार-झार आँसू बहने लगे। औरत के आँसुओं से लक्खू को बेहद चिढ़ थी। झुँझलाकर बोली, 'ये आँसू देख-देखकर मैं आजिज आ गयी हूँ। अब इस ढलती उम्र में इतनी ताकत नहीं रही। तू रो मत। ये निगोड़े आँसू ही हमें हराते हैं। इनसे बढ़कर औरत का कोई दुश्मन नहीं।'

सेठानी रुँधे गले से कहने लगी, 'एक दफा इन आँसुओं की रामायण सुनाये बगैर मेरे दिल का बोझ हल्का नहीं होगा।'

लक्खू बीच ही में बोली, 'पर बोझ हल्का करने की जरूरत क्या है? ऐसी रामायण सुनते-सुनते मेरे कान पक गये हैं। ठीक से सुनी भी नहीं जाती, पर फिर भी तेरी इच्छा हो तो वापस आकर सुना देना। उस वक्त तेरी जबान और मेरे कान, दोनों एक-दूसरे को पहचान जायेंगे। तब बैठकर आराम से दिल का गुबार निकाल लेना। मैं बगैर सुने ही तमाम औरतों के मन की बातें जानती हूँ। अब तू जा। मैंने सभी लड़कियों को एक दफा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह मौका दिया है। फकत तीन की गलतफहमी दूर नहीं हुई और वे खुदकशी करके मर गयीं। बाकी सभी लड़कियाँ सीधी यहीं आयीं। एक ने भी दगा नहीं किया। तवायफ के घर में छल-कपट और जाल-साजी का क्या काम! इस गन्दगी के लिए तो गृहस्थियों के बखेड़े ही बहुत हैं।'

लक्खू की बातें सुनकर सेठानी की आँखों का जाला धीरे-धीरे कटने लगा। मुँह फिराकर बोली, 'अब तो यहाँ से जाने को मेरा मन ही नहीं करता।'

लक्खू कहने लगी, 'नहीं, मेरा मन यह बात नहीं मानता। जबरन न तो कोई काम करना और न ही करवाना। तुझे फिर कहती हूँ, तेरी मरजी हो तो वापस आना। मेरा कोई एहसान नहीं है। मेरे पास रुपये थे, जो मैंने गिन दिये। इस घर का दरवाजा तेरे लिए आठों पहर खुला है। इच्छा हो तो बेधड़क चली आना, न हो, तो न सही।'

चलते वक्त सेठानी का मन भारी तो हुआ, पर जनम देनेवाले माँ-बाप क्यूँकर मुँह मोड़ेंगे! खून रिश्ता नहीं तोड़ता। पूत कपूत हो सकता है, पर माता कुमाता नहीं हो सकती। माँ ने तो अपने शरीर की मांस-मज्जा छिजाकर उसे नौ महीने पेट में रखा है। फिर भी पहले उसे माँ-बाप के पास जाने में झिझक हुई। इस खातिर पूछते-पूछते वह ननिहाल पहुँची। वहाँ पहले ही भानजी की सारी करतूतों की खबर पहुँच चुकी थी। ऐसी बातें तो हवा से भी तेज चलती हैं। अचीते शेर को देखकर वे इतने डरते कि नहीं, पर भानजी पर नजर पड़ते ही मामा-मामी के चेहरे जर्द हो गये। मानो एक ही पल में शरीर का समूचा खून निचुड़ गया हो। पहले तो उसे पहचाना तक नहीं। फिर भानजी ने परिचय दिया तो उसे खूब फटकारा। बहुत जलील किया। ज्यादा उम्मीद न होते हुए भी उसे ऐसे बोलों का भरोसा नहीं था। कुत्तों को चाव से रोटी के टुकड़े डालते हुए मामा बोला, 'रिश्ते और नाते तो रिवाज के मुताबिक होते हैं। जमाने के चलन को छोड़ा नहीं जा सकता। राह में तुझे कहीं कुआँ-बावड़ी नहीं मिली? चार हाथ रस्सी से घर बैठे ही काम निबट जाता, अपनी मनहूस सूरत लिये यहाँ आने की क्या जरूरत थी?'

रोटियों के लिए एक कुत्ता ऊपर लपका तो मामे ने दूर हटकर दो-तीन दफा कुत्ते को दुत्कारा, 'धुररे, धुररे!'

अक्लमन्द को इशारा ही काफी। भानजी ने मुड़कर फिर ननिहाल की ओर देखा तक नहीं। पर माँ तो देखते ही सीने से लगाकर सर पर हाथ फेरेगी। ललाट और गालों को पहले की तरह चूमेगी।

पर बेटी की उम्मीद यहाँ भी बेकार गयी। माँ की पहचान में तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई कसर नहीं रही, पर उसकी ममता नहीं उमड़ी। ललाट में सल डालकर मुंह बिगाड़ते बोली, 'तेरी बनिस्पत पेट में पत्थर पड़ता तो बेहतर था। नागडसी, यह काला मुंह लेकर तू यहाँ क्यूं आ मरी? मुझे तो लगता है कि मौत भी तुझसे नफरत करती है। कुछ भी शर्म-हया हो तो चुल्लू-भर पानी में डूब मर। मेरा दूध ही लजाया।'

बेटी को दुत्कारकर माँ गली के कुत्तों के लिए तू-तू करने लगी। आवाज के साथ ही कुत्ते चारों ओर से पूंछ हिलाते दौड़े आये। माँ उन्हें घी में तली पूड़ियों के टुकड़े डालने लगी। अमावस का पुण्य भी कम नहीं होता।

माँ के मुंह से ये बोल सुनकर बेटी बोलना ही भूल गयी। रोटी-पानी की मनुहार के बदले यह जिल्लत! जैसे आयी थी, वैसे ही चुपचाप वापस चल दी।

घरवाली की बकझक सुनकर गृहस्वामी पूजा-पाठ छोड़कर बाहर आया। माला के मनके घुमाते बोला, 'किस पर नाराज हो रही थी? तुझे कितनी बार कहा है कि छछेरियों को झिड़का मत कर। बेचारी छाछ की क्या बिसात!'

सर को हाथ लगाकर माँ रूखे सुर में बोली, 'यह तुम्हें छछेरी नजर आती है? भले आदमी! हाथों में पली बेटी को भी नहीं पहचानते? यह तो तुम्हारी लाड़ली बेटी है, बेटी।'

बेटी का नाम सुनते ही बाप के दिल में अंगारे सुलग उठे। गुस्से में दाँत पीसते बोला, 'पर यह यहाँ आयी कैसे? तेरे पैर में जूती नहीं थी? सात-आठेक जूते तो मारने थे।'

बेटी मुड़कर वापस आयी। मुस्कराने की चेष्टा करते बोली, 'यह भी मन में मत रखना।'

पर जूते मारने की हिम्मत बाप न जुटा सका तो माँ ने कहा, 'बेहया, हमारे सामने खड़ी बत्तीसी निकाल रही है?'

फिर पति की ओर देखकर उन्हें धिक्कारते कहने लगी, 'पहले जूतों का जोर होता तो आज यह दिन देखना नहीं पड़ता। तुम्हारे लाड़ ने ही इसे बिगाड़ा है।'

झूठा उलाहना झेलनेवाला वो भी नहीं था। माला को रोककर बोला, 'जरूरत से ज्यादा माँ का लाड़ नहीं मिलता तो यह कभी इतनी नहीं बिगड़ती।'

माँ-बाप दोनों एक-दूसरे पर इल्जाम मँढ़ते रहे और बेटी चुपचाप वहाँ से चल दी। अब फकत मौत और लक्खू के अलावा कहीं कोई सहारा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं था। जब जनम लेना तक अपने वश में नहीं था तो अब मौत के सामने क्या हाथ पसारना ? इतनी बड़ी दुनिया में फकत एक घर को छोड़कर उसे कहीं आशा की किरण नजर नहीं आयी। बिना कहीं रुके, वह सीधी लक्खू के घर पहुँची। जोर से दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खोलकर लक्खू बोली, 'मैं जानती थी कि तू जल्द ही वापस आयेगी। तेरी समझ पर मुझे पूरा भरोसा था। अब मेरी गद्दी खाली नहीं रहेगी। एक बड़ी फिक्र मिट गयी। इन छोरियों में तुझ-सी अक्ल नहीं है।'

मिलते ही लक्खू ने यह क्या राग छेड़ा ! यह तारीफ की बात है कि लांछन की ? पर उसके लहजे में ताने का लेश-मात्र भी नहीं था। बिलकुल सीधी, सरल वाणी। सेठानी बोली, 'ऐसा मालूम था तो फिर मुझे जाने ही क्यूं दिया ?'

दरवाजा बन्द करते लक्खू कहने लगी, 'जाना जरूरी था। फकत कानों से सुनकर सारी बातें समझ में नहीं आतीं। अब शायद समझाने की भी जरूरत न पड़े। पहले जरा आराम करके नहा-धो ले। शाम को खाने के बाद तेरी रामायण सुनूंगी।'

सेठानी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके हृदय में एक साथ कई बवण्डर उठने लगे। मर्द कितना ही धुरन्धर पण्डित क्यूं न हो, औरत की जिन्दगी और उसके मन की उथल-पुथल की थाह हजार जनमों में भी नहीं पा सकता। दुनिया के सारे मर्द शामिल होकर भी मगजमारी करें, तब भी उनके हाथ कुछ नहीं लगेगा। वही ढाक के तीन पात।

ब्यालू के बाद सेठानी ने कहा, 'अब सुनाऊँ तब भी वही बात और न सुनाऊँ तब भी वही बात। मेरा आफरा तो यूं ही झड़ गया।'

लक्खू के साथ दसों लड़कियां भी सेठानी के इर्द-गिर्द बैठी थीं। एक लड़की बोली, 'यह इस घर का दस्तूर है। दूसरी दफा इस घर की दहलीज लांघने पर आपबीती सुनानी पड़ती है। फिर मुनीम आकर सारी बातें बही में टीप लेता है।'

सेठानी एक गहरी आह भरकर कहने लगी, 'अगर मेरी किस्मत में कौवे का पंजा नहीं होता तो मेरी रामायण कुछ दूसरी ही होती।'

लक्खू सर हिलाते बोली, 'नहीं बेटी, यह बात नहीं है, पर हमें ऐसा ही कुछ लगता है। फरक न होने पर भी एक दूसरी रामायण में फरक नजर आता है। दुनिया की तमाम औरतों की फकत एक ही रामायण है—मर्द के हाथों ठगा जाना और उस ठगाई का उम्र-भर खमियाजा भुगतना। कोई भी औरत इस रामायण से अछूती नहीं है। लेकिन गृहस्थी के भरम-जाल में यह बात ठीक से समझ में नहीं आती।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके बाद सेठानी ने शुरुआत से अपनी समूची रामायण सुनायी कि कैसे थार के कौवे मानसरोवर के हंसों को बरगलाकर अपने साथ लाये। बेचारे हंस कैसे उस छल से पिण्ड छुड़ाकर वापस अपने मुल्क की ओर उड़े। कैसे आँधी-मेह के थपेड़े खाकर उन्होंने एक बड़ की खोखल में पनाह ली। उनके परों में दुबके चूहों ने कैसे उनके पर कुतरे। कैसे उसका पति उन पंखहीन और बदरंग हंसों को अपने साथ लाया। गौने के बाद उसने कितने दुलार से उन्हें मानिक-मोतियों का दाना चुगाया। मेहँदी रचे हाथों से सहलाने और सीने से चिपटाने पर कितनी जल्दी उनके पंख वापस आये। कैसे उसका पति एक गाड़ी जुतवाकर मानसरोवर पहुँचा। हंस-हंसनी ने कैसे उनकी खातिर-तवज्जुह की। कैसे चकवा-चकवी की बात सुनकर वो हंस पर बैठकर मेड़ी में आया। फिर कैसे पेट की आशा के कारण पंचों ने उलटा इन्साफ किया। कैसे ससुराल छूटा। कैसे वह आँखें मूँदकर अँधेरे में चली। कैसे कुम्हारी ने उसका हाथ पकड़ा। फिर कैसे सुनारी ने उसका बेटा उचकाया और कैसे वह दर-दर भटकी—एक-एक करके लक्खू के मुकाम तक की अपनी सारी कहानी उसने उगल डाली।

पर इस बार उसकी आँखें रंचमात्र भी गीली नहीं हुईं। आँसुओं पर लक्खू की खीज को वह भूली नहीं थी। आँसू बहाने से कुछ भी बनता-बिगड़ता नहीं है, फकत झूठी तसल्ली मिलती है। लक्खू की खीज का मतलब अब उसकी समझ में आया।

सेठानी की समूची रामायण सुनने के बाद लक्खू बोली, 'बेटी, ये धरम-करम, ज्ञान, भक्ति, कल्याण, अहिंसा, रीति-रिवाज, परम्परा और मान्यताओं के सारे भरम झूठे हैं। सच है तो फकत—कागपन्थ। दुनिया के तमाम विद्वान्, रिषि-मुनि, अवतार, तीर्थंकर, साधु-सन्त वगैरह एक से बढ़कर एक कागपन्थी हैं। अपना स्वार्थ ही सबसे बड़ा है। बाकी सब छल-कपट और लफड़े हैं। कौवे के फरेब का जहर समूची दुनिया में फूटता है। पेट में पति की आशा होते हुए भी तेरे साथ पंचों ने बेइन्साफी की। पर यहाँ की बही बाँचे तो तुझे मर्दों की करतूतों का मर्म कुछ समझ में आये। किसी औरत के पेट में बाप की आशा, किसी के पेट में भाई, चाचा, जेठ, भतीजे और मामे का अंश। सुख में दोनों साथ, पर दुख फकत औरत को भुगतना पड़ता है। कहीं कोई निस्तार नहीं। कुदरत नाते-रिश्तों का खयाल नहीं करती। भण्डा फूटने पर मर्द गुस्सा होकर काटने दौड़ता है। इस उजली धूप के पीछे मर्द के हाथों पुती कितनी कालिख है, उसे तू यहीं देख सकेगी। गृहस्थी की आँखों से यह कालिख देखना मना है। गृहस्थियों का नियम-धरम यहाँ अधरम है और उनका अधरम अपना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खास धरम। गृहस्थियों की सड़ी-गली मर्यादाओं को यहाँ आकर भूलना पड़ता है। न भूलने पर बेकार पीड़ा होती है। उनके चोरी-छुपे काम यहाँ खुलेआम, बेझिझक किये जाते हैं। जो भी अण्टी में नकदी लेकर आये, उसे हमबिस्तर होने की पूरी छूट है। यहाँ जात-पाँत, नाते-रिश्ते, बाप-बेटे, भाई-भतीजे वगैरह का कोई सम्बन्ध नहीं पाला जाता। यह हलफ लेने पर ही इस धन्धे का धरम निभ सकता है। ये बातें पहले कुछ मुश्किल से गले उतरती हैं, पर फिर कोई दिक्कत नहीं होती। गृहस्थियों के संस्कार आसानी से पीछा नहीं छोड़ते। मुझे भी बहुत देर से समझ आयी। मैंने बाप की करतूत की वजह से बहुत मुसीबतें झेलीं। बहुत चीखी-चिल्लायी, पर किसी ने भी मेरी असलियत पर कान नहीं धरा। आखिर शरीर का यह धन्धा अख्तियार करने पर मेरी अक्ल ठिकाने आयी और गलतफहमी का पर्दा हटा।'

इस तरह लक्खू ने नयी गीता का मर्म समझाया और अर्जुन की तरह सेठानी गुमसुम सुनती रही। लक्खू के कहे मुताबिक सेठानी ने इस धन्धे की आन पर आँच न आने देने की कसम ली।

दूसरे दिन दो घड़ी रात ढले दीवान लक्खू के कोठे की ओर चला। वो सेठानी पर राजदरबार में देखते ही रीझ गया था। आज लक्खू का बुलावा मिलते ही घोड़े पर चढ़कर आया।

सेठानी मेड़ी में घी का दीवट जलाये, सोलह-सिंगार किये बैठी थी। दीवट की लौ में गौने की सुहागरात झिलमिलाने लगी। उस रोज वह भी खुशी की रात थी और आज यह भी खुशी की रात है। पर दोनों खुशियों में जमीन-आसमान का फासला था।

दीवान नशे में धुत था। सेठानी शराब की बदबू की रत्ती-भर आदी नहीं थी। पहले भभके से ही उसका सर भन्ना गया। जी मितलाने लगा। उसने दीवान से कल के लिए मिन्नत की, पर दीवान नहीं माना। वह तो नौली के बदले खरीदी हुई थी।

दीवान को अंगसंग का बहुत आनन्द आया। उसने खुश होकर सेठानी को अमूल्य नग जड़ी अँगूठी बख्शिश में दे दी। क्या एक रात की इतनी कीमत भी हो सकती है!

दीवान अँधेरे-अँधेरे आया था और घड़ी रात रहते अँधेरे-अँधेरे ही वापस चला गया। उसके जाने के बाद लक्खू मेड़ी में आयी। कुछ देर दोनों एक-दूसरे की आँखों में नजरें गड़ाकर एकटक देखती रहीं। न बोलने पर तो यह रात यहीं थम जायेगी। आखिर लक्खू ने होंठ खोले। बोली, 'दसेक रातें तुझे थोड़ी-बहुत घिन तो होगी, पर फिर कोई दिक्क़त नहीं।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेठानी धीरे-से बोली, 'पर दारू की बदबू के मारे तो मेरा जी फड़फड़ाने लगता है। ऐसे दारूखोरियों की खातिर मनाही हो जाये तो ठीक है।'

'यह अपने वश की बात नहीं है। इस बदबू की तू वक्त के साथ आप ही आदी हो जायेगी, पर दूसरी कई बदबूएँ सपने में भी पीछा नहीं छोड़ेंगी। तू उनकी सड़ाँध से बचने की कोशिश करना। कई बड़े आदमी शादी की बात करेंगे। प्यार का दिखावा करेंगे। पर तू हरगिज उस झाँसे में मत आना। इस दीवान के पाँच बीवियाँ हैं। किसी औरत के सामने प्यार जतलाना तो इनके बायें हाथ का खेल है। आज रात तेरा राजा के यहाँ न्यौता है। सुनकर तुझे हैरानी होगी कि राजा के सोलह रानियाँ हैं। इन लोगों के लिए न तो कोई सीमा है और न कोई बन्दिश। प्यार के नाटक में तो तू भी पीछे मत रहना, पर इस दलदल में फँसना मत। तुझे मेरी यह खास हिदायत है। न किसी से नफरत, न किसी से प्यार।'

तारे निकलते ही सेठानी को लेने के लिए सोलह घोड़ों का रथ आया। लक्खू ने खुद ही हीरे-मोतियों से उसका सिंगार किया। टापों की लयबद्ध आवाज करता हुआ रथ पलक झपकते रंगमहल के झरोखे के नीचे जाकर रुका। चार दासियाँ चँवर डुलातीं उसे सोने के पलँग तक ले गयीं।

थोड़ी देर बाद नशे में चूर राजा डगमगाते कदमों से आया। ज्यादा लड़खड़ाने लगता तो साथ चलती दासियाँ उसे थाम लेतीं। पर पलँग पर बैठते ही मखमल के गद्दे पर लुढ़क गया। दोनों दासियाँ अदेर उसके हाथ-पाँव दबाने लगीं।

आज के तमाशे में सेठानी को किसी बीती रात का खयाल नहीं आया। वह आक-वाक होकर सारा माजरा घुर-घुर देखने लगी।

इसी तमाशे में घड़ी-डेढ़-घड़ी रात ढल गयी। आखिर राजा को काम का ध्यान बँधा। इधर-उधर हाथ मारने लगा। एक दासी सिरहाने खड़ी थी और दूसरी पैंताने। सेठानी लज्जा से सिमटने लगी। राजा की जबान मोटी हो गयी थी, हकलाते बोला, 'ये मेरी खास दासियाँ हैं, इनसे कैसी शर्म! ये हमेशा सारी रात यों ही मेरी हाजरी बजाती हैं।'

राजा आगे कुछ और कहना चाहता था, पर उससे बोला नहीं गया। हिचकी के साथ ही सेठानी के मुँह पर कै कर दी। बन्द खुली कंचुकी, उरोज और चेहरा भर गया। सूग से मुँह बिगाड़ते हुए सेठानी फौरन उठकर पलँग से नीचे उतर गयी। राजा दो-एक कै और करके पलँग पर ढेर हो गया। दोनों दासियों ने मिलकर बिछौना बदला। राजा की पोशाक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बदली। दाढ़ी-मूँछें सुथराई से धोयीं। पर राजा को वापस होश नहीं आया।

सेठानी ने कपड़े बदलने और मुँह धोने की बात की तो एक दासी इशारे से समझाते हुए धीरे-से बोली, 'अन्नदाता की कै से घिन करना, मौत को न्यौता देना है। लगता है, लक्खू ने तुझे ये बातें बतायीं नहीं ?'

घिन क्या, करने से आती है ! सेठानी का सर फटने लगा। गुस्से से बोली, 'मौत किसी का न्यौता नहीं मानती। वह अचानक, अचीती धावा बोलती है। वह न राजा को बख्शती है और न रिआया को।'

फिर दासी के टोकने पर भी उसने बार-बार मुँह धोया। कंचुकी धोयी। कंचुकी आधी ही सूखी थी कि उसने साहस जुटाकर कहा, 'हुजूर को तो होश ही नहीं है। बेकार रुककर क्या करूँगी ? और वैसे भी आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मुझे घर पहुँचा दो।'

सेठानी की बात सुनकर दासियों की आँखें ललाट में चढ़ गयीं। एक बोली, 'क्या मालूम, अन्नदाता किस वक्त उठें। राजा की हाजरी बजाने लायक लच्छन अभी सीखे नहीं दिखते हैं ?'

सेठानी आगे क्या बहस करती ? मन-ही-मन लक्खू की नसीहत को रटते, कठपुतली की मानिन्द अविचल खड़ी रही।

रंगमहल में हलकी-हलकी रोशनी फैलने लगी, तो भी राजा की आँख नहीं खुली। घड़ी दिन चढ़ा। डेढ़-घड़ी दिन चढ़ा। आखिर तीन घड़ी दिन चढ़े राजा की मदछकी नींद जगी। बारी-बारी से दोनों दासियों को देखने के बाद सेठानी पर उसकी नजर अटकी। जम्हाई लेते बोला, 'यह नयी लड़की कौन है ?'

एक दासी ने राजा को रात की सारी बात याद दिलायी। राजा को याद तो कुछ नहीं आया, पर फिर भी झटके के साथ उठकर उलाहना दिया, 'अगर ऐसी बात थी तो मुझे जगाया क्यूँ नहीं ? लक्खू ने मेरे लिए नायाब तोहफा भेजा और तुमने कुछ खयाल ही नहीं रखा ?'

दासियों ने माफी माँगकर सेठानी के सामने ही घिनवाली चुगली की। राम जाने, मनमौजी राजा को गुस्सा क्यूँ नहीं आया ! सेठानी को पास आने का इशारा करते कहने लगा, 'खूबसूरती तो इसके रोम-रोम से चू रही है।'

लक्खू की सीख को याद करते सेठानी राजा से सटकर बैठ गयी। राजा ने उसके गालों पर हाथ फिराते हुए दोनों दासियों को आदेश दिया कि वे हमेशा की तरह आमने-सामने खड़ी हो जायें।

फिर राजा ने सूरज भगवान के तेज की भी परवाह नहीं की। उलटे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सूरज को थोड़ी-बहुत शर्म आयी तो उसने बदली में अपना चेहरा छिपा लिया। सेठानी को तो लक्खू की सीख मुताबिक धन्धे की मर्यादा निभानी ही थी और राजा सिंहासन के नशे में उजाले और अँधेरे का फर्क ही भूल चुका था।

दीवान की तरह राजा को भी अंगसंग का बेहद आनन्द आया। रीझकर अपने गले का नवलखा हार सेठानी को इनायत कर दिया। उसके बाद राजा ने उसे महारानी बनाने का लालच दिया, पर वह तैयार नहीं हुई। अपने धन्धे की मर्यादा समझायी। लक्खू का नाम लेते ही राजा सारी बात समझ गया। और न सेठानी ने सात दिनों का एकमुश्त न्यौता ही कबूल किया। एक मर्द के साथ लगातार दो रातें बिताने की उनके धन्धे में मनाही है। मरना मंजूर, पर अपना कायदा नहीं तोड़ सकती। राजा उसके रूप पर ऐसा मोहित हुआ कि दासियों को एक दिन छोड़कर रथ भेजने का आदेश कर दिया।

रथ से उतरते ही सेठानी दौड़ी-दौड़ी लक्खू के पास गयी। गले में बाँहें डालकर फूट-फूटकर रोने लगी। लक्खू उसकी पीठ सहलाते बोली, 'बेटी, रो मत। मैं बिना कहे ही तेरा दर्द समझती हूँ। इस तरह कै करके बेहोश हो जाना राजा की पुरानी आदत है। हाँ, अलबत्ता तेरे लिए यह नयी बात है। पर बेटी, नौ दिनों बाद यह बात भी पुरानी पड़ जायेगी। शादीशुदा औरतें तो हर रोज ऐसी कै बर्दाश्त करती हैं, फिर भी नवलखे हार के बदले उनके सर पर जूते फटकारे जाते हैं। उनकी बदकिस्मती का भी कोई हिसाब है!'

सेठानी सिसकते बोली, 'पर दूसरों के हिसाब-किताब से हमें क्या वास्ता? सन्तोष का यह भरम कब तक ढाढ़स बँधाता रहेगा?'

लक्खू तेज सुर में कहने लगी, 'अपने ढाढ़स की बात तू छोड़। मर्दों के ओछेपन की ये नयी-नयी बानगियाँ ही हमारी सबसे बड़ी दौलत है। बेचारे नवलखे हार इनकी मुँहदिखायी में जाते हैं। ऐसे वमन से नफरत मत कर। इन्हें अखूट दौलत की तरह कबूल कर।'

और लक्खू की सीख मुताबिक हर रोज नयी दौलत कबूलते-कबूलते सतरह साल गुजर गये। पर सौभाग्य की बात कि सेठानी का रूप और यौवन वक्त के मुताबिक नहीं ढला। तजुर्बे के मुलम्मे से उसके चेहरे पर एक नयी आब दमकने लगी। हरेक की जबान पर फकत उसी के रूप की चर्चा थी।

सुनार का लड़का भी बहरा नहीं था। उसके कानों में भी उस रूप की भनक पड़ी। लम्बा-चौड़ा सुन्दर जवांमर्द था। बापू से कहीं बाहर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाने का बहाना बनाकर लक्खू का दरवाजा खटखटाया। खट-खट सीढ़ियाँ उतरकर एक लड़की ने अदेर दरवाजा खोला।

लड़की के पीछे-पीछे वो लक्खू के पास पहुँचा। अनजाने आदमी से फिर कौन सर खपाये ? इस खातिर लड़की ने नौली की बात चलायी तो वो मुस्कराकर बोला, 'पैसों की भली परवाह की ! इस दरवाजे की दहलीज़ लाँघनेवाला पहले अपनी अण्टी सँभालता है। पर मेरे तो कफ के बदले लालें गिरती हैं। एक ही लाल सवा लाख रुपयों की ! और खँखारने में मेरी गाँठ से क्या जाता है !'

यह सुनते ही लक्खू का माथा ठनका। थोड़ी और पूछताछ करने पर पुख्ता जानकारी हो गयी कि यह शख्स कौन है ?

सेठानी बनाव-सिंगार किये, शीशे के सामने बैठी अपना रूप निहार रही थी।

लक्खू की सीख की आज अग्नि-परीक्षा होनी थी। एक-एक सीढ़ी चढ़ते हुए लक्खू मेड़ी में आयी। सेठानी के खूबसूरत चेहरे पर नजर गड़ाकर कहने लगी, 'बेटी, इस मेड़ी की मर्यादा आज तेरे हाथ में है। बेटे के रिश्ते की वजह से पीछे मत हटना। खँखार के साथ बेशकीमती लालें हाथ लगेंगी।'

नागिन की तरह बल खाकर वह उठ खड़ी हुई। लक्खू के झुर्रियों भरे चेहरे में उसकी नजर उलझ गयी।

ज्यादा सोच-विचार का समय ही कहाँ था ? लक्खू आतुरता से बोली, 'तो उसे मेड़ी में भेज दूँ बेटी ?'

वह सपने में बड़बड़ाती हुई-सी बोली, 'हाँ, निःशंक भेज दे। मेरी नजर में अब किसी रिश्ते के लिए कोई आस्था नहीं है। ऐसी अनमोल रात फिर कब आयेगी ?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुविधा

एक धनी सेठ था। उसके इकलौते बेटे की बरात धूमधाम से शादी सम्पन्न कर वापस लौटते हुए जंगल में विश्राम करने के लिए रुकी। घनी खेजड़ी की ठण्डी छाया। सामने हिलोरें भरता तालाब। कमल के फूलों से आच्छादित निर्मल पानी। सूरज सर पर चढ़ने लगा था। जेठ की तेज चलती गर्म लू से जंगल चीत्कार कर रहा था। खाना-वाना खाकर चलें तो बेहतर। दूल्हे के पिता ने अधिक मनुहार की तो सभी बराती खुशी-खुशी वहाँ ठहर गये। दुल्हन के साथ पाँच दासियाँ थीं। वे सभी उस खेजड़ी की छाया में दरी बिछाकर बैठ गयीं। पास ही एक विशाल बबूल था—पीले फूलों से अटा हुआ। चाँदी के समान सफेद हिलारियाँ। शेष बराती उसकी छाया में बैठ गये। कुछ देर विश्राम करने के बाद खाने का इन्तजाम होने लगा।

दुल्हन मुँह फिराये, घूँघट हटाकर बैठ गयी। ऊपर देखा—पतली-पतली अनगिनत हरी सांगरियाँ ही सांगरियाँ। देखते ही आँखों में शीतलता दौड़ गयी। संयोग की बात कि उस खेजड़ी में एक भूत का निवास था। इत्र-फुलेल की खुशबू से महकते दुल्हन के उघड़े चेहरे की ओर देखा तो उसकी आँखें चौंधिया गयीं। क्या औरत का ऐसा रूप और यौवन भी हो सकता है? गुलाब के फूलों की कोमलता, खुशबू और उनका रस मानो साँचे में ढला हो। देखकर भी ऐसे रूप पर विश्वास नहीं होता। बादलों का ठिकाना छोड़कर कहीं बिजली तो नहीं उतर आयी! इन मदभरी आँखों की तो कोई उपमा ही नहीं। मानो तमाम कुदरत का रूप इस चेहरे में समा गया हो। हजारों औरतों का रूप देखा, पर इस चेहरे की तो रंगत ही निराली! खेजड़ी की छाया तक चमकने लगी। भूत की योनि सार्थक हुई। दुल्हन की देह में प्रवेश करने का विचार आने पर उसे वापस होश आया। इससे तो यह तकलीफ पायेगी! ऐसे रूप को तकलीफ कैसे दी जा सकती है! वो असमंजस में पड़ गया। यह तो अभी देखते-देखते चली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायेगी। फिर ? न उसमें प्रवेश कर सताने को मन करता है और न छोड़े ही बनता है। ऐसा तो कभी नहीं हुआ। तो क्या दूल्हे को लग जाऊँ ? पर दूल्हे को लगने पर भी दुल्हन का मन तो तड़फेगा ही ! इस रूप के तड़फने पर न बादल बरसेंगे, न बिजलियाँ चमकेंगी। न सूरज उगेगा, न चाँद। कुदरत का सारा नजारा ही बिगड़ जायेगा। उसके मन में इस तरह की दया पहले तो कभी नहीं आयी। इस रूप को दुख देने की बजाय तो खुद दुख उठाना कहीं अच्छा है। ऐसा दुख भी कहाँ नसीब होता है ! इस दुख के परस से तो भूत का जीवन सफल हो जायेगा।

आखिर विश्राम के बाद तो रवाना होना ही था। दुल्हन जब उठकर चलने लगी तो भूत की आँखों के आगे अँधेरा छा गया। रात में भी स्पष्ट देखनेवाली आँखों के सामने यह धुन्ध कैसी ! सर चढ़े सूरज की रोशनी पर अचानक यह कालिमा कैसे पुत गयी !

छम-छम करती हुई दुल्हन दूल्हे के रथ पर चढ़ गयी। यह दूल्हा कितना सौभाग्यशाली है ! कितना सुखी है ! भूत के रोम-रोम में मानो काँटे चुभने लगे। हृदय में जैसे आग भभक उठी। विरह की इस जलन के कारण न तो मरना मुमकिन है और न ही जीना। जीते जी यह जलन कैसे सही जा सकती है ! और मरने पर तो यह जलन भी कहाँ ! भूत के मन में ऐसी उलझन तो कभी नहीं हुई। रथ के अदृश्य होते ही वो तो मूर्च्छित हो गया।

और उधर रथ में बैठे दूल्हे की भी उलझन कम नहीं थी। दो घड़ी हो गयी मगजमारी करते हुए, पर अभी तक विवाह के खर्चे का हिसाब नहीं मिल रहा था। बापू बहुत नाराज होंगे। खर्च भी कुछ अधिक हो गया था। ऐसी भूल-चूक होने पर वे आसानी से खुश नहीं होते। हिसाब और व्यापार का सुख ही सबसे बड़ा सुख है। बाकी सब झमेले। स्वयं भगवान भी पक्का हिसाबी है। हरेक के साँस का पूरा हिसाब रखता है। वर्षा की बूँद-बूँद, हवा की रग-रग और धरती के कण-कण का उसके पास एकदम सही लेखा है। कुदरत के हिसाब में भी भूल जब नहीं होती, तब बनिये की बही में भूल कैसे खट सकती है !

ललाट में बल डाले दूल्हा अंकों का जोड़-तोड़ बिठा रहा था कि दुल्हन ने रथ के पर्दे को हटाकर बाहर देखा। नजर न टिके, ऐसी तेज धूप। हरे-भरे केरों पर सुर्ख ढालू दमक रहे थे। कितने सुहाने ! कितने मोहक ! मुस्कराते ढालुओं में दुल्हन की नजर अटक गयी। दूल्हे की बाँह पकड़कर दुल्हन अबोध बच्चे की तरह बोली, 'एक दफा बही से नजर हटाकर बाहर तो देखो। ये ढालू कितने सुन्दर हैं ! जरा नीचे जाकर दो-तीन अंजुली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढालू तो ला दो। देखो, ऐसी जलती धूप में भी ये फीके नहीं पड़े। ज्यों-ज्यों धूप पड़ती है, त्यों-त्यों रंग अधिक निखरता है। धूप में कैसा भी रंग या तो उड़ जाता है या साँवला पड़ जाता है।'

दूल्हा इन्सान जैसा इन्सान था। न अधिक सुन्दर और न अधिक कुरूप। विवाह तो भरी जवानी में ही हुआ था, पर उसे कोई खास खुशी नहीं हुई। पाँच बरस बाद होता तो भी चल जाता और हो गया तो भी अच्छा। कभी न कभी तो होना ही था। बड़ा काम निबट गया। नौलखे हार पर हाथ फिराते बोला, 'ये ढालू तो ठेठ गँवारों की पसन्द है। तुम्हें इसकी ख्वाहिश कैसे हुई? खाने की इच्छा हो तो गाँठ खोलकर छुहारे दूं। नारियल दूं। जी-भर कर खाओ।'

दुल्हन भी निपट गँवार निकली। हठ करती हुई-सी बोली, 'नहीं, मुझे तो बस ढालू ला दो। आपका एहसान मानूंगी। आप तकलीफ न उठाना चाहें तो मुझे इजाजत दें, मैं तोड़ लाती हूँ।'

दूल्हे ने तो फिर वही बात की। कहा, 'इन काँटों से कौन उलझे! जो एकदम जंगली होते हैं, वे ही ढालू तोड़ते हैं और वे ही खाते हैं। मखाने खाओ, बताशे खाओ। चाहो तो मिश्री खाओ। इन निंबोली व ढालुओं की तो घर पर बात ही मत करना। लोग हँसेंगे।'

'हँसने दो।' दुल्हन तो यह बात कहकर तुरन्त रथ से कूद पड़ी। तितली की तरह केर-केर पर उड़ती रही। कुछ ही देर में ओढ़नी भरकर सुर्ख ढालू ले आयी। घड़े के पानी से उन्हें अच्छी तरह धोया। ठण्डा किया। होंठों और ढालुओं का रंग एक-सा, पर दूल्हे को न ढालुओं का रंग अच्छा लगा, न होंठों का। वो तो हिसाब में उलझा हुआ था। दुल्हन ने काफी निहोरे किये, पर वो ढालू खाने के लिए राजी नहीं हुआ।

दुल्हन ने कहा, 'आपकी इच्छा। अपनी-अपनी पसन्द है। मेरा तो एक बार मन हुआ कि इन ढालुओं के बदले नौलखा हार केर में टाँक दूं, तब भी कम है।'

ढालू खाती दुल्हन के चेहरे की तरफ देखकर दूल्हा कहने लगा, 'ऐसी बेवकूफी की बात फिर कभी मत करना। बापू बहुत नाराज होंगे। वे रूप की बजाय औरतों के गुणों का अधिक आदर करते हैं।'

दुल्हन मुस्कराती-सी बोली, 'अब मालूम हुआ, उनके डर से ही आप हिसाब में उलझे हुए हैं। पर सारी बातें अपनी-अपनी जगह शोभा देती हैं। विवाह के समय हिसाब में फँसना, यह कहाँ का न्याय है!'

दूल्हे ने कहा, 'विवाह होना था, सो हो गया। पर हिसाब तो अभी बाकी है। विवाह के खर्च का सारा हिसाब सँभलाकर ठीक तीज के दिन मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यापार के लिए दिसावर जाना है। ऐसा शुभ मुहूर्त फिर सात बरस तक नहीं है।'

पर गँवार दुल्हन को इस शुभ मुहूर्त की बात सुनकर रत्ती-भर भी खशी नहीं हुई। बात सुनते ही ढालुग्रों का स्वाद बिगड़ गया। लगा, जैसे कोई दिल को दबाकर खून निचोड़ रहा हो। यह कैसी ग्रनहोनी बात सुनी! इकबारगी विश्वास ही नहीं हुग्रा। पूछा, 'क्या कहा, ग्राप व्यापार की खातिर दिसावर जायेंगे? सुना है, ग्रापकी हवेली में तो दौलत के भण्डार भरे हैं।'

दूल्हा गुमान भरे स्वर में बोला, 'इसमें क्या शक है! तुम खुद ग्रपनी ग्राँखों से देख लेना। हीरे-मोतियों के ढेर लगे हैं। पर दौलत तो दिन दूनी ग्रौर रात चौगुनी बढ़ती रहे, तभी ग्रच्छा है। व्यापार तो बनिये का पहला धर्म है। ग्रभी तो दौलत बहुत बढ़ानी है। ऐसा बढ़िया मुहूर्त कैसे छोड़ा जा सकता है!'

दुल्हन ने फिर कोई बात नहीं की। बात करने से मतलब ही क्या था! एक-एक करके सारे ढालू बाहर फेंक दिये। दूल्हे ने मुस्कराकर कहा, 'मैंने तो तुम्हें पहले ही कह दिया था कि ये ढालू तो गंवारों के खाने की चीज है! ग्रपन बड़े ग्रादमियों को ये ग्रच्छे नहीं लगते। ग्राखिर खाते नहीं बने तो तुम्हें भी फेंकने पड़े। तेज धूप में जली सो ग्रलग!'

यह बात कहकर दूल्हा धूप का तखमीना लगाने के लिए रथ से बाहर देखने लगा। नजर सुलग उठे, ऐसी तेज धूप! पीले फूलों से लदी हींगानियों की ग्रनगिनत झाड़ियां उसे ऐसी लगीं मानो ठौर-ठौर आग की लपटें उठ रही हों। दूल्हे ने परिहास करते हुए कहा, 'ग्रब इन हींगानियों की खातिर तो जिद नहीं करोगी! इनमें ग्रच्छाई होती तो भला गड़रिये कब छोड़ते!'

दुल्हन ने कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप सर झुकाये बैठी रही। सोचने लगी कि इस पति के भरोसे घर का ग्राँगन छोड़ा। माँ-बाप की जुदाई सही। सहेलियों का झुण्ड, भाई-भतीजे, तालाब का किनारा, गीत, गुड्डा-गुड्डी का खेल, झुरनी, ग्राँख-मिचौनी, धमा-चौकड़ी—ये तमाम सुख छिटकाकर इस पति का हाथ थामा। माँ की गोद छोड़कर पराये घर की ग्रास की ग्रौर ये ठीक तीज के दिन शुभ मुहूर्त की वेला व्यापार के लिए दिसावर जाना चाहते हैं! फिर यह बेशुमार दौलत किस सुख के लिए है? जीते-जी काम ग्राती नहीं। मरने पर कफन की गर्ज भी पूरी करती नहीं। किस सुख की ग्राशा में इनके पीछे ग्रायी? किस ग्रदृश्य हर्ष ग्रौर सन्तोष के भरोसे परायी ठौर का निवास कबूल किया? कमायी, तिजारत, जायदाद ग्रौर दौलत फिर किस दिन के लिए हैं? ग्रसली सुख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के इस सौदे के बदले तीन लोक का राज्य हाथ लगे तो भी किस काम का ! दुनिया की सारी दौलत के बदले भी बीता हुआ पल वापस नहीं लौटाया जा सकता। इन्सान दौलत की खातिर है कि दौलत इन्सान की खातिर, फकत इसी हिसाब को अच्छी तरह समझना है। फिर कौन-सा हिसाब बाकी रह जाता है ! सोने का माहात्म्य बड़ा है या काया का ? साँस का माहात्म्य बड़ा है या माया का? इस सवाल के जवाब में ही जीवन के सारे अर्थ पिरोये हुए हैं।

दूल्हा अपने हिसाब में डूबा था, दुल्हन अपने खयालों में गोता लगा रही थी और बैल अपनी चाल में मगन थे। चलनेवाला मंजिल पर पहुँचेगा ही। आखिर सेठ की हवेली के सामने बरात आकर रुकी। गाजे-बाजे और ढोल-नगारों के स्वागत के साथ दुल्हन रनिवास में पहुँची। जिसने भी देखा, सराहे बगैर न रह सका। रूप हो तो ऐसा ! रंग हो तो ऐसा !

शाम को रनिवास में घी के दीये जलाये गये। रात्रि के दूसरे पहर दूल्हा रनिवास में आया। आते ही दुल्हन को नसीहत देने लगा कि वह घर की इज्जत का पूरा-पूरा खयाल रखे। सास-ससुर की सेवा करे। अपनी आबरू अपने हाथ में। दो दिन के लिए शरीर की चाह क्यूँ जगायी जाये ! दो दिन का सहवास पाँच साल तक तकलीफ देगा। वक्त बीतते क्या देर लगती है ! देखते-देखते पाँच साल गुजर जायेंगे। फिर किस बात की कमी। यही रनिवास। ये ही चिराग। ये ही रातें और ये ही सेज। वह किसी बात की चिन्ता को पास ही न फटकने दे। पलक झपकते पाँच बरस गुजर जायेंगे।

नसीहत की ये अनमोल बातें दुल्हन चुपचाप सुनती रही। कुछ कहना-सुनना और करना तो उसके वश में था नहीं। जो पति की इच्छा, वही उसकी इच्छा। जो बापू की इच्छा, वही बेटे की इच्छा। जो लक्ष्मी की इच्छा, वही बापू की इच्छा। और जो लालच की इच्छा, वही लक्ष्मी की इच्छा। नसीहत की इन बातों में सारी रात ढल गयी। रात के साथ झिलमिल-झिलमिल चमकते नौ लाख तारे भी ढल गये।

और उधर उस खेजड़ी के नीचे मूर्च्छा टूटने पर भूत की आँखें खुलीं ! चारों ओर देखा। सूना जंगल। सूनी हरियाली। गहरी खेजड़ी। गहरी छाया। झूलती साँगरियाँ। पर कहाँ दुल्हन ? कहाँ उसकी मदभरी आँखें ? कहाँ उसका खूबसूरत चेहरा ? कहाँ उसके गुलाबी होंठ ? कहीं वो स्वप्न तो नहीं था ? मूर्च्छा के बाद होश में आते ही उसे ऐसा लगा मानो उसके मन में छल-कपट के मैल की जगह धारोष्ण दूध ने ले ली हो। ऐसा सूरज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो आज से पहले कभी नहीं उगा। बड़ा-सा गुलाबी गोला। तमाम दुनिया में रोशनी-ही-रोशनी। कैसी मन्द-मन्द हवा चल रही है! हवा के अदृश्य झूले में झूलती हरियाली! उसका मन नाना प्रकार के अनगिनत रूप धरकर कुदरत के कण-कण में समा गया।

अरे, आज से पहले तो कभी सूरज इस तरह अस्त नहीं हुआ! पश्चिम दिशा में मानो गुलाल-ही-गुलाल छितरा गया हो। धरती पर न तो खटकती हुई रोशनी, न पूरा अँधेरा। न गगन में चाँद, न सूरज और न ही कोई तारा। गोया कुदरत ने झीना घूंघट डाल लिया हो। चेहरा भी दिखता है, घूंघट भी दिखता है। अब कुदरत ने फिर चुंदरी बदली। नवलख तारों जड़ी साँवली चुंदरी। धुंधला-धुंधला चेहरा दिख रहा है। धुंधले वृक्ष। धुंधली हरियाली। गोया स्वप्न का ताना-बाना बुना जा रहा हो। पहले तो कुदरत कभी इतनी मोहक नहीं लगी। यह सब दुल्हन के चेहरे का करिश्मा है!

और उधर दुल्हन का पति उस यौवन से मुँह फिराकर दिसावर की राह चल पड़ा। कमर पर हीरे-मोतियों की नौली बँधी हुई थी। कन्धे पर आगे-पीछे लटकती दो गठरियाँ और सामने आकाश पर चमकता व्यापार का अखण्ड सूरज। सुख, लाभ और कमाई का क्या पार!

जाते हुए वो उसी खेजड़ी के पास से गुजरा। भूत ने उसे तुरन्त पहचान लिया। आदमी का रूप धरकर उससे राम-राम किया। पूछा, 'भाई, अभी तो विवाह के मांगलिक धागे भी नहीं खुले। इतनी जल्दी कहाँ चल दिये?'

सेठ के लड़के ने कहा, 'क्यूं, मांगलिक धागे क्या दिसावर में नहीं खुल सकते?'

भूत काफी दूर तक साथ चलता रहा। सारी बातें जान लीं कि वो पाँच साल तक परदेश में व्यापार करेगा। अगर यह मुहूर्त चूक जाता तो अगले सात साल तक ऐसा बढ़िया मुहूर्त हाथ नहीं लगता। सेठ के लड़के की बोल-चाल और उसके स्वभाव को गौर से देखने-भालने के बाद उसने अपनी राह ली। मन-ही-मन सोचने लगा कि सेठ के लड़के का रूप धरकर सवेरे ही सेठ की हवेली पहुँच जाये तो पाँच साल तक कोई पूछनेवाला नहीं है। यह बात तो खूब बनी! क्या उम्दा मौका हाथ लगा है! आगे की आगे देखी जायेगी। भगवान ने आखिर विनती सुन ही ली। फिर तो उससे एक पल भी नहीं रहा गया। हू-ब-हू सेठ के लड़के का रूप धरकर गाँव की तरफ चल पड़ा। मन में न खुशी की सीमा थी, न आनन्द की।

एक पहर दिन बाकी था तो भी काफी अँधेरा हो गया। उत्तर से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकराल काली-पीली आँधी आती नजर आयी। आँधी धीरे-धीरे चढ़ने लगी। धीरे-धीरे अँधेरा बढ़ने लगा। सूरज के होते हुए भी अँधेरा! हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था। कुदरत को भी कैसे-कैसे स्वप्न आते हैं! कुदरत के इस स्वप्न के बिना जमीन पर बिछी हुई पैरों तले की धूल को सूरज ढकने का मौका कब हाथ लगता है! जमीन पर पड़ी धूल आकाश पर चढ़ गयी। अन्धड़ की मार से सारा वातावरण चीत्कार कर उठा। पहाड़ों तक की जड़ें हिला देनेवाली आँधी! खोखले दम्भवाले विशाल वृक्ष चरर-मरर उखड़ने लगे। नम्रता रखनेवाली लचीली झाड़ियाँ आँधी के साथ ही इधर-उधर झुकने लगीं। उनका कुछ भी नहीं बिगड़ा। पैरों तले रौंदी जाने-वाली घास का तो कुछ भी अनिष्ट नहीं हुआ। हाल-चाल पूछती, दुलारती, सहलाती हुई आँधी ऊपर से निकल गयी। सारी वनस्पति मानो पालने में झूलने लगी। पात-पात और कोंपल-कोंपल की ठीक से सँभाल हो गयी। बड़े परिन्दों को झपाटे लगने लगे। छोटे पक्षी डालों से चिपककर बैठ गये। उड़ना मुमकिन न रहा। समूचे आकाश पर आँधी का राज्य हो गया। चारों ओर तेज सरसराहट। गोया जंगल कराह रहा हो। सूरज के तप-तेज को धरती की धूल निगल गयी। अद्‌भुत है, आँधी का यह नृत्य! अद्‌भुत है, रेत की यह घूमर! समूची कुदरत इस तूफान में छिप गयी। सारा ब्रह्माण्ड एकाकार हो गया। न आकाश दिखता है, न सूरज। न पहाड़, न वनस्पति और न जमीन। निराकार। अगोचर। कुदरत की इस जरा-सी जम्हाई के सामने न इन्सान के ज्ञान की कोई हस्ती है, न उसकी ताकत की कुछ औकात, न उसके अहंकार की कुछ क्षमता और न उसके क्रिया-कलाप की कोई हैसियत।

कुदरत की छवि का दूसरा चित्र—थोड़ा-थोड़ा उजाला छितराने लगा। हाथ को हाथ सूझने लगा। पल-पल उजाले का अस्तित्व फैलने लगा। धीरे-धीरे कुदरत की छवि स्पष्ट दिखने लगी। पहाड़ की ठौर पहाड़, सोने की थाली-सा गोल सूरज। वृक्षों की ठौर वृक्ष। झाड़ियों की ठौर झाड़ियाँ। हवा की ठौर हवा। यह क्या जादू हुआ?…कि यकायक तड़ा-तड़ मूसलाधार पानी बरसने लगा। बूंद से बूंद टकराने लगी। गोया बादलों के मुंह खोल दिये गये हों। कुदरत स्नान करने लगी। उसका जर्रा-जर्रा नहा गया। नदी-नालों में पानी बहने लगा। चारों ओर पानी-ही-पानी। नहाती हुई कुदरत को देखकर सूरज की रोशनी सार्थक हुई।

भूत सोचने लगा कि कुछ ही देर में यह क्या माजरा हुआ? देखने पर भी विश्वास न हो, यह कुदरत की कैसी हरकत है? यह क्या हुआ? कैसे हुआ? कहीं उसके मन की आँधी ही तो बाहर प्रगट नहीं हुई? कुदरत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की यह लीला कहीं उसके मन ही में तो दबी हुई नहीं थी ? इस वहम के जोम में वो तेज चलने लगा। मन-ही-मन तदवीर सोचता जा रहा था और राह चलता जा रहा था।

वो सीधा हवेली न जाकर पहले सेठ की दुकान पर पहुँचा। हिसाब-किताब करते हुए सेठ ने बेटे को देखा, तब भी उसका मन नहीं माना। दिसावर के लिए गया हुआ बेटा वापस कैसे आ सकता है ? आज दिन तक उसने कभी कहना नहीं टाला। विवाह होने के बाद इन्सान काम का नहीं रहता। यह सब किया-धरा सेठानी का है। अब हो चुकी कमायी ! या तो व्यापार की हाजरी बजा लो या फिर औरत की !

बापू के होंठों पर आती बात को बेटा बगैर कहे ही समझ गया। हाथ जोड़कर बोला, 'पहले आप मेरी बात तो सुनो ! व्यापार के लिए सलाह-मशविरा करने के लिए ही वापस आया हूँ। अगर आपकी मर्जी नहीं होगी तो घर गये बगैर ही वापस मुड़ जाऊँगा। रास्ते में समाधि लगाये एक महात्मा के दर्शन हो गये। सारे शरीर पर दीमक की तहें चढ़ी हुई थीं। मैंने सुथराई से दीमक हटायी। कुएँ से पानी निकालकर उन्हें नहलाया। पानी पिलाया। खाना खिलाया। तब महात्मा ने खुश होकर वरदान दिया कि सवेरे पलँग से नीचे उतरते ही मुझे रोजाना पाँच मोहरें मिलेंगी। दिसावर जाने की बात सोचते ही वरदान खत्म हो जायेगा। अब आप जो हुक्म दें, मुझे मंजूर है।'

ऐसे अप्रत्याशित वरदान के बाद जो हुक्म होना था, वो ही हुआ। सेठ खुशी-खुशी मान गया। सेठ के साथ सेठानी भी बहुत खुश हुई। इकलौता बेटा आँखों के सामने रहेगा और कमायी की जगह कमायी का जुगाड़ हो गया। दुल्हन को खुशी के साथ आश्चर्य और गर्व भी हुआ कि भला यह रूप छोड़कर कौन दिसावर जा सकता है ! तीसरे दिन ही वापस लौटना पड़ा।

दुकान का हिसाब-किताब और भोजन करके पति दो घड़ी रात ढलने पर रनिवास में आकर सो गया। चारों कोनों में घी के दीये जल रहे थे। फूलों की सेज। ऐसे इन्तजार से बढ़कर कोई आनन्द नहीं। पायल की झनक-झनक झंकार सुनायी दी। इस झंकार से बढ़कर कोई सुर नहीं। सोलह सिंगार सजी दुल्हन रनिवास में आयी। इस सौन्दर्य से बढ़कर कोई छवि नहीं। समूचे रनिवास में इत्र-फुलेल की खुशबू छा गयी। इस खुशबू से बढ़कर कोई महक नहीं। इस महक ने ही तो उस खेजड़ी के मुकाम पर भूत की सोयी भावनाओं को जगाया था। और आज रनिवास में प्रत्यक्ष नजरों का मिलन हुआ। इतनी जल्दी मनचाही हो जायेगी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसका तो स्वप्न में भी खयाल नहीं था।

दुल्हन निस्संकोच पास आकर बैठ गयी। घूंघट क्या हटाया, मानो तीनों लोकों का सर्वोपरि सुख जगमगा रहा हो। इस रूप की तो छाया भी दमकती है। दुल्हन मुस्कराती हुई बोली, 'मैं जानती थी कि तुम बीच राह ही से लौट आओगे। यह तारोंभरी रात इस अवसर पर आगे नहीं बढ़ने देती। इस संकल्प के स्वामी थे तो फिर मेरे रोकने के बावजूद गये ही क्यूं ? मेरी मनौती सच हुई।'

यह बात सुनते ही पति के मन में बवण्डर-सा उठा। इस पवित्र दूध में कीचड़ कैसे मिलाये ! इसे छलने से बढ़कर कोई पाप नहीं है। यह तो असली पति मानकर इतनी खुश हुई है। पर इससे बदतर झूठ और क्या हो सकता है ! यह झूठ का अन्तिम छोर है। आखिरी हद। इस अबोध प्रीत के साथ कैसे दगा करे ! प्रीत करने के बाद तो भूतों का मन भी धुल जाता है। कोई बराबरी का हो तो छल-बल की ताकत भी आजमाये, पर नींद में सोये हुए का गला चाक करने पर तो तलवार भी कलंकित होती है।

भूत थोड़ा दूर खिसककर बोला, 'क्या मालूम मनौती सच हुई या नहीं। पहले पूरी छान-बीन तो कर लो कि मैं कहीं दूसरा आदमी तो नहीं हूं ! कोई मायावी तो तुम्हारे पति का रूप धरकर नहीं आ गया !'

दुल्हन यह बात सुनकर पहले तो कुछ चौंकी। फिर नजर गड़ाकर पास बैठे व्यक्ति को अच्छी तरह देखा। हू-ब-हू वो ही चेहरा। वो ही रंग-रूप। वही नजर। वही बोली। तुरन्त समझ गयी कि पति उसके शील को परखना चाहता है। मुस्कराहट की आभा छितराते बोली, 'मैं सपने में भी पराये मर्द की छाया तक का परस नहीं होने देती, तब खुली आँखों यह बात कैसे मुमकिन है! अगर दूसरा आदमी होता तो मेरे शील की आग से कभी का भस्म हो चुका होता।'

पहले तो यह बात भूत को चुभी। होंठों पर आयी हुई बात को तुरन्त निगल गया कि तब तो इसके शील में अवश्य ही खोट है। वो भस्म हो जाता तो उसका शील सच्चा था। असलियत में दूसरा आदमी होते हुए भी जब वो भस्म नहीं हुआ तो उसका शील एकदम बुझा हुआ है। पर दूसरे ही पल बात का दूसरा पहलू सोचते ही उसका गुस्सा ठण्डा पड़ गया। वो उलटा बेहद खुश हुआ। सोचने लगा कि फकत चेहरे से ही क्या होता है ! अगर वो सच्चा पति होता तो व्यापार के लालच में औरत की यह माया छोड़ सकता था ? क्या उसने इसलिए इसका हाथ थामा कि ऐसे रूप को विरह की आग में जलने के लिए छोड़कर चलता बने ? कोई अन्धा भी इस रूप की आभा को नजरअन्दाज नहीं कर सकता, तब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वो आँखें रहते हुए भी किस तरह अन्धा बना ? अग्नि की साक्षी में सात फेरे लगा लिये तो क्या हुआ, उसकी प्रीत में सच्चाई कहाँ है ! और भूत होकर भी मैंने सच्ची प्रीत की। छल करते हुए दिल काँपता है। मेरी प्रीत सच्ची है। मेरी चाहना खरी है। तभी तो दोनों का सत बच गया। पर फिर भी दुराव रखने से प्रीत को ठेस लगेगी। असलियत बताये बगैर इस रनिवास में साँस लेना भी दूभर है। पास खिसककर कहने लगा, 'दरसल, मैं हूँ तो दूसरा आदमी ही, पर फिर भी तुम्हारा शील खरा है, क्यूंकि मेरी प्रीत सच्ची है। मण्डप के असली पति की प्रीत झूठी है। तभी तो वो ऐसे रूप से मुंह फिराकर दिसावर के लिए चल पड़ा !'

पर दुल्हन सच-झूठ की कैसे पहचान करे ? ये बातें रत्ती-भर भी उसके पल्ले नहीं पड़ीं। स्वयं माँ-बाप जिसे अपना बेटा मानते हैं, उस हू-ब-हू शक्लवाले आदमी को अपना पति मानने में कैसा संकोच ! शक्ल और रंग-रूप ही तमाम रिश्तों की सबसे बड़ी पहचान है।

तत्पश्चात् उस भूत ने दुल्हन को सारी बात बतायी कि उस खेजड़ी के मुकाम पर उसका रूप देखकर उसकी क्या दशा हुई। उसके रवाना होते ही वह कैसे मूच्छित हुआ। वापस कब होश आया। परदेश जाते हुए उसके पति के साथ उसकी क्या-क्या बातें हुईं। फिर उसका रूप धरकर कैसे इस हवेली पर आने का निश्चय किया। राह चलते हुए आँधी-पानी की बात भी विस्तार से कही। दुल्हन कठपुतली की तरह गुमसुम बैठी सारी बात सुनती रही। क्या इसी बात को सुनने की खातिर विधाता ने उसे कान दिये हैं !

उसकी कलाई को सहलाते हुए भूत आगे कहने लगा, 'माँ-बाप को तो रोज की पाँच मोहरों और दुकान की कमाई से मतलब है, वास्तविक भेद से उन्हें कोई लेना-देना नहीं। पर तुम्हें न जताने पर प्रीत के मुंह पर कालिख पुत जाती। अगर मैं यह भेद प्रगट न करता तो पाँच साल तक तुम स्वप्न में भी असलियत नहीं जान पाती। तुम तो असली पति मानकर ही सहवास करतीं। पर मेरा मन नहीं माना। मैं अपने मन से सही बात कैसे छुपाता ! आज से पहले बहुत-सी औरतों के शरीर में घुसकर उन्हें काफी तकलीफ दी, पर मेरे मन की ऐसी दशा तो कभी नहीं हुई। राम जाने, इतनी दया मेरे मन के किस कोने में छुपी थी ? इसके बावजूद अगर तुम्हारी इच्छा न हो तो मैं इसी पल वापस चला जाऊंगा। जीते जी इस ओर मुंह तक नहीं करूंगा। तुम्हें तड़फाकर मुझे प्रीत का आनन्द नहीं चाहिए। फिर भी उम्र-भर तुम्हारा एहसान मानूंगा कि तुम्हारी प्रीत की वजह से मेरे हृदय का जहर, अमृत में बदल गया। औरत के रूप और मर्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के प्रेम की यही तो सर्वोच्च मर्यादा है।'

रूप की पुतली के होंठ खुले। बोली, 'अभी तक यह बात मेरी समझ में नहीं आयी कि यह भेद प्रकट होने से ठीक रहा या प्रकट न होने से ठीक रहता। कभी पहली बात ठीक लगती है और कभी दूसरी!'

दुल्हन की आँखों में नजर गड़ाकर भूत कहने लगा, 'प्रसव-वेदना को भला बाँझ क्या समझे! इस पीड़ा में ही कोख का चरम आनन्द निवास करता है। सच्चाई और कोख के सृजन की पीड़ा एक-सी होती है। इस सच्चाई को छिपाने में न तो पीड़ा थी, और न ही आनन्द। वो तो फकत हकीकत का भ्रम होता। आनन्द का ढोंग। मैंने कई औरतों के शरीर में प्रवेश किया, तब कहीं जाकर हकीकत के भ्रम की ठीक से पहचान हुई। मैं कई ऐसी सती-सावित्री औरतों को जानता हूँ जो सहवास के समय पति के चेहरे में किसी और का चेहरा देखती हैं। यों कहने को तो वे पराये मर्द की छाया का भी परस नहीं करतीं। पर पति के बहाने दूसरे चेहरे के खयाल में कितना पातिव्रत्य है, उसकी सही पहचान जितनी मुझे है, उतनी खुद विधाता को भी नहीं है। पतिव्रता औरतों के तमाशे मैंने बहुत देखे हैं। डर तो फकत बदनामी का है। भेद खुलने का डर न हो तो स्वयं भगवान भी पाप करने से न चूके। अब जो भी तुम्हारी इच्छा हो, जाहिर कर दो। मैंने तो भूत होकर भी कोई बात नहीं छिपायी।'

ऐसी पहेली से तो आज तक किसी औरत का सामना नहीं हुआ होगा। स्वेच्छा से परकीया होने की तो बात ही अलग है। परायी औरत और पराये मर्द की खातिर किसका मन लालायित नहीं होता, पर सामाजिक प्रतिष्ठा की वजह से पर्दा नहीं हटाया जा सकता। पर पर्दे के पीछे जो होना होता है, वो होता ही है। सोच-विचारकर ऐसी बात का जवाब देना कितना दूभर है! वह इस तरह गुमसुम बैठी रही, मानो बोलना ही भूल गयी हो। इतनी बातें सुनने के बाद तो वह नितान्त गूँगी हो गयी।

दुल्हन के दिमाग में अचीती एक लहर उठी। वह सोचने लगी—जन्म के समय थाल के बदले सूप बजा। घरवालों को कोई खास खुशी नहीं हुई। लड़का होता तो अधिक खुश होते। माँ-बाप की नजर में घूरा बढ़ने में वक्त लगता हो तो बेटी का शरीर बढ़ने में भी कोई वक्त लगे। दसवाँ साल लगते ही माँ-बाप उसके पीले हाथ करके पराये ठिकाने भेजने की चिन्ता करने लगे। वह न आँगन में समाती थी और न गगन में। छाछ और लड़की माँगने में कैसी शर्म! रिश्ते-पर-रिश्ते आने लगे। उसके रूप की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चर्चा चारों ओर हवा में घुल गयी थी। सोलह साल पूरे करने मुश्किल हो गये। माँ की कोख में समा गयी, पर घर के आँगन में न समा सकी। अचानक इस हवेली से नारियल आया। उसकी किस्मत कि घरवालों ने नारियल लौटाया नहीं। यह हवेली न होकर अगर कोई दूसरा घर होता, तब भी उसे तो जाना ही था। जिसके लिए घरवालों की मर्जी होती, उसी का हाथ थामना पड़ता। पति व्यापार और हिसाब-किताब में ही खोया रहता है। उसकी नजर में हँडिया के पेंदे और औरत के चेहरे में कोई फ़र्क नहीं है। फटता हुआ जोबन भी वैसा और फटती हुई मिट्टी भी वैसी। न रथ में पत्नी के मन की बात समझा और न ही रनिवास में। सूना रनिवास और फीकी सेज छोड़कर अपने व्यापार के लिए चल पड़ा। वापस मुड़कर भी नहीं देखा। और आज भूतवाली प्रीत की रोशनी के सामने तो सूरज भी धुंधला गया! सात फेरेवाला पति जबरन रवाना हुआ तो उसका वश चला नहीं। भूतवाली इस प्रीत के सामने भी उसका वश कहाँ चला! जानेवाले को रोक न सकी तो फिर रनिवास में आनेवाले को कैसे रोके? यह प्रीत दरसाता है तो कानों में तेल कैसे डाले? पति ने उसे इस तरह मझधार में छोड़ दिया। भूत होते हुए भी इसने प्रीत जतायी, तो कैसे इन्कार करे? अगर स्वप्न वश में हो तो प्रीत वश में हो! वह अपनी सुध-बुध बिसराकर भूत की गोद में लुढ़क गयी।

कहीं यह दुल्हन के मन का ही भूत तो नहीं था, जो साकार रूप धरकर प्रकट हुआ? फिर अपने मन से क्या दुराव! जहाँ भाषा अटक जाती है, वहाँ मौन काम कर जाता है। अब कुछ भी कहना-सुनना शेष नहीं रहा। स्वतः ही एक-दूसरे के अन्तस की बात समझ गये। फिर चिराग की रोशनी लुप्त हो गयी और अंधेरा उजाले का रूप धरकर दीप-दीप करने लगा। सेज के मुरझाये हुए फूलों की पँखुड़ी-पँखुड़ी खिल उठी। रनिवास की रोशनी सार्थक हुई। रनिवास का अँधेरा सार्थक हुआ। आकाश के नवलख तारों की जगमगाहट आप ही बढ़ गयी।

ऐसी रसीली रातों के होते वक्त गुजरते क्या देर लगती है! चुटकियों में दिन बीतने लगे। खूब व्यापार बढ़ा। खूब लेन-देन बढ़ा। खूब प्रतिष्ठा बढ़ी। माँ-बाप तो खुश थे ही, सारा इलाका भी सेठ के लड़के से बेहद खुश था। वक्त-बेवक्त सभी के काम आता था। दूसरे बनियों की माफिक गले नहीं काटता था। निपट संयमी। सदाचारी। दुकान पर आनेवाली औरतों की तरफ नजर उठाकर भी नहीं देखता था। छोटी को बहन और बड़ी को माँ के समान मानता था। उसका नाम लेते ही लोगों का मन श्रद्धा से भर जाता था। उसमें फकत एक बात की कमी थी कि परदेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से सेठ के लड़के का पत्र आता तो फाड़कर फेंक देता। वापस कोई जवाब नहीं।

इस आनन्द और यश के बीच देखते-देखते तीन बरस गुजर गये—गोया मीठा सपना बीता हो। भूत भी उस हवेली में रस-बस गया। मानो सेठ का सगा बेटा ही हो। बहू भी रनिवास के नशे में विभोर थी। रनिवास के इन्तजार में उगते ही दिन अस्त हो जाता। रनिवास में घुसते ही पल-भर में रात ढल जाती।

बहू के आशा ठहरी। तीसरा महीना उतरनेवाला था। गर्भ रहने की खुशखबरी सुनकर सेठ ने सवा मन गुड़ अपने हाथों से बाँटा। लोगों ने सवा मन सोना मानकर कबूल किया। सेठ ने उम्र में पहली दफा यह उदारता बरती थी। आज हाथ खुला है तो आगे भी कुछ-न-कुछ मिलेगा। बेटे-बहू ने चुपके-चुपके काफी दान-पुण्य किया। हर्ष के नवलख तारों के बीच अब नया चाँद जुड़ेगा। कोख का चाँद आकाश के चाँद से सदा बढ़कर होता है।

दोनों पति-पत्नी को बेटी की बेहद चाह थी। खूब खुशियाँ मनायेंगे। बेटा कौन-सा स्वर्ग ले जाता है? राम जाने किसकी शक्ल पर जाये! सन्तान के जन्म की बजाय सन्तान होने की कल्पना में अधिक सुख होता है। कोख में सन्तान के साथ-साथ सपने पलते हैं।

दिन घोड़े की गति से दौड़ने लगे। पाँच महीने बीते। सात महीने पूरे हुए। यह नौवाँ महीना उतरनेवाला है। बहू दिन भर रनिवास में सोयी रहती। उसकी सेवा में तीन दासियाँ आठों पहर हाजिर रहतीं।

एक रात पति की गोद में सोयी बहू मुँह उठाकर बोली, 'कई दफा सोचती हूँ, अगर उस दिन खेजड़ी की छाया में आराम करने के लिए नहीं ठहरते तो राम जाने मेरे ये चार साल किस तरह कटते। मुझे तो लगता है कि कटते ही नहीं।'

भूत बोला, 'तुम्हारे दिन तो जैसे-तैसे निकल ही जाते, पर मेरी क्या दशा होती? झाड़ी-झाड़ी व पेड़-पेड़ पर भूत की योनि पूरी करता। उस दिन सुमत सूझी कि मैं तुम्हें लगा नहीं। मुझे तो आज भी विश्वास नहीं होता कि जिन्दगी का आनन्द भोग रहा हूँ या कोई सपना देख रहा हूँ!'

चिकने रेशमी बालों पर अंगुलियाँ फिराते-फिराते रात फिसल गयी।

उधर सुदूर दिसावर में बहू का परिणेता रात के अन्तिम पहर में उठ बैठा। आलस मरोड़, जम्हाई लेकर घड़े से ठण्डा पानी पीया। चारों ओर देखा। एक-सा अँधेरा। झिलमिलाते हुए एक-से तारे। किसी भी दिशा में रोशनी नहीं। सोचने लगा कि यह रात और भी छोटी होती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो कितना अच्छा रहता ! क्या जरूरत है इतनी लम्बी रातों की ! सोने-सोने में ही आधी जिन्दगी गुजर जाती है। नींद में तो व्यापार और लेन-देन हो नहीं सकता, वरना दूनी कमायी होती। फिर भी दौलत कम इकट्ठी नहीं की ! बापू बेहद खुश होंगे।

बीच-बीच में आस-पास के व्यापारी मिलते रहते थे। उसे वहाँ पाकर उन्हें बहुत आश्चर्य होता था। एक दफा पूछ ही लिया कि वो गाँव से वापस कब आया ? यह सुनकर उसे भी कम आश्चर्य नहीं हुआ था। जवाब दिया कि उसने तो अभी गाँव की तरफ मुँह भी नहीं किया। वे पागल तो नहीं हो गये। लोगों ने जोर देकर कहा, विस्तार से सारी बात बतायी, फिर भी उसे विश्वास नहीं हुआ। वो जब यहाँ है तो वहाँ कैसे हो सकता है ! कमाई सहन नहीं होती, अतः ईर्ष्यालु लोग उसे चक्कर में डालना चाहते हैं। पर वो ऐसा नासमझ नहीं है। उनके भी कान-कतरे जैसा है। कमाई और व्यापार में और अधिक मन लगाने लगा।

पर आज अल्ल-सवेरे ही एक भरोसेमन्द पड़ोसी ने खबर दी कि बहू के तो बच्चा होनेवाला है। शायद हो गया हो।

सेठ का लड़का बीच ही में बोला, 'अगर ऐसी बात होती तो घरवाले मुझे जरूर खबर करते। मैंने पाँच-सात चिट्ठियाँ दीं, पर एक का भी जवाब नहीं आया।'

पड़ोसी ने कहा, 'भले आदमी, जरा सोचो तो सही कि घरवाले क्यूँ खबर करते ? किसको करते ? उनका लड़का तो बीच राह से तीसरे ही दिन वापस आ गया था। एक महात्मा के दिये हुए मन्त्र से सेठजी को रोजाना पाँच मोहरें देता है। हवेली पर तो राम की मेहर है। गाजों-बाजों व उत्सवों के ठाट हैं। रनिवास में घी के दीये जलते हैं। हाँ, अब मालूम हुआ कि आपकी शक्ल हू-ब-हू सेठजी के लड़के से मिलती है। विधाता का खेल ! खुद सेठजी देखें तो भी पहचान नहीं सकें। अब बातचीत करने पर मालूम हुआ कि शक्ल तो जरूर मिलती है, पर आप दूसरे हैं।'

'भला, मैं दूसरा कैसे हुआ ? अब लगता है कि कल-परसों ही जाना पड़ेगा।'

सो सेठ के लड़के ने अपना धन्धा समेटा, मुनीम को हिसाब-किताब समझाया और अपने गाँव की ओर चल पड़ा। वो ही जेठ का महीना। लूओं के अन्धड़ शोर मचा रहे थे। करीलों पर सुर्ख ढालू देखकर यकायक उस दिनवाली बात याद आ गयी। सोचा—बहू की अगर ऐसी पसन्द है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो अपना क्या जाता है ! कौन-से पैसे लगते हैं ! पके हुए ढालू तोड़कर अँगोछे के पल्लू में बाँध लिये।

वो हवेली पहुँचा तब आँगन में औरतों का जमघट लगा हुआ था। सेठ-सेठानी घबराये हुए मनौती-पर-मनौती बोल रहे थे। भूतवाला पति ऊपर रनिवास के दरवाजे पर खड़ा था। उदास। उद्विग्न। बहू नीचे सौरी के अन्दर कराह रही थी। बच्चा अटक गया था। दाइयाँ अपने हुनर आजमा रही थीं।

कि इतने में आँगन की इस चिल्ल-पौं के दरमियान सात फेरों का परिणेता धूल से अटा हुआ बेहिचक आँगन में आ खड़ा हुआ। कन्धे पर ढालुओं का अँगोछा लटक रहा था। माँ-बाप के चरणों में शीष नवाकर प्रणाम किया। यह क्या माजरा है ? हू-ब-हू बेटे से शक्ल मिलती है ! गर्द से सना है तो क्या हुआ ! दौलत के लालच में कोई मायावी तो नहीं आ गया ! अत्यधिक आश्चर्य भी गूंगा होता है। माँ-बाप ने बोलना चाहा तो भी उनसे बोला नहीं गया। औरतों के गले का राग बदल गया। हाय दैया, एक ही शक्ल के दो पति ! कौन सच्चा, कौन झूठा ? यह कैसा कौतुक ? कैसा तमाशा ? कोई इधर भागी, कोई उधर भागी।

सौरी के भीतर से पत्नी का कराहना सुनकर वो फौरन सारी बात समझ गया। सुनी सो खबर सच्ची है ! ऐसा छल किसने किया ? कैसे हो इसकी पहचान ? लोग किसके कहे का विश्वास करेंगे ? सहसा ऊपर रनिवास के दरवाजे पर खड़े युवक पर उसकी नजर पड़ी। यह तो वास्तव में हू-ब-हू उसका हमशक्ल है ! मायावी के छल का कौन मुकाबला कर सकता है ! रगों में खून जम गया। ओह, यह अनहोनी कैसे हुई ?

प्रीतवाले पति के कानों में तो फकत जच्चा का कराहना गूंज रहा था। उसे तो किसी दूसरी बात का होश ही नहीं था। हवा थम गयी थी। सूरज थम गया था। कब यह कराहना बन्द हो और कब कुदरत का बन्धन खुले !

बापू के मुंह की ओर देखते हुए बेटा बोला, 'मैं तो चार साल से दूर दिसावर में था, फिर समझ में नहीं आता कि बहू के गर्भ कैसे रह गया ? तुम्हें कुछ तो अक्ल से काम लेना था !'

सेठ ने मन-ही-मन सारा हिसाब लगा लिया। बोला, 'तू है कौन ? मेरा लड़का तो तीसरे ही दिन वापस आ गया था। यहाँ ऐयारी की तो दाल नहीं गलेगी !'

बापू के मुंह से यह बोल सुनकर बेटे को बेहद आश्चर्य हुआ। चुप रहने पर तो सारी बात ही बिगड़ जायेगी। तुरन्त बोला, 'चार साल तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेशुमार कमाई करके दिसावर से बाप के घर आया। इसमें ऐयारी की कौन-सी बात है! तुम्हीं ने तो जबरन भेजा था।'

सेठ ने कहा, 'नहीं चाहिए मुझे ऐसी कमाई। तू मुझे कमाई का क्या लालच दिखा रहा है! जिस राह आया, उसी राह सीधे-सीधे चलता बन, वरना बुरी बीतेगी।'

बापू का तो दिमाग ही फिर गया लगता है। उसने माँ के मुंह की ओर देखकर पूछा, 'माँ, क्या तू भी अपनी कोख के बेटे को नहीं पहचानती?'

माँ इस सवाल का क्या जवाब देती! उसकी जबान मानो तालू से चिपक गयी हो। वह टुकुर-टुकुर पति के चेहरे की तरफ देखने लगी। माँ ने कुछ जवाब नहीं दिया तो बेटा भी असमंजस में पड़ गया। सहसा उसे ढालुओं की बात याद आ गयी। काँपते हाथों से तुरन्त अँगोछा खोल, लाल-लाल ढालुओं को बापू के सामने करते बोला, 'बहू को उस दिन के ढालुओं की बात तो पूछो। वह सारा किस्सा बता देगी। उस दिन उसने स्वयं ही ढालू तोड़कर खाये थे। आज मैं अपने हाथों से तोड़कर लाया हूँ। एक दफा उससे पूछो तो सही। आप फरमायें तो मैं बाहर खड़े-खड़े ही पूछ लूं!'

सेठ को गुस्सा आ गया। बोला, 'पागल कहीं का! यह समय ढालुओं की बात पूछने का है! बहू तो मौत से जूझ रही है और तुझे ढालुओं की पड़ी है। भाड़ में जायें तेरे ये ढालू। मैं तो यह बेतुकी बात सुनते ही सारी बात समझ गया। मेरी बहू गँवारों की तरह हाथों से तोड़कर ढालू खायेगी! इज्जत प्यारी हो तो यहाँ से दफा हो जा, वरना इतने जूते पड़ेंगे कि कोई गिननेवाला भी नहीं मिलेगा।'

बेटे ने कहा, 'बाप के जूतों की कोई परवाह नहीं, पर सचमुच मैंने भी उस दिन रथ में ठीक यही बात कही थी।'

सौरी के भीतर बहू का कराहना उसी तरह जारी था। दाइयों ने कई दफा पूछा, फिर भी वह बच्चे को कटाकर निकलवाने के लिए तैयार नहीं हुई। बमुश्किल मरने से बची। बहू की आँखों के आगे कभी अँधेरा छा जाता, कभी बिजलियाँ जगमगाने लगतीं।

हवेली से भागी औरतों के जरिये यह बात हवा की तरह घर-घर में फैल गयी। देखते-ही-देखते सेठ की हवेली के सामने मेला लग गया। ऐसी अनहोनी बात का स्वाद तो जबान को बरसों में मिलता है। हरेक की जबान के पंख लग गये। एक ही शक्ल के दो पति! एक तो चार साल पहले से ही रनिवास में ऐश कर रहा है और एक आज दिसावर से लौटा है। बहू सौरी में प्रसव-पीड़ा से कराह रही है। खूब तमाशा हुआ। देखना है कि धन्ना सेठ इस मामले को कैसे निबटाते हैं? कैसे छुपाते हैं? भला,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी बात रपपर्दा कौन डालने देगा ! लोग चबा-चबाकर फिर से जुगाली करने लगते !

अपनी हवेली के चारों ओर यह जमघट देखा तो सेठ की एड़ी से चोटी तक आग लग गयी। थूक उछालते कहने लगा, 'मेरे घर की बात है। हम आप ही निबट लेंगे। बस्तीवाले क्यूं टाँग अड़ाते हैं ? मैं कहता हूं कि बाद में आनेवाला आदमी छली है। मैं अपने नौकरों से धक्के देकर उसे निकलवा दूंगा। दिन-दहाड़े यह मक्कारी नहीं चल सकती।'

बेटा चिल्लाया, 'बापू, तुम यह क्या पागलपन कर रहे हो ? सूरज को तवा और तवे को सूरज बता रहे हो ? तुम जैसे भी चाहो, पूरी छान-बीन कर लो। यह तो सरासर अन्याय है।'

इन दौलतमन्द लोगों को नीचा दिखाने का मौका कब-कब मिलता है ! लोग-बाग भी अड़ गये कि खरा न्याय होना चाहिए। दूध-का-दूध और पानी-का-पानी। कसूरवार को वाजिब सजा मिले। यों दो पतियों का रिवाज चल निकला तो कैसे निभेगी ? अमीरों का तो कुछ नहीं, पर गरीबों का जीना हराम हो जायेगा। बस्ती की उपेक्षा नहीं की जा सकती। चाहे कितना ही दौलत का जोर क्यूं न हो, कन्धा देनेवाले किराये पर नहीं आयेंगे।

मामला काफी उलझ गया। दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़ गये। कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। न सेठ और न बिरादरीवाले। लोगों की जबान थी और बहू के कान थे, सो उस तक भी सारी खबर पहुँच गयी। औरत की इस जिन्दगी में राम जाने कैसी-कैसी बातें सुननी पड़ेंगी, कैसे-कैसे अपमान सहने पड़ेंगे और कैसे-कैसे तमाशे देखने पड़ेंगे ! आखिर एक दिन तो यह झमेला होना ही था। चार साल तो स्वप्न की तरह अदृश्य हो गये। भला, स्वप्न के दिलासे से कब तक मन को समझाया जा सकता है ? कितना उसका सहारा ! और कितनी उसकी गहराई !

किसी पुराने खण्डहर की चमगादड़ों की तरह भीड़ इधर-उधर चक्कर लगाने लगी। यह मामला निबटाये बगैर तो गले से कौर भी नहीं निगला जा सकता।

सौरी का दरवाजा खोलकर दाइयों ने खबर दी कि बहू को लड़की हुई है। मौत की विकट घाटी टल गयी। जच्चा के मरने में तो कोई कसर ही नहीं थी। बच गयी सो किस्मत की बात। सौरी के बाहर भनभनाती औरतों को बच्ची का रोना सुनायी दिया। रनिवास के बाहर खड़े पति को अब जाकर होश आया, पर होश आते ही जो भनक कानों में पड़ी तो मानो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कलेजे में सहसा सुरंग छूटी हो। सुध-बुध को गोया लकवा मार गया हो। एक साल पहले यह गाज कैसे गिरी ?

सेठ-सेठानी पागलों की तरह हक्के-बक्के खड़े थे। हतप्रभ ! समूची बस्ती में कानाफूसी होने लगी। यह कैसी अप्रत्याशित मुसीबत आ पड़ी ! इस हरामजादे, चण्डाल ने न जाने किस जन्म का बदला लिया है। बात तो हाथ से छूटती जा रही है। अब कैसे समेटी जाये ! कौन जाने, किसने यह चाल चली है ? रनिवास तो पिछले चार सालों से रोशन है। इसे नहीं कबूलने पर तो हवेली की सारी इज्जत ही मिट्टी में मिल जायेगी। ढालू-वाला किसी तरह मान जाये तो पर्दा पड़ा रहे। मुँहमाँगी दौलत देने को तैयार है, फिर उसे क्या चाहिए।

पर न ढालूवाला माना और न बस्ती के लोग ही माने। पुख्ता न्याय होना चाहिए। सारी बिरादरी की नाक कटती है। चार साल बाद कोख उघड़ते ही एक और पति आ धमका। क्या मालूम कौन असली है ? एक को तो झूठा होना ही पड़ेगा। लोगों ने शोर मचाकर आकाश को सर पर उठा लिया, मानो बरों का बड़ा छत्ता नीचे आ पड़ा हो। ढालूवाले की हिमायत न करना तो हाथों भड़काई आग पर पानी डालना होगा। तब तो सारा मजा ही किरकिरा हो जायेगा। इस मजे को चखने की खातिर हर व्यक्ति ढालूवाले पति की तरफदारी करने लगा।

सेठ हाथ जोड़ते हुए रुँधे सुर में बोला, 'मेरी पगड़ी उछालकर तुम्हें क्या मिलेगा ? भाइयों की तरह साथ रहते हैं। वक्त-बेवक्त एक-दूसरे के काम आते हैं। मेरे बेटे के गुण तुम लोगों से छुपे नहीं हैं। उसके हाथों से किसका भला नहीं हुआ ! इतनी जल्दी एहसान-फरामोश न बनो। मेरी इज्जत अब तुम्हारे हाथों में है। किसी भी तरह मामला सुलझा दो। यह ढालूवाला आदमी जाली है। इसे धक्के मारकर गाँव से बाहर निकालो।'

बुजुर्गों ने कहा, 'सेठजी, दिखती मक्खी निगली नहीं जा सकती। वक्त आने पर जान देने को तैयार हैं, पर पानी की गठरी कैसे बाँधी जा सकती है ! यह आदमी बढ़-बढ़कर कह रहा है, बहू से ढालुओंवाली बात पूछो तो सही, इसमें हर्ज ही क्या है ?'

ऐसी बात कैसे पूछी जा सकती है ? कौन पूछे ? तब कुछ भली बूढ़ी औरतें आगे आयीं। मुसीबत में इन्सान ही इन्सान के काम आता है। सौरी का दरवाजा खोलकर भीतर गयीं। जच्चा का पेट दर्द से ऐंठ रहा था। प्रसव की घाटी पार करने के बाद इस बात की भनक उसके कानों में पड़ी तो वह प्रसव की सारी पीड़ा भूल गयी। यह दूसरी पीड़ा बहुत-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत बड़ी थी। दाँत पीसती हुई कठिनता से बोली, 'कोई मर्द यह बात पूछता तो उसको हाँ या ना का जवाब भी देती। पर औरतों का दिल रखकर भी तुम यह बात पूछने की हिम्मत कैसे जुटा पायीं! मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। तुम्हें परेशान करने का यही समय मिला है? धन्य है तुम्हारा साहस!'

वृद्धाएँ मुँह बिगाड़ती हुई बाहर आयीं। बोलीं, 'ऐसी बातों में औरतें सच नहीं बोलतीं? हमें तो दूध में कालिख नजर आती है। फिर जो तुम्हारी समझ में आये, सो करो।'

ऐसे मौकों पर ही तो समझ की धार तेज होती है। सूत तो खूब ही उलझा। बुजुर्गों ने फिर समझ से काम लिया। कहा, 'यह न्याय राजा के बिना नहीं निबट सकता। किसी और ने इसमें टाँग अड़ायी तो समूची बस्ती को उनके गुस्से का शिकार होना पड़ेगा। अपना भला-बुरा तो सोचना ही पड़ता है। एक दफा इन दोनों पतियों को राजा के हवाले कर दें। फिर राजा जानें और सेठ जानें। अपन बीच में नाहक क्यूं थूक उछालें। फिर बस्ती राम है। जो सबकी इच्छा हो, सो करो।'

तत्पश्चात बस्ती की इच्छानुसार ही हुआ। भला अपना राम पद वह क्यूं छोड़ती। दोनों पतियों को रस्सियों से बाँधकर ले चलने का फैसला हुआ।

रनिवास के बाहर खड़े पति को बाँधने लगे तब उसे होश आया कि आखिर बात कहाँ तक पहुँच चुकी है। उसने कुछ भी आनाकानी नहीं की। सीढ़ियाँ उतरते हुए कलेजा होंठों तक लाकर बोला, 'मुझे एक दफा सौरी में जाने दो। माँ-बेटी की खैरियत तो पूछ लूं। न जाने कैसी तबियत है?'

पर लोग नहीं माने। कहा, 'फैसला होने के बाद सारी उम्र खैरियत पूछनी ही है। इतनी जल्दी क्या है?'

लोगों का बवण्डर पैरों-पैरों आगे बढ़ा। दोनों पति बंधे हुए साथ-साथ चल रहे थे। सेठ भी जूतियाँ फटकारते हुए साथ घिसट रहा था। पगड़ी खुलकर गले में झूल रही थी। तेज हवा के झोंके पत्ते-पत्ते को झकझोर रहे थे। चलते-चलते उसी खेजड़ी पर भूत की नजर पड़ी। सारे शरीर में बिजली दौड़ गयी। उसके पाँव वहीं चिपक गये। सर में उफान उठने लगा। आँखों के सामने यादों के चित्र फड़फड़ाने लगे ही थे कि रस्सी का झटका लगने पर उसे होश आया। पैर आप ही बढ़ने लगे। बायाँ-दायाँ, बायाँ-दायाँ। इन्सान के दिल में यादों का झंझट न रहे तो कितना अच्छा हो! यह याद तो मानो खून ही निचोड़ डालेगी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साथ बँधे कारोबारवाले पति का मन तो निश्छल था। पर आज साँच को यह आँच कैसी लगी! वो खुद भ्रम में पड़ गया। यह क्या लीला हुई? साथ-साथ चलता यह शख्स ऐसा लग रहा है गोया वो शीशे में अपना ही प्रतिबिम्ब देख रहा हो। इससे पूछने पर ही भ्रम मिट सकता है। उसके गले में फँसते-फँसते बमुश्किल ये शब्द बाहर निकल पाये, 'भाई मेरे, न्याय तो राम जाने क्या होगा, पर तू यह अच्छी तरह जानता है कि मैं ही सेठजी का लड़का हूँ। सात फेरे खानेवाला असली पति हूँ। पर तू कौन है, यह तो बता? यह कैसा इन्द्रजाल है? बैठे-बिठाये, यह कैसी मुसीबत आ पड़ी! बता, मुझे तो बता कि तू है कौन?'

था तो वो महाबली भूत। न्याय करनेवाले पंचों की गर्दनें एक साथ मरोड़ सकता था। कई करतब कर सकता था। किसी के शरीर में घुसकर उसका सत्यानाश कर सकता था। पर चार साल तक प्रीत की जिन्दगी जीकर उसका मानस ही बदल गया। झूठ बोलना चाहा तब भी उससे बोला नहीं गया। पर स्पष्ट सच्चाई भी कैसे कहे! प्रियतमा की इज्जत तो रखनी ही थी। उससे बेवफाई कैसे करे! युधिष्ठिरवाली मर्यादा निभायी। बोला, 'मैं औरतों की देह के भीतर का सूक्ष्म जीव हूँ। उनकी प्रीत का मालिक हूँ। व्यापार और कमाई की बनिस्पत मुझे मोह-प्रीत की लालसा अधिक है।'

सात फेरों का परिणेता बेसब्री से बीच ही में बोला. 'फालतू बकवास क्यूं करता है! साफ-साफ बता कि मण्डप में तूने विवाह किया था क्या?'

'फकत विवाह से क्या होता है! विवाह की दुहाई उम्र-भर नहीं चल सकती। व्यापार वस्तुओं का होता है, प्रीत का नहीं। तुम तो प्रीत का भी व्यापार करने लगे! इस व्यापार में ऐसी ही बरकत हुआ करती है!'

सेठ के लड़के के दिल में गोया गर्म सलाखें घुस गयी हों। ऐसी बातें तो उसने कभी सोची ही नहीं। सोचने का मौका ही कब मिला था! आज मौका भी मिला तो इस हालत में!

भीड़ का बवण्डर राजा के पास न्याय की खातिर जल्दी-जल्दी आगे बढ़ रहा था कि बीच राह में रेवड़ चराता हुआ एक गड़रिया मिला। हाथ में तड़ा। लाल साफे से बाहर निकले बाल। घनी व काली दाढ़ी। हाथों में चाँदी के कड़े। भरपूर लम्बा कद। रीछ की तरह सारे शरीर पर बाल-ही-बाल। पलकों व भौंहों के बाल भी काफी बढ़े हुए थे। कानों पर बालों के गुच्छे। पीले दाँत। तड़ा सामने करते हुए पूछा, 'इतने सारे लोग इकट्ठे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होकर कहाँ जा रहे हो ? शायद मृत्युभोज खाने के लिए यह कारवाँ निकला है ?'

दो-तीन मर्तबा समझाने पर उसे ठीक से समझ में आया कि आखिर माजरा क्या है। होंठों की एक बाजू से हँसी को छलकाते कहने लगा, 'इस अदने-से काम की खातिर बेचारे राजा को क्यूँ तकलीफ देते हो ! यह झमेला तो मैं ही निबटा दूंगा। तुम्हें मेरी आँखों की कसम जो आगे एक भी कदम रखा तो। नदी का ठण्डा पानी पीओ। कुछ आराम करो। तुम्हारे इलाके की तो गजब ही कलई खुली। कोई माई का लाल यह न्याय नहीं निबटा सका ! जूते फटकारते हुए सीधे राजा के पास चल पड़े !'

लोगों ने भी सोचा कि अभी तो राजदरबार काफी दूर है। अगर इस गंवार की अक्ल से काम निकल जाये तो क्या हर्ज है ? वरना आगे तो जाना ही है। वे मान गये। तब गड़रिये ने बारी-बारी से दोनों के चेहरे देखे। बिलकुल एक-सी शक्ल। बाल जितना भी फर्क नहीं। चंचल विधाता ने भी कैसी मजाक की !

उन दोनों की रस्सियाँ खोलते हुए वो कहने लगा, 'भले आदमियों, इन्हें इस तरह बाँधने की क्या जरूरत थी ? इस भीड़ से बचकर ये कहाँ जाते ?'

फिर मुखिया की तरफ देखकर पूछा, 'ये गूंगे-बहरे तो नहीं हैं ?'

मुखिया ने जवाब दिया, 'नहीं, ये तो बिलकुल गूंगे-बहरे नहीं हैं। बेधड़क बोलते हैं।'

गड़रिया यह बात सुनते ही ठहाका मारकर हँसा। हँसते-हँसते ही बोला, 'फिर यह बेकार चक्कर क्यूँ लगाया ? इनसे वहीं पूछ-ताछ कर लेते। दोनों में से एक तो झूठा है ही।'

पंच मन-ही-मन हँसे। यह गड़रिया तो निरा मूर्ख है। ये सच बोल जाते तो फिर रोना ही किस बात का था। बस हो चुका इसके हाथों न्याय ! ऐसी न्याय करने लायक अक्ल होती तो यह तड़ा लिये भेड़ों के पीछे ढर्र-ढर्र करते क्यूँ भटकता !

रस्सी को समेटते हुए गड़रिया कहने लगा, 'समझ गया, समझ गया। बोलना तो जानते हैं पर साथ-ही-साथ झूठ बोलना भी सीख गये। पर कोई बात नहीं। सच को बाहर निकालना तो मेरे बायें हाथ का खेल है। गले में तड़ा डालकर आँतों में फँसा हुआ सच अभी बाहर ला पटकता हूँ। देर किस बात की ! खेजड़ी की डालियाँ भी इस तड़े के सामने नहीं टिक सकतीं, फिर बेचारे सच की तो औकात ही क्या है! बोलो, किसके गले में तड़ा घुसेड़ूं ! जो पहले मुंह खोलेगा, वो ही सच्चा है।'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूत ने सोचा कि अगर अकेले उसी की बात होती तो कोई भी जोखिम और मुसीबत उठा लेता। पर अब भेद जाहिर होने पर तो रनिवास की मालकिन को दुख उठाना पड़ेगा। ऐसा मालूम होता तो खेजड़ी के काँटों में बिंधा रहना ही ठीक था। भूतों के छल-बल में तो वो उस्ताद था, पर इन्सानों के कपट की उसे रंचमात्र भी जानकारी नहीं थी। इन्सान की जबान से निकली हर बात को वो सही मानता था। तड़ा उसके गले का क्या बिगाड़ सकता है! ऐसे सात तड़े घुसेड़कर भी यह मेरा बाल बाँका नहीं कर सकता। मेरी प्रीत झूठी हरगिज नहीं हो सकती। इसमें इतना सोचने की क्या बात है! वो तो तुरन्त मुँह फाड़ता ही नजर आया। सेठ के लड़के ने तो होंठ ही नहीं खोले। गुस्सा तो ऐसा आया कि इस गँवार गड़रिये की चटनी बना डाले। पर कहा कुछ नहीं।

मुँह फाड़नेवाले पति की पीठ ठोंकते हुए गड़रिया बोला, 'वाह रे पट्ठे, तुझ जैसे सत्यवादी आदमी को इन मूर्ख लोगों ने इतना परेशान किया! पर मन की तसल्ली बड़ी बात है। थोड़ी-बहुत भी शक की गुंजाइश क्यूं रहे!'

उसकी भेड़ें काफी दूरी पर अलग-अलग चर रही थीं। उनकी ओर हाथ का इशारा करते गड़रिया कहने लगा, 'मैं सात तालियाँ बजाऊँ, तब तक इन तमाम भेड़ों को घेरकर इस खेजड़ी के चारों ओर जो इकट्ठा कर दे, वो ही सच्चा है।'

गड़रिये के कहते ही उस भूत ने बवण्डर का रूप धरकर पाँचवीं ताली बजने से पहले ही तमाम भेड़ों को इकट्ठा कर दिया। सेठ का लड़का मुँह लटकाये खड़ा रहा। वहाँ से हिला तक नहीं। जैसी गड़रियों की जाहिल कौम, वैसा ही जाहिल उनका न्याय। मानना और न मानना तो उसकी मर्जी पर है।

गड़रिया बोला, 'शाबास! सच्चे पति के अलावा इतना जोश और इतनी ताकत, भला किसकी हो सकती है! अब एक आखिरी परख और करूंगा। थोड़ा सुस्ता लो।'

तड़ा बगल में दबाकर छागल का मुँह खोला। एक ही साँस में गट-गट सारा पानी मुँह में उड़ेलकर जोर से डकार खायी। फिर पेट पर हाथ फिराते कहने लगा, 'सात चुटकियों के साथ ही जो इस छागल के अन्दर घुस जायेगा, वो ही रनिवास का असली मालिक है। जो मेरे न्याय को गलत बतायेगा, उसके गले की खातिर मेरे तड़े का एक ही झटका काफी है, यह खयाल रखना।'

लोगों ने तड़े के मुँह पर बँधे हँसिये की तरफ देखा—धार लगा हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकदम तीखा। एक झटका लगने पर दूसरे की जरूरत ही नहीं। खोपड़ी सीधी धूल चाटती नजर आयेगी !

लोगों को हँसिये की ओर देखने में तो वक्त लगा, पर भूत को छागल के अन्दर घुसने में कुछ भी वक्त नहीं लगा। ये करतब तो वो जन्म से ही जानता था। बेचारे गड़रिये ने तो आज इज्जत रख ली। भूत के अन्दर घुसते ही गड़रिये ने फिर एक पल की भी ढील नहीं की। तुरन्त छागल का मुँह दुहराकर, रस्सी से कसकर बाँध दिया ! फिर पंचों के मुँह की तरफ देखते गर्व से बोला, 'न्याय करने में यह देर लगी ! छागल तो मेरी भी जायेगी, पर न्याय करना मंजूर किया तो कुछ सोच-विचारकर ही किया था। चलो, अब सभी चलकर इस छागल को नदी के हवाले कर दें। उमड़ती, उथेले खाती नदी इसे आप ही रनिवास की सेज पर पहुँचा देगी। बोलो, हुआ कि नहीं खरा न्याय ?'

सभी ने एक साथ सर हिलाकर सहमति दरसायी। सेठ का लड़का तो खुशी के मारे बौरा-सा गया। विवाह से भी हजार गुना अधिक आनन्द उसके दिल में हिलोरें लेने लगा। मारे खुशी के काँपते हाथों नग-जड़ी अँगूठी खोलकर गड़रिये के सामने की। गड़रिया बगैर कहे ही उसके दिल की बात समझ गया, पर अँगूठी कबूल नहीं की। काली दाढ़ी के बीच पीले दाँतों की हँसी हँसते बोला, 'मैं कोई राजा नहीं हूँ, जो न्याय की कीमत वसूल करूँ। मैंने तो अटका काम निकाल दिया। और यह अँगूठी मेरे किस काम की ! न अँगुलियों में आती है, न तड़े में। मेरी भेड़ें भी मेरी तरह गँवार हैं। घास तो खाती हैं, पर सोना सूँघती तक नहीं। बेकार की वस्तुएँ तुम अमीरों को ही शोभा देती हैं।'

अब कहीं जाकर भूत को गड़रिये के उज्जड़ न्याय का पता चला। पर अब हो भी क्या सकता था ! बात काबू के बाहर पहुँच गयी थी। तो भी छागल के भीतर से चिल्लाया, 'बापू, मुझ पर दया कर, एक दफा बाहर निकाल दे। जिन्दगी-भर तेरा गुलाम रहूँगा।'

भला, अब भूत की बात कौन सुनता ! उत्साह से भरे सभी नदी के किनारे पहुँचे। छागल को वेग से बहते पानी में फेंक दिया। प्रीत के मालिक को आखिर बल खाती, भँवर बनाती, लहराती, उथेले खाती, कल-कल करती नदी की सेज मिली। उसका जीवन सफल हुआ। उसकी मौत सार्थक हुई।

फिर बस्ती के लोग, सेठ और सेठ का लड़का वापस दूनी गति से गाँव की ओर लौटे।

हवेली के दरवाजे में घुसते ही सेठ का लड़का सीधा सौरी की ओर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लपका। एक दाई बेटी को घी की मालिश कर रही थी। दूसरी चन्दन की कंघी से जच्चा के बाल सुलझा रही थी। गड़रिये के खरे न्याय की सारी दास्तान उसने एक ही साँस में सुना डाली। एक-एक शब्द के साथ जच्चा को ऐसा लगता गोया आग में तपा लाल-सुर्ख भाला उसके दिल में घोंपा जा रहा हो। प्रसव-पीड़ा से भी यह पीड़ा हजार गुना अधिक थी। पर उसने न तो उफ़ की और न कोई निश्वास ही उसके मुँह से निकला। पाषाण-पुतली की तरह गुमसुम सुनती रही।

दिल की सारी भड़ास निकालने के बाद वो कहने लगा, 'पर तुम इस कदर परेशानी में क्यूँ पड़ गयीं? जन्म देनेवाले माँ-बाप भी जब नहीं पहचान सके तो भला तुम कैसे पहचानतीं? इसमें तुम्हारी कुछ भी गलती नहीं है। पर नालायक भूत में तो लच्छन मुताबिक खूब बीती। छागल में घुसने के बाद बहुत गिड़गिड़ाया, बहुत रोया। पर फिर तो राम का नाम लो। हम ऐसे नादान कहाँ! आखिर नदी में फेंकने पर उससे पिण्ड छूटा और उसका चिल्लाना बन्द हुआ। हरामजादा, फिर कभी छल करेगा!

तत्पश्चात घरवालों ने जैसा कहा, जच्चा ने वैसा ही किया। कभी किसी बात का उलटकर जवाब नहीं दिया। किसी भी काम में आना-कानी नहीं की। उसकी खातिर सास ने जितने भी लड्डू वगैरह बनाये, उसने चुपचाप खा लिये। जब सास ने कहा, तब सर धोया। सूरज पूजा। ब्राह्मण ने हवन किया। औरतों ने गीत गाये। गुड़ की मांगलिक लपसी बनी। तालाब पर जाकर जल-देवता की पूजा की। पीली चुंदरी ओढ़ी। बेटी को पालने में झुलाया। जल भरे घड़े पूजे। कुंकुम से आँगन उरेहा। मेहँदी लगायी। जैसा कहा, वैसा सिंगार किया। आभूषण पहने। ऐसी सुलच्छनी बहू तो सौभाग्य से ही मिलती है।

जल-पूजन की रात्रि को बहू पीली चुंदरी ओढ़कर झाँझर की झनकार करती हुई रनिवास की सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। गोद में बच्ची। आँचल में दूध। आँखें सूनी। हृदय सूना। सर में मानो अनगिनत झींगुर गुंजार कर रहे हों। पति इन्तजार में फूलों की सेज पर बैठा था। इस एक ही रनिवास में राम जाने उसे कितने जीवन भोगने पड़ेंगे? पर आँचल से दूध पीती यह बच्ची, बड़ी होकर औरत का ऐसा जीवन न भोगे तो माँ की सारी तकलीफें सार्थक हो जायें। इस तरह तो जानवर भी आसानी से अपनी मरजी के खिलाफ इस्तेमाल नहीं किये जाते। एक दफा तो सर हिलाते ही हैं। पर औरतों की अपनी मरजी होती ही कहाँ है? मसान न पहुँचें तब तक रनिवास और रनिवास छूटने पर सीधी मसान!

●●●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक...............
दिनांक...............

मुमुक्षु भवन वेद वेदांग विद्यालय
ग्रन्थालय
आगत क्रमांक... 1063
दिनांक...............

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन्म : गाँव बोरुन्दा (राजस्थान), १ दिसम्बर, १९२६।

सम्पादन : सन् १९५३-५४ में 'प्रेरणा' मासिक का सम्पादन; सन् १९५८ में 'रूपम' का; त्रैमासिक शोध पत्रिका 'परम्परा' के कुछ वर्षों तक सहयोगी लेखक; सन् १९६० से 'लोक-संस्कृति' मासिक का सम्पादन।

प्रकाशन :
- ० राजस्थानी भाषा में लिखित 'बातां री फुलवाड़ी' के चौदह वृहत् भाग, लगभग ७०० कथाओं की ग्रन्थमाला।
- ० 'राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश', प्रथम भाग, ३३०० कहावतों का अर्थ सहित विवेचन।
- ० 'साहित्य और समाज' (विवेचना)
- ० 'प्रेमचन्द के पात्र'—सम्पादन एवं लेखन।

फिल्म :
- ० राष्ट्रीय पुरस्कार द्वारा सम्मानित 'दुविधा' कथा। श्री मणिकौल द्वारा निर्देशित।
- ० उपग्रह दूरदर्शन, अहमदाबाद केन्द्र, द्वारा आठ छोटी कथाओं का फिल्मांकन।
- ० श्री शान्ति चौधरी द्वारा छः छोटी कथाओं का फिल्मांकन।
- ० श्री श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित— 'चरणदास चोर'।

नाटक : श्री हबीब तनवीर द्वारा लोक नाट्य शैली में निर्देशित नाटक : 'पिरथीपाल सिंह', 'चरणदास चोर' एवं 'देवी का वरदान'।

पुरस्कार : केन्द्रीय साहित्य अकादमी के सर्वोच्च पुरस्कार द्वारा सम्मानित।

सम्प्रति : रूपायन संस्थान (लोक सांस्कृतिक शोध केन्द्र), बोरुन्दा—३४२६०४, के सचिव।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सच, तुम तो छुपे हुए ही ठीक हो। न जाने क्यों आज लगा कि तुम्हारी कहानियाँ शहरी जानवरों तक पहुँच गयीं तो वे कुत्तों की तरह टूट पड़ेंगे। गिद्ध हैं—नोच खायेंगे। तुम्हारी नम्रता है कि तुमने अपने रत्नों को गाँव की झीनी धूल में ढँक रखा है। धूल भी नजर आती है। रत्न भी।"

कला-फिल्मों के सुप्रसिद्ध निर्देशक मणि कौल के विजयदान देथा को लिखे गये पत्र का एक अंश।

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri